अथ महाभारतभाषा कर्णपर्व्वका सूचीपत्र ॥

कर्णपर्व्वका सूचीपत्र।

कर्णपर्व्वका सूचीपत्र ।

इतिकर्णपर्व्वसूचीपत्रंसमाप्तम् ॥

——❀——

अथ भाषा महाभारते कर्णपर्वणि ॥

——❋——

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दबन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ बिप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलकर्णपर्व भाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथ कर्णपर्वणिभाषावार्तिक प्रारम्भ ॥

वैशंपायन बोले किहेराजा इसके अनन्तर द्रोणाचार्यके मरनेसे अत्यंत व्याकुलचित्त दुर्योधनादिकराजालोग अश्वत्थामाजीके पासगये २ फिरद्रोणाचार्य्यके शोचकरनेवाले मूर्च्छावान् महाघायल पराक्रमोंसे थके हुये शोकसे पीड़ितहोकर वहसब राजालोग अश्वत्थामाजीके चारोंओर बैठगये ३ फिरएकमहूर्त तर्कशास्त्रके अनुसार अनेकहेतुओंसे अश्वत्थामाजीको समाश्वासन करके सबराजालोग सायंकालके समय अपने२ डेरोंकोगये ४ हे कौरव फिरदुःखशोकमें भरे कठिननाशको शोचतेहुये

नहींपाया ५ विशेषकरके कर्ण वा राजादुर्योधन वा दुश्शासन और सौबलकेपुत्र महाबली शकुनिने महाखेदकिया ६ यहसब राजालोग महात्मापांडवोंके कष्टोंकी चिन्ताकरतेहुये रात्रिको दुर्योधनकेही डेरेमें निवासकरने वालेहुये ७जो द्रौपदीको द्यूतमें कष्टदियागया और सभामेंभी लाईगई उसकोस्मरण करतेऔर शोचतेहुये अत्यंत व्याकुल चित्तहुये ८ हेराजा इसप्रकार द्यूतमें प्रत्यक्षहोनेवालेउन दुःखोंको चिन्ता करनेवाले उनलोगोंकी रात्रिसैकड़ों वर्षके समान व्यतीतहुई ९ उसकेपीछे निर्मल प्रभातके होतेही वेदोक्तरीतिकेअनुसार आवश्यक नित्यकर्मोंको करके दैवकी आज्ञामें नियत हुये१० अर्थात् आवश्यककर्मोंसे निवृत्तहोकर बड़ी सावधानीसे सेनाकोतैयारहोजानेकी आज्ञादी और युद्धकरनेकेनिमित्त बाहर निकले ११ मंगल कौतुककरनेवाले कर्णको अपना सेनापतिकरके दधिपात्रघृत आदि पदार्थोंसे१२और सुवर्णमाला युक्तउत्तम वस्त्रादिकोंसे उत्तम२ ब्राह्मणोंको पूजनकरते हुये सूतमागध वंदीजन आदिसेभीस्तुयमानहुये१३और हेराजा इसीप्रकारसे प्रातःकालके कर्मकरनेवाले युद्ध में निश्चयकरने वाले पांडवलोगभी शीघ्र अपने डेरोंसेतैयारहोकर बाहरनिकले १४ इसके पीछे परस्परमें विजयाभिलाषी कौरव और पांडवोंका महारोमहर्षण युद्ध प्रारंभहुआ १५ हेराजा कर्णकेसेनापतिहोनेसे उसकौरवी और पांडवीसेनाओंका देखने के योग्यदोदिन तकअपूर्व युद्धहुआ१६इसकेपीछे हजारों शत्रुओंको मारकरकर्णवा धृतराष्ट्रकेपुत्रोंके देखतेहीदेखते अर्जुनके हाथसेमारागया १७फिर शीघ्रही हस्तिनापुर जाकर यहसब वृत्तांतलोगोंने धृतराष्ट्रसेकहा वहवृत्तान्त कौरव जांगल देशोंमें प्रसिद्ध हुआ १८ जन्मेजयबोले कि श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मपितामहको और महारथी द्रोणाचार्यजी कोभी मृतकहुआ सुनकर अंबिकाके पुत्रवृद्ध राजाधृतराष्ट्रने बड़ा खेदकिया १९ हेब्राह्मण फिरउसदुःखी धृतराष्ट्रने दुर्योधनकेहितकारी कर्णकोभी मराहुआ सुनकर कैसेअपने प्राणोंको धारणकिया २० जिसने कि अपने पुत्रोंके विजयकी इसी कर्णमें आशा निश्चय

करके कर रक्खीथो ऐसेकर्णके मरने परइस कौरवने कैसे अपनेजीवनकी रक्खा २१ ऐसे स्थानमें कर्ण को मृतक सुनकर जो राजाने अपनेप्राणोंका त्यागनहींकिया इससेमैं निश्चय जानताहूं किदुःखमें वर्त्तमानमनुष्य बड़ी कठिनता सेमरताहै २२ हेराजा इसीप्रकार वृद्धभीष्म बाल्हीक द्रोणाचार्य सोमदत्त और भूरिश्रवाको २३ और अन्य मित्रोंसमेत गिरायेहुये पुत्र और पौत्रोंकोभी सुनकर जोप्राणोंका त्याग नहीं किया इसीसे हे ब्राह्मणमैं उसको महा कठिन मानताहूं २४ हे महामुनि इससब वृत्तान्तको आपमूल समेत वर्णन कीजिये मैं अपने प्राचीनवृद्धलोगों केचरित्रोंके सुननेसे तृप्त नहीं होताहूं २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोले हेमहाराजकर्णकेमृतक होनेसे महादुःखी संजय सायंकालके समय वायुकेसमान शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारीसे हस्तिनापुरको गया १ और बड़ीव्याकुलतासे हस्तिनापुरमें पहुंचकर उस धृतराष्ट्रके स्थानकोगया जो बांधवोंका नाशकारी था २ वहां मूर्च्छासेशोभाहीनराजाको देखकर बड़ीनम्रतापूर्वक हाथजोड़ मस्तकसे चरणोंमें दंडवत्करके ३ न्यायके द्वाराराजा धृतराष्ट्र को पूजके हायबड़ा खेदहै ऐसावचन कहकर बार्त्तालाप करना प्रारंभ किया ४ और कहने लगा किहेराजामैं संजयहूं क्याआपप्रसन्नतासेहैं और आपत्तिपाकर अपने अपराधोंसे आपविस्मरण तोनहीं होतेहो ५ विदुर द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और केशवजीके महा उपकारी वाहितकारी वचनोंकोजो तुमनेअंगीकार नहींकिया उनको स्मरणकर २ तोआप पीड़ित नहींहोतेहो ६ सभाकेमध्यमें परशुराम नारद और करावादिक मुनियोंके हितकारी वचनोंकोभी स्वीकार नहींकिया उसको स्मरणकरके तोतुम दुःखीनहीं होतेहो ७ आपके हित करनेमें प्रवृत्त भीष्म द्रोणाचार्य आदिमित्रोंको युद्ध मेंशत्रुओंके

हाथसे मरेहुये स्मरणकरके तोखेद नहींकरतेहो ८ तबतोदुःखसे महापीड़ित राजाधृतराष्ट्र बहुत लम्बी स्वासलेलेकर इसप्रकारसे कहनेवाले संजयसे बोले ९ कि हेसंजय दिव्यअस्त्रों केज्ञाता भीष्मपितामह औरबड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्यके मरनेपरमेराचित्त अत्यंत पीड़ितहै१० और बसुदेवताओंके अंशसे उत्पन्नहोनेवाले महातेजस्वी पितामहने प्रतिदिन दशहजार शस्त्रधारी रथियोंको मारा ११ पांडव अर्जुनसे रक्षित द्रुपदके पुत्र शिखण्डीके हाथसेमरेहुये उसभीष्मपितामहको सुनकर मेराचित्त पीड़ामानहुआ १२ जिसकेलिये भार्गव परशुराम जीने महायुद्ध में परम अस्त्रदिया और बाल्यावस्था में उन्हीं साक्षात्परशुराम जीने अपने शिष्य करनेके लिये अंगीकार किया१३और जिसकी कृपासे महारथी राजपुत्र पांडवोंने औरअन्य राजाओंने महारथी पनेकोपाया १४उससत्यसंकल्प महाधनुर्द्धारीद्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्नके हाथसे मराहुआ सुनकर मेराचित्त अत्यन्त पीड़ित होरहाहै१५ इस लोकमें चारों प्रकारकीबिद्या और अस्त्रबिद्या भीष्म और द्रोणाचार्य्यके सिवाय औरकिसीमें नहींहै उन दोनों महात्माओंके मरनेसे मैं महा खेदितहूं१६ तीनोंलोकोंमेंअस्त्र बिद्याका ज्ञाता जिसके समान कोईनहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर मेरे पुत्रोंने क्या क्या किया १७ महात्मा अर्जुन ने पराक्रम करके संसप्तकोंकी सेनाको मारकर यमलोकमें पहुंचाया१८बुद्धिमान् अश्वत्थामाके नारायणास्त्रके निष्फल होने और सेना केभागनेपर मेरेपुत्रोंने क्या२ कामकिया१९मैं द्रोणाचार्य्यकेमरनेपर सबको भगाहुआ वा शोकसमुद्रमें डूबाहुआ जीवनकी आशासे ऐसा चेष्टा करनेवाला देखताहूं जैसेकि समुद्रमें नौकाके टूटजानेपरउसपर चढ़ेहुये मनुष्योंकी चेष्टा होतीहै२० हेसंजय सेनाके भागजाने पर दुर्य्योधन कर्ण भोजवंशी कृतवर्मा मद्रदेश का राजा शल्य द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और मेरे शेष बचेहुये पुत्रादि और समेत अन्य लोगोंके मुखका वर्ण कैसा होगया २२ हेसंजय इस वृत्तान्तको और पांडव वा मेरे पुत्रोंके पराक्रमको यथार्थ जैसा हुआ वैसामुझ

से वर्णनकरो २३ संजय बोले हे श्रेष्ठ कौरव लोगों में आपके अपराध से जोदेखनेमें आया उसको सुनकर तुम खेदमतकरो क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य होनहार विषयमें दुखी नहीं होतेहैं २४ जैसाकि मनुष्य में सुखदुख संबंधी प्रयोजन होताहै उसकी प्राप्ति वा अप्राप्तिमें कोई बुद्धिमान दुखी नहीं होताहै २५ धृतराष्ट्र ने कहाकि हे संजय इससे अधिक मुझको कोई पीड़ा नहींहै मैंउसको प्राचीन होनहार मानता हूं इससे तुम अपनी इच्छाके अनुसार वर्णनकरो २६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणि द्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

संजय बोले कि बड़े बाणप्रहारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य के मरने पर आपके महारथी पुत्रोंके मुख शोभा से रहित हुये और चित्तसे व्याकुल होकर वह सब अचेत भी होगये १ हे राजा उस समय सब नीचामुख करनेवाले शोचग्रस्त महापीड़ित उन शस्त्र धारियों ने परस्पर में वार्त्तालाप भी नहींकरी २ अनेक प्रकार के दुःखसे पीड़ित आपकी सेनाओंको और उन लोगोंको व्याकुल चित्त देखकर सबने स्वर्ग जानेकाही बिचार किया ३ हे राजेन्द्र फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्य को मराहुआ देखकर इन सबलोगों के रुधिर से भरे हुये शस्त्र हाथों से गिरपड़े ४ उस समय वह बंधे लटके और गिरेहुये शस्त्र ऐसे देखने में आये जैसे कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देतेहैं ५ इसके पीछे उस आपकी सेनाको हटाहुआ पराक्रम हीन देखकर राजा दुर्य्योधन बोला ६ कि मैंने आप लोगों के पराक्रम से रक्षित होकर पांडवोंसे युद्धकरना प्रारंभ किया ७ अब द्रोणाचार्य्य के मरने से वह सब सेना व्याकुल हुई सी दिखाई देतीहै और युद्धमें युद्धकर्त्तालोग सबप्रकार से मरते हैं ८ युद्ध में युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों होतीहैं इसमें क्या आश्चर्य्य है आपलोग सब ओर को मुख करके युद्ध करो ९ बाण बिद्यामें अद्वितीय दिव्य अस्त्रोंके ज्ञाता महाबली सूर्य्यकेपुत्र महात्मा

कर्णको देखो १० कि युद्धमें जिसके पराक्रम को देखकर कुन्तीका पुत्र अल्पबुद्धी अर्जुन ऐसे भाग जाताहै जैसे कि सिंहको देखछोटा मृग भगजाताहै ११ जिसने दशहजार हाथी के समान बली भीमसेनको मानुषी युद्ध करके परास्त किया १२ औरउसी कर्णनेदिव्य अस्त्रों के जानने वाले शूर मायाबी भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कचको अपनी अमोघ शक्तीसे युद्ध में मारा १३ अब युद्धमें उस दुर्जय पराक्रमी सत्य संकल्पी महा बुद्धिमानके भुजाओंके बल को देखोगे१४विष्णुके वाइन्द्रके समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के पराक्रमको पांडव लोगदेखेंगे १५ तुम सब लोग युद्धमें सब सेना समेत पांडवोंके मारने को समर्थ हो फिर सबके साथ मिलकर कैसे समर्थ नहोगे अब पराक्रमी और अस्त्रज्ञ तुम लोग परस्पर मंदेखोगे १६ संजय बोले कि हेनिष्पाप आपके महाबली पुत्रने अपने भाइयोंको इसप्रकार से समझाकर कर्णको सेनापति बनाया १७ हेराजा युद्धदुर्मद महाबली कर्णने सेनापति होकर बड़े शब्दसे सिंहनादोंको करकरके युद्धकरना प्रारंभ किया १८ और सब सृंजय पांचाल बिदेह और केकय लोगों को विध्वंस करके युद्धमें अपनेधनुष से ऐसी बाणोंकी बर्षा करी कि सबको व्याकुल कर दिया १९।२० फिर वह वेगवान पांडव और पांचाल लोगोंको पीड़ित करता युद्धमें अर्जुन के हाथसे मारागया २१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंजयवाक्यबर्णनेतृतीयोऽध्यायः३॥

चौथा अध्याय॥

वैशंपायन बोले हेमहाराज अंबिकाका पुत्र धृतराष्ट्र यहसुनकर दुर्योधन को मृतक केही समान मानता हुआ १ महाव्याकुलता से अचेत होकर हाथीके समान पृथ्वी पर गिरपड़ा उस राजाको अचेत होकर पृथ्वी पर गिरने से २ रणवास मेंसे स्त्रियों का बड़ा शोक कारी शब्द हुआ उस शब्दसे सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होगई ३ दुःख शोकसे पीड़ित अत्यन्त व्याकुल चित्त भरतबंशियोंकी स्त्रियां

महाघोर शोकसागर में डूबकर रुदन करने लगीं ४।५ इसके पीछे संजय ने उन शोकसे मूर्छितनेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियोंको बिश्वास देकर समझाया ६ जैसेकि केलेके वृक्ष चारों ओर की बायुसे कंपायमान होतेहैं इसीप्रकार बारंबार कंपतीहुई वह सब स्त्रियां बिश्वास युक्त हुई ७ तब जलसे कौरवों के सींचनेवाले बिदुरजीने भी उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजा धृतराष्ट्रको बिश्वास कराया ८ हेराजेन्द्र उनके बचनों से वहराजा धृतराष्ट्र बड़े धीरेपने से सचेत होकर उन स्त्रियोंको देखके उन्मत्तके समान फिर मौनहोगया ९ फिर बारंबार स्वासलेतेहुये धृतराष्ट्र ने बहुत समय तक ध्यान करके अपने पुत्रोंकी निन्दा करी और पांडवोंको प्रशंसा करी १० फिर अपने और सौबलके पुत्र शकुनी की बुद्धिकीनिन्दा करता हुआ बारंबार कांपकर ध्यान को करके ११ मनको थांभकर धैर्य्यतासे धृतराष्ट्र ने संजय पूछाकि १२ हे संजय तुमने जो बचन कहा वहतो मैंने सुना परन्तु यहतोबताओ कि दुर्य्योधन तो यमपुर नहीं गया १३ सदैव बिजयाभिलाषी मेरापुत्र बिजय से निराश होगयाहै हे संजय इस कही हुईकथाको फिर भी मुख्यता से बर्णन करो १४ हे जन्मेजय धृतराष्ट्र के इस बचनको सुनकर संजय बोले हे राजा सूर्य्यका पुत्र महारथी कर्ण बड़े बाणप्रहारी शरीरके त्याग-नेवाले सूतका पुत्र अपने सब भाइयों समेत मारागया और यशस्वी पाण्डव के हाथसे आपकापुत्र दुश्शासन भी मारागया और उसी युद्धमें भीमसेन नेउसके रुधिर कोभी पान किया १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रशोकवर्णनेचतुर्थोऽध्यायः॥४॥

पांचवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि हेजन्मेजय शोकसे महाव्याकुल अम्बिका कापुत्र धृतराष्ट्र इस बातको सुनकर संजय से बोला १ हे बातथोड़े जीवनवाले मेरे पुत्र की दुर्बुद्धि से कर्ण के मरण को सुनकर मेरा प्रबल शोकमेरे अंगोंको काटे डालताहै सो हेसूत मुझदुःख से पार

होनेके इच्छावान् के सन्देहोंको निवृत्त करो २ अ कौरव और संजियों में कौन २ जीवते बाकीहैं और कौन २ मरगये ३ संजय बोले हेराजा महाप्रतापी अजेय भीष्मजी दशदिनमें पांडवों के एक अरब शूरवीरों को मारकर मारेगये ४ इसी प्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथपर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें पांचालोंके असंख्य रथ समूहोंको मारकर आपभी मारेगये ५ महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य के मरनेसे शेषबची हुईसेनाके अर्धभागको मारकर सूर्य्य का पुत्र कर्ण भी मारागया ६ और महाबली राजपुत्र बिविंशति भी आनर्त देशी सैकड़ों शूरवीरों को मारकर युद्धमें मारागया ७ इसी प्रकार आपका पुत्र महाबली बिकर्ण भी घोड़े और शस्त्रोंके नाश होजानेसे क्षत्री बर्णको स्मरण करता शत्रुओंके सन्मुख नियत हुआ ८ दुर्य्योधन के किये हुये घोररूप अनेक क्लेशोंको और अपनी प्रतिज्ञा के स्मरण करनेवाले भीमसेन कोस्मरण करता हुआ उसी भीमसेन के हाथसे युद्धमें मारागया ९ और अवन्ति देशके राजा राजकुमार बिन्द अनु बिन्द बड़े २ कठिन कर्मोंको करके यमलोकको गये १० सिन्धके देशोंमें बड़ेउत्तम जो दशदेश वीरजयद्रथके स्वाधीनहैं और वह जयद्रथआपके आधीन होकर आपका आज्ञावर्तीथा ११ वह महापराक्रमी जयद्रथअर्जुन के हाथसे बिजयहुआ तीक्ष्णबाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओं को बिजय करके और इसीप्रकार दुर्योधन का पुत्र महावेगवान युद्ध में वीरों का मर्दन करनेवाला और पिनाकी शास्त्र का ज्ञाता राजकुमार लक्ष्मण अभिमन्यु के हाथ से मारागया १३ इसी प्रकार दुश्शासन का पुत्र बाहुशाली रण में उसी उत्कृष्ट अभिमन्यु केसाथ लड़कर मृत्युके बशहुआ १४ सागर और अनुपदेशवासी किरातों का राजाधर्मात्मा देवराज इन्द्र का प्याराऔर अंगीकार किया हुआ मित्र १५ सदैव क्षत्री धर्ममें प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुन के पराक्रम से यमलोक में पहुंचाया गया १६ हे राजा इसीप्रकार कौरववंशी बड़ायशी शूरबीर भूरिश्रवा

युद्धमें सात्वकी के हाथसे मारागया १७ और क्षत्रियोंके मार के धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ट भी युद्धमें निर्भयतासे घूमते हुये अर्जुनके हाथसे मारेगये १८ हे महाराज सदैव क्रोध-रूप अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद आपका पुत्रदुश्शासन भीमसेनके हाथसे मारागया. १९ और जिसकी हाथियोंकी सेना अपूर्व्व और असंख्यथी वह सुदक्षिण खड्गके युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारागया २० कोशल देशियोंका राजा बड़े २ अंगीकृत शत्रुओंको मारकर अभिमन्युसे महापराक्रम करनेके द्वारा यमलोकबासी हुआ २१ शत्रुओंके भयको बढ़ानेवाला महाशूर जयद्रथका पुत्र पृथ्वीपर ढाल तलवारका रखनेवाला श्रीमान अर्जुनके हाथसे मारागया २२ और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेनसे अच्छी रीतिसे युद्धको करके उसीके हाथसे मारागया२३युद्धमें कर्णकीसमान बड़ा तेजस्वी अस्त्रोंको शीघ्रतासे चलानेवाला दृढ़ पराक्रमी वृषसेन २४ बड़ापराक्रम करके अर्जुनके हाथसे कालवश हुआ अभिमन्युके बधको सुनकर अपनी प्रतिज्ञाको करके जो राजा सदैव पांडवोंसे शत्रुता करताथा वह श्रुतायुशत्रुताको सुनाकर अर्जुनके हाथसेमारागया २५ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र सहदेवने अपने मामा शल्यके पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नामको युद्धमेंमारा २७ वृद्धराजा भगीरथ और वृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़ेबली महाप्रतापी भी मारेगये २८ हे राजा बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान भगदत्तका पुत्र युद्धमें बाजकी समान घूमनेवाले नकुलके हाथसे मारागया २६ इसी प्रकार महाबली शस्त्रधारी आपके पितामह बाल्हीक अपने बाल्हीक लोगों समेत भीमसेनके हाथसे मृत्युवश कियेगये ३० और जरासन्धका पुत्र महाबली जयत्सेन मगधका राजा युद्धमें महात्मा अभिमन्युके हाथसे मारागया ३१ हे राजा आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरोंमें प्रशंसनीय भीमसेनकी गदासे मारेगये ३२ और महारथी दुर्मर्षण दुर्विष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिनकर्मों को करके यमके स्थानको गये ३३ और युद्धमें दुर्मद कलिंग और

वृषक दोनोंभाई कठिनकर्मी होकर यमलोकको सिधारे ३४ आपका शूरबीर पराक्रमी मन्त्री वृषवर्मा भीमसेनके हाथसे कालके बसी भूत हुआ ३५ इसीप्रकार दशहजार हाथीके समान पराक्रमी महाराज पौरव युद्धमें बड़े पराक्रमीअर्जुनके हाथसे मारागया ३६ और प्रहार करनेवाले दो हजार बशातय और पराक्रमी शूरसेन यहसब युद्धमें मारेगये ३७ कवचधारी प्रहार करनेवाले युद्धमें उद्धतमहारथी अभीषाह शिवय यह दोनों कलिंग देशियों समेत मारेगये ३८ जो कि गोकुलमें सदैव बढ़ेहुये युद्धमें महाक्रुद्धरूप युद्धसे मुख न मोड़नेवाले बीरथे वहभी अर्जुनके हाथसे मारेगये ३९ हजारों संसप्तकों समेतघूमनेवाले जो गोपालथे वह सब भी अर्जुनके हाथसे यमलोकको गये ४० हे महाराज आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले वृषक और अचल भी अर्जुनके हाथसेमारे गये ४१ इसीरीतिसे नाम और कर्मसे उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारीमहाबाहु राजा शाल्वभीमसेनके हाथसे मारागया ४२ हे राजा मित्रके निमित्त युद्धमें पराक्रम करनेवाले ओघवान और बृहन्त दोनों एक साथही यमलोकको गये ४३ इसी रीतिसे महाधनुर्धर रथियोंमें श्रेष्ठ क्षेमधूर्ती भी युद्धमें भीमसेनके हाथकी गदासे मारेगये ४४ ऐसेही बड़ाधनुषधारी महाबली जलसंध युद्ध में कठिन कर्मों को करके बड़े शब्दोंको करताहुआ सात्विकीके हाथसे मारागया ४५ गधोंकारथ रखनेवाला राक्षसोंका राजा अलंबुष पराक्रमकरके घटोत्कचके हाथसे यमलोकको पहुंचा ४६ कर्णके पुत्र और भाई महारथी और सब केकयलोगभी अर्जुनके हाथसे मारे गये ४७ बड़े कठिन कर्मी मालव मद्रक और द्रविड़ यौधेय ललित्थ क्षुद्रक उशीनर ४८ मावेल्लकतुंडिकेर सावित्रीके पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय दक्षिणीय राजालोग ४९ पत्तियोंके और घोड़ोंके लाखों समूह रथ हाथियोंके झुंडों समेत मारडाले ५० ध्वजा अस्त्र कवच और वस्त्रोंसे अलंकृत शूरबीर जो बहुत कालसे बुद्धिमानलोगोंकेद्वारा सब बातोंमें कुशल और पोषणकियेगये ५१ वहसुगम कर्मी युद्धमें

अर्जुनके हाथसे मारेगये इसी प्रकार अन्यसेनाके लोगजो परस्पर मारनेकी इच्छारखतेथे मारेगये ५२ हे राजा इनके बिशेष बहुतसे अन्य हजारों राजालोग अपनी सेनाओं समेत युद्धमें मारेगये ५३ इस रीतिसे कर्ण और अर्जुनकोसन्मुखतामें यह ऐसाघोर नाशहुआ जैसे कि इन्द्रके हाथ बृत्रासुर और श्री रामचन्द्रजीके हाथसे रावण मारागया ५४ और जैसे श्री कृष्णजीके हाथसे नरक और मुरनाम दैत्य युद्धमें मारेगये और जैसे श्री भार्गव परशुरामजी के हाथ से राजाकार्त्ति वीर्य्य अर्थात् सहस्राबहुमारागया ५५ इसीप्रकार वह युद्धमें दुर्मद शूरबीर कर्ण अपनी जाति और बांधवों समेत युद्धमें तीनों लोकोंके मोहन करनेवाले महाघोर संग्रामकोकरके मारागया ५६ जैसे स्वामिकार्त्तिकजीने महिषको रुद्रजीने अन्धकको माराथा उसीप्रकार युद्ध में दुर्मद प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ द्वैरथ कर्ण अर्जुन के साथ युद्ध करके मन्त्री और बांधवों समेत मारागया जिससे धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी बिजयकी आशा और शत्रुताका मुख उत्पन्न हुआथा ५७ । ५८ हे राजा पांडव लोग उस दोषसे निवृत्तहुये जो पूर्व्व समय में भलाई चाहनेवाले बांधवों के समझाने से तुमनहीं समझे ५९ इसीकारण राज्यके चाहनेवाले पुत्रोंकी वृद्धिके चाहने-वाले तुमने बड़ानाशकारी यहमहाघोरदुःख पाया और जो दुष्क-र्मकिये उनका यहयोग्यफलमाया ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हेतात संजय युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारेहुयेमेरे शूरबीरलोग और हमारे वर्णनकियेहुये शूरबीरोंके हाथसेमरेहुयेपां-डवोंके शूरबीरोंका वर्णनकरो १ संजयबोले युद्धमेंबड़ेपराक्रमीबलवा-न कुंतदेशी मन्त्री औरबांधवोंसमेत श्रीगांगेयभीष्मजीके हाथसेमारे-गये २ और नारायण वा बालभद्रनाम अन्य शूरबीरलोगजोबड़ेभग-वद्भक्तथे युद्धमें वहसबभी बीरभीष्मके हाथसेमारेगये ३ और वह

सत्यजित जोकि बड़ाबली युद्धमें सत्यसंकल्प अर्जुन के समान था लड़ाईमें द्रोणाचार्यकेहाथसे मारागया ४ औरयुद्धमें कुशल बड़ेधनुष धारी सब पांचाल देशीलोग युद्धमें सन्मुख होकर द्रोणाचार्यकेहाथ से यमलोकको गये ५ इसीप्रकार मित्रकेलिये पराक्रम करनेवाले राजा बिराट और द्रुपद दोनों बृद्धभी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथ से मारेगये ६ हे समर्थधृतराष्ट्र जो अर्जुन केशवजी और बलदेवजीसे भी अजेय महारथियोंमें श्रेष्ठ मंदमुसकान करनेवाला बालकअभिमन्यु शत्रुओंके बड़े भारी नाशको करकेमुख्यउत्तम रथी जो अर्जुनके पराजय करनेमें असमर्थथे उन छः महारथियोंने घेरकर मारडाला हे महाराज क्षत्रीधर्म में वर्त्तमान रथसे हीन शत्रुहन्ता वीर अभिमन्युको युद्धमें दुःश्शासन के पुत्रनेमारा शत्रुहननेवाली सेना संयुक्त राजाअम्बष्ठ का पुत्र श्रीमान मित्रके निमित्त पराक्रम करताहुआ युद्धमें दुर्योधन के पुत्रबीर लक्ष्मणको पाकर ११ और बड़े भारी नाशकोकरके यमलोकको गया बड़ाधनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद बृहन्त दुश्शासन के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्धमें दुर्म्मद राजामणिमान और दण्डधार १२ यह दोनों मित्रके निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये और महारथी अंशुमान औरभोजराज सेना समेत १४ पराक्रम करके द्रोणाचार्यके हाथसे कालवशहुये और पुत्रसमेत १५ सामुद्र और चित्रसेन समुद्रसेनकेपराक्रम संयमलोकको पहुंचायागया अनूपवासी राजानील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त १६ यहदोनोंअश्वत्थामा औरविकर्णके हाथसेयमपुरकोगये चित्रायुध चित्रयोधीयह दोनोंभीबड़े नाशको करके १७ और चित्रमार्गसे पराक्रमकरतेहुये युद्धमें कर्णकेहाथसेमारेगये युद्धमें भीमसेनके समान और केकयदेशीशूरवीरोंसेसंयुक्त १८ महापराक्रम करकेअपने भाई कैकेयकेहाथ सेमारागया हेमहाराज गदासेयुद्ध करनेवाला पर्वत निवासीमहाप्रतापवान तेजस्वी १९ आपके पुत्र दुर्मुखके हाथसेमारागया ग्रहों केसमान प्रकाशित नरोत्तम रोचमान नाम दोनोंभाई २० एकबारमें

द्रोणाचार्य्यकेबाणोंसे स्वर्ग कोपठायेगये हेराजासम्मुख युद्धकरनेवाले पराक्रमी राजालोग २१ कठिनकर्मको करके यमकेलोकोंको सिधारे हेराजा सन्मुख युद्ध करने वाले सव्यसाची अर्जुनके मामा पुरजित और कुंतभोज युद्धमें पराजयहोकर द्रोणाचार्यके बाणोंसेयमकेलोकोंको प्राप्तहुये२२ अभिभूनाम काशीकाराजा काशीके अनेकशूर बीरोंसमेत युद्धमें बसुदान के पुत्रके हाथसे मारागया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा२३।२४युद्धमेंसैकड़ों शूरबीरोंको मारकर हमारे बीरोंके हाथसेमारेगये और पांचालदेशी मित्रवर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्यकेहाथसे यमलोकको भेजेगये२५।२६शूरबीरोंमें प्रधान शिखंडीका पुत्रक्षत्रदेवआपके पौत्र लक्ष्मणके हाथसे मारागया चित्रवर्मा और सुचित्र महारथीमहाबली दोनों पितापुत्र युद्धमें घूमतेहुये महावीरद्रोणाचार्य केहाथसे मारेगये२७हेमहाराज जैसेकि पर्वमें समुद्रशांतीको पाताहै उसी प्रकार वार्धक्षेमीने शस्त्रोंकेनाशहोने पर परमशांती कोपाया२८ हेराजा शस्त्रधारी युद्धमें श्रेष्ठ सेनाविन्दुकापुत्र कौरवेन्द्र बाल्हीकके हाथसेमारागयाऔरचंदेरीदेशियोंमें अत्यंत उत्तमरथीधृष्टकेतु२९।३० कठिनकर्मको करके यमलोकको गया इसीप्रकार बड़ाबीर सत्यधृती युद्धमेंबहुतोंको नष्टकरके ३१पांडवोंके निमित्त पराक्रम करनेवाला यमकेलोककोगया वहकौरवोंमें श्रेष्ठ सेनाबिन्दुभी युद्धमें अनेकोंको मारकर कालबशहुआ ३२ फिर शिशुपालका पुत्र राजासुकेतु युद्ध में कठिनकर्मी होकर द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ३३ इस रीतिसे पराक्रमी सत्यधृती बीरमदिराश्व और महाबली सूर्य्यदत्त द्रोणाचार्य्यके शायकोंसे मारेगये३४ और युद्धकर्त्तापराक्रमी श्रेणीमान् कठिन कर्मकरके मारागया३५ इसी प्रकार युद्धमें पराक्रमी परमअस्त्रज्ञ राजामगधभी भीष्मजीके हाथसे मारागया और वह शत्रुहन्ता अब पड़ाहुआ सोताहै ३६ और विराटके पुत्र महारथी शंख और उत्तरदोनों बड़े कर्मको करके यमलोकको सिधारे ३७ और बसुवान्युद्धमें कठिन कर्मको करताहुआ पराक्रम करकेद्रोणा-

चार्य्यकेहाथसेमारागया ३८ हेराजाजिसको तुमपूछतेहो उसद्रोणा-चार्य्यने पराक्रम करके पांडवोंके अनेक महारथीमारे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः६॥

सातवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय प्रधान पुरुषोंका नाश होजानेसे उसमरने से शेषबची हुई अपनी सेनाको नहीं देखताहूं १ मेरे प्रयोजनसे मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ भीष्म और द्रोणाचार्य्यको सुनकर जीवनको मैं नहीं चाहताहूं २ मैंयुद्धको शोभित करनेवाले मरेहुये कर्णको नहींशोचताहूं जिस-की भुजाओंका पराक्रम दशहजार हाथी काथा३ हेसंजय इस हेतु सेजैसेकि मेरी सेनाके मरेहुओंका तुमने बर्णनकिया वैसेही यहभी कहोकि मेरीसेनामें कौन२ जीवताहै४ अब आपके बर्णन कियेहुये इनबड़े२ शूरबीरोंके मरजानेसे शेष बचेहुये भी मरोंकेसदृश मुझको जानपड़तेहैं ५ संजय बोले हेराजा ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने जिसकोअपने उत्तम दिव्य अस्त्रसमर्पण करदिये ६ वह महारथी कर्मकर्त्ता हस्त लाघव करनेवाला दृढ़धनुष बाणोंसे युक्त पराक्रमी वेगवान् तेरेनिमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अचल होकर बिद्य-मान है ७ यह आनर्त्त देश बासी हृदिकका पुत्र यादवोंमें श्रेष्ठ महा-रथी भोजबंशी कृतबर्मा आपकेही निमित्त युद्धकी इच्छाकरने वाला अभी बिद्यमान है ८ युद्धमें दुराधर्ष आपके पुत्रों का पूर्ब सेनापति शल्य जो अपना बचन सत्य करनेको अपने भानजे पांडवोंकोत्याग कर ६ जिसने युधिष्ठिरके आगे युद्धमें कर्णके पराक्रमके नाशकरने की प्रतिज्ञाको पूर्णकिया वह अजेय इन्द्रके समान पराक्रमी आपके निमित्त लड़नेकी इच्छा करनेवाला नियत है १० और अपने कुल समेत राजागान्धार आजानेय, सिन्धदेशी, पर्बती काम्बोजदेशी सिंधी बनायुजबदीज इत्यादि ११ अनेकप्रकारके घोड़ों समेत तेरे लियेयुद्धाकांक्षी बर्त्तमानहै १२ हे कौरवेन्द्र राजाकैकेयका पुत्रमहा

रथी उत्तम घोड़ों समेत पताका युक्तरथपर चढ़कर आपके निमित्त युद्धका अभिलाषी अभीवर्त्त मानहै १३ इसीप्रकार कौरवोंमें बड़ा बीर पुरमित्रनाम आपका पुत्र अग्नि और सूर्य्यके वर्णरथ पर सवारहोकर ऐसा वर्त्त मानहै जैसे कि बादलोंसे रहितस्वच्छ आकाश में सूर्य्य प्रकाशमान होताहै १४ भाइयोंमें नियतदुर्य्योधन सिंहके समान स्वभाव वाला युद्धाभिलाषी सुवर्ण जटित रथकी सवारीमें नियतहै १५ वह पुरुषोंमें बड़ाबीर सुवर्ण जटित कवचधारी कमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्निके समान तुल्य राजाओंमें ऐसा शोभायमान हुआ १६ जैसेकि बादलोंमें सूर्य्य का प्रकाशहोताहै इसी प्रकार प्रसन्न चित्त युद्धाभिलाषी ढालतलवार धारण किये आपके पुत्रसुषेण, चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनोंनियतहैं १७ हेभरतर्षभ शीलवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्रभोजी राजकुमार जरासन्धका प्रथम पुत्र अदृढ़ चित्रायुध श्रुतवर्मा जय शल्य सत्यव्रत दुःशल यह सब नरोत्तम सेना समेत नियतहैं १८ और प्रत्येक युद्धमें शत्रुओंका हन्ता शूरोंमें प्रतिष्ठित कैतवोंका राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले १९ और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीर श्रुतायु धृतायु चित्राङ्गद और चित्रसेन भी अभी युद्धमेंनियत हैं २० यह सब युद्धाभिलाषी प्रहार कर्त्ता प्रतिष्ठावान् सत्य प्रतिज्ञ नरोत्तम नियतहैं और कर्णका पुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्ध करनेका उत्सुकभी अभी नियतहै २१ और कर्णकेदूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्त लाघवी महाबलीहैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीरोंके बंधेहुये व्यूहमें वर्त्त मानहैं वह भी साधारण अल्प पराक्रमियोंसे कठिनता पूर्वक विजय होनेवालेहैं २२ हे राजा इनअनेक असंख्य प्रभाववाले मुख्य २ बीरोंसे संयुक्तकौरवोंका राजा दुर्य्योधनहाथियोंके समूहोंके बीच महेन्द्रके समान बिजयकरनेके निमित्तउपस्थित है २३ धृतराष्ट्र बोले कि हमारे और पांडवोंके जो शूरबीर शेष बचे हुये जीवतेहैं उनका तुमने वर्णन किया इसको सुनकर मुझकोबड़ा शोकहोताहै परन्तु जो होनहारहै वह मिट नहींसक्ती २४ वैशंपायन

बोले कि इस रीतिसे बचनों को कहताहुआ अम्बिकाका पुत्र धृत-राष्ट्र अपनी उस सेनाको जिसके बड़े २ बीर मारेगये और नाशको प्राप्तहुये उसमें से कुछशेष बचेहुये सुनकर २५ दुःखसे ब्याकुल होकर महामोह के बशीभूत हुआ और मोहित होकर बोला कि हे संजय एक मुहूर्त ठहरो २६ हे तात इस बड़ीअप्रियबार्त्ताको सुनकर मेराचित्त ब्याकुलहै और मैं अंगोंसे भी शिथिल होगयाहूं २७ वह अम्बिका सुतधृतराष्ट्र ऐसे बचनकोकहकर भ्रान्तिसेयुक्तहोगया२८॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्ब्बणिसप्तमोऽध्यायः७ ॥

आठवां अध्याय॥

हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बैशंपायनजी युद्धमें कर्ण को मृतक औरपुत्रों को नियत बर्त्तमान सुनकर उस महा ब्याकुल राजा धृतराष्ट्रनेक्या कहा १ पुत्रकी आपत्तियोंसे उत्पन्नहोनेवाले महाकष्टको प्राप्तहोकर जो २ बर्णन किया उसको मुझसे ब्यौरेवार कहिये २ बैशंपायन बोले हे महाराज उस कर्णके मरने को सुनकर जो कि श्रद्धाके अयोग्य और जीवोंके अपूर्ब मोहका करनेवाला महा भयानक था जिस प्रकार कि मेरुपर्ब्वतका चलायमान होना ३ और जैसेभार्गव परशुरामजीका अनुचित मोह और जैसेकि शत्रुओंके भयकारीइन्द्र देवताकी पराजय ४ और जैसे महातेजस्वी सूर्य्यका स्वर्गसे पृथ्वी पर गिरना और जैसे अबिनाशी समुद्रका जल सूख जाना बुद्धिसे बाहर अर्थात् असंभवहै ५ और जैसे पृथ्वी और आकाशकी नाश-कारक अपूर्ब्ब बायु और जैसे शुभाशुभ दोनों कर्मोंकी निष्फलता होय ६ उसी प्रकार राजाधृतराष्ट्र युद्धमें कर्णके मरजानेको बुद्धिसे बिचार कर और सेना नहीं है यहनिश्चय करके ७ दूसरे जीवोंका भी नाश होगा यह शोचकर शोकाग्निसे जलता हुआ ८ चित्तसे कम्पायमान ढीले अंग महादुःखी लम्बी दुःखकी श्वासालेनेवाला होकर हाय हाय शब्दको कहता बिलाप करनेलगा ९ धृतराष्ट्र बोले हे संजय सिंह और हाथीकेसमान पराक्रमी वृषभकेसे स्कन्धे

वाला शीघ्रगामी महातेजस्वी शूरबीर कर्ण घूमनेलगा १० जो उत्तम बज्रके समान दृढ़ देह महातरुण अपने शत्रु महाइन्द्रके भी युद्धमें बली बद्ध के समान नहीं लौटता ११ और युद्धमें जिसके धनुषकी टंकारको सुनकर और बाणोंको बर्षाको देखकर युद्धमें रथ घोड़े हाथी और मनुष्य नहीं ठहरसक्तेथे १२ और दुर्य्योधनने शत्रुओंके विजयकी इच्छासे जिस महाबाहुकी शरण लेकर पांडवोंसे शत्रुताकरी १३ वह असह्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमकर्ण युद्धमें अर्जुनके हाथसे कैसेमारागया १४ जिसअहंकारीने अपनेही भुजबलसे श्रीकृष्ण अर्जुन वा यादव और अन्य किसी क्षत्रीको ध्यान नहीं किया अर्थात् किसीको कुछमाल नहींजाना १५ अर्थात् यही कहताथाकि मैं अकेलाही युद्धमें उन अजेय शार्ङ्ग धन्वा और गांडीव धनुषधारीको एक साथही उनको दिव्य रथसे गिराऊंगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभसे बिरुमर्णाचिन्तासे अधोमुख राज्यके लोभी रोगग्रस्त दुर्य्योधनसे बारंबार बर्णनकरी १६।१७ और उस कर्णने पूर्ब्ब समयमें काम्बोजदेशी अवन्तदेशी कैकयदेशीगान्धार मद्रक मत्स्य त्रिगर्त्त तंगण १८ शक पांचाल बिदेह काशी कोशल सुम्हल अंग बंग निषाद पुंड्र चारक १९ वत्स, कलिंग, तरल अश्मक और ऋषिक देशियोंको भी युद्धमें जीतकर बलिभृत् अर्थात् कर देने वाला करदिया २० वह रथियोंमें श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रोंकाज्ञातामहातेजस्वीधर्मरूपपरमअस्त्रज्ञ अत्यन्ततीक्ष्णधारकंकपक्षसेयुक्तसैकड़ोंबाणों कीवर्षासे दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये सेनाका रक्षक सूर्य्यकापुत्र कर्ण कैसे २ युद्धोंको करके पांडव अर्जुनके हाथसे मारागया २१।२२ औरजैसे कि देवताओंमें इन्द्रबर्षा करनेवालाहै उसीप्रकार कर्णभी धनकी वृष्टिसे मनुष्यों पर बर्षा करने वालाहै इन दोनों के सिवाय लोकमें किसी तीसरे बर्षाकरनेवाले को नहीं सुनतेहैं जैसे घोड़ों में उच्चैःश्रवा राजाओंमें कुबेर २३। २४ देवताओंमें महाइन्द्र उत्तम है इसीप्रकार शस्त्रप्रहार करनेमें पृथ्वीपर कर्णसब से उत्तमहै ऐसे समर्थ पराक्रमसे शोभित शूरवीर राजाओंसे अजेयकर्णने २५ दुर्य्यो

धनकी वृद्धिकेलिये संपूर्णपृथ्वीको बिजय किया २६ और जिसको प्राप्तहोकर मगधके राजा जरासंधनेयादव और कौरवों के सिवाय अन्यसबराजाओंको आधीनकरलिया उसकर्णको द्वैरथयुद्धमें अर्जुनके हाथसेमराहुआ सुनकरमें शोकसमुद्रमें ऐसेडूबरहाहूं जैसेकिसमुद्रमें टूटीनौकाडूबतीहै २७ उसधनकीवृष्टि करनेवाले और रथियोंमेंश्रेष्ठ कर्णकोद्वैरथयुद्धमें मराहुआसुनकर २८ मैंशोकसमुद्रमें ऐसेडूबनेको होरहाहूं जैसेकिसमुद्रमें बिना नौकाके मनुष्यहोताहै हे संजय जो मैं ऐसे २ दुःखोंसेभी नहींमरूंगा २६ तोनिश्चय करकेमेरा हृदयबज्र सेभीकठोर शोकचिन्तासे फटजानेके योग्यहै और हेसूत संजयज्ञात वाले और मित्रोंकीइस पराजयको सुनकर ३० मेरेसिवाय कौन सा पुरुषहै जो प्राणोंकोनहीं त्यागकरे मैं बिषखाना अग्निमेंप्रवेशहोना वा पर्व्वतके ऊपरसे गिरना चाहताहूं परन्तु मैं इन कठिनदुःखोंके सहनेको समर्थनहीं होसक्ता ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रवाक्ये अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय॥

संजयबोलेकि अबसन्तलोग तुमकोलक्ष्मीसे कुलसेयशसे तपसे और शास्त्रज्ञतासे नहुषकेपुत्र ययातिके समानमानतेहैं १ हे राजा शास्त्रमेंतुम महर्षिके समान कृतकृत्यहो आपअपनेको सावधानकरो और व्याकुलताको त्यागो २ धृतराष्ट्र बोले मैं दैवकोश्रेष्ठ मानताहूं निरर्थक उपायकरनेको धिक्कारहै जहां कि शालबृक्षके समान उन्नत महाबलीकर्ण युद्धमें मारागया ३ वह महारथी युधिष्ठिरकी सेना और पांचालोंके रथसमूहोंको मारकर और बाणोंकी बर्षासे सबदिशाओंकोसंतप्त करताहुआ ४ जैसेकि बज्रधारीइन्द्र असुरोंको मोहित करताहै उसीप्रकार युद्धमें पांडवोंको मोहितकरके इसप्रकारसे मृतक होकर सोताहै जैसे कि वायुसेटूटाहुआ बृक्षपृथ्वीपर पड़ाहोता है ५ मैं शोकसमुद्रके अन्तको नहींदेखताहूं मेरीचिन्ताकीवृद्धि और मरनेकी इच्छाभी उत्पन्नहोतीहै ६ हेसंजय मैं कर्णके मरनेको और

अर्जुनकी बिजयको सुनकर कर्णके मारेजानेको श्रद्धा बिश्वास से अयोग्य जानताहूं ७ निश्चयकरके मेराहृदय बज्रके समान दुःखसे फटनेवालाहै जो पुरुषोत्तम कर्णको मृतक सुनकरभो नहींफटताहै ८ पूर्वसमयमें देबताओंनेमेरी आयुबहुतबड़ी बिचारकरीहै इस हेतुसे कि कर्णकोभी मृतक सुनकर अभी पृथ्वीपर महादुःखी जीवता हुआ बर्त्तमानहूं ६ हेसंजयमुझ सुहृदजनों से रहितके इसजीवनको धिक्कारहै जिससेकि मैंनेइस दुर्दशाको पाया १० में निर्बुद्धी सब के शोचके योग्य होकर दुःखीरहूंगा औरपर्वकालमें सबलोकमें मान्य होकर ११ शत्रुओंसे तुच्छकिया हुआमैं कैसेकैसे जीवनको समर्थ हूंगा हे सूतसंजय मैंनेभीष्म द्रोणाचार्य्यके मरणसे उत्पन्नहोनेवाले शोकसे महादुःखदायी आपत्तिकोपायाहै १२ युद्धमें कर्णके मरनेपर भीष्म द्रोणाचार्य्य और महात्मा कर्णके मरने से मैं शेष बचीहुई सेनाको नहींदेखताहूं १३ क्योंकि वह शूरबीर कर्णमेरे पुत्रोंको युद्ध रूपीनदीमें नौकारूप होकर बीरोंकी लड़ाईमें अनेकशायकोंको बरसाताहुआ मारागया १४ उसपुरुषोत्तम के बिनामेरा जीवन वृथाहै निश्चय करके शायकोंसे पीड़ित होकर अतिरथीकर्णरथसे ऐसेगिर पड़ा १५ जैसेकि बज्रके पातसे पर्व्वतका टूटाहुआ शिखरपृथ्वीपर गिरताहै निश्चयकरके वहरुधिरमें भराहुआ पृथ्वीको शोभित करके ऐसासोताहै जैसेकिमतवालेहाथीसे गिरायाहुआ हाथीहोताहैयही धृतराष्ट्र के पुत्रकाबलथा जिससे कि पांडवोंको बड़ाभयया १६।१७ वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्जुनकेहाथ से मारागयाहाय वह धनुषधारी मित्रोंका निर्भय करनेवाला बीरकर्ण माराहुआ ऐसा सोताहै१८ जैसे कि देबताओंके इन्द्रका घातकियाहुआपर्व्वत होता है जैसे कि पंगु मनुष्यका मार्ग चलना और कंगाल निर्धनकी धनकी इच्छा करना वृथाहै १६ इसीप्रकार दुर्योधनके मनकी इच्छा कठिनतासे प्राप्तहोनेकेयोग्य है जैसे कि जलके अंबुकण श्वासके दुःखसे उल्लंघनके योग्यहै अहंकारी नीच दुःखी मन और पराक्रम हीन २०। २१ क्या मेरापुत्र दुश्शासन भी मारागया हेतात क्या

उसने युद्धमें भयकारी कर्मोंको नहीं किया २२ जैसे कि अन्यक्षत्री मारेगये उसीप्रकार कहीं शूरबीर दुर्योधन तो नहीं मारागया युधिष्ठिर सदैव कहतारहा कि युद्ध मतकरो २३ परन्तु दुर्योधनने उसको ऐसे नहीं स्वीकारकिया जैसे कि अज्ञानमनुष्य नीरोग करनेवाली औषधोंको नहीं अंगीकार करताहै बाण सय्यापर सोनेवाले महात्मा भीष्मजीने जलकी इच्छाकरी २४ तब उस अर्जुनने पृथ्वीके तलको तोड़ा उस अर्जुनके हाथसे उत्पन्नहुई जलधारा को देखकर २५ उस महाबाहुने कहा कि हेतात पांडवोंके साथ सन्धिकर निश्चय करके सन्धिसे सुखहोगा और तुम्हारा युद्ध मेरेही अन्त तकहोय २६ तुम सजातियों समेत प्रीतिपूर्व्वक पृथ्वीको भोगो परन्तु उसने न माना और उसके बचनको शोचताहै २७ हेसंजय वह दूरंदेशी बचन अब आगे दिखाईदेते हैं और मैं मन्त्री वा पुत्रों से रहित हुआ २८ और द्यूत खेलनेसे ऐसे बंधनमें पड़ा जैसे कि परकेंच पक्षीहोताहै हेसंजय जैसे कि अत्यन्त प्रसन्न बालक पक्षी को पकड़कर पक्षकाटकर २९ मारतेहुये छोड़देतेहैं और वह अपने पक्ष टूटजानेसे चलनहीं सक्ताहै ३० इसीप्रकार सब मनोरथों से रहित और बांधव आदिसे पृथक् मैंभी टूटे पक्षवाले पक्षीके समान वर्त्तमानहूं ३१ महादुःखी शत्रुके आधीन होकर मैं किसदशा को पहुंचूंगा ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रशोकेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि इसरीतिसे महादुःखी व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र इसरीतिसे बिलाप करके फिर संजयसे कहनेलगे १ कि जिसने सबकाम्बोज अंबष्ठ गांधार और विदेहोंको कैकय लोगों समेत बिजयकिया और युद्धमेंप्रयोजनके निमित्त बिजय कराके २ जिसने दुर्योधनकेलिये पृथ्वीको बिजयकिया वह बाहुशाली शूरबीर शल्य युद्धमें पांडवोंके हाथसे बिजय कियागया ३ हे संजय उसबड़े धनुष-

सन्तोषहीके अर्थ होते हैं उसीप्रकार दूसरे प्रकारसे बिचारकिया हुआ कर्म और ही प्रकारसे होताहै दैवबड़ा बलवान्है और कालधारी कर्णके मरनेके पीछे युद्धमें कौन २ से बीरसन्मुख हुये वह मुझसेकहो ४ कहीं अकेलाही युद्ध करताहुआ पांडवोंके हाथसे तो नहीं मारागया हेतात जैसे वहबीर मारागया उसका वृत्तांत तुमने प्रथमही कहा सबशस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ शिखण्डीने अपने सन्मुख न होनेवाले भीष्मपितामहको युद्धमें उत्तम २ बाणोंसे मारा इसी प्रकार धृष्टद्युम्नने युद्धमें शस्त्र त्यागनेवाले महाधनुषधारी योगाभ्यासमें नियत द्रोणाचार्य्यको बहुत बाणोंसे घायलकिया ७हे संजय वह द्रोणाचार्य्य खड्गकेद्वारा धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये यहदोनों बीर समयपाकर छलसेही मारेगये ८ मैंने इनगिरायेहुये भीष्मको सुना मैं निश्चय जानताहूं कि आप बज्रधारी इन्द्रभी युद्धमें भीष्म और द्रोणाचार्य्यको नहीं मारसक्ता था जब कि यहदोनों न्यायके अनुसार युद्धकरें मैं इसबातको सत्य २ कहताहूं कियुद्धमेंबड़ेदिव्य अस्त्रोंके छोड़नेवाले इन्द्रके समान बीर कर्णको कैसे बहुतोंने पकड़ा इन्द्रनेबिजलीकेसमान प्रकाशित दिव्य सुवर्णसेअलंकृत६।१०।११ शत्रुओंके मारनेवाली शक्ती जिसको कुंडलों के बदलेमें दी और जिसका बाण सर्पमुख दिव्य और सुवर्णसे जटित १२ शत्रुओंका मारनेवाला था वह चन्दनसे चर्चित होकर पृथ्वीपर सोताहै जिसने भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि बड़े २ बीर महारथियोंका भी अपमान किया और श्रीपरशुरामजीसे महाघोर ब्रह्मास्त्रको सीखा औरजिस महाबाहुने द्रोणाचार्य्य आदिको मुख मुड़ाहुआ बाणोंसे पीड़ित देख कर१३।१४अभिमन्युके धनुषकोअपने तीक्ष्ण बाणोंसेकाटा और जिस प्रकार दशहज़ार हाथीके १५ समानबली बज्रके समान बेगवान् दुराधर्ष भीमसेनको अकस्मात् रथसे विरथकरके हँसताहुआ गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे सहदेवको बिजय करके १६ धर्म और कृपालुता केध्यानसे बिरथकरके नहींमारा जिसने बिजयाभिलाषी महामायावी १७ राक्षसोंके राजा घटोत्कचको इन्द्रकी शक्तीसे मारा इतने

दिनतक उससे भयभीत अर्जुनने १८ युद्धमें जिसके द्वैरथ संग्राम को प्राप्त नहींकिया वह बीर पुरुष कैसे युद्धमें मारागया जिसका न रथटूटा न धनुषटूटा और अस्त्रोंकाभी नाशनहुआ वहकर्णशत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया उसबड़े धनुषके चढ़ानेवाले घोरबाण और दिब्य अस्त्रोंको युद्धमें छोड़नेवाले सिंहकेसमान बेगवान् पुरुषोत्तम कर्णके बिजयकरनेको कौन समर्थ है१९। २० । २१ उसका धनुष-अवश्यटूटा वा रथ पृथ्वी परगिरा अथवा शस्त्रों का नाश होगया था जिससे कि उसकोमराहुआ मुझसे बर्णनकरताहै२२उसके नाश होनेसेमैं अन्य सबकोभी नाशमान देखताहूं उसकाप्रणथा कि जब तक अर्जुनकोनहीं मारलूंगा तबतकनतो अपने चरणों को धोऊंगा न युद्धमें पैदल होकर चलूंगा जिसमहात्माका यहमहाघोर प्रणथा किजिसके भयसेभयभीतधर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिरने२३।२४तेरह बर्षतक सदैव आनन्दसे जीवनको नहींपाया जिस पराक्रमी महा-त्मा के पराक्रममें मेरेपुत्रने आश्रयलेकर पांडवोंकी स्त्री द्रौपदीको बड़ेबलसे सभामें बुलाया वहांभी सभाके मध्यमें पांडवों के देखते हुये २५ । २६ कौरवोंके सन्मुख द्रौपदीसेबोलाहे दासकी भार्य्या कृष्णा तेरे पतिनहींहैं किन्तु सबकेसब षंडतिल अर्थात्थोथे तिलके समानहैं२७हेसुन्दरीतू दूसरेपतिकेपास बर्त्तमानहोजिसकर्णनेसभा के मध्यमें ऐसे२असभ्य और रूखेदुर्बचन द्रौपदीसेकहे वह शत्रुओं के हाथसे कैसेमारागया२८उसने यहभी कहाथा कि हेदुर्य्योधनजो युद्धमें प्रशंसनीय भीष्मऔर युद्ध दुर्मद द्रोणाचार्य्य पक्षपात करके कुन्तीके पुत्रोंको नहींमारेंगे तोमैंसबको मारडालूंगा तू अपनेमनकी चिन्ताको दूरकरदे२९।३०गांडीव धनुष और अबिनाशीदोनोंतूणीर इसउत्तम चन्दनसेलिप्त सन्मुख दौड़नेवाले मेरेबाणका क्या कर-सक्तेहैं ३१ वहमहादोष युक्तकर्ण निश्चय करके अर्जुनके हाथसे कैसेमारागया गांडीवधनुषसे छूटेहुये बाणोंके उदग्रस्पर्शकी चिन्ता रहित द्रौपदीसे यहकहतेहुयेकि हे कृष्णातू बिनापतिकीहै जिसकर्ण ने पांडवोंकोदेखा और अपनेभुजाका आश्रयलेकर जिसको श्रीसमेत

सपुत्र पांडवोंसे जराभी भयनहींहुआ हे संजय उसकामारना देव-
ताओं समेत इन्द्रसेभी कठिनथा ३२।३३।३४हेतात उसकोसन्मुख
दौड़नेवाले पांडवलोग कैसेमारसक्तेहैं धनुषज्याके स्पर्श करनेवाले
अथवा हस्तत्राणकेद्वारा पकड़नेवाले कोई धनुषधारी मनुष्यकर्णके
सन्मुख होनेको समर्थ नहीं हैं पृथ्वीचन्द्र और सूर्य्यचाहो अपनी
किरणोंसेरहितहोजांय३५।३६परन्तु युद्धमेंमुखनमोड़नेवाले पुरुषो-
त्तमका मरणनहींहै जिसके कारण प्रारब्धहीन दुर्बुद्धी दुर्योधन ने
सदैव भाईदुश्शासन समेत ३७ बासुदेवजीके उत्तरहीको अंगीकार
किया मैंयह जानताहूं कि वहमेरापुत्र दुर्योधन बड़ेदोषयुक्त कर्णको
पराजय और दुश्शासनको मराहुआ ३८ देखकर शोचको करताहै
हे संजय द्वैरथयुद्धमें अर्जुनके हाथसे कर्णको मराहुआ सुनकर ३९
और बिजय करनेवाले पांडवोंको देखकर दुर्योधनने क्याकहा वा
दुर्मर्षण और वृषसेनको युद्धमें मृतकदेखकर ४० और अपनीसेना
को महारथियोंसे घायल होकर भागतीहुई देखकर और भागनेकी
इच्छावान् मुखमोड़नेवाले राजाओं और रथियोंको घायल देखकर
शोचकरताहै ४१ अथवा दुर्योधनने उस शासनाके अयोग्यपलाय
मान इन्द्रियोंके बशीभूत ४२ सेनाको उत्साहसे रहित देखकरक्या
कहा और जिनकेबहुत मनुष्य मारेगये उनराजाओंसे घिरेहुयेआप
शत्रुता करनेवाले दुर्योधनने क्याकहा और युद्धमें रुधिरपीनेवाले
भीमसेनके हाथसेमरेहुये भाई दुश्शासनको देखकर क्याकहा और
सभामें जो राजा गान्धारकेसन्मुख कहाथा कि कर्ण युद्धमें अर्जुनको
अवश्य मारेगा उस कर्णके मरनेपर क्याकहा ४३।४४।४५पूर्व्व
समयमें सौबलके पुत्र शकुनीने द्यूतरचकर पांडवोंको ठगकर ४६
कर्णके मरनेपर क्याकहा यादवोंमें महारथी हार्दिक्यके पुत्र बड़ेधनु
षधारी कृतबर्माने ४७ कर्णको मृतक देखकर क्या कहा क्षत्रीवैश्य
धनुर्वेदके जाननेके आकांक्षी जिस बुद्धिमान् अश्वत्थामाकी शिक्षाको
प्राप्तकरते हैं उस बड़े प्रतापी यशस्वी तरुण बय वाले धनुर्धारी
अश्वत्थामा ने कर्णके मरने पर क्या कहा ४८।४९ जो गौतमकेपुत्र

महा धनुर्धारी धनुर्वेदके आचार्य्य कृपाचार्य्य हैं हेतात उन्होंने कर्णके मरने पर क्या कहा और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेशाधिपति पराक्रमी युद्धमें शोभायमान राजा शल्यने अपने सारथीपने में कर्णको मृतक देखकर क्याकहा ५० । ५१ । ५२ इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारीराजाओंने युद्धमें कर्णको मरा देखकर क्या कहा औरजो२ इस पृथ्वीके राजा यहां युद्ध करनेको आये उनसबोंने ५३ कर्णको माहुआ देखकरकौन २से बचनकहे हेसंजय उस रथियोंमें श्रेष्ठनरोत्तमबीर कर्णके मरने पर ५४ कौन २ सेनाके सेनाध्यक्ष हुये और रथियोंमें श्रेष्ठ मद्रदेशका राजा शल्य कर्णके सारथ्य कर्ममें कैसेनियतकिया गया यह सबवृत्तान्त मुझसे ब्योरे समेत बर्णनकरो ५५ युद्धकरने वाले कर्णके दाहिने रथके चक्रको किसने रक्षा करी और बायें चक्रकी और पृष्ठभागकी किस २ने रक्षाकरी ५६ किसने कर्णका संग न छोड़ा और कौनसेनीच भागगये और तुम्हारे भागजानेसे महारथी कर्णकैसे मारागया ५७ और जिस प्रकार बादलोंसे जल कीधारा गिरतीहैं उसी प्रकार बाणोंकी बर्षाकरते हुये महारथीशूर बीर पांडव कैसे सन्मुख हुये ५८ हे संजय उसयुद्धमें बाणोंमें श्रेष्ठ कर्णका वह दिब्य बाण कैसे निष्फल हुआ उसको मुझसेकहो ५९ प्रधान पुरुषके नहोनेसे मैं अपनी शेषबचीहुई सेनाको नहीं देखता हूं ६० उनबीर धनुर्धारी मेरेलिये जीवन के त्यागने वाले भीष्म और द्रोणाचार्य्य को मृतक देखकर अबमेरा जीवना निरर्थकहै ६१ मैं पांडवोंके हाथसे मरेहुये कर्णको बारंबार स्मरण करके शान्तीको नहींपाताहूं जिसकी भुजाओंका बलदश हजारहाथियोंके समान था ६२ हे संजय द्रोणाचार्य्य के मरनेपर युद्धमें शत्रुओं के हाथसे नरोत्तम कौरवों का जोवृत्तान्त हुआ वह मुझसे कहो ६३ और जैसे कर्ण कुन्तीके पुत्रों से युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्धमें जैसे मारागया उसकोभी ठीक२ कहो ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

संजयबोले हेभरतबंशी महाराज उस दिनबड़े धनुर्धारी द्रोणा-चार्यकेमरने और महारथी अश्वत्थामाके निष्फल संकल्प करने १ औरकौरवोंकी समुद्ररूपी सेनाके भागनेपर अर्जुन अपनीसेनाको व्यूहित करके भाइयों समेत युद्धमें नियतहूआ २ उस समय आपके पुत्रने उससन्मुख नियत होनेवाले अर्जुनको जानकर अपनीभाग-ती हुईसेनाको भागनेसे रोंका ३ और अपनेभुजबलसे सेनाकोरोंक कर दुर्योधन पांडवोंके साथ बिलम्ब तक युद्धकरके ४ संध्यासमय जानकर विजयी और विलम्बतक बिचारनेवाले शत्रुओंसमेत अ-पनी सेनाको विश्राम कराया ५ सेनाके विश्रामकोकर अपने डेरेमें पहुंचकर कौरवोंने परस्परकी निर्विघ्नताका बिचारकिया ६ बहुमू-ल्यआस्तर्ण वा शय्या और आसनोंपर बैठेहुये उन लोगोंनेऐसेसला-हकरी जैसेकि देवतालोग सुखशय्याओं पर ७बैठेहुये सलाहोंको कर तेहैं इसकेपीछे राजा दुर्योधन प्यार और मृदुभाषणसे उन धनुषधा-रियोंके सन्मुखहोकर समयके अनुसार इन वचनोंको बोला किहेबुद्धि मानोंमेंश्रेष्ठ तुम सब अपनी अपनी रायको शीघ्रता सेकहो बिलम्ब मतकरो हेराजालोगो ऐसी दशामें क्याकरना उचितहै और कौनसी बातअवश्य करनेके योग्यहै ८।९ संजयनेकहा कि इसप्रकार महारा जदुर्योधनके कहनेपर सिंहासनोंपर वर्त्तमान युद्धाभिलाषी नरो त्तमोंने अनेक प्रकारकी चेष्टाओंको किया १० युद्धमें प्राणोंकेहोम करनेके अभिलाषी उन लोगोंकी चेष्टाओंको देखकर और बालसूर्य केसमान तेजस्वी राजाके स्वरूपको देखकर ११ शास्त्रोंके ज्ञाता बुद्धिके स्वामी बार्त्तालापके जाननेवाले अश्वत्थामाजीने वर्णनकरना प्रारंभकिया कि स्वामीकीभक्ति और देशकालका पहिचानना और बल वा नीतिसे प्रयोजनकी सिद्ध करने वाले १२ उपाय पंडितोंने कहेहैं वह उपाय दैवके आधीनहैं हमारे जोमहारथीवीर देवताओं के समान १३ नीतिमान भक्तिमान और सावधानतामें योग्यथे वहतो मारेगये परन्तु हमलोगोंको बिजय से निराश होनाभीनचा-

हिये १४ इसलोक में अच्छीरीतिसे कियेहुये नीतिआदि सबअर्थों से दैवभी अनुकूल किया जाता है हे राजा वह लोग हम सबों में अत्यंत श्रेष्ठ गुणोंसे भरेहुये १५ कर्णकोही सेनापतिके अधिकार पर अभिषेक करावेंगे और कर्णको सेनापति करके शत्रुओंको मारेंगे १६ निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद यमराजके समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के बिजय करनेको इन्द्रकेहीसमानहै १७ हे राजा अश्वत्थामाके इस बचन को सुनकर आपके पुत्रने कर्णमें यहबड़ा भरोसाकिया १८ कि भीष्म और द्रोणाचार्य्यके मरनेपर यही पांडवोंको मारेगा इसआ-शाको हृदयमें धारण करके बड़ा बिश्वास युक्तहोकर १९ प्रसन्न चित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कारसे युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करने वाले बचनको सुनकर २० अपने मनको अच्छीरीतिसे दृढ़करके अपनी भुजाओंके बलमें रक्षित होकर कर्णसे यह बचन बोला २१ कि हेकर्णमैं तेरे पराक्रमको और अपने ऊपर जोतेरी प्रीतिहैउसको अच्छी रीतिसे जानताहूं हेमहाबाहो मैंभी तुमसे सुन्दर फलयुक्त बचनकहूंगा२२मेरे सेनापति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये उनसेभी अधिक आप पराक्रमी होकर सेनापतिहूजिये२३।२४ वह दोनों वृद्ध महा धनुषधारी अर्जुनसे मेलरखतेथे हेकर्ण मैंनेतेरे कहनेसे दोनोंकी बड़ीप्रतिष्ठा करीथी२५हेतात भीष्मजीने अपनेको बाबा समझकर बड़े युद्धमें दशों दिनतक पाण्डवोंकी रक्षाकरी २६ आपके शस्त्ररहित होनेपर शिखण्डीको आगेकरके अर्जुनके हाथ से भीष्म पितामह मारेगये २७ हेपुरुषोत्तम उस पुरुषसिंहके मरने और शरशय्यापर बिराजमान होनेपर तेरे कहनेसेद्रोणाचार्य्य संग्रा-ममेंसन्मुखहुये२८उन्होंनेभी अपना शिष्य जानकर पांडवोंकी रक्षा करी वह वृद्धभी शीघ्रतासेही धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये २९ इन दोनों प्रधान पुरुषोंके मरनेसे चिन्तायुक्तहोकरमैं तुझबड़े पराक्रमीके समान किसी शूरबीरको नहीं देखताहूं हमलोगोंके बीचमें आपही आदि मध्य और अन्तमें बिजय करनेको समर्थहो और जिसरीति

आपने सदैव मेराहित कियाहै ३१ उसीप्रकार आपबैलके स-
मान धुरके उठानेके योग्यहो मैं आपको सेनापतिके अधिकार पर
अभिषेक करूंगा ३२ जैसे कि देवताओंके सेनापति प्रभु अबिनाशी
स्वामिकार्त्तिकजी हैं उसी प्रकार आपमेरी सेनाकी रक्षाकरो ३३
जैसे कि महाइन्द्र युद्धमें दानवोंको मारताहै उसी प्रकार आपभी
हमारे शत्रुओंको मारिये तुमको सन्मुख देखकर महारथी पांडव
और पांचाल लोग ऐसे युद्धमें से भागेंगे जैसे कि बिष्णुजी को
देखकर दानव भागते हैं इस हेतुसे हे पुरुषोत्तम तुम इस बड़ी सेना
को अपनी रक्षामेंकरो ३५ आपको युद्धमें उपायकरताहुआ देखकर
मन्त्रियों समेत पांडव सृंजय और पांचालदेशी यह सबभागेंगे ३६
जैसे उदय हुआ सूर्य्य अपने तेजसे तपाता हुआ महाघोर अन्ध-
कारको बिध्वंस करताहै उसी प्रकार तुमभी शत्रुओंको तपाओ ३७
संजय बोले हेराजा आपके पुत्रकी यही आशा प्रबल हुई कि भीष्म
और द्रोण के मरनेपर यह कर्ण पांडवों को अवश्य मारेगा ३८
इस आशाको हृदयमें धरकर इसप्रकारकर्णसे बोलाहेकर्ण वह अ-
र्जुन तेरेसन्मुख युद्धकरनेकी इच्छानहीं करताहै ३९ कर्णबोलाहेगां-
धारीके पुत्र मैंने प्रथमही यह तुझसे कहाहै कि मैं पुत्र पौत्र और
श्रीकृष्णजी समेत सब पांडवोंको बिजय करूंगा ४० मैं निस्सन्देह
तेरासेनापति बनूंगा हे महाराज आपतय्यार हूजिये और पांडवोंको
बिजय कियाजानो ४१ संजय बोलेहे महाराज इसबातके सुनतेही
राजादुर्य्योधन अपने राजाओं समेत ऐसाउठा जिस प्रकारदेवता-
ओंसमेत इन्द्र उठताहै ४२ अर्थात् सेनापति बनानेकेलिये कर्णके
सत्कार करने को ऐसा उठाजैसेकि स्वामिकार्त्तिकके अभिषेककरा
नको देवताओं समेत इन्द्रउठाथा इसके पीछे बिजयाभिलाषी उन
सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्योधन था सुबर्ण के कलश
और अभिमंत्रित मृण्मयपात्र हाथी के दांतके पात्र गैंड़ेके सींगके
पात्र वा अन्य यज्ञपशुओंके दांतोंकेपात्र मणिमोतियोंसे आच्छादित
वा बहुतसी सुगन्धित द्रव्योंसे युक जलपूरित पात्र और गंधा-

क्षत आदिअभिषेककी बस्तुओंसे वेदोक्तमंत्रोंके द्वाराकर्णका अभिषेक कराया ४३ । ४४ । ४५ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और अंगीकारकिये हुये शूद्रोंने भी उस महात्मा कर्णको प्रसन्न किया जोकि शास्त्रोक्त बुद्धिकी श्रेष्ठरीति से इकट्ठे किये हुये सामानों समेत स्नान किये हुये रेशमी वस्त्रों के बिछौनों से युक्त तांबेके उत्तम आसन पर बिराजमानथा ४६ । ४७ हे राजेन्द्र फिर अभिषेक होजाने पर शत्रुहन्ता कर्णने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराया ४८ उस समयबन्दीजन और ब्राह्मणोंने उस पुरुषोत्तम से यह कहा कि तुम गोबिन्दजी आदिसब साथियों समेत पांडवोंको बिजय करो ४९ हेकर्ण तुमहमारी बिजयके निमित्त पांचालोंसमेत सब पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य्यबड़े अंधकारको दूर करताहै ५० आपके बाणोंको केशवजी समेत पांडव लोग देखनेकोभी ऐसे समर्थनहोंगे जैसे कि सूर्य्यकी प्रकाशितकिरणों के देखनेको उलूक पक्षी नहीं समर्थ होसक्ता है ५१ युद्धमें तुझशस्त्रधारी के सन्मुख पांडव नियत होनेको ऐसे समर्थ नहीं हैं जैसेकि महाइन्द्र के सन्मुख दैत्य दानव नियत नहीं होसक्ते ५२ अभिषेक कियाहुआ वह कर्णबड़े तेजसे दूसरे सूर्य्यके समानप्रकाशमान हुआ ५३ तबकालसे प्रेरित आपके पुत्रने कर्णको सेनापति के अधिकार परअभिषेक कराके अपनेको सिद्धमनोरथ समझा ५४ हे राजाबिजयी कर्णने भी सेनापति होकर सूर्य्योदयके समयसेना के तय्यार होनेकी आज्ञादी ५५ फिर वहां आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभितहुआ जैसे कि तारक असुरकेयुद्धमें देवताओं समेत स्वामिकार्त्तिकजी शोभित हुयेथे ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णाभिषेकेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोलेकि जबसूर्य्यकेपुत्र कर्णने सेनापति पदवीकोपाकर राजादुर्य्योधनसे भाईके समान मृदुभाषणको सुनके १ सूर्य्योदयके

समय असंख्यसेनाकी तैयारीकेलिये आज्ञादेकर क्या कामकिया हे संजय उसकोमुझे समझाके कहौ २ संजयबोले हे भरतर्षभ आपके पुत्रोंने कर्णके अभिप्रायको जानकर सेनाकी तैयारीके लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्द मंगलसूचक बाजेआगेचले ३ और पिछली रात्रिमें अकस्मात् आपकी सेनामें तैयारी करनेकाशब्द आधिक्यतासेहुआ४ इसकेपीछे अलंकृत उत्तमहाथीरथ मनुष्यपदातीघोड़े५ और शीघ्रता करनेवाले और परस्पर में बोलनेवाले शूरबीरों के महा कठिनशब्द आकाशतक व्याप्तहुये ६ इसकेपीछे श्वेत पताका और हंसकेवर्ण घोड़े सुबर्णपृष्ठी धनुष नागकुक्षीध्वजा ७ सैकड़ों तूणीरोंसे युक्त बाजूबन्द और कवचोंको धारण करनेवाले शतघ्नी किंकिणी शक्ति शूल और तोमरों से भरे हुये धनुषोंसेयुक्त निर्मल सूर्य्यकेसमान प्रकाशमान बायुके विपरीत होने से सन्मुख पताका वाले रथको सवारियोंसे८।६ और स्वर्णमयी जालोंसे अलंकृत शंख को बजाता स्वर्णमयी धनुषको हिलाताहुआ कर्णचला हे श्रेष्ठनरोत्तम वहां कौरवोंने उसबड़े धनुषधारी रथारूढ़सूर्य्यके समानप्रकाशित असह्य तेजसे अन्धकारको दूरकरतेहुये १०।११कर्णको देखकर किसीनेभी भीष्म द्रोणाचार्य्य और अन्य २ बीरोंके दुःखोंको नहीं माना १२ इसकेपीछे शंखध्वनिकेद्वारा शूरबीरोंको चैतन्य करतेहुये कर्णने कौरवोंकी बड़ीसेनाको आकर्षणकिया १३ इसरीतिसे महाधनुषधारी शत्रुसंतापी कर्ण मकरव्यूहको रचकर पांडवों के बिजय की इच्छासे सन्मुखचला १४ हेराजा उसमकरव्यूहके मुखपर तो कर्ण नियतहुआ नेत्रोंके समीप महारथी शकुनी और शूरबीरउलूक नियतहुये शिरपर अश्वत्थामा और ग्रीवापर सबसगेभाई और कटि भागपर बड़ी सेनासमेत आप राजादुर्योधन नियतहुआ१५।१६ और बामपादपर नारायण और गोपालनाम सेनासेयुक्त दुर्मद कृतवर्मा नियतहुआऔरबड़े धनुषधारी त्रिगर्त्त देशी सत्यपराक्रमी कृपाचार्य जी दक्षिणचरणके समीपनियतहुये१७।१८और मद्रदेशी बड़ीसेना समेत राजाशल्य बायें चरणके पीछे और हजाररथ और तीनसौ

हाथियोंसमेत सत्यसंकल्पसुषेणदक्षिणचरणकेपीछेहुआ १९।२० बड़ी सेनासमेत बड़ेपराक्रमी दोनोंभाई राजाचित्र और चित्रसेन पुच्छपर नियतहुये २१ हेराजेन्द्र इसरीतिसे नरोत्तम कर्णके चलनेपर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुनकी ओर देखकर यहबोले २२ कि हेवीरअर्जुन देखो जैसे जैसे इस युद्धमें शूरबीर महारथियोंसे रक्षित दुर्योधनकी सेना कर्णने अलंकृतकरी २३ वह दुर्योधनकी बड़ीसेना वहीहैजिसकेबड़े२ बीरमारे गये हेमहाबाहो यहशेष बचीहुईहै आशय यहहै कि यह सेनामेरी बुद्धिसे तृणोंकी समानहै२४इस सेनाभरमें अकेला धनुषधारी कर्णही प्रकाशितहै यह रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण देवताअसुर किन्नर गंधर्ब नाग पिशाच और २५ तीनोंलोकोंके स्थावर जंगमों से महादुर्जयहै हेमहाबाहुअर्जुन अब इसकेही मारने पर तेरी पूर्ण बिजयहै २६ इसके मरने पर बारहबर्षका मेरा कंटक उखड़जायगा हेमहाबाहु ऐसा जान और समझकर ब्यूहको जैसा चाहो वैसा तैयार करो२७पाण्डव अर्जुनने भाईके उस बचनको सुनकर अपनी सेना को अर्द्धचन्द्र ब्यूह से अलंकृत किया २८ उसके बाम भागपर भीमसेन और दाहिने भागपर बड़ा धनुष धारी धृष्टद्युम्न बर्त्तमान हुआ२९और ब्यूहके मध्यमें राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियतहुये और धर्मराजके पीछे नकुल सहदेव हुये ३० और पांचाल देशी उत्तमौजा और युधामन्यु रथके पहियोंके रक्षकहुये अर्जुनसे रक्षित उन दोनोंनेभी युद्धमें अर्जुनको नहीं त्यागा ३१ हेराजा शेषशूरबीर राजा लोग शस्त्रादिसे अलंकृत अपनी २ युक्तिके अनुसार ब्यूहमें नियतहुये ३२ पांडव और अन्य शूरबीरोंने इसरीतिसे अपने ब्यूहको रचकर तैयार किया हेराजा इसरीतिसे पांडव और आपके पुत्रोंने अपने२ ब्यूह को रचकर युद्ध करने को उत्साह किया ३३ दुर्योधनने कर्णकी रचितकीहुई अपनी सेनाको युद्धमें देखकर भाई बन्धुओं समेत पांडवों को मृतक रूप जाना ३४ उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पांडवी सेनाको अलंकृत देखकर कर्ण समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको मृतक रूपमाना ३५ इसके पीछे शंख भेरीढोल

दुन्दुभी डिमडिम आदि बाजेभी चारों ओरसे बजे ३६ हेराजा उस समय दोनों सेनाओं में बड़े शब्दायमान बाजे गाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूरवीरों के भी महासिंहनाद हुये ३७ हे राजा घोड़ों के हींसने और हाथियों के चिग्घाड़ने के और रथकी नेमियोंके महाकठोर शब्द उत्पन्न हुये ३८ फिर ब्यूह के मुखपर नियत बड़े धनुषधारी कर्णको देखकर किसीने भी द्रोणाचार्य्य के दुःखको नहीं जाना ३६ उस समय अत्यन्त उत्तम मनुष्यों से भरीहुई युद्धाभिलाषी दोनों सेना पराक्रम से परस्पर मारने को नियतहुईं ४० वहां पर सावधान और क्रोधसे भरे हुये एक दूसरे को नियत देखकर कर्ण और पांडव अर्जुन सेनाके मध्यमें फिरनेलगे फिर वह दोनों सेना नाचती हुईसी परस्पर में भिड़ गईं उनके भागवा बिभाग कोणों से युद्धाभिलाषी लोग सेनासे बाहरनिकले इसके अनन्तर परस्पर में युद्धकर्त्ता लोग हाथी घोड़े और रथों के साथ युद्धमें प्रवृत्त हुये ४१।४२।४३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिव्यूहनिर्माणेद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

संजयबोलेकि अत्यन्त प्रसन्नचित्त घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली उनदोनों सेनाओंने जोकि देवता और असुरोंकी सेना के समान प्रकाशमानथी परस्परमें एकनेएकको सन्मुखपाकर अत्यंत प्रहार किये १ इसकेपीछे बड़े पराक्रमी मनुष्य रथ घोड़ेहाथी औरसेनाके पतियोंने शरीर और प्राणोंके नाशकरने वाले अनेक प्रहार किये २ औरचन्द्रमा सूर्य और कमलोंके समान प्रकाशमान सुगन्धिसे भरे नृसिंहोंके शिरोंसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ३ अर्द्धचंद्र भल्ल क्षुरप्र खड्ग पट्टिश और परश्वधों से युद्ध करनेवालों के शिरों को काटा ४ तबलम्बी स्थूल बाजूआदिसे अलंकृत शस्त्रधारी भुजाओंसे बड़े२ दीर्घ भुजवाले शूरबीरोंकी भुजा पृथ्वीपर पड़ीहुई शोभायमान हुईं ५ रक्त अंगुष्ठ और हथेलीसमेत फड़कतीहुई उनभुजाओंसे पृथ्वी

ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि गरुड़जीके छोड़े हुये उग्रपंच मुख वाले सर्पोंसे शोभित होतीहै ६ शत्रुओं केहाथसे मारेहुये बीरहाथी घोड़े और रथोंसे ऐसे गिरे जैसेकि क्षीण पुण्यहोनेसे स्वर्गबासी जीव अपने अपने बिमानोंसे गिरतेहैं ७ युद्धमें बड़े बड़े बीरों की भारीगदा परिघ और मूसलोंसेभी मारेहुये अन्यहजारों बीर पृथ्वी परगिरे८रथी रथियोंसे मतवालेहाथी मतवालेहाथियोंसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंसे उस कठिन युद्धमें मर्द्दितकियेगये६ रथोंसेमनुष्य और हाथियोंसे रथ वा पतियोंसे रथी और हाथियोंसे रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनोंरथोंसेमथेगये१०।११ मनुष्य घोड़ेहाथी और रथियोंने हाथ पांव शस्त्र और रथोंसेरथ घोड़े हाथी और मनुष्योंका बड़ाविनाशकिया१२इसरीतिसेशूरवीरोंकेहाथसे सेनाके घायलऔर मारेजानेसे वह पांडव जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा हमारे सन्मुख आये १३ धृष्टद्युम्न शिखंडी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक नामक्षत्रीसात्यकी चेकितान द्राविड़ देशी सेनासमेत१४बड़ेव्यूहसे युक्त और बड़े बक्षस्स्थल लम्बीभुजा दीर्घ नेत्री वेगवानआभूषणों से अलंकृत १५ रक्त दंत मतवाले हाथी के समान पराक्रमी नाना प्रकार के रंगों कीपोशाकोंसे भूषित चन्दनादिसे चर्चित देहवाले खड्ग भिंदिपालों को हाथ में लिये हाथियों के हटानेवाले एकसी मृत्यु वाले पांड्यचौल और केरल लोगोंने परस्पर में त्याग नहींकिया१६।१७ तूणीर धनुष भिंदिहाथमें लिये लम्बेकेश रखनेवाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ोंने भी परस्पर में त्याग नहीं कियाइसके पीछे दूसरे शूरचन्देर पांचाल केकय कारूष कौशल कांच्य और मगधशूरबीर सन्मुखदौड़े१८।१६उन्होंके रथघोड़े हाथी औरअत्यन्त भयानक पतिलोग नानाप्रकारकेबाजे बजानेवालोंके साथमें बड़े प्रसन्न चित्त हँसते नाचते और गातेथे२० अत्यन्त उत्तम रथोंसेयुक्त हाथीके कन्धोंपर सवार भीमसेन बड़ीसेनाके मध्यमें आपके शूरबीरोंके सन्मुख गये२१ अत्यन्त उत्तम महाभयानक बुद्धिके अनुसार अलंकृत कियाहुआ वह हाथी ऐसा शोभाय-

मानहुआ जैसेकि सूर्य्योदय वाला उदयाचल का भवन शोभाय-
मान होताहै २२ उसका लोहमयी रत्नोंसे जटित कियाहुआ कवच
इस प्रकारका प्रकाशमानथा जैसे कि नक्षत्रों समेत शरद ऋतुका
आकाश शोभित होताहै तोमर संयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुट
धारण कियेहुये महा अलंकृत सूर्य्यके समान प्रकाशमान वहभीम-
सेन अपनेतेजसे शत्रुओंको भस्म करताहुआ युद्धमेंनियतहुआ २३
२४वहां हाथीपर चढ़ाहुआ क्षेमधूर्त्ति दूरसे उस हाथी पर सवार
बड़ेसाहसी भीमसेनको देखकर पुकारता और बुलाताहुआसन्मुख
गया २५ प्रथम तो इनदोनोंके हाथियोंमेंही परस्पर ऐसा युद्धहुआ
जैसेकि दैवइच्छासे वृक्षों समेत दोपर्व्वतोंका युद्धहोताहै २६ उन
हाथियोंके बड़े युद्ध होनेके पीछे वहदोनों बीर सूर्य्यकी किरणरूप
तोमरोंसे परस्पर एक एकको घायल करतेहुये बड़ेवेगसे गर्जे २७
फिरवह दोनों हाथियोंके द्वारा हटकरके मंडलोंमेंघूमे और धनुषोंको
पकड़कर परस्परमें एकने दूसरेको घायलकिया २८ फिर उनदोनों
नेभुजा और बाणोंकेशब्दोंसे मनुष्योंको प्रसन्नकरके बड़े २ सिंह ना-
दोंकोकिया २९और फिर वह दोनों महाबली ऊंची सूंड़वाले हाथि-
यों और बायुसे उड़तीहुई पताकाओं समेत युद्ध करनेलगे३० उन
दोनोंने परस्परमें एकने दूसरेके धनुषको काटकर शक्ति औरतोमरों
की बर्षासे परस्परमें ऐसे घायल किया ३१ जैसेकि बर्षाऋतुमेंबाद
ल जलोंसे व्यथित करतेहैं उस समय महागर्जना करतेहुये क्षेमधू-
र्त्तीने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरोंसे भीमसेन कोछातीपरघा-
यलकिया ३२क्रोधसे भराहुआ भीमसेन शरीरमें लगेहुये तोमरोंसे
ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि बादलोंसे सूर्य्य शोभितहोताहै३३इस
के अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेनने सूर्य्यके समान प्रकाशित
सीधा चलनेवाला लोहेका तोमर उसशत्रुकेऊपर फेंका ३४ फिर
राजा कुलूतने धनुषको नवाकर दशबाणोंसे तोमरको काटकरभीम-
सेनको घायलकिया ३५ इसके अनन्तर गर्जना करते भीमसेनने
बादलके समान शब्दायमान धनुषको लेकर बाणोंसे शत्रुके हाथी

को घायल और पीड़ित किया ३६ युद्धमें भीमसेनके बाणोंसे वह हाथी पीड़ित होकर थँभाहुआभी ऐसे नहीं ठहर सका जैसेकि बायुसे उड़ा हुआ बादल नहीं ठहरसक्ता है ३७ और भीमसेन का गजराज हाथी उसहाथीपर ऐसा दौड़ा जैसेकिबायुसे उड़ाहुआ बादल बड़ीबायुसे उड़े हुये बादलके पीछे दौड़ताहै ३८ फिर प्रतापीक्षेमधूर्त्ती ने अपने हाथीको अच्छी रीतिसे रोककर शीघ्रहीअपने बाणोंसे भीमसेनके हाथीको घायल किया इसके पीछे अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुये टेढ़ेपक्षवाले क्षुरप्रसे शत्रुके धनुषको काटकरप्रतिपक्षवाले शत्रुको पीड़ामान किया ३९।४० इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने भीमसेनको घायल करके उसके हाथीको सब मर्म्मोंमें अपने नाराचोंसे घायल किया ४१ हे भरतबंशी उस घायलकरने से वह भीमसेनका हाथीपृथ्वीपर गिरपड़ा और भीमसेन हाथीके गिरनेसे पूर्व्वही हाथीसे कूदकर पृथ्वीपर नियत हुआ ४२ फिर भीमसेनने भीउसके हाथीको गदासे मारा तब उसगदासे मथे हुये हाथीसे उतरेहुये ४३ और शस्त्रउठाकर आने वाले क्षेम धूर्त्तीको भीमसेनने गदासे मारा और गदाके लगतेही मृतक होकर खड्गसमेत पृथ्वीपरऐसे गिरपड़ा ४४ जैसेकि बज्रसे टूटा हुआ पर्व्वत वा बज्रसे मराहुआसिंह पृथ्वीपर गिरताहै हे भरतर्षभ उसकुलूतों के यशस्वीराजाको मृतक हुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ितहोकर भागी ४५। ४६

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिक्षेमधूर्त्तिबधेत्रयोदशोऽध्यायः१३॥

चौदहवां अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके पीछे बड़े धनुषधारी शूरबीर कर्णने टेढ़े पक्षवाले बाणोंसे युद्धमें पांडवोंकी सेना कोमारा १ हेराजा उसी प्रकार क्रोधयुक्त उनपांडवोंके महारथियोंने कर्णके देखतेहुये आपके पुत्रकी सेनाको मारा २ हेराजा फिर कर्णनेभी सूर्य्यकी किरण

के समान प्रकाशित चतुरकारीगरोंके साफ़कियेहुये नाराचोंसेउस युद्धमें पांडवी सेनाको मारा ३ तबतो कर्णके नाराचोंसे घायल हुये हाथी चिग्घारैं मारनेलगे और महापीड़ित होकर दशोंदिशाओंमेंघूमनेलगे ४ हे श्रेष्ठ कर्णके हाथसे उससेनाके घायल होनेपरशीघ्रही नकुल उस युद्धमें कर्णके सन्मुख गया ५ उसीप्रकार भीमसेनने कठिन कर्म करनेवाले अश्वत्थामाको और सात्यकीने बिन्द अनुबिन्दनाम केकयोंको रोका ६ और राजा चित्रसेनने आतेहुये श्रुतकर्माको और प्रतिविन्ध्यने अपूर्व्वध्वजाधारी राजाचित्रको रोका फिर राजा दुर्य्योधनने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को रोका और क्रोधयुक्त अर्जुन ने संसप्तक गणोंको जा रोका ७।८ उस उत्तम बीरोंके नाशमें धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्य से लड़ने लगा और शिखण्डी के सन्मुख अजेय कृतबर्मा नियत हुआ ९ हे महाराज इसी प्रकार श्रुतकीर्ति ने शल्य को और माद्रीके पुत्र सहदेवने आपके पुत्र दुश्शासनको रोका १० दोनों कैकेयोंने युद्धमें प्रकाशित बाणोंकी बर्षासे सात्यकीको आघेरा सात्यकीने बाणोंसे केकयोंको ढकदिया ११ हे भरतवंशी उन दोनों बीर भाइयोंने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि बनमें सन्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथीको अपने दांतोंसे घायल करते हैं १२ हे राजा बाणोंसे टूटे हुये कवचवाले सात्यकीको दोनों भाइयोंने बड़ा घायल किया १३ फिर सात्यकीने हँसते हुये बाणोंकी वर्षा करके उन दोनोंको सब ओर से रोका १४ इसके पीछे सात्यकी के बाणोंसे रुके हुये उन दोनोंने शीघ्रही बाणों से सात्यकी के रथको ढक दिया १५ फिर इस बड़े यशस्वी सूरबंशी सात्यकीने उन दोनोंके छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनोंको अपने तीक्ष्ण शायकोंसे रोका १६ तबतो उन दोनोंने दूसरे छत्र और बाणोंको लेकर सात्यकी को ढकदिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे १७ और कंक और मोर पक्षोंसे शोभित दोनोंके छोड़ेहुये प्रकाशित बाण सब ओरको गिरे १८ हे राजा उस महाभारी युद्धमें उनदोनोंके बाणोंसे अन्ध-

कारसाछागया उस समय उन महारथियोंने परस्परमें एकनेदूसरे के धनुषको काटा १६ इसके पीछे क्रोधभरे युद्धमें दुर्मदसात्यकी ने दूसरे धनुषको लेकर और तय्यारी करके युद्धमें बड़े तीक्ष्णक्षुर प्रसे अनुबिन्दके शिरको काटाहे राजा वहकुंडलोंसे अलंकृत महाभारी शिर २०।२१ बड़े युद्धमें मरे हुये सम्बरके शिरके समानसब कैकेय लोगोंको शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा २२ उस शूरबीरको मृतक देखकर उसके भाई महारथीनेदूसरेधनुषको तैयार करके सात्यकी को रोका २३ वह सुनहरी पुंख और तीक्ष्ण धारवाले साठबाणोंसे सात्यकीको घायल करके तिष्ठ २ बचनके साथ बड़े वेगसेगर्जा २४ इसके पीछे कैकेयों के महारथीने हजारों बाणोंसे बहुत शीघ्रता पूर्व्वक भुजा और छातीपर घायल किया २५ हे राजा बाणोंसे बिदीर्ण सर्वांग सात्यकी युद्धमें ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूला हुआ किंशुकका वृक्ष होताहै २६ युद्धमें महात्मा कैकेयके हाथसेघायल और हंसते हुये सात्यकीने कैकेयको पच्चीस बाणोंसे घायल किया २७ वह रथियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें एक दूसरेके शुभ धनुषको काट कर बड़ी शीघ्रतासे घोड़े और सारथियोंकोमारकर २८ रथसेउतर कर युद्धमें खड्गोंसे प्रहार करनेकेलियेसन्मुख हुये वहसुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करनेवाले दोनोंशूरबीर चन्द्रसूर्य्य के चित्र वाली ढालोंको लेकर उसमहायुद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि देवासुर युद्धमें महाबलीइंद्र और जंभशोभित हुयेथे २६।३० इस के पीछे युद्धमेंमंडलोंको घूमते शीघ्रही परस्पर में सन्मुख हुये ३१ और एक२नेदूसरेके मारनेमें बड़े २ उपायकियेइसकेपीछे सात्यकी ने कैकेयकी ढालके दोखंडकिये ३२ इसीप्रकार वह राजाभी सात्यकी की सैकड़ों नक्षत्रोंसे चिह्नित ढालको काटकर ३३ दाहिने औरबांये मंडलोंसे घूमा फिर सात्यकीनेउसबड़ेयुद्धमें शीघ्रतासेघूमनेवाले कैकेयको तिरछेहाथसे मारडालाहेराजावह कैकेयउस घोर युद्धमें कवच समेत दोखंडहोकर ऐसेपृथ्वी में गिरपड़ा ३४।३५ जैसेकि वज्रसे घायल पर्व्वत गिरताहै इसरीतिसे रथियों में श्रेष्ठ

शूरबीर सात्विकीने उसयुद्धमें उसकोमारा ३६ फिरवह शत्रुहन्ता शीघ्रही युधामन्युके रथपर सवारहुआ और थोड़ेसमय पीछेसात्विकीने बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर बाणोंसे कैकेयोंकी बड़ीसेनाको मारायुद्धमें वह कैकेयों को बड़ी सेना महा घायल होकर उस सात्विकी को छोड़कर दशों दिशाओं कोभागी ३७। ३८। ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिबिन्दअनुबिन्दबधोनामचतुर्द्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

संजय बोलेकि हे राजा इसके पीछेयुद्धमें क्रोधभरे श्रुतिबर्माने राजा चित्रसेनको पचास बाणोंसे घायल किया १ फिर चित्रसेनने टेढ़े पुंखवाले नौ बाणोंसे श्रुतिबर्माको घायल करके पांच बाणों से उसके सारथीको घायल किया २ इसके अनन्तर सेनामुखपर क्रोध युक्त श्रुतिकर्माने चित्रसेनको अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे मर्मस्थल में घायल किया ३ हे महाराज उसमहात्माके नाराचसे अत्यन्त घायल होकर वह वीरमूर्च्छायुक्तहोकर निश्चेष्टहोगया ४ इसीअन्तरमें बड़े यशस्वी श्रुतिकीर्त्ति नेनब्बे ९० बाणोंसे इसराजाकोभी ढकदिया ५ इसकेपीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्लसेउसके धनुषको काटकर सातबाणोंसे उसको घायल किया ६ फिर उसने वेग केनाश करनेवाले स्वर्णसे भूषित सोम धनुषको लेकरबाणोंकी तरंगोंसे चित्रसेनको बिचित्ररूपधारी किया ७ वह युवावस्थायुक्तबाणों से वेधित होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि गौशालामें अच्छा अलंकृत बड़ा बैलहोताहै ८ फिर उस शूरनेवेगसे श्रुतिकर्माकोनाराच सेछातीपर बिदीर्णकर तिष्ठतिष्ठ शब्दउच्चारणकिया ९ वहांनाराचसे घायलहोकर श्रुतिकर्माने भी युद्धमें रुधिरको ऐसेगिराया जैसेकि पर्बतीयधातुओंसे संयुक्त पर्व्वतरक्तबर्णके जलकोडालताहै १० इस केपीछेवह रुधिरसे भरेशोभाहीन शरीरसेयुद्धमेंऐसेशोभायमानहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंसुकका वृक्षहोताहै ११ इसके पीछे शत्रुसेन-

घातपानेवाले क्रोधयुक्त श्रुतिकर्माने शत्रुके हटानेवाले धनुषके दश खंडकिये १२तदनन्तर हेराजाइसटूटेधनुषवालेको श्रुतिकर्मानेसुन्दर पक्षवाले तीनसौ नाराचोंसे घायलकर बड़ेतीक्ष्णधारवाले१३भल्लसे उसकेशिरसमेत धड़कोकाटा१४तबचित्रसेनका वह प्रकाशमानशिर पृथ्वी पर ऐसेगिरा मानों दैवइच्छासे स्वर्गसे पतितहोकर चन्द्रमा गिरताहै१५हेश्रेष्ठ चित्रसेनकी सेनाके सबलोगउसअभयसारदेशके राजाको मृतक देखकर बड़ी तीव्रतासे संमुख दौड़े १६ इसकेपीछे वह क्रोधयुक्त महा धनुषधारी बाणोंकी बर्षा करताहुआ उससेनापर ऐसे दौड़ा जैसे कि प्रलयकालमें सब जीवोंपर क्रोधभरे यमराज दौड़तेहैं १७ अग्निसे भस्मीभूत वृक्षोंके समान युद्धमें आपकेपौत्र उस धनुषधारीसे घायलहोकर चारों ओरको भागे १८ शत्रुके जी-तनेमें असाहसी और भागनेवाले उनलोगों को देखकर श्रुतिकर्मा तीक्ष्णबाणोंसे उनको भगाताहुआ अत्यन्त शोभायमान हुआ १९ इसके पीछे प्रतिबिंध्यने पांचबाणोंसे चित्रको तीनबाणोंसे सारथीको घायल करके एक बाणसे ध्वजाको भी खंडित करदिया २० और चित्रसेनने सुनहरे पक्ष तीक्ष्ण नोक कंक और मोरके पक्षोंसे जटित नौभल्लोंसे उसकी दोनों भुजा और छातीपर घायल किया २१ हे भरतबंशी प्रतिबिन्ध्यने शायकों से उसके धनुषको काटकर उसको तीक्ष्ण पांचबाणोंसे घायल किया २२ इसके पीछे सुनहरी घंटेरखने वाली महाअसह्य अग्निकी शिखाके समान प्रकाशमानशत्रुकोआप के पोतेपर फेंका २३ तब हंसते हुये प्रतिबिंध्यने उसउल्कारूपअक-स्मात् आतीहुई शक्तिको देखकर युद्धमेंदो खंडकिये२४प्रतिबिंध्यके तीक्ष्ण बाणोंसे टुकड़े २ होकर वह शक्ति ऐसे गिरपड़ीजैसे प्रलयके समयसबजीवोंको भयकी करनेवाली अशिनीहोतीहै२५चित्रनेउस शक्तीको कटाहुआ देखबड़ीगदालेकरप्रतिबिन्ध्यके ऊपर फेंका २६ उस गदाके आघातसे उसके सारथीसमेत घोड़े मारे गये और बड़ी तीव्रता से रथको मर्द्दन करके पृथ्वीपर गिरपड़े २७ हे भरतबंशी उस समय उसने रथसे उतरकर सुनहरी दण्डवाली सुनहरीशक्ति

को चित्रके ऊपरफेंका २८ फिरउस महासाहसी चित्रने उसआती हुई शक्तिको पकड़ लिया और उसी शक्ति को प्रतिविन्ध्य के ऊपर फेंका २९ वह बड़ी प्रकाशमान शक्ति युद्ध में शूर प्रतिविन्ध्य को पाके दक्षिण भुजा को घायल करके पृथ्वी पर गिरपड़ी ३० अशिवनीके समान गिरी हुई उस शक्तिने उस स्थानको प्रकाशित किया इसके पीछेअत्यंत क्रोध युक्त प्रतिविंध्यने ३१ सुवर्णसेमंडित तोमरको चित्रके मारनेको चलाया वह तोमर उसके कवच और हृदयको छेदकर ३२ पृथ्वीमें ऐसे समागया जैसे बड़ाभारी सर्प विलमें समाजाताहै उस तोमरसे घायल वहराजा ३३ परिघकेसमान बड़ी और मोटीभुजाओंको फैलाकर पृथ्वीमें गिरपड़ातबचित्रसेनको मरा हुआ देखकर आपकी शोभायमान सेनावेगसे प्रतिविन्ध्य के चारोंओर सन्मुखताके लियेगई ३४ औरवहां जाकर नाना प्रकारके बाण और शक्तियोंकीबर्षासे प्रतिविन्ध्य को ऐसाढकदिया जैसे कि बादलोंके समूह सूर्यकोढक लेतेहैं ३५ फिरउसमहाबाहुने बाणोंसे उन सबको पृथक्२ करके आपकी सेनाको ऐसे भगाया जैसेकि बज्रधारी इन्द्रअसुरोंकी सेनाको भगाताहै ३६ हे राजा युद्धमें पांडवोंके हाथसे घायल शूरवीर अकस्मात् ऐसे छिन्न भिन्न होगये जैसेकिहवासे हटायेहुये बादलतिर्रविर्र होजातेहैं३७ उससेनाको चारोंओरसे घायलहोकर भागजानेपर अकेलेअश्वत्थामाजी शीघ्रही महाबली भीमसेन के सन्मुख गये ३८ इसके पीछे अकस्मात् उन दोनोंका परस्परमें भिड़ना ऐसा महाभयकारीहुआ जैसा कि देवासुरोंके युद्धमें वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिचित्रबधेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा इसके पीछे बड़ीशीघ्रता युक्त अस्त्रों की तीव्रता दिखातेहुये अश्वत्थामाने बाणसे भीमसेनको घायलकिया१ फिरमर्मज्ञ हस्त लाघवी अश्वत्थामाने सबमर्मों को जानकरतीक्ष्ण

धारवाले नब्बेबाणोंसेभीमसेनको घायल किया२ हेराजा अश्वत्था-
माके तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिदाहुआ भीमसेन युद्धमें अंशुमान्
सूर्यके समान शोभायमान हुआ ३ इसके पीछे भीमसेनने अच्छी
रीतिसेफेंकेहुये हजारबाणोंसे अश्वत्थामाको ढककरबड़ाभारी सिंह
नाद किया ४ इसके अनन्तर मंदमुसकान करतेहुये अश्वत्थामाने
बाणोंको रोककर भीमसेनको नाराचोंसे ललाट पर घायलकिया५
तबभीमसेनने ललाटपर वर्त्तमान बाणोंको ऐसे धारणकियाजैसेकि
गंडकनाम अहंकारी पशुसिंहको धारणकरताहै६ फिरमन्द मुसकान
करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करनेवाले अश्वत्थामा को
तीननाराचोंसे ललाटपर वेधा ७ तब यह ब्राह्मणललाट पर नियत
हुये बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे किजलसे सींचाहुआ ती-
नशिखर रखनेवाला उत्तम पर्वत होताहै ८ इसके पीछे अश्वत्था
माने सैकड़ों बाणोंसे भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे
कंपायमान न करसका जैसेकि बायु पर्ब्बत को नहीं कंपासक्ती ६
फिर अत्यन्त प्रसन्नपांडुनन्दन भीमसेन ने भी इसको ऐसे कंपाय
मान नहीं किया जैसेकिजलका समूह पर्व्वत को कंपायमान नहीं
करसक्ता १० परस्पर घोर बाणों से ढकतेहुये उत्तम रथोंपर सवार
पराक्रम से मतवाले वह दोनों महारथी शूरबीर महाशोभायमान
हुये ११ फिर वह दोनों सूर्य्य के समान प्रकाशित लोक के नाशक
अपने तेजों समेतउत्तम२ बाणोंसे पररूपर संतप्तकरनेवाले हुये १२
इसकेपीछे वह दोनों युद्धमें अशंक के समान बदला लेनेमें उपाय
करने वालेहुये १३वहदोनों नरोत्तम युद्ध में व्याघ्रोंके समान भ्रमण
करने वाले हुये बाणरूप जिनकीडाढ़ें और भयानक धनुषही जिन-
कामुखथा १४ वह दोनोंबाणोंके जालसेसब ओरसे ऐसे गुप्तहोगये
जैसेकि बादलके जालोंसे ढकेहुये आकाशमेंचन्द्रमा औरसूर्य्यहोते
हैं १५इसके पीछे वह शत्रुहन्तादोनों एक मुहूर्त्त मेंही ऐसे प्रकाश-
मान हुये जैसेकि बादलोंके जालसे निकले हुयेमंगल और बुध हो-
तेहैं १६ इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी युद्धजारी होनेपर वहांअश्व-

त्थामाने भीमसेनको सैकड़ोंउग्र बाणोंसे ऐसेढकदिया १७ जैसेकि धाराओंसे बादलपर्व्वत को ढकदेता है फिर भीमसेनने भी शत्रुके उस बिजयकेलक्षणको नहींसहा १८ इसके पीछेपांडवनेभी दाहिने औरबायें मंडलोंके भागोंमें जाना आनाकिया१९ और दोनों पुरुष सिंहोंमें बड़ातुमुल युद्ध हुआ २० फिर हरएक ने कानतकखैंचे हुये बाणोंसे परस्परमें एकने दूसरे को घायल किया और एकनेदूसरे के मारनेमें बड़े२ उत्तम उपाय किये २१ युद्धमें एकने दूसरेकोबि-रथकरना चाहा इसके पीछे महारथी अश्वत्थामाने युद्धमें महाअ-स्त्रों को प्रकट किया २२ पांडवने उन अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे हीदूर किया इसके पीछे अस्त्रोंका ऐसाघोर युद्धजारीहुआ जैसेकि जीवोंकी प्रलयमें ग्रहोंका घोर युद्ध हुआथा २३ हेभरतबंशी उनदोनोंके छो-ड़े हुये वह बाणचारों ओरसे सबदिशा और आपकी सेनाकोअच्छे प्रकार से प्रकाशित करने लगे और बाण समूहोंसे व्याप्त आका-श महा भयानक रूपहुआ २४ । २५ हे राजाजैसे जीवों के प्रलय में उल्कापातोंसे संयुक्त युद्धहुआथा वैसेही वहां बाणोंके आघातसे ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसेकि फुलिंगरखनेवाली प्रकाशमानअग्नि की ज्वाला होतीहै २६ फिर अग्निने दोनोंसेनाओं को भस्म किया तबवहां सिद्धलोग आकर कहने लगे २७ कि सबयुद्धोंमें यहभीयु-द्धबड़ाहै और सब युद्ध इसयुद्धके षोड़शांश कलाकेभी समान नहीं हैं २८ ऐसा युद्धफिर कभी न होगा बड़ा आश्चर्य्य है कि यह ब्रा-ह्मण और क्षत्रीदोनों पूर्णहैं २९ यह दोनों पराक्रमी अपनी २ उग्र शूरताओं से संयुक्तहैं और भीमसेन भयानक पराक्रमीहै और इस-की अस्त्रज्ञताभी पूर्णहै ३० इन दोनोंकी प्रतिष्ठा और बड़े२ साहस अपूर्व्वहैं यहकाल और मृत्युके समान दोनों युद्ध में नियतहैं ३१ यहदोनों रुद्रके समान प्रकटहुये दोनोंसूर्य्यके समानहैं अथवादो-नों पुरुषोत्तम घोररूप यमराजके रूपहैं ३२ यह सिद्धोंके बचन बारंबार सुनेगये और भागने वाले देवताओंके सिंहनाद प्रारंभहु-ये ३३ युद्धमें उनदोनोंके अपूर्व्व बुद्धिसे बाहर कर्मको देखकर सिद्ध

औरचारण लोगोंकेसमूहको बड़ाआश्चर्य्य हुआ ३४ तबदेवतासिद्ध और परमऋषियों ने प्रशंसाकरी कि हे महाबाहु अश्वत्थामाऔर हे महाबाहु भीमसेन तुम दोनोंको धन्यहै ३५ हे राजा परस्पर अपराध करने वाले उनदोनों शूरोंने युद्धमें क्रोधसे आंखोंको फाड़कर परस्परमें देखा ३६ वह दोनोंक्रोधसे रक्तनेत्रहो क्रोधसेहोंओठोंके चाबने वाले होकर दांतोंके किट किटाने वालेहुये ३७ बाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप बिजलीसे प्रकाशकरनेवालेदोनों महारथियों ने बाणोंकी बर्षासे परस्पर में ढकदिया ३८ फिर उनदोनोंने परस्परकीध्वजा और सारथीको बेधकर प्रत्येकने दूसरेके घोड़ोंको घायल करके परस्पर में घायल किया ३९ हे महाराज इसकेपीछे परस्पर मारने के इच्छावान् क्रोधभरे हुये उनदोनोंने युद्धमें बाणको लेकर शीघ्रही एकने दूसरे के ऊपरफेंका ४० उन बज्रकेसमान वेगमान बिजयी और सेनामुखपर प्रकाशमान् दोनोंने सन्मुखपाकर परस्पर में शायकोंसे घायल किया ४१ तब परस्पर की तीव्रता और बाणोंसे घायल बड़े पराक्रमी वह दोनोंरथोंके बैठनेकेस्थानों में गिरपड़े ४२ इसके अनन्तरसारथीअश्वत्थामाको अचेतजानकर सब सेनाके देखतेहुये युद्धसे दूर लेगया ४३ हे राजा इसी प्रकार भीमसेनका सारथीभी उस बारंबार शत्रुओं के तपाने वाले पांडव भीमसेनको युद्धमें रथके द्वारा दूरले गया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअश्वत्थामाभीमसेनयुद्धेषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले जिस प्रकार अर्जुनका युद्ध संसप्तक लोगोंके साथ और अन्यराजाओंकायुद्ध पांडवोंके साथहुआ उसको मुझसेकहो १ हे संजय अश्वत्थामा और अर्जुनका जो युद्धहै और पांडवोंके साथ जो अन्य २ राजाओंका युद्धहै वह सब मुझसे कहो २ संजय बोले हे राजा मैं कहताहूं आप सुनिये जिस प्रकार प्राणोंकानाशकारक शत्रुओंसे बीरोंका युद्धजारी हुआ ३ शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुनने

समुद्रके समान संसप्तकोंकी सेनाओंमें घुसकर ऐसे छिन्न भिन्नकर दिया ४ जैसे कि तीव्र बायु समुद्रको उथल पुथल करदेता है अर्जुनने अपने तीक्ष्ण भल्लोंसे पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशित ५ सुन्दरमुख नेत्र भृकुटी और दांतरखनेवाले बीरोंके शिरोंको काटकर शीघ्रता पूर्व्वक ऐसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ६ जैसेकि कमल नालसे कमलोंको काटकर हाथी सरोवरको आच्छादित करताहै अर्जुनने युद्धमें बड़ेलम्बे मोटे चन्दन अगरसेलिप्त शस्त्र और हस्तत्राणधारी पांचमुख धारीसर्पोंके समान शत्रुओंकीभुजाओंको क्षुरप्रोंसे काटा ७ और घोड़े घोड़ेके सवार और सारथी लोगोंकेध्वजा धनुष शायक और अंगूठी धारण किये बीरोंके हाथोंको भी बारंबार भल्लोंसे काटा ८ हे राजा इसी प्रकारसे अर्जुनने युद्धमें अपने हजारोंबाणों से रथ हाथी और घोड़ोंको उनके सवारों समेत यमलोकमें पहुंचाया ९ जैसे कि मदसे मतवालेगर्जनेवाले बैल गौके निमित्त सिंहोंके सन्मुख जाकर प्रहार करें उसी प्रकार उन क्रोधसे भरे बड़े २ शूर बीरोंने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवालेको बाणोंसे घायल किया उसका और सब लोगोंका वह घोरयुद्ध ऐसारोमहर्षण करने वाला हुआ १०।११ जैसे कि तीनोंलोकोंके बिजयके लिये दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ हुआथा उस अर्जुनने अपने अस्त्रोंसेशत्रुओंके अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणोंसे बिदीर्ण करके १२ प्राणोंकाहरण किया जिनके तूणीर चक्र और रथके अंग टूटगये और सारथियों समेत घोड़े भी मारेगये १३ और धनुष वा ध्वजाटूटीं और रथकी बागडोरेंटूटीं रथसे कूबरजुदेहुये १४ और स्यन्दनोंके जुयेंपहिये आदि भी गिरपड़े उन रथोंको खंड २ करताहुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े २ बादलोंको खंड २ करता बायुचलताहै १५ आश्चर्य्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुनने शत्रुओंको भय करनेवाले दर्शनीय हजारों महारथियोंके समान बलकिया १६ सिद्ध देवर्षि और चारण लोगोंने भी इसकी प्रशंसाकरी देवताओंने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की बर्षाकरी १७ वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुनके मस्तक पर

गिरे और आकाश बाणोंनेसदेवचन्द्रमा बायु अग्नि और सूर्य्यकी कान्ति और तेजको पुष्टकिया१८ वह ब्रह्मा और शिवजीके समान श्रीकृष्ण और अर्जुन एक रथपर नियत सब जीवोंमें श्रेष्ठ दोनोंनर नारायण रूप बीरहैं १६हे भरतबंशी इस बड़ेआश्चर्य्यको देखकर बड़ेसावधान अश्वत्थामाजी युद्ध में श्रीकृष्णजीके सन्मुख गये २० फिरजिनकी नोकें शत्रुओंके मारनेवालीथीं उनबाणोंके चलानेवाले पांडव अर्जुनसे बाण पकड़नेवाले हाथके द्वारा बुलाकर २१ यह बचनबोले हे बीरजो यहां बर्त्तमान मुझ अतिथि रूपको पूजनके योग्य मानताहै २२ तो तुम सब आत्मासे युद्धरूप अतिथि मुझको जानो इस प्रकार युद्धाभिलाषी आचार्य्यके पुत्रसे बुलायेहुयेअर्जुन ने अपनेको बहुत कुछमाना२३और श्रीकृष्णजीसे कहा कि मैं संसप्त कोंको मारसक्ताहूं और अश्वत्थामाजी मुझको बुलातेहैं २४ इस स्थानपर जो उचितहोय वह आपमुझसे कहिये जो आपमानतेहैंतो उठकर अतिथि कर्म कीजिये २५ ऐसे कहेहुये श्रीकृष्णजीने बुद्धिके अनुसारबुलायेहुये अर्जुनको बिजयीरथकीसवारीकेद्वाराअश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुंचाया जैसे कि बायु इन्द्रको यज्ञमें पहुंचाता है २६ केशवजो उस एक चित्त अश्वत्थामा को संबोधन करके बोले कि हे अश्वत्थामा शीघ्र नियतहोकर घातकरो और क्षमा करो२७ स्वामीके अर्थ निमकहलाली करनेका यह समय है ब्राह्मणोंका सम्बाद बड़ा सूक्ष्महै और क्षत्री संबन्धी बिजय और पराजययोग्य है २८ तुम अज्ञानतासे अर्जुनके जिसदिब्य और उत्तम कर्म को चाहतेहो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पांडवोंसे युद्धकरो २६ श्रीकृष्णजीके इस प्रकारके बचनोंको सुनकर अश्वत्थामाजीने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचोंसे केशवजीको और तीन बाणोंसे अर्जुनको घायल किया ३० फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुनने उसके धनुष को तीनबाणोंसे काटा ३१ तब अश्वत्थामाने बड़े घोर दूसरे धनुषको लिया और क्षणभरमेंही श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया तीनसै बाणोंसे वासुदेवजीको और हजार

बाणोंसे अर्जुनको घायल किया ३२ इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामाने युद्धमें अर्जुनको रोककर हजारोंबाणोंकी बर्षाकरी ३३ हे श्रेष्ठ उसब्रह्मबादी अश्वत्थामाके तूणीर धनुष कवच ध्वजा हाथ छाती ३४ नाक मुख नेत्र कान शिर और अंग देहकेरोम और रथसे बहुतसे बाण निकले ३५ प्रसन्नचित्त बीर अश्वत्थामा बाण समूहों से अर्जुन और श्री कृष्णजीको घायल करके बड़े बादलोंके समान शब्दोंसे गर्जा ३६ उसके शब्दको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोलेकि हे माधवजी गुरु पुत्रके आन्तरीयद्वेषको मेरेऊपर देखो ३७ यह हम दोनोंको बाण पिंजरमें प्रविष्ट करके मरा हुआ जानताहै मैं इसके बाण पिंजरको अपने पराक्रमसे नाश करूंगा ३८ फिर उस भरतर्षभने अश्वत्थामाके चलायेहुयेबाणोंकोछः२खण्डकरके इधर उधर करदिया ३९ इसके पीछे अर्जुनने उग्रबाणोंसे घोड़े सारथी रथ हाथी ध्वजा और पतियों समेत संसप्तकों को घायल किया ४० उस समय जिस २ रूपके जो २ मनुष्य वहां दिखाई दिये वहां उन्होंने अपनेको बाणोंसे घायल माना ४१ और युद्धमें गांडीवधनुषसे छूटे हुये वह नाना प्रकारके बाण एककोस से अधिक दूर पर वर्त्तमान हाथी और मनुष्यों को भी मारतेथे ४२ मदोन्मत्त हाथियों की सूंड़ भल्लोंसे कटकर ऐसे गिर पड़ी जैसेकि फरसोंसे कटेहुये बनके बड़े २ वृक्ष होतेहैं ४३ इस केपीछे सवारों समेत वहहाथीऐसे गिरपड़े जैसेकि इन्द्रके बज्रसे कटेहुये पर्वतोंके समूह गिरपड़तेहैं ४४ युद्धमें दुर्मद अर्जुन गंधर्व नगर के समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशीक्षित घोड़ोंसे युक्त रथ पर नियत होकर ४५ बाणोंकी वर्षाकरताहुआशत्रुओंके सन्मुखगया वहांजा- कर अर्जुनने अश्वारूढ़ोंको और पतियोंको मारा ४६ अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्यने कठिनतासे सूखनेवाले संसप्तक रूप समुद्रको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यंत शोषण किया फिर बड़ी शीघ्रताकरने वालेने अश्वत्थामाको बड़ेवज्रके समान वेगवान् बाणोंसे घायल किया ४७। ४८ क्रोध युक्त युद्धाभिलाषी आचार्यके पुत्रअश्वत्था-

माजी बाणोंके द्वारा घोड़े और सारथी समेत अर्जुनसे लड़नेको आये अर्जुनने उनके बाणोंको काटा ४९ इसके पीछेबड़े क्रोधसे भरे अश्वत्थामाने अर्जुनके ऊपर अस्त्रोंको ऐसे छोड़ा जैसेकि अतिथि केलिये शिष्टाचारी करीजाय फिर अर्जुनसंसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामाके सन्मुखऐसेगये जिस प्रकार दान करनेवाला मनुष्य पंक्तिके अयोग्य लोगोंको छोड़ कर पंक्तिके योग्य मनुष्यों के पास जाताहै ५०। ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणि अश्वत्थामाअर्जुनयुद्धे सप्तदशोऽध्याय: १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजयबोले किइसकेपीछे शुक्रऔर वृहस्पतिजीके समानतेजस्वी उन दोनोंका युद्ध ऐसे अच्छे प्रकार से हुआ जैसे कि नक्षत्र मंडल के पास आकाशमें शुक्र और वृहस्पतिका युद्धहुआथा १ एकनेदूसरे को प्रकाशित बाणोंकी किरणोंसे अच्छी रीति से संतप्तकिया और अपनेमार्गसे हटकर चलनेवाले ग्रहोंकी समान लोकों का भयउत्पन्नकरनेवाले हुये २ उसके पीछे अर्जुनने नाराचसे दोनोंभृकुटियों केमध्य कठिन घायल किया वहअश्वत्थामाजी उसघावसे ऐसेशोभायमानहुये जैसेकि ऊपरको ओर किरणरखने वाला सूर्य होताहै ३ इसके अनन्तर अश्वत्थामाके सैकड़ों बाणोंसे अत्यन्त पीड़ामान्श्री कृष्ण और अर्जुन भीऐसेप्रकाशमान हुये जिसप्रमार अपनी किरणों से प्रकाशित प्रलयकालके दोसूर्य होतेहैं ४तदनन्तर वासुदेवजीके व्याकुल होनेसे अर्जुनने सब ओरसे अस्त्रोंकी धाराओं को छोड़ावज्र अग्नि और यमराजके दंडकी समान बाणोंसे अश्वत्थामाको घायल किया ५ उस बड़ेतेजस्वी और भयानककर्मी अश्वत्थामाजीने अच्छे प्रकारसे चलाये महाकठोर औरवेगवान्‌वाणों सेअर्जुनऔर केशवजी कोमर्मस्थलों पर घायल किया वह ऐसे बाणथे जिनकेमारे मृत्युभी व्याकुल होजाय ६ फिर अर्जुन उस उपाय करनेवाले अश्वत्थामाके उनबाणोंको उससे द्विगुणित अपने बाणोंसे अच्छीरीतिसे रोककर

उस बड़ेमुख्य बीरको घोड़े सारथीऔर ध्वजासमेत अपने सुन्दरपुंख वाले दूने बाणोंसे ढककर संसप्तकोंकी सेनाके सन्मुखगया ७ अर्जुनने अच्छीरीति से चलायेहुये बाणोंसे मुख न मोड़नेवाले सन्मुखतामें नियत शत्रुओंके धनुषबाण तूणीर और कवच हाथ भुजा वा हस्तगत शस्त्र और शस्त्र ध्वजा घोड़े और रथ और अनेक बस्त्रादिक वस्तुमाला भूषणों समेतमर्मस्थल और चित्त रोचकप्यारेकवच और अनेक प्रिय बस्तुओं समेत शिरों को काटा और उपाय करनेवाले नरोत्तमों समेत अच्छीरीतिसे रथ घोड़े और हाथियों समेत नियत और अलंकृत सैकड़ों शूरबीरोंकोभी अर्जुनने सैकड़ोंबाणोंसे गिराया तब उनके साथ बड़े २ उत्तम मनुष्यभी गिरपड़े ८। ६ १० कमल सूर्य और पूर्णचन्द्रमाके समान बिशाल मुख मुकुटमाला और आभूषणोंसे प्रकाशमान शिर और भल्ल अर्द्धचन्द्र और क्षुरप्रनाम बाणोंसे घायल मनुष्योंकेभी शिर बारंबार पृथ्वीपर गिरे ११ फिर कलिंग अंगबंग देशीनिषाद जातिके असुरोंकेगर्भ प्रहारी बीरलोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुनके मारनेके अभिलाषीथे उनके गज और असुरोंकेसमान हाथियोंके कवच सूंड़ सारथी ध्वजा और पताकाओं कोकाटा इसके पीछे वहऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्रके प्रहारसे पर्वतोंके शिखर गिरतेहैं १२। १३ उनकेपराजय और छिन्नभिन्नहोने पर अर्जुनने सूर्यबर्णके बाण जालोंसे गुरूके पुत्रको ऐसा ढकदिया जैसेकि बड़े बादलों के जालों से वायु उदय हुये सूर्य को ढकता है १४ इसकेपीछे अश्वत्थामाजी अपने बाणोंसे अर्जुन के बाणोंको काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुनऔर श्रीकृष्णजीको ढककरऐसे गर्जे जैसेकि वर्षाऋतुमें चन्द्रमा और सूर्यको ढककर बादलगर्जता है १५ फिर अर्जुनने भी अश्वत्थामाजीको और अन्यलोगोंको ढककर शस्त्रोंसे घायलहुयेने समीप जाकर शीघ्रही बाणोंके अंधकार को दूरकर सुन्दर पुंखवाले बाणोंसे सबको घायल किया १६ फिर अर्जुन रथके ऊपर बाणोंको लेता चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्धमें दृष्ट न पड़ा फिर बाणोंसे छिदेहुये रथ हाथी घोड़े और पदा-

तियोंको अर्जुन ने मृतकदेखा १७ तब शीघ्रता करने वाले अ-
श्वत्थामाने शीघ्रहीदश उत्तम नाराचोंको चढ़ाकर एकही के समा-
न छोड़ा उनमेंसे पांच उत्तम बाणोंने श्रीकृष्णजीको औरपांचनेअ-
र्जुनको घायलकिया १८ अन्यमनुष्योंने ऐसे धनुर्वेदके ज्ञाता अश्व-
त्थामाजीसे पराजित और रुधिर डालनेवाले नरोत्तम इन्द्रके समा-
न श्रीकृष्ण और अर्जुनको युद्धमें मृतक समझा १९ इसके पीछे
श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि क्या भूलमें पड़ाहै इस युद्ध कर्त्ताको
मार नहींतो यहबीरअपूर्व दोषको उत्पन्नकरेगा और इसका बदला
न लेने वाला शूरबीर कठिनरोगीके समानहोगा २० फिरसावधान
अर्जुनने श्रीकृष्णजी से बहुतअच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपाय
के साथ अश्वत्थामाको घायल किया चन्दन के सारसे पीठभुजा
छाती शिर और जंघावोंको २१ क्रोधयुक्त अर्जुनने गांडीवधनुषसे
छोड़ेहुये विकर्णनामं बाणोंसे घायलकिया और बाग डोरोंको काट-
कर उसके घोड़ोंको भी घायलकिया फिर वहघोड़े व्याकुलहोकर
उसको युद्धसे दूरले गये २२ उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों
से हटायेहुये और अर्जुनके बाणोंसे पराजित बुद्धिमान् अश्वत्थामा
जीने बिचार कर फिर लौटकर अर्जुनके साथ लड़नानहींचाहा २३
अर्जुनऔर श्रीकृष्णजीकी निश्चयबिजयको जानतेहुये वह वेगवान्
उत्साह से भ्रष्टनाशमान बाण और अस्त्र योगवाले अंगिराबंशियों
में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी कर्णकी सेनामें गये २४ अर्थात् वह अश्व-
त्थामाजी घोड़ोंको स्वाधीन करके बहुत बिश्वासित कर रथघोड़े
और मनुष्यों से पूर्ण होकर कर्णकी सेनामें जा पहुंचे २५ जैसे कि
मन्त्र वा औषधी वा कर्मके करने से रोग शरीर से जाता रहताहै
उसी प्रकार घोड़ोंके द्वारा उस बिरोधी अश्वत्थामा के हट जाने
पर२६ अर्जुन और श्रीकृष्णजी बायुसे उड़ाईहुईपताका और बादल
के समान गर्जते हुये रथकी सवारीसे संसप्तकोंके सन्मुखगये २७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणि अश्वत्थामापराजयोनामअष्टादशोऽध्यायः१८॥

———※———

उन्नीसवां अध्याय॥

संजय बोले इसके पीछे पांडवोंकी सेनामें उत्तर दिशाकी ओर दंडधार के हाथ से घायल रथी हाथी घोड़े और पतियोंके शब्द उठे १ तब गरुड़ और बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों को चलाते केशवजी रथको लौटाकर अर्जुनसे बोले २ कि बल और शिक्षामें भगदत्त के समान मगध देशी दंडधार भी नाश करने वाले हाथी समेत कठिन युद्धकरनेवालाहै ३ इसको मारकर तू फिर संसप्तकोंको मारेगा श्रीकृष्णजीने यह कहकर अर्जुन को दंडधारके समीप पहुं-चाया ४ वह मगधदेशियों के मध्यमें अंकुश धारणाहाथियोंके युद्धमें ऐसा अत्यन्त उत्तम और असह्यथा जैसेकि ग्रहोंके मध्य में धूम्रकेतु ग्रहहोताहै उस भयानक रूपने शत्रुकी सेनाको ऐसा मर्द्दन किया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वीको मर्द्दन मरताहै ५ फिरवह राजा अच्छे प्रकार से अलंकृत गजासुरके समान बड़े बादल की समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथी पर सवार बाणोंसे हजारों हाथी घोड़े और रथोंके समूहोंको मारताहै ६ वह श्रेष्ठ हाथी घोड़े सारथी मनुष्य और रथोंको दबाकर चरणों से हाथियों को मलता सूंड़से मारता हुआ चक्रके समान भ्रमण करने लगा ७ फिरउसने उस बली पराक्रमी उत्तम हाथीके द्वारा लोहेके कवचोंसे अलंकृत मनुष्योंको और पतियों समेत घोड़ोंकोभी गर्जना पूर्व्वक ऐसे शब्दा-यमान स्थूल नर्सलके समान गेरकर मारा ८ इसके पीछे अर्जुन धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द मृदंग भेरी और बहुतसे शंखोंसे शब्दाय-मान हजारों घोड़े रथ और हाथियोंसे संकुलित युद्ध भूमिमें उत्तम रथकी सवारी से उत्तम हाथीके सन्मुख गये ९ वहां उस दंडधारने अर्जुनको दश उत्तम बाणों से और श्रीकृष्णजीको सोलह बाणोंसे व्यथित करके तीन२ बाणोंसे घोड़ोंको घायल किया इनको घायल करके बड़े शब्दको करके बारंबार हंसा और गर्जा १० इसके पीछे अर्जुनने भल्लोंसे प्रत्यंचा समेत उसके धनुषको काटकर

उसकी अलंकृत भुजाको भी काटा फिर रक्षकों समेत सारथियोंको मारा इस कारण वह महा क्रोधित हुआ इसके अनन्तर उस मत वाले घातक बायुकेसमान तेजस्वी हाथीके द्वारा अत्यन्त ब्याकुल करनेके अभिलाषी उस राजाने तोमरोंसे अर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायल किया ११ । १२ इसकेपीछे इसको हाथकीसूंड़केसमान भुजा ओंको और पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखको तीनक्षुरप्रसे एकबार में छेदा और सैकड़ों बाणोंसे हाथीको घायलकिया १३स्वर्णमयी अर्जुन के बाणों से संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायंकाल के समय ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि दावानल अग्निसे ज्वलित औषधियों समेत वृक्षोंवाला पर्व्वत प्रकाशित होताहै वह बादलके समान गर्जता चलता घूमता दुःख से पीड़ितचलते २ सवार समेत ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बज्रसे टूटाहुआ पर्व्वतगिरपड़ता है१४ । १५ उसकेमरनेकेपीछे उसका दूसरा भाई द्वन्द युद्धमें भाई के मरनेपर श्रीकृष्णअर्जुनके मारनेकाअभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचल के शिखरके समान हाथीकी सवारीसे सन्मुखआया १६ वह सूर्य्य कीकिरणके समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरोंसे श्रीकृष्णजीको और पांचसेअर्जुनको घायलकरताहुआ गर्जा इसकेअनन्तर अर्जुन नेउसकी भुजाओंको काटा १७सुन्दर तोमर और बाजूबन्द रखने वाले चन्दनसे चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटीहुई दोनों भुजाहाथी परसे गिरतीहुई ऐसीशोभायमान हुईं जैसे कि अत्यन्तसुन्दर दोबड़े सर्प पर्व्वतसे गिरतेहोयं १८ इसीप्रकार अर्जुनके अर्द्धचन्द्र बाणसे कटाहुआ दंडका शिर हाथी के ऊपरसे पृथ्वीपर गिरते समय ऐसे शोभायमानहुआ जैसेकि सूर्य्यअस्ताचलसे पश्चिम दिशामें गिरता है१६इसके पीछे अर्जुनने सूर्य्यकी किरणरूप उत्तम बाणोंसे उसके श्वेतहाथीकोभी छेदा वहभी शब्दकरताहुआ ऐसेगिरा जैसे बज्रसे टूटा हिमाचलका शिखर गिरताहै २० उसके सिवाय उसीकेसमान अन्य उत्तम२ हाथी विजयाभिलाषी हुये और वह भी उसी प्रकार से अर्जुनके हाथसेमरे जैसेकि वह दोनों हाथी मारे गये थे इसके

पीछे शत्रुओंकी बड़ी भारीसेना छिन्नभिन्न होगई २१ युद्धमें परस्पर मारने वाले हाथी घोड़े और मनुष्योंके समूह चारों ओरसे परस्पर मेंअत्यन्त घायल होकर गिरपड़े और बहुतसे अत्यन्त बकने वाले मनुष्यभी मारेगये २२इसके पीछे पांडवीसेना के मनुष्य अर्जुनको घेरकर ऐसे बोले जैसेकि देवताओंके समूह इन्द्रको घेरकर बोलेथे कि हेबीर अर्जुन हमलोग जिससे कि मृत्युके समान भयभीतथे वह शत्रुप्रारब्धसे तुम्हारे हाथसे मारागया २३ जो इस प्रकार परा-क्रमीशत्रुओंसे पीड़ामान इन मनुष्योंकी तुमरक्षानहीं करतेतौ शत्रु-ओं की वैसीही प्रसन्नता होती जैसी कि हम लोगोंको हुईहै २४ इसकेअनन्तर शुभ चिन्तकोंके इन बचनोंको सुनकर वह प्रसन्न चित्तसंसप्तकोंका मारनेवाला अर्जुन प्रत्येकको उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चलदिया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिदंडधारबधेएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे अर्जुन ने वहांसे लौटकर मंगल ग्रहके समान बक्र और अतिबक्र गतियों से हजारों संसप्तकों को मारा १ हेभरतबंशी अर्जुनके बाणोंसे घायल मनुष्यघोड़े रथहाथी सब के सब इधर को तितिरबितिर होकरघूमनेलगे और घूम २ कर गिरे औरमृतक होकर नष्ट होगये२युद्धमें सन्मुख लड़नेवालेबीरोंके उत्तम घोड़ेरथ हाथी रथी ध्वजा धनुष शायक हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरों को अर्जुन ने अपने भल्ल क्षुरप्र अर्द्धचन्द्र और बत्स दन्तनाम बाणों से काटा ३।४जैसेकि गौकेनिमित्तयुद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैलके सन्मुख जाते हैं उसीप्रकारहजारों शूरबीर अर्जुनके ऊपर गिरते थे ५ उन सब बीरों के साथ अर्जुन का युद्ध ऐसा बड़ा भयकारी रोम हर्षण करने वाला हुआ जैसे कि तीनों लोकोंकी बिजयके वास्ते दैत्योंका युद्ध इन्द्र के साथमें हुआ था ६ उग्रायुधके पुत्रने सर्पोंके समान तीनबाणोंसे उस अर्जुनको घायल

किया और अर्जुनने उसके शिरको धड़से जुदा किया ७ फिर क्रोधित होकर उन लोगोंने सब ओर से अर्जुनके ऊपर नाना प्रकारके शस्त्रोंकी ऐसी बर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतुमें मरुत् देवता के प्रेरित किये हुये बादल हिमालय पर जलकी वृष्टिको करते हैं ८ अर्जुन ने शत्रुओं के अस्त्रों को सब ओरसे अपने अस्त्रों से रोककर अच्छी रीतिसे चलाये हुये बाणोंसे अनेक शत्रुओं को मारा ९ और उनके रथोंको भी बाणोंसे रथियों समेत ऐसी दशाका करदिया कि जिन के घोड़े और सारथी मरजाने से हाथोंसे तरकस और ध्वजा पताका गिर पड़ीं बागडोर हाथसे छूटगई पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीरके कवचभी टूट १०। ११ वहां टूटे हुये बहुमूल्य रथ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अग्नि बायु और जलसे टूटेहुयेधनी लोगोंके घर होतेहैं १२ फिर बज्र और बिजली के समान बाणों से टूटे हुये हाथियोंके कवच ऐसे टूटे पड़े जिस प्रकार बज्रपात और अग्निसे पर्ब्बतों के शिखर गिर पड़तेहैं १३ फिर अर्जुन के हाथ से घायल होकर बहुत से घोड़े सवारों समेत गिरपड़े उन घोड़ों की जीभ औरनेत्र निकल पड़े थे इसहेतुसे वहपृथ्वी पर पड़े हुये रुधिर से लिप्त देखने के अयोग्य मालूम होतेथे १४ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुन के नाराचोंसे छिदे हुये मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज २ करघूमते और मलिन मन हो२कर पृथ्वी पर गिर पड़े १५ अर्जुनने बड़े स्वच्छ बिजली और बिषके समान बहुतसे बाणोंसेउनको ऐसेमारा जैसे कि महा इन्द्र दानवों को मारता है १६ अर्जुन के हाथसे मरे हुये जो वीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करने वाले हुये वह वीरबड़े मूल्यके कवच भूषण और नाना प्रकारकी पोशाकों समेत शस्त्रोंके धारण करने वाले थे १७ वह पवित्रकर्मी वाउत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्त्ता अर्जुन के बाणों से पराजय होकर पृथ्वी पर गिरपड़े और अपने उत्तम कर्म के द्वारा स्वर्ग को गये १८ इसके पीछे भिन्न२ देशोंके स्वामी क्रोधयुक्त शूरबीर आपके युद्ध कर्ता अपने समूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठअर्जुनके सन्मुख गये १९

रथ घोड़े औरहाथियों परसवार मारनेके अभिलाषी वहपतिलोगभी नाना प्रकारके शस्त्रों को चलातेहुये शीघ्र सन्मुख दौड़े २० जिनकी अर्जुन रूपी बायुने शीघ्रता पूर्व्वक छोड़ेहुये बाणोंसे उस शस्त्ररूपी बड़ी बर्षाको जोकि युद्ध कर्त्ता रूपी बड़ २ बादलोंसे छोड़ी हुईथी पृथक २ करदियाथा २१ वह घोड़े हाथी और पतियोंसे युक्त बड़े२ शस्त्रोंसे पूर्ण अर्जुनके शस्त्र और अस्त्र रूपी पुलसे हटकर साथमें पार होने के अभिलाषीथे २२ इसके अनन्तर बासुदेवजीने कहा कि हे निष्पाप अर्जुन क्या खेल करताहै इन संसप्तकोंको मारकर फिर कर्ण के मारनेका उपाय शीघ्रतासे कर २३ तब अर्जुनने श्री-कृष्णजीसे बहुत अच्छा यह शब्द कहकर श्रेष्ठ संसप्तकोंको तुच्छ करके शस्त्रोंकेबल से ऐसामारा जैसेकि दैत्योंको इन्द्रमारताहै २४ अर्जुन बाणोंको लेता चढ़ाता और मारताहुआ किसीको दिखाई नहीं दिया और सावधान वीरोंनेउसको शीघ्रता से बाणोंकोछोड़ता हुआ भी देखा २५ हे भरतबंशी उन श्रीकृष्णजीने बड़ा आश्चर्य किया कि हंसोंकेसमान उज्ज्वल वह बाण सेनामें ऐसे पहुंचे जैसे कि सरोवर में हंसपक्षी पहुंचते हैं २६ इसके अनन्तर मनुष्योंकी प्रलय वर्त्तमान होनेपर युद्ध भूमिको देखकर श्री कृष्णजी अर्जुन से बोले २७ हे अर्जुन दुर्य्योधनके कारणसे यह भरतबंशी और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वी पर वर्त्तमान है २८ हेभरतबंशी बड़े धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुषधारियोंकोवा आभूषणों समेत तर्णोगेंको टूटाहुआ देखो २९ और टेढ़े पर्व्व औरसुनहरी पुंखवाले तेलसे साफकिये कांचली से छुटे सर्पोंके समान नाराच नाम बाणों को देखो ३० हेभरतबंशी सुबर्ण से अलंकृत चित्र बिचित्र तोमरों को भी देखो और धनुषसे टूटेहुयेसुबर्ण पुंखवाले बाणोंको देखो ३१ सुबर्ण से अलंकृत बाण वा कंचन से शोभित शक्तियों को वा सुनहरी वस्त्रों से मढ़ेहुई गदाओं को देखो ३२ सुनहरी दुधारे खड्ग पट्टिश और डंडों समेत कटेहुयेफरसोंको देखो ३३ और बहु मूलके पड़ेहुये परिघ भिन्दिपाल भुशुंडी कुणप और अपस्कुंतोंको

देखो ३४ बिजयाभिलाषी वेगमान शूरबीर नाना प्रकारकेशस्त्रोंको लेकर निर्जीव होकर जीवते से दिखाई देतेहैं ३५ गदाओंसेमथित अंगवाले हाथी घोड़े और रथों समेत मूशलोंसे कूटे हुये मस्तक वाले हजारों युद्ध कर्त्ताओंको देखो ३६ हे शत्रुहन्ता बाण शक्ति दुधारे खड्ग तोमर पट्टिश प्रास नखरल गुड़आदि अनेक शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूह रुधिर में भरे हुये निर्जीव देहोंसे पड़ेयुद्धभूमि में वर्त्तमानहैं ३७।३८ और बाजूबंद आदि शुभभूषण हस्तत्राणऔर केयूरको धारण करनेवाली चन्दन से लिप्त भुजाओंसे पृथ्वीशोभायमानहै ३६ और वेगवान् शूरबीरों की टूटीहुई उत्तम भुजाओंसे वा हाथीकी सूंड़के समान टूटीहुई जं-घाओंसे और उत्तम चूड़ा बांधनेवाले कुंडल धारीशिरोंसे युद्ध भूमि अत्यन्त शोभादेरहीहै सुनहरी घंटे रखनेवाले उत्तम रथोंको भी अ-नेक प्रकारसे टूटाहुआ देखो ४०।४१ और रुधिरमें भरे हुये बहुत से घोड़ोंको देखो वा अनुकर्ष उपासंगपताका और नाना प्रकारकी ध्वजाओंको देखो ४२ युद्धकर्त्ताओंके फैलेहुये श्वेतरंगके महाशंखों को और जिह्वा निकले पर्ब्बतके समान पड़ेसोते हुये हाथियोंको देखो४३बैजयन्ती नाम बिचित्र मालाओंसे और मरेहुये हाथियोंके सवार औरअनेक कालेकंमलोंसे युक्त परिस्तोमोंसे ४४ अच्छी कृष्ण औरबिचित्र अद्भुतरूप कुथाओंसेऔरहाथियोंसे टूटकर गिरेहुयेघंटा ओंके चूर्णोंकोदेखो ४५ बैडूर्य्य मणिके डन्डवाले पृथ्वीपर पड़ेहुये अंकुशोंको और घोड़ोंके जुये पीठ और रत्न जटित छिद्रोंकोदेखो४६ सवारोंकी ध्वजाओंकी नोकापर टूटेहुये सुवर्णसे चित्रित घंटाओंको और बिचित्र मणियोंसे जटित सुवर्णअलंकृत ४७ पृथ्वीपर पड़ेहुये मृगचर्मसे बनेहुये घोड़ोंके जीनपोशोंको और राजाओंकी चूड़ामणि औरसुनहरी बिचित्र मालाओंको देखो ४८ धनुषसे छिदेहुये छत्र चामर और बैजयन्तियोंको देखो चन्द्रमा और नक्षत्रोंके समानप्र-काशित सुन्दर कुंडल धारी ४६ अलंकार युक्तडाढ़ी मूछोंसे संयुक्त पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखोंसे बिछीहुई पृथ्वीको देखो ५० इसी

प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलोंके समान रूपीराजाओंके मुखोंसे इस पृथ्वीको नक्षत्र समूहों समेत निर्मल चन्द्रमासे शोभितआकाश केसमान सदैव बाणरूप नक्षत्रोंकी मालाओंके रखनेवालीको देखो हे अर्जुन इस महा युद्धमें यह कर्मतेरेही योग्यहै ५१।५२चाहै वह कर्मजो तुमने स्वर्गके युद्धमें इन्द्रका किया इसरीतिसे वह युद्धभूमि अर्जुनको दिखाते ५३ओर चलतेहुयेश्रीकृष्णजीने दुर्य्योधन कीसेना में शंखदुन्दुभी भेरी और पणवोंकेबड़ेशब्दों कोसुना५४और रथघोड़े हाथी और शस्त्रोंके भयानक शब्दोंकोभी सुनाफिरश्रीकृष्णजीनेवायु केसमान घोड़ोंके द्वारा उस सेनामें प्रवेशकरके ५५ राजा पाण्ड्य केहाथसे आपकी सेनाको पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य्यकिया बाण और अस्त्र विद्यामें अत्यन्त श्रेष्ठ उस पांड्यने युद्धमें अनेक प्रकारके बाणोंसे ५६ शत्रुओंके समूहोंको ऐसेमारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्योंको मारतीहै घातकरनेवालोंमें श्रेष्ठ पांड्यने तीक्ष्ण बाणोंके द्वारा हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंको ५७ छेदकर उन निर्जीवोंको गिराया फिर पांडवोंने शत्रुओंकेचलायेअस्त्र और नानाप्रकार के शस्त्रोंको शायकोंसे काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरोंको मारताहै ५८। ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे विंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय तुमने प्रथमही लोकमें विख्यात पांड्य बड़ा बीर वर्णन किया परन्तु तुमने युद्ध में इसके कर्म को वर्णन नहीं किया १ अब उस बड़ेबीर के पराक्रम और शिक्षाके प्रभाव बल बड़प्पन और अहंकारको ब्योरेबार कहो २ संजय बोले कि तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण अर्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिनरथियोंको सर्व विद्या सम्पन्न और धनुष विद्या में सबसे श्रेष्ठ मानतेहो और जो इन सब महारथियोंको भी अपने पराक्रमसे तुच्छ समझताहै जिसने अन्य किसी राजा को अपने

समान नहीं माना ३।४ और जो भीष्मद्रोणाचार्य्यके साथमें अपनी समानताकोभी नहीं सहताहै और जिसने अपने को वासुदेवजी औरअर्जुनसे कम नहीं जाना ५ उसराजाओंमें और सबशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजा पाड्यने अत्यन्तक्रोध युक्तहोकर यमराजके समान कर्णाको बड़ीसेनाको मारा ६ बड़ेरथ घोड़ोंसमेत अत्यंतउत्तम पति-योंसे व्याप्त और पांड्यकेपराक्रमसे घायल होकर वहसेनाकुम्हार के चक्रके समान घूमती हुई इधर उधर फिरनेलगी ७ पांड्यने घोड़े ध्वजा और सारथियों से रहित रथोंको और कठिन युद्धसे मारेहुये हाथियोंको अच्छीरीतिसे चलाये बाणोंसे ऐसे हटादिया जैसे कि वायु बादलोंको हटाता है ८ पताका ध्वजा और शस्त्रोंसे रहित हाथियों को हाथियोंके सवारों समेत पीछेके रक्षकोंको ऐसे मारा जैसेकिशत्रुहन्ता इंद्रअपने वज्रसे पर्वतोंकोविदीर्ण करताहै ९ उसने शक्ति प्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ोंको भी मारकर पुलिंद,खस,बाल्हीक,निषाद अंधककुंतल १० दक्षिणात्यऔर भोजोंको और युद्धमें निर्दई शूरोंको बाणोंके द्वारा शस्त्र और कवचों सेरहित करके निर्जीव किया ११ युद्धमें बाणोंसे मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलतासे पृथक्पांड्य को देखकर अश्व-त्थामाजी भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित चतुरंगिणी सेना समेत उसके सन्मुख गये १२ वहां प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजीने निर्भयता के समान इसको मीठेवचनों से समझा-करकहा १३ और बड़ी मंद मुसकान समेत युद्धके निमित्त बुलाया और कहा कि हे कमलदल लोचन उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ वज्रके समान दृढ़ शरीर और बलमें बिख्यात राजापांड्य १४ आपके धनुष की प्रत्यंचा पृष्ठस्थान में चिपटी हुई दिखाई देतीहै औरबड़े भुज-दंडोंसे बहुत बड़े धनुषको बड़े बादलके समान कठिन टंकारते हुये दृष्टिपड़तेहो १५ बड़े वेगवान्‌बाणोंकी वर्षासे शत्रुओंके सन्मुखमुझबा णवर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सन्मुख होनेवालाशूरबीर युद्धमें नहीं देखताहूं १६ तुमअकेलेही बहुतसे हाथीघोड़े रथ और पतिलोगों

कोऐसे मथतेहो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह वनमें मृगोंके समूहोंको मथन करताहै १७ हेराजा रथके बड़े शब्द सेपृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करतेहुये ऐसे दिखाई देतेहो जैसेकि वर्षाके अन्तमें खेतोंका हानि करनेवाला गर्जताहुआ बादल होताहै १८ विषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण बाणोंको तूणोरसे निकाल२ कर मुझअकेलेसे ऐसे युद्धकरो जैसेकि अन्धकने शिवजीके साथयुद्ध कियाथा १९ प्रहार करो ऐसे कहेहुये घायल हुये उस मलयध्वज पांड्यने बहुत अच्छा ऐसा शब्द कहकर करणीनामबाणसेअश्वत्थामाको घायलकिया २० आचार्योंमें श्रेष्ठ मंद मुसकानकरते अश्वत्थामाने मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्नि शिखाके समान बाणोंसेपांड्य को घायल किया इसके पीछे अश्वत्थामा जीने अत्यन्त तीक्ष्णमर्म भेदी अन्य नाराचोंकोभी फेंका २२ पांड्यने उन बाणोंको अपने तीक्ष्ण धारवाले नौबाणोंसे काटा और चार बाणोंसे घोड़ोंको घायल किया और घायल होतेही वह शीघ्र मरगये २३ इसके पीछेसूर्य्य के समान तेजरूपी पांड्यने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे अश्वत्थामा के उनबाणोंको काटकर धनुषकी बड़ी प्रत्यंचाको काटा २४ इसके पीछे शत्रुहन्ता ब्राह्मण अश्वत्थामा जीने दिव्य धनुषको तैयार करके और शीघ्रही रथमें जुड़ेहुये दूसरे उत्तम घोड़ों को देख कर२५उसमें बैठे हजारोंबाणोंको चलाया आकाश और दिशाओं को बाणोंसे व्याप्त करदिया २६ इसके पीछे बाणफेंकनेवाले अश्वत्थामाके उन सब बाणों को अविनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पांड्यने उनको काटकर गिराया २७ फिर पांड्यने अश्वत्थामा जी के उन बाणोंको काटकर युद्धमें अपने तीक्ष्णधारबाणोंसे उनकेदोनोंचक्र रक्षकोंको मारा२८ इसके पीछे शत्रुकी हस्त लाघवताकोदेखकर धनुषको मंडलरूप करने वाले अश्वत्थामाजीने ऐसेबाणोंको छोड़ाजसेकि पूषाका छोटाभाई पर्जन्य नाम जलकी वर्षाको छोड़ता है २९ हे श्रेष्ठ जिनशस्त्रोंको आठ २ बैल वाले आठछकड़ेले चलते हैं उनको अश्वत्थामाजीने अर्धघड़ीमें चलाया ३० उस यमराज

के समान क्रोधरूप और मृत्युके सदृशको जिन्होंनेवहांदेखाथाउनमें से बहुधातो अचेत होगये ३१ जैसेकि वर्षाऋतु में बादलोंके समूह पर्व्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वीपर वर्षा करतेहैं उसीप्रकार आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामाने उस संपूर्णसेनापर बाणोंकी बर्षाकरी ३२ पांड्यरूपीवायुने उस अश्वत्थामारूप बादल से छोड़हुये बड़े दुखसे सहने के योग्य उस बाणरूपी वर्षाको बड़ी प्रसन्नतासे अपने वायु रूप अस्त्रसे हटाकर नाशकर दिया ३३ अश्वत्थामाजीने उसगर्जने वाले पांड्यकी ध्वजा को जोकि चन्दन अगरसे चर्चित मलया- चलके स्वरूपथी काटकर चारों घोड़ों को मारा ३४ फिर एकबा- णसे सारथीको मारकर और अर्धचन्द्रसे बड़े बादलकी समान शब्दायमान धनुषको काटकर रथको टुकड़े २ करदिया ३५ अ- श्वत्थामा ने अस्त्रोंको अस्त्रोंसेरोककर और सब शस्त्रोंको काटकर आधीन होने वाले शत्रुको युद्धाभिलाषीहोकर युद्धमें नहीं मारा३६ इसी अन्तरमें कर्ण हाथियोंकी सेनामें गया और वहां उसनेजाकर पांडवोंकी बड़ी सेनाको भगाया ३७ हे भरतबंशी उसेने टेढ़े पर्व्व वाले बहुतसे बाणोंसे रथियोंको विरथ करके हाथीऔर घोड़ोंकोअ- चेतकरदिया ३८ इसके पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाने शत्रुह- न्ता रथियोंमें श्रेष्ठ रथसेरहित पांड्यको युद्धकी इच्छा करके नहीं मारा ३९ अच्छा अलंकृत शीघ्रगामी शब्द पर चलनेवाला अश्व- त्थामा के बाणोंसे घायल पराक्रमीहाथी जिसका कि स्वामी मारा गयाथा बेगसे हाथियोंको मलताहुआ शीघ्र उस पांड्यकीओर ग- या ४० हाथियोंके युद्ध में कुशलमलयध्वज पांड्य बड़ी शीघ्रताकी करता हुआ उस पर्व्वत के शिखरकी समान श्रेष्ठहाथी पर ऐसे स- वार हुआ जैसेकि गर्जताहुआ सिंह पर्व्वत के शिखर पर चढ़ता है ४१ उस मलयाचलके स्वामी गर्जते और अंकुशसे हाथी को क्रोधयुक्त करवानेवालेपांड्यने पराक्रम और अस्त्रचलानेके उपाय जाननेके अभिमानसे शीघ्रही सूर्य की किरणके समान तोमर को गुरूके पुत्र पर छोड़कर ४२ माराहै मारा है ऐसे आनन्द पूर्वक

शब्दोंको करताहुआ बडेवेगसेगर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुट को तोमर सेतोड़ा जोकि मणियों से जटित उत्तम हीरोंसे और सुवर्णसे शोभितबहु मूल्यकेबस्त्र और मालाओंसे अलंकृत था ४३ सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्निकेसमान प्रकाशित वह मुकुट कठिन अघातसे ऐसेचूर्णहोकर गिरपड़ा जैसेकि इन्द्र के वज्रसे घात किया हुआ बड़े शब्दयुक्त होकर पर्वत का शिखर पृथ्वीपरगिरे ४४ उस केपीछे अश्वत्थामाजीने यमराजदंडके समान शत्रुओं के पीड़ा करने वाले चौदह बाणोंको हाथमेंलिया ४५तब उस उत्तम तेजस्वी ने हाथीके चारों पैर और सूंड़ पांच बाणोंसे राजा की दोनोंभुजा और शिरको तीनबाणोंसे और राजा पांड्यके पीछेचलनेवाले छः महारथियोंको छः बाणोंसे मार डाला ४६ राजाकी दोनों भुजाजो बहुत लंबी चन्दनसे चर्चित सुवर्ण मुक्ताहीरे और अन्य २ मणियों से अलंकृतथीं पृथ्वीपर गिरपड़ी और गरुड़ से व्याकुल सर्पोंकी समान फड़फड़ाने लगीं ४७ वह पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान और क्रोधसे बड़ी २ लालआंख रखनेवाला कुंडलधारी शिरभी पृथ्वीपर गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखों के मध्यमें चन्द्रमा वर्त्तमानहोताहै ४८ फिरवह हाथी पांच उत्तम बाणों से छःभाग किया गया और राजा भी तीन बाणोंसे चारखंड कियागया उस सावधान युद्ध कर्त्ताने इस प्रकारसे दशभाग किये जैसे कि दश देवताओंसे संबंध रखनेवाला हव्य होताहै ४९ वह पांड्य घोड़ेहाथी और मनुष्योंको जोकि राक्षसोंके भोजनथे टुकड़े२ करके अश्वत्थामाके बाणोंसे ऐसे शांतहोगया जैसे कि पितरोंको प्रिय अग्नि मृतकदेह रूप हव्य को पाकर जल प्रवाह से शांत होजाताहै ५० फिर सुहृदजनों समेत आपकेपुत्र राजा दुर्योधनने उस युद्धकर्ममें विशारद और निर्द्वन्द्व कर्म गुरूके पुत्रसे मिलकर प्रसन्नतासे ऐसे उनका धन्यबाद किया जैसे कि देवताओंके ईश्वर इन्द्रने बलिके विजय होनेपर विष्णु को धन्यबाद दियाथा ५१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिपांड्यवधेएकविंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय पांड्यके मरने और एक वीर कर्ण के हाथ से शत्रुओंके भागनेपर अर्जुनने युद्धमें क्या किया १ वह विद्यामें पूर्ण पराक्रमी योग्य वीर अर्जुन महात्मा शंकरजीसे भी विजयनहीं किया गया २ उस शत्रुहन्ता अर्जुनसे बड़ाभारी कठिन भय है उस अर्जुनने जो २ बड़ा कर्म किये हे संजय उन सबको मेरे आगे वर्णनकरो ३ संजय बोले कि पांड्य के मरजाने पर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह हितकारीबचन कहा कि मैं राजायुधिष्ठिरको और हटेहुये पांडवोंको नहींदेखताहूं ४ लौटे हुये पांडवसे शत्रुकी फिर बड़ी सेना पराजय हुई परन्तु अश्वत्थामाके संकल्पसे कर्णके हाथसे संजय मारेगये ५ इसप्रकारसे घोड़े हाथी और रथोंके नाश करनेवाले बड़े बीर बासुदेवजीने अर्जुनसे सब वृत्तान्त कहा ६ भाई युधिष्ठिरके उस बड़े भयको देख और सुनकर पांडव अर्जुनने श्री कृष्णजीसे कहा कि शीघ्र घोड़ोंको चलाइये ७ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी रथकी सवारीके द्वारा उसके सन्मुख शीघ्रगये जिसका कि कोई सन्मुखता करनेवाला न था फिर बड़ी कठिन सन्मुखताहुई ८ तदनन्तर निर्भय कौरव पांडव अर्थात् कुन्तीके पुत्र भीमसेन आदि और कर्णआदिक कौरव और हम सब लोग परस्परमें सन्मुख हुये हेराजाओंमें श्रेष्ठ इसके पीछे कर्ण और पांडवोंका युद्ध यमराजके देशका बढ़ानेवाला फिरजारी हुआ १० धनुषबाण परिघ खड्ग पट्टिश तोमर मूशल भुशुंडी शक्ति दुधारा खड्ग फरसा ११ गदा प्रास तीक्ष्ण कुन्त भिंदिपाल और बड़े २ अंकुशोंको हाथमें लेकर परस्पर मारनेकी इच्छासे चढ़ाई करनेवाले हुये १२ बाण और धनुषोंकी प्रत्यंचाके शब्दोंसे दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाशको शब्दायमानकरतेहुयेशत्रुओंके सन्मुखगये १३ बड़ेशब्दोंसे अत्यन्त प्रसन्न युद्धसे पारहोनेके अभिलाषी वीरोंने शत्रुओंके वीरोंके साथ महाघोर युद्धकिया १४

तब धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द और चिंघाड़ते हाथी और गिरतेहुये मनुष्योंका महाघोर शब्द हुआ १५ फिर वहां पर सेनाके मनुष्य सन्मुख गर्जतेहुये शूरबीरोंके नानाप्रकारों के शब्दोंको सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिरपड़े १६ उनके गर्जते और बाणोंकी बर्षाकरतेहुये बीर कर्णने पांचालदेशी बीरोंके बीस रथियोंको घोड़े सारथी और ध्वजाओं समेत अपनेबाणोंसे स्वर्गको पठाया १७।१८युद्धमें पांडवोंके बड़ेपराक्रमी उत्तम युद्धकर्त्ताओंनेशीघ्रता पूर्व्वक अस्त्रोंके चलानेसे आकाशको व्याप्तकरके कर्णकोचारों ओरसे घेरलिया १६ इसके पीछे कर्णनेबाणोंकी बर्षासे शत्रुओंकी सेनाको छिन्न भिन्न करके ऐसा व्यथित किया जैसे कि पक्षियोंसे व्याप्त कमलोंके बनोंको गजराज मथन करताहै २० कर्णनेशत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुषकोले तीक्ष्णबाणों से उन शत्रुओंके शिरोंको काटकर दूर गिराया २१ तब मृतक बीरोंकी टूटीहुई ढालें और कवच पृथ्वीपर गिरपड़ीं २२ धनुषसे छोड़ेहुये मर्म देह और प्राणोंके घातक बाणोंसे धनुषोंकी प्रत्यंचा और तूणीरोंको ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुकसे घोड़ोंको घायल करतेहैं २३ कर्णने बाणके लक्षमें वर्त्तमान पांडव संृजय और पांचालोंको बड़ेवेगसे ऐसे मर्द्दन किया जैसे किमृगोंके समूहोंको सिंह मर्द्दन करताहै२४ हे श्रेष्ठ इसके पीछे पांचाल और द्रौपदीके पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकी समेत एक साथही कर्णके सन्मुखगये २५ उनकौरव पांचाल और पांडवोंके उपाय करने पर युद्धमें बड़े २ युद्ध करने वालोंनेअपने प्रियप्राणोंको त्यागकरकेपरस्परमें घायल किया२६ अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणोंसे युक्त महाबली कालदण्डके समान गदा मुशल और परिघोंको उठाये हुये गर्जते और एकएक को पुकारते शीघ्रसन्मुखगये २७।२८इसके पीछे एकने एकको घायल किया और घायल हो होकर गिरपड़े और कोईशूरबीर अंगोंसेरुधिर गेरतेमस्तकनेत्र और शस्त्रोंसे हीनहोकर २६ शस्त्रोंसे युक्त और दांतों से पूर्ण रुधिर में भरे हुये अनारके वृक्षकी समान मुखोंसे जीवते

हुयेसे नियत हुये ३० इसीप्रकार दूसरोंने फरसा पट्टिश खड्ग शक्ति भिन्दिपाल प्रास और तोमरों से ३१ काटाछेदा और घायल करके फेंका गिराया मारा और क्रोध युक्त वीरोंने युद्धरूपी महा समुद्रमें घायल किया ३२ परस्पर में मारे हुये निर्जीव रुधिर से भरे हुये सुन्दर रथवाले रुधिर को गिराते हुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि चन्दन के कटेहुये वृक्ष गिराये जाते हैं ३३ रथोंसे रथीमारेगये हाथियों से हाथी मारेगये मनुष्यों से मनुष्य और घोड़ों से मारे हुयेहजारों घोड़े ३४ क्षुरत्र भल्ल और अर्द्धचन्द्रों से कटे हुये भुज शिर छत्र और हाथियों की सूंड़ों समेत मनुष्यों की भुजा पृथ्वी पर गिर पड़ीं ३५ हाथियों ने रथों समेत घोड़े और मनुष्यों को मर्द्दन किया अश्वारूढ़ों के हाथ से शूरवीर मारे गये ३६ और पताका ध्वजाओं समेत कटीहुई सूंड़ों समेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटे हुये पर्बत गिरते हैं वह हाथी रथ पतियों के सन्मुख जाकर मरे और मरकर गिरपड़े ३७ और शीघ्रता करने वाले अश्वसवार सन्मुख होकर पतियों के हाथसे मारे गये ३८ और युद्धमें अश्व-सवारों के हाथसे मारे हुये पतियोंके समूह ऐसे नष्टहोगये जैसे कि मर्द्दन किया हुआ कमल और मुरझाई हुई माला होंय ३९ इसी प्रकार उस बड़े युद्ध में मृतकों के मुख भंग होगये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप और हाथियों ने ऐसे कुरूपता को पाया जैसेकि म्लान बस्त्र होते हैं ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके पुत्रके कहने से हाथियों के सवार अपने हाथियों के द्वारा मारने के इच्छावान् पर्षत के पोते क्रोध युक्त धृष्ट-द्युम्न के सन्मुख गये १ हे भरतवंशी अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरबीर पूर्व दक्षिणकेवासी अंग बंग पुंड्र मागध ताम्र लिप्त-क २ मेकल कोशल मद्र दशार्ण निषध कलिंगों समेत गजयुद्ध में

कुशल ३ बाण तोमर और नाराचोंसे बादलकी समान बाण वृष्टि करनेवाले उन सबने पांचलदेशी सेनाको अपने बाणरूप वृष्टीसे सींचा ४ एंड़ी अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुये उन हाथियों को मर्द्दन करने का अभिलाषी धृष्टद्युम्न बाण और नाराचों से बर्षा करनेवाला हुआ ५ हे भरतबंशी उन पर्व्वताकार हरएक हाथीको फेंके हुये दश छः और आठ बाणोंसे घायल किया जैसे कि बादलों से सूर्य्य ढक जाता है उस रीतिसे धृष्टद्युम्न को हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्णशस्त्रधारी पांडव और पांचाल लोग गर्जते हुये गये६।७प्रत्यंचाके शब्दों से शब्दायमान बाणों से हाथियों के सन्मुख बाणवृष्टि करनेवाले नकुल और सहदेव और द्रौपदीके पुत्र वा प्रभद्रक ८ सात्यकी शिखंडी चेकितान नाम पराक्रमी बीरोंने चारों ओरसे ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओं से बादल पर्वतोंको सींचता है ९ बरछोंसे भिदेहुये उन अत्यंत क्रोधयुक्त हाथियोंने मनुष्य घोड़े और रथोंको भी सूंड़ोंसे पकड़ २ पटक पटक कर पैरोंसे मर्द्दनकिया और किसी२ को दांतोंकी नोकोंसे घायल कर करके घुमाकर दूर फेंकदिया और दांतोंमें चिपटे हुयेअन्यभयानकरूप जीवभी गिरपड़े१०।११ सात्यकीने सन्मुख वर्त्तमान राजा अंगके हाथीको उग्रवेगी नाराचमें मर्मस्थलोंमें छेदकरगिरादिया१२ फिर सात्यकीने उन प्रहारोंसे बचेहुये शरीरवाले हाथीसे उछलनेके अभिलाषी राजा अंगकी छातीको नाराचसे घायल किया तब वह पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ सहदेवने पुण्ड्रके राजाके हाथीको चलायमान पर्वत के समान आते हुयेको बड़े उपायसे चलाये हुये तीन नाराचोंसे घायलकिया १३।१४ सहदेवउस हाथीको पताका हाथीवान कवच और ध्वजा समेत मारकर राजा अंगके सन्मुखगया १५ फिर नकुलनेसहदेवको रोककर यमराजके दंडकेसमान तीन नाराचोंसे हाथी को औरसौसे उस राजा अंगको घायल करके व्यथित किया १६ फिरराजा अंगने सूर्यकी किरणोंके समान प्रकाशित आठ सौ तोमरों को नकुलके ऊपर फेंका तब नकुलने प्रत्येक तोमरके

तीन२ खंडकरदिये १७ और अर्द्धचंद्र से उसके शिरको काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिरपड़ा १८ फिर हाथीकी शिक्षा में कुशल इस अंगदेशी राजपुत्रके मरनेपर अत्यंत क्रोधमें भरे हुये अंगदेशी हाथीसवार अपने हाथियों समेत नकुलके सन्मुख गये १९ चलायमान सुन्दर मुखरखने वाली पताका और सुवर्ण के कवचधारी हाथियों समेत नकुलके पीड़ा करने के अभिलाषी होकर अत्यंत प्रकाशमान पर्वतोंके समान उसके सन्मुख गये २० फिर वह मारने के आकांक्षी मेकल उत्कल कलिंग निषद ताम्र लिप्तक देशी युद्धकर्त्ता बाण और तोमरोंकी वर्षा करतेहुये सन्मुखगये २१ जैसे बादलसे सूर्य ढकजाताहै इसीप्रकार हाथियोंसे ढकेहुये नकुलको देखकर अत्यंत क्रोधयुक्त पांडव पांचाल युद्ध करने को उपस्थित हुये २२ उसके पीछे हजारों तोमर और बाणोंकी वर्षा करनेवाले रथियोंका वह युद्ध हाथियों के साथहुआ २३ जिसमें अत्यंत घायल हाथियोंके कुंभ और नानामर्मांग वा दांत वा आभूषणोंको नाराचोंसे काटा २४ सहदेवने उनहाथियोंमेंसेबहुतबड़े २ हाथियोंकोमारा वहसब मरेहुयेहाथी अपने२ सवारों समेतपृथ्वीपर गिरपड़े २५ फिर नकुलनेबड़े उपायसे उत्तम धनुषको चढ़ाकर सीधे चलनेवाले बाणोंसे हाथियोंको मारा २६ इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक नाम क्षत्री और शिखंडीने बाणोंकी वर्षासे बड़े २ हाथियोंको व्यथित किया २७ वह शत्रुओं के पर्वताकार हाथी पांडवी युद्धकर्त्ता रूपी बादलोंकी बाणरूप वर्षा सेऐसेगिरपड़े जैसे कि वज्रोंकी वर्षासे पर्वत गिरतेहैं २८ इसप्रकारसे उन पांडवों के हाथी और रथियोंने आपके हाथियोंकोमारकरसेनाकोऐसेभागता देखा जैसे कि टूटा किनारा भागती हुई नदीको देखता है २९ पांडवोंकीसेना के मनुष्य उससेनाको छिन्न भिन्न करके कर्णके सन्मुख गये ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हेमहाराज भाई दुश्शासन उस आपकी सेनाकेनाश करनेवाले क्रोधयुक्त भाईसहदेव के सन्मुखगया १ वहां महायुद्ध में भिड़ेहुये उन दोनों को देखकर सिंहनाद किये और दुपट्टोंको फिराया इसके पीछे क्रोधयुक्त आपके पुत्रके तीन बाणोंसे महाबली सहदेव छातीपर घायल हुआ २।३ हे राजा तबतो क्रोध करके सहदेवने नाराचसेआपके पुत्रको छेदकर सत्तरबाणोंसे पीड़ामान किया४ और तीन बाणोंसे सारथी को हे राजा इसके पीछे दुश्शासन ने उसबड़े युद्धमें धनुषकोकाटकर सहदेवकी दोनों भुजाओंको तिहत्तर बाणोंसे छातीसमेत घायलकिया५ फिर अत्यंत क्रोधयुक्त सहदेवने उस महायुद्धमें खड्ग को लेकर अत्यंत शीघ्रता से घुमाकरआपके पुत्रके ऊपर छोड़ा ६ वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यंचा समेत धनुषको काटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि आकाशसे सर्प गिरताहै ७ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर फिर नाश करने वाले बाणको दुश्शासनके ऊपरफेंका८ तब उसकौरव दुश्शासनने यमदंड के समान प्रकाशमान आतेहुये बाणको अपने तीक्ष्ण धार वाले खड्ग से दो टुकडे करदिया इसके पीछे शीघ्रता करने वाले महापराक्रमी सहदेवने उस तीक्ष्ण धार खड्ग को घुमाकर और दूसरे धनुषको लेकर बाणको हाथमेंलिया९।१०फिर युद्धमें हंसतेहुये सहदेवने उस अकस्मात् आतेहुये खड्गको तीक्ष्णबाणों से गिराया ११ हे भरतवंशी इसके पीछे उस महायुद्ध में आप के पुत्रने शीघ्रही चौंसठ बाणोंको सहदेव के रथपर चलाया १२ उन वेगसे आतेहुये बाणोंको देखकर सहदेवने पांचबाणोंसे काटा १३ फिर उसने आपके पुत्रके चलाये हुये वेगवान् बाणोंको हटाकर युद्धमें उसके ऊपर बहुतसे बाणोंकी वर्षाकरी १४ आपका पुत्रभी उन प्रत्येक बाणको तीन बाणोंसे काटकर पृथ्वीको फाड़ताहुआबड़े शब्दोंसे गर्जा १५ हेराजा इसके पीछे दुश्शासनने युद्ध में सहदेव

को घायलकरके उसके सारथीको नौ बाणों से घायल किया १६
हे महाराज इसकेपीछे क्रोधयुक्त प्रतापी सहदेवने मृत्युकाल और
कालदंडके समान घोर बाणको हाथमें लिया १७ और अपने परा-
क्रम से धनुषको खैंचकर आपके पुत्रपर फेंका वहबाण उसको छेद
के कवचको काटकर पृथ्वी में ऐसे समागया १८ जैसे कि बामीमें
सर्प समाजाताहै हेमहाराज इसके पीछे आपका महारथी पुत्रअचेत
होगया १९ अत्यंत भयानक तीक्ष्ण बाण से घायल रथको चला-
ता हुआ सारथी उसको अचेत जानकर शीघ्रही दूर लेगया २०
पांडुनन्दनने इस कौरवको बिजयकरके और दुर्योधनको सेनाको
देखकर चारों ओरसे मर्दन किया २१ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र
जैसेकि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर चैंटियोंकी पंक्तियोंको मर्दन करताहै
उसीप्रकार उसके हाथ वह कौरवी सेना मर्दन करी गई २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनयुद्धोनामचतुर्विंशोऽध्यायः२४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा सूर्य्यके पुत्र कर्णने क्रोधसे युद्धसे सेनाको
भगानेवाले वेगवान् नकुलको रोका १ उसके पीछे हंसताहुआ
नकुल कर्णसे यह बोला कि बड़े दुःखकीबातहै कि देवताओंनेबहुत
कालके पीछे मुझको अपनी कृपा दृष्टिसे देखा हेपापी युद्धमें नेत्रों के
सन्मुख आये हुये मुझको देखा २ तूही शत्रुता उपद्रवऔर अनर्थोंका
मूलहै ३ तेरेही अपराधसे कौरव परस्पर सन्मुख होकर नाशवान्
होगये अब मैं युद्धमें तुझको मारकर कृतकृत्य होकर तपसे निवृत्तहूं
इसप्रकार के वचनोंको सुनकर कर्णने नकुलकोउत्तरदिया ४ कि अ-
धिकतर धनुषधारी राजकुमारके योग्यहै हे बीर तू मुझपर प्रहार
कर मैं तेरोबीरताको देखूंगा हे शूर प्रथम युद्धमें अपने शूरतारूपी
कर्मको करके फिर अपनी प्रशंसा करनेको योग्यहै ५ ६ हेतात शूर-
बीरलोग युद्धमें कुछन कहकर सामर्थ्यसे लड़तेहैं तू अपनी सामर्थ्यसे मेरे
संग युद्धकर मैं तेरे अभिमान को दूर करूंगा ७ कर्णने यहकहकर

शीघ्रही नकुल पर प्रहार किया अर्थात् युद्धमें इसको तिहत्तर बाणों से घायल किया ८ हे भरतबंशी इसके पीछे कर्णके हाथसे घायल नकुलनेसर्पके समान अस्सीबाणोंसे सूर्य्यके पुत्रको छेदा ९ कर्णने सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके धनुषको काटकर तीस बाणोंसे नकुलको पीड़ित किया १० उन बाणोंनेउस के कवच को काटकर रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि बिषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जलको पीताहै ११ इसके पीछे नकुलनेसुवर्ण पृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुषको लेकर कर्णको सत्तर बाणमे और सारथीको तीनबाण से घायल किया १२ फिर क्रोधयुक्त शत्रुके बीरों केमारने वाले नकुलनेबड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे कर्णके धनुषको काटा १३ फिर हंसतेहुये बीर नकुलनेइस टूटे धनुषवाले सब लोकके महारथी कर्णको तीन सौ शायकों से घायल किया १४ हे श्रेष्ठ तबतो नकुलके हाथसे पीड़ामानकर्णको देखकररथियोंने देवताओं समेत बड़ाभारी आश्चर्य्य किया १५ तब सूर्य्यके पुत्र कर्णनेदूसरे धनुषको लेकर नकुलको पांचबाणोंसे जत्रुस्थानपर घायल किया १६ वहां जत्रुस्थानमें नियत होनेवालेबाणोंसे नकुल ऐसा शोभायमान हुआ १७ जैसे कि संसारमें प्रकाशकरताहुआ सूर्य्यअपनी किरणोंसे शोभायमान होताहै हे श्रेष्ठ इसके पीछे नकुलने शीघ्रगामी सात बाणोंसे कर्णको छेदकर फिर उसके धनुषकी कोटिको काटा १८ इसकेपीछे उसनेबड़े बेगवान् दूसरे धनुष को लेकर युद्धमें बाणों करके नकुल की दिशाओंको ढकदिया १९ अकस्मात् कर्णके बाणोंसे घिरेहुये उस महारथीनेअपनेबाणोंसेही कर्णके बाणोंको काटा २० इसके पीछे आकाशमें बाणोंका जाल फैलाहुआ ऐसा दिखाई दिया जिस प्रकार पटबीजनोंके समूहोंसे व्याप्त आकाशहोताहै २१ हेराजा उन छोड़ेहुये सैकड़ों बाणोंसे नकुलऐसा ढकगया जैसे कि शलभाओंके समूहोंसे कोई ढक जाताहै २२ वह सुवर्णसे चित्रित बारंबारगिरते हुये पंक्तिरूप बाण ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि पंक्तिरूप क्रौंच नाम पक्षीहोते हैं २३ बाणजालोंसे आकाशको व्याप्त होजाने और

सूर्य्यके ढकजाने से कोईअन्तरिक्षगामीजीव पृथ्वीपरनहीं गिरा२४ बाणोंके समूहोंसे चारों ओरके मार्गोंकेरुकजाने पर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्य्यके समान शोभायमान हुये २५ हे राजेन्द्र कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणोंकेसमूहोंसघायल दुःखसे दुःखित और अत्यन्त पीड़ामान सब सोमक पृथक् २ होगये २६ इसी प्रकार नकुलके बाणोंसे घायल आपकी सेनाभी दिशाओंमें ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि बायुके वेगसे बादलोंके समूह तिर्रबिर्र होजातेहैं२७ तब उन दोनोंके दिब्य और बड़े बाणोंसे घायल वह दोनों सेना बाणोंकी आधिक्यताको बिचारकर चित्रलिखी सीखड़ी रहगईं २८ कर्ण और नकुलके बाणोंसे उन मनुष्योंकेसमूहोंके हटजाने पर उन दोनों महात्माओंनेबाणोंकी बर्षासे परस्पर में घायल किया २९ परस्पर मारनेके अभिलाषी वह दोनोंअकस्मात् सेनाके मस्तकपर दिब्य शस्त्रोंके दिखानेवाले और सेनाओं के ढकने वाले हुये ३० नकुलके छोड़े कंकपक्षसे जटित बाणकर्णको ढककर आकाशमेंनियत हुये ३१ इसी प्रकार कर्णके चलायेहुये बाण नकुलको ढककर आकाशमें नियतहुये ३२ हेराजा बादलोंसे ढकेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा के समान बाणपिंजरमें प्रविष्ट होकर वह दोनों किसीको दिखाई नहीं दिये ३३ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त कर्णने शरीरको बड़ा घोर करके ३४ बाणोंकी बर्षासे नकुलको चारोंओरसे ढकदियाहे महाराज कर्णके बाणोंसे ढकेहुये उस नकुलने ऐसे पीड़ाको नहीं माना जैसे कि बादलोंसे ढकाहुआ सूर्य्यपीड़ाको नहीं मानताहै ३५ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसकेपीछे कर्णने हंसकरयुद्धमें हजारों बाणजालोंको उत्पन्नकिया ३६ उस महात्माकेबाणोंसे सब संसार छायामानहुआ और गिरतेहुये उत्तमबाणोंसे अन्नकेसमान छाया उत्पन्नहोगई ३७ हे महाराज इसकेपीछे हंसते हुये कर्णने महात्मानकुलके धनुषको काटकर सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया ३८ हेभरतवंशी इसके अनन्तर तीक्ष्णधार चारबाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको शीघ्रहीमार कर यमपुरको भेजा ३९ इसके पीछे फिर तीक्ष्ण बाणोंसे इसकेउस

दिब्यरथ पताका और चक्रके रक्षकों समेत गदा और खड्गको भी तिलके समान खंड२ करदिया ४० और सूर्य्य चन्द्रमाके चित्रवाली ढाल और अन्य सब प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंकोभी काटडाला हे राजा वह रथ और कवचसे बिहीन शीघ्रही रथसे उतरकर ४१ परिघको लेकर नियतहुआ तब कर्णने उसके उठाये हुये उस महाघोरपरिघ को ४२ अत्यन्त तीक्ष्ण भारबाहक बाणोंसे तोड़डाला तबतो कर्ण- ने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़ेपर्बवाले ४३ अनेक बाणोंसे उसको घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड़ामान नहींकिया युद्धमें उस शस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्णसे घायल ४४ होकर महाब्याकुलनकुल अक- स्मात् भागा तबतो बारंबार हंसतेहुये कर्णने उसके पासजाकर ४५ अपनी प्रत्यंचा समेत धनुषको उसके कण्ठमें डालदिया इसकेपीछे वह नकुल कण्ठमें लगेहुये उस धनुषसे ऐसाशोभायमान हुआ ४६ जैसेकि आकाशमें चन्द्रमा अपने मंडलसे युक्त होताहै और जैसे कि श्याममेघ इन्द्र धनुषसे शोभित होताहै ४७ इसके पीछे कर्णने कहाकि तुमने मिथ्या कहाथा अब बारंबार घायल हुये प्रसन्नचित्त होकर फिर कहो ४८ हेपराक्रमी पांडव तुम कौरवों के साथमतलड़ो हेतात अपने समानवालों से लड़ो हेपांडव लज्जा मतकरो ४९ हे माद्रीके पुत्र घरको जावो अथवा जहां श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं वहां जावो हे महाराज ऐसा कहकर उसको छोड़ दिया ५० तब उस धर्मज्ञ शूरबीरने मारनेके योग्यको नहींमारा हेराजा कुन्तीके बचन को स्मरण करके उसको छोड़दिया ५१ फिर धनुषधारी कर्णसे छोड़ा हुआ नकुल लज्जा युक्त शीघ्रही युधिष्ठिरके रथके पासगया ५२ कर्णसे अत्यन्त संतप्तकियाहुआ घटमें बंदहुये सर्पकेसमान दुःखसे दुःखी बारंबार श्वास लेताहुआ रथके ऊपरभी सवारहुआ ५३ कर्ण भी उसको बिजय करके शीघ्रही बड़ा पताका वाले चन्द्रवर्ण घोड़े रखनेवाले रथकी सवारीसे पांचालोंकेसन्मुख गया ५४ वहांपांचा लोंके रथसमूहों पर जातेहुये सेनापतिको देखकर पांडवों में बड़ा शब्द हुआ ५५ हे महाराज महाचक्रके समान घूमते हुये कर्णने

मध्याह्नके समय शूरवीरों का नाशकिया ५६ उस समय हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वहांपर हमने टूटेहुई ध्वजा पताका फूटी आंखके मृतक घोड़े और सारथियों समेत कितनेहीरथोंसे ५७ हटेहुये पांचालोंके रथ समूहों को देखा वहां भ्रांतियुक्त हाथी और रथ जहां तहां ऐसे घूमतेथे ५८ जैसेकि महाबनमें दावानलसे जलेहुयेहाथीहोतेहैं टूटे हुये कुंभरुधिरसेभरे खण्डितहाथ ५९ अंगभंग आदि और कोईपूंछ कटेहुयेहाथीमहात्माके हाथसे घायलटूटेहुये बादलोंकेसमान गिर पड़े ६० नाराचबाण और तोमरोंसे भयभीत हाथी उसके सन्मुख ऐसेगये जैसे कि शलभानाम पक्षी अग्नि के सन्मुख जाते हैं ६१ जल डालनेवालेपर्व्वतोंकी समान अंगोंसे रुधिरकी रक्षा करतेहुये अन्य बड़े २ हाथी शब्द करतेहुये दृष्टपड़े ६२ वहांहमने उरःछद वाले बालबन्दोंसेबियुक्तघोड़ोंको सुबर्णचांदी और कांसेके भूषणोंसे पृथक् ६३ और अन्यरभूषण और लगामोंकेबिना चामर जीनपोश और गिरेहुये तूणीर ६४ और युद्धमें शोभादेनेवाले शूरवीर सवारों सहित युद्धभूमि में घूमते हुओंको देखा ६५ हेभरतबंशी हमने प्रास खड्ग और दुधारे खड्गसे रहित लोहेके कवच और दिस्ताओंके धारण करनेवाले अश्वारूढ़ोंको देखा ६६ और मरे वा मरने वाले अथवा कांपतेहुये नाना प्रकारके अंगोंसे रहित युद्ध करने वालोंकोभी जहां तहां देखा ६७ हमने रथियों के मरनेपर सुवर्णसे जटित शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त शीघ्रघूमतेहुयेरथोंकोदेखा ६८ हे भरतबंशी हमने अक्ष कूबर और पायेवाले पताका ध्वजासे रहितकितनेही अन्य रथोंका देखा ६९ वहां कर्णके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल मृतकरूप जहांतहां दौड़नेवाले रथियोंको देखा ७० इसीप्रकार शस्त्रोंसे खाली बाणरखनेवाले बहुतसे मृतकों को देखा और तारका जालोंसे ढकेहुये उत्तम कण्ठोंसे शोभायमान ७१ नाना प्रकारकी बिचित्र पताकाओंसे अलंकृत चारों ओरसे दौड़ने वाले हाथियोंकोदेखा ७२ इसीप्रकार चारोंओरको कर्णकेधनुषसे निकले हुये बाणोंसे टूटेहुये शिर भुजा और जंघाओंको देखा ७३ कर्णके

बाणोंसे घायल और तेजबाणोंसेलड़नेवालेयुद्धकर्त्ताओं काबड़ाभया-
नक दुःख वर्त्तमानहुआ ७४ युद्धमें कर्णके हाथसे घायलवहसंजय
उसके सन्मुख ऐसे जातेथे जैसकि अग्निके सन्मुखपतंग जाते हैं
७५ प्रलयकालकी अग्निके समान जहांतहां सेनाओंकेभस्मकरने
वाले उस महारथी कर्णको क्षत्रियोंने त्यागकिया ७६ जोपांचालोंके
महारथी बीरलोग मरनेसे बाकी रहेथे उन शीघ्रगामी पृथक् २
होनेवाले महारथियोंके पीछेसे बाणोंको छोड़ताहुआ कर्ण सन्मुख
दौड़ा ७७ उस महाबली सूतपुत्रने उन टूटेकवच ध्वजावालेदुःखी
बीरोंको बाणोंसे ऐसे संतप्त किया ७८ जैसे कि मध्याह्नके समय
सूर्य्य जीवधारियों को तपाताहै ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णयुद्धेपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि आपके पुत्र युयुत्सूकीसेनाकेभगानेवाले उलूकके
सन्मुख गया और तिष्ठतिष्ठ इस बचनकोकहा १ हेराजाउसकेपीछे
युयुत्सूने बज्रकी समान तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे महाबली उलूक
को घायल किया २ फिर क्रोधयुक्त उलूकने युद्ध में आपके पुत्रके
धनुषकोक्षुरप्रसे काटकर करणीनाम बाणसे उसको घायलकिया ३
फिरलालनेत्र करनेवाले युयुत्सूने उसटूटे धनुषको डालकरदूसरे बड़े
वेगवान् उत्तम धनुषको हाथमें लिया ४ उसके पीछे शकुनिके पुत्रको
सात बाणोंसे और तीनबाणोंसे सारथीको घायल करके बार-
बार छेदा ५ फिर उलूकने उसको सुवर्ण से चित्रित बीसबाणोंसे
घायल करके महाक्रोधमें भरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा ६
हे राजा वह टूटीहुई बड़ीभारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सूके सन्मुख
गिरपड़ी ७ फिर क्रोधसे मूर्च्छित युयुत्सूने ध्वजाको टूटीहुई देखकर
पांच बाणोंसे उलूक को छातीपर घायल किया हेश्रेष्ठ राजाफिर
उलूकने युद्धमें तेलसे स्वच्छ किये हुये भल्लसे उसके सारथी के
शिरको काटा ८।९ तब युयुत्सूके सारथी का वह कटाहुआ शिर
पृथ्वीपर ऐसा गिरा जैसे अपूर्व्व तारा आकाशसे पृथ्वीपर गिरता

है १० चारों घोड़ोंकोमारा और उसको पांचबाणोंसे भेदा फिर इस पराक्रमीके हाथसे घायल वह युयुत्सु दूसरे रथपर चलागया ११ हे राजा युद्धमें उलूक उसको बिजयकरके शीघ्रतासे तीक्ष्णबाणोंको फेंकता पांचालों और संजियोंको मारताहुआ संजियोंके सन्मुख गया १२ हे महाराज भयसे उत्पन्न होनेवाली ब्याकुलतासे रहित आपके पुत्र श्रुतकर्मा ने अर्द्धनिमेष मारनेमेंही शतानीक को घोड़े रथ और सारथीसे रहित करदिया १३ फिर मृतक घोड़े वाले रथ पर नियत अत्यन्त क्रोधयुक्त शतानीकने आपकेपुत्रके ऊपरगदाको फेंका १४ वह गदा रथ घोड़े सारथी समेत रथको भस्मकर कवच को फाड़तो हुई शीघ्र पृथ्वीपर गिरपड़ी१५ रथसे बिहीन परस्परमें देखने वाले कौरवोंकी कीर्त्तिके बढ़ानेवाले दोनों वीर युद्धमें हटग-ये १६ फिर भयसे उत्पन्न होनेवाली ब्याकुलता से रहित आ-पका पुत्र रथपर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानी कभी प्रतिबिन्ध्य के रथपर गया १७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनीने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे सुतसोमको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्ब्बत को कंपित नहीं करस-का १८ हेभरतबंशी सुतसोमने पिताके बड़े शत्रु शकुनीको देखकर बहुत हजारों बाणोंसे ढकदिया १९ तेज अस्त्र और मित्रकेअर्थ ल-ड़नेवाले बिजयसे शोभायमान शकुनीने शीघ्रही दूसरे बाणोंसे उन बाणोंको काटा २० और क्रोधयुक्त होकर युद्धमें उन बाणोंको भी तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे रोककर तीन बाणोंसे सुतसोमको घायल किया२१हे महाराज आपके सालेनेबाणोंसे उसके घोड़े ध्वजाऔर सारथीको तिलके समान खंड२ किया इस हेतुसे सब मनुष्य बड़े शब्दसेपुकारे२२हेश्रेष्ठधृतराष्ट्र वहमृतक घोड़े और टूटीध्वजावाला रथसे रहितहोकर उत्तमरथको लेकर रथसे पृथ्वीपर खड़ाहुआ २३ सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धार वाले बाणों को छोड़ता हुआ युद्ध में आपके सालेके उस रथको ढक दिया २४ वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षीके समूहोंकी समान रथके समीप बर्समानबाणोंके

समूहों को देखकर पीड़ामान नहीं हुआ २५ और बड़े यशस्वी ने अपने बाणोंके समूहों से उसके बाणोंको मथ डाला उस स्थान पर युद्ध करनेवाले आकाश बासी सिद्धभी प्रसन्न हुये २६ सुतसोमके उस अद्भुत और श्रद्धाके योग्य कर्मको देखकर प्रसन्न हुये और बहुतसे पदाती और रथ सवार शकुनी के साथ युद्ध करने वाले हुये २७ हेराजा तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान् टेढ़े पर्व्ववाले भल्लोंसे उसके धनुष और सब तूणीरोंको तोड़ा २८ फिर वह टूटे धनुष रथ से बिहीन वैडूर्य्य और नील कमल के वर्ण हाथीदांतके मूठ रखने वाले खड्गको उठाकर बड़ी ध्वनिसे गर्जा २९ उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोमके घुमाये हुये निर्मल आकाश के समान उस खड्ग को काल दण्डके समान समझा ३० हे महाराज वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हजारों प्रकारसे चौदह मंडलों को घूमा ३१ उनके नाम भ्रांत, उद्भ्रांत, आविद्ध, आप्लुत, बिप्लुत सृतसंपात, समुदीर्ण इन मंडलों को युद्धमेंदिखाया यह सातमंडल लोम बिलोम के बिभाग से द्विगुणित होकर चौदह होजातेहैं ३२ फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनी ने बाणोंको उसके ऊपर फेंका उसने उनआते हुये बाणोंको उत्तम खड्ग से काटा ३३ हेमहाराज इसके अनन्तर क्रोध युक्त शकुनी ने फिर भी सर्पके बिषके समान बाणों को सुतसोमके ऊपर फेंका ३४ युद्धमें गरुड़जी के समान पराक्रमी सुतसोमने अपनी हस्त लाघवताको दिखाते हुयेखड्गकी शिक्षाके पराक्रम से उन बाणोंको काटा ३५ हेराजा तब दायेंबायें मंडलोंके घूमनेवाले उस सुतसोमके प्रकाशमान खड्ग को बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे काटा और रुकाहुआ खड्ग एकबारही पृथ्वीपरपड़ा और उसश्रेष्ठ खड्गका आधाभाग उसकेहाथमें नियतरहा ३६।३७ महारथी सुतसोमने खड्ग को टूटा जानकर और छः चरण हटकर फिर उस आधे खड्गको प्रहार किया ३८ वह सुवर्ण और हीरोंसे अलंकृत खड्ग उस महात्माकेडोरी समेत धनुषको काटकर शीघ्रही पृथ्वी पर गिरपड़ा ३९ फिर सुतसोम श्रुतिकीर्त्तिके बड़े रथपर

चलागया और शकुनी भी बड़े कष्टसे बिजय होने वाले दूसरे घोर धनुष को लेकर ४० शत्रुओंके बहुत से समूहोंको मारता हुआ पांडवी सेना के सन्मुख गया हेराजा युद्धमें निर्भय के समान घूमने वाले शकुनी को देखकर पांडवों के बड़े शब्द हुये महात्मा शकुनी के हाथसे वह अहंकारी शस्त्रोंकी धारण करने वाली सेना भागती हुई दृष्टपड़ी जैसेकिदेवराजइन्द्रने दैत्योंकी सेनाको मर्द्दनकियाइसी प्रकार शकुनीनेभी पांडवोंकी सेनाका नाश किया४१ । ४२।४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसुतसोमसौवलयुद्धेषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा कृपाचार्य्यने युद्धमें धृष्टद्युम्नको ऐसे रोका जैसेकि बनमें हाथीको सिंहरोकताहै १ हे भरतवंशी वहां उसपराक्रमी गौतम कृपाचार्य्यजीसे रुकाहुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलने कोभी समर्थ नहींहुआ २ कृपाचार्य्यके रथको धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सबजीवमात्र भयभीत होकर नाशको माननेलगे ३ वहांपर चित्तसे उदास होकररथी और अश्वारूढ़ कहनेलगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य्य के मरनेसे द्विपादों में श्रेष्ठ ४ बड़े तेजस्वी दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूल रूप कृपाचार्य्य अत्यन्त क्रोधयुक्तहैं अब कृपाचार्य्यके हाथसे धृष्टद्युम्नकी कुशल ५ और इस सब सेनाकाभी भयसे निवृत्त होना और हमसब भागने वालोंकाभी इस ब्राह्मणसे बचना कठिन बिदित होताहै ६ क्योंकि यह आचार्य्य रूप कालके समान दृष्ट पड़ताहै हेकृपाचार्य्य अब द्रोणाचार्य्यके मार्गपर चलेंगे ७ यह कृपाचार्य्य सदैव हस्तलाघव करके युद्धमें बिजयका पानेवाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है ८ अबधृष्टद्युम्न युद्धमें मुखको फेरनेवाला दिखाई देता हेमहाराजवहां उनदोनों के सन्मुख होनेमें आपके पुत्रोंके नाना प्रकारके शब्द दूसरों के साथमें कहे हुये सुनेगये ९ इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य्यने क्रोधसे बड़ी २ श्वासें लेकर १० सदैव चेष्टाकरनेवाले

धृष्टद्युम्नको सबअंगोंपर पीड़ामान किया फिरमहात्मा कृपाचार्य्य से घायल होकर बड़ेमोहमें ब्याकुल होके उसने युद्धमें ११ करने के योग्य कर्मको नहींजाना इसके पीछे सारथीने कहा हे धृष्टद्युम्न कुशलहै १२ मैंनेकहीं तेरेऐसे समयको नहींदेखाथा दैवयोगसेसब ओरमें तेरे मर्मस्थलों को लक्ष करके इस उत्तम ब्राह्मणके फेंकेहुये बाणतेरे मर्मोंके छेदनेवाले मर्मोंपर पड़े हैं जो तुमकहो तौ रथको शीघ्रहीऐसेलौटाऊं जैसेकि समुद्रसे नदीकेवेगको हटातेहैं १३।१४ मैं ब्राह्मणको अवध्य मानताहूं इसीसे तेरा पराक्रम नष्ट होगयाहै हे राजायह सारथीके बचनको सुनकर धृष्टद्युम्न बड़े धीरेपनेसे यहबचन बोला १५ हे तात मेराचित्त अचेत होताहै और अंगोंपर पसीना उत्पन्न होताहै और शरीरमेंकंप और रोमांच खड़े हैं १६ युद्धमें ब्राह्मणको त्यागकरके उधरको बड़ेधीरे २ चलजहांकिअर्जुन है हेसारथी अबयुद्धमेंअर्जुनको या भीमसेनको पाकर१७कुशलहोगी यहीमेरा दृढ़ बिश्वासहै हे महाराज इसके पीछेवह सारथी घोड़ोंको मारताहुआ १८ बड़ीशीघ्रता से वहांगया जहांबड़ाधनुर्द्धर भीमसेन आपकीसेनाके मनुष्योंसे युद्धकररहाथा हेश्रेष्ठतब गौतम कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्नके रथको भागाहुआ देखकर १९ सैकड़ों बाणोंको छोड़ते हुये उसके पीछेगये और शत्रुके बिजय करनेवालेने बारंबार शंख को बजाया २० और धृष्टद्युम्नको ऐसे भयभीतकिया जैसेकि इन्द्र ने नमुचिको भयभीत कियाथा फिर भीष्मजीके मृत्युरूप बिजयी शिखण्डीको २१ बारम्बार मंद मुसकान करतेहुये कृतबर्माने रोका तबतो शिखण्डीने भी हार्दिक्योंके महारथीको पाकर२२ तीक्ष्णधार वाले पांचबाणोंसे जत्रुस्थानपर घायलकिया फिर हंसतेहुये महार-थीकृतबर्माने साठबाणोंसे २३ शिखंडीको घायलकरके एकबाणसे उसके धनुषको काटा फिर पराक्रमी द्रुपदके पुत्रने दूसरे धनुष को लेकर २४ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतबर्मासे तिष्ठ २ ऐसाबचन कहा हेराजा इसके अनन्तर सुनहरी पुंखवाले नौबाणोंको उसके ऊपर चलाया २५ वहबाण उसके कवचपर लगकर गिरपड़े उन

निष्फल पृथ्वीपर गिरेहुये बाणोंको देखकर २६ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे धनुषको काटा फिर टूटे धनुषवाले कृतवर्माको २७ शिखंडी ने क्रोधयुक्त होकर अस्सीबाणोंसे छाती और भुजापर घायलकिया तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने अंगोंसे ऐसे रुधिरकोडाला जैसे कि मटकेसे जल डालाजाताहै फिर रुधिरसे भराहुआ कृतवर्मा ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि बर्षासेधातु रखनेवालापर्वत होताहै इसकेपीछे प्रभु कृतवर्माने बाणसमेत धनुषको लेकर २८।२६।३० बाणोंकेसमूहोंसे शिखण्डीको स्कंधस्थानमें घायलकिया फिर शिखंडीस्कंध परलगेहुये बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि छोटी बड़ीशाखाओंसे बड़ावृक्ष शोभित होताहै ३१ वह दोनों परस्पर में अत्यन्त घायल और रुधिरमें भरेहुये ऐसे शोभितहुये ३२ जैसेकि परस्पर सींगोंसे घायलदो बैल होतेहैं परस्परमें मारनेकी इच्छा करनेवाले वहदोनोंमहारथी ३३ वहांहजारों मंडलोंकोघूमे हेमहाराज कृतवर्माने शिखंडीको ३४ तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवाले सत्तर बाणोंसे घायलकिया इसकेपीछे शीघ्रता युक्त युद्ध कर्ताओंमें श्रेष्ठ भोजबंशी कृतवर्माने युद्धमें ३५ मृत्युकारी घोरबाणको उसकेऊपर छोड़ा हेराजा वह शिखंडी उस बाणसे घायल होकर शीघ्र मूर्च्छा युक्त होगया ३६ और मूर्च्छासे अचेत होकर अकस्मात् ध्वजाकी यष्टीका आश्रयलिया और सारथी इस महारथीको शीघ्रही युद्धसे दूर लेगया ३७ इस शूरबीर शिखंडीके परास्त होनेपर कृतवर्माके बाणसे दुःखी बारंबार श्वास लेनेवाली चारों ओरसे घायल वह पांडवी सेना भागी ३८ । ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसप्तविंशो ऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

संजय बोले हेमहाराज इसके पीछे अर्जुनने आपकी सेनाको पाकर चारों ओरसे छिन्न भिन्न ऐसा करदिया जैसेकि वायु रुई को तिरं बिरं कर देताहै १ तब त्रिगर्त, शिवी, शाल्व, संसप्तक और

कौरवोंकी नारायणीसेना उस के सन्मुख गई हेभरतबंशी सत्यसेन चन्द्रदेव,मित्रदेव,शत्रुंजय,सौश्रुति, चित्रसेन,मित्रबर्मा और बड़ेधनुर्द्धारी अपनेपुत्र भाइयों समेत राजात्रिगर्त्तने २।३।४ बाणोंके समूहों को छोड़ा और युद्धमें अर्जुन पर एकाएकी बाणोंकी बर्षा करते हुये सन्मुख वर्त्तमान होकर ऐसे बिलायमान होगये जैसेकि गरुड़को देखकर सर्प बिलायमान होतेहैं ५।६ हेमहाराज युद्धमें घायलउन युद्ध कर्त्ताओंने पाडवोंको ऐसे त्यागनहीं किया जैसे कि घायल हुये शलभ अग्नि को नहीं त्याग करते हैं ७ सुतसेनने तीन बाण से मित्रदेवने तिरेसठ बाणोंसे चन्द्रसेन ने सात बाणोंसे युद्धमें पांडवों को घायल किया ८ मित्रबर्माने बिहत्तर बाणोंसे सौश्रुतिने सात बाणोंसे शत्रुंजयने बीसबाणोंसे सुशर्माने नौबाणोंसे ६ घायल किया बहुतों के हाथसे घायल उस अर्जुनने इसक्रमसे युद्धमें उन राजाओंको घायल किया कि सौश्रुति को सातबाणोंसे सुतसेन को तीन बाणोंसे शत्रुंजयको बीस बाणोंसे चन्द्रसेनको आठबाणसे मित्रदेव को सौबाणसे श्रुतिसेन को तीन बाणसे १०।११ मित्रबर्माको नौबाणोंसे सुशर्माको आठबाण से घायल किया और राजा शत्रुंजयको बाणोंसे मारकर १२ सौश्रुतिके शिरको धड़ समेत शरीरसे जुदाकर दिया और शीघ्रही चन्द्रदेवको बाणोंके द्वारा यमलोकमें पहुंचाया १३ हेमहाराज इसी प्रकार उपाय करने वाले अन्य महारथियों को भी पांच २ बाणों से रोका १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेनने युद्धमें श्रीकृष्णजी को लक्ष्यकर उनके ऊपर बड़े तोमरको फेंक सिंहनादसे गर्जा वह सुवर्ण दण्डवाला लोहेका तोमर महात्मा माधवजीको बाम भुजाको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १५।१६ उस समय उसबड़े युद्ध में घायल माधवजीके हाथ से चाबुक और घोड़ोंकी रस्सियां छूटगईं १७ हेराजा तब कुन्तीके पुत्र अर्जुनने बासुदेवजीको अंगसे घायल देखकर बड़ा क्रोधकिया और श्रीकृष्णजीसे कहनेलगा १८ हेमहाबाहो प्रभु घोड़ोंकोसुतसेन केपास पहुंचाओ मैं उसको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे यमलोकमें

पहुंचाऊंगा १६ फिर श्रीकृष्णजीने पूर्व्वके समानदूसरेचाबुक और घोड़ोंकीडोरीको पकड़कर उनघोड़ोंको सुतसेनके रथपरचलाया २० कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनने श्रीकृष्णकोघायल देखकर तीक्ष्ण बाणोंसे सुतसेन को रोककर २१ सेनाके मध्य में अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले भल्लोंसे उसराजाके कुंडलों समेतबड़े शिरको देहसे काटा २२ उसको मारकर तीक्ष्ण बाणोंसे मित्रबर्माको और मत्स्य दंत नाम तीक्ष्ण बाणोंसे उसके सारथी कोमारा २३ हेश्रेष्ठ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से संसप्तकों के हजारों समूहोंको गिराया २४ हेराजा उसकेपीछे उसमहारथी ने सुवर्ण पुंख वाले क्षुरप्रसे महात्मा मित्रसेन के शिरको काटा २५ और अत्यन्त क्रोधसे सुशर्माको जत्रुस्थानपर घायलकिया इसके पीछे क्रोधमें भरे दशोंदिशाओं को शब्दायमान करने वाले सब संसप्तकोंने अर्जुनको घेरकर शस्त्रों के समूहोंसे घायल किया इन्द्रकी समान पराक्रमी बड़े साहसीसंसप्तकोंसेपीड़ामान महारथी अर्जुनने २६। २७ ऐन्द्र अस्त्रकोप्रकट किया हेराजा उस ऐन्द्रास्त्रसे हजारों बाण प्रकटहुये हेश्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहांतहां टूटीहुई ध्वजा धनुष और पताका समेत रथ बाजुओंके समेततूणीरों केबड़ेशब्दसुने गये२८। २६ युद्धमें गिरनेवाले अक्ष चक्रबाण डोर पोक्करबरूथ और पार्षदोंके शब्द सुनेगये ३० गिरते हुये घोड़े प्रास दुधारा खड्ग गदापरिघ शक्ति तोमर और पट्टिशोंकेभी बड़े २ शब्दसुनेगये ३१ चक्र शतघ्नी और जंघाओं समेत भुजा कण्ठ सूत्र बाजूबन्द समेत केयूरोंके शब्द सुने गये ३२ हे भरतवंशी हार निष्क कवच छत्र व्यजन और शिरोंके मुकुटों समेत जहांतहां बड़ाभारी शब्द सुना गया सुन्दरकुंडल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमाकेसमान मुखोंसेयुक्त शिरोंके समूह पृथ्वीमें गिरेहुये ऐसे शोभायमानथे जैसे कि आकाशमंडलमें तारागण चमकतेहैं सुन्दरमाला बस्त्रालंकार आदि चंदनोंसे लिप्त ३३।३४।३५ मृतकोंके शरीर पृथ्वीपर गिरेहुये दृष्टपड़े तब युद्धभूमि गन्धर्व नगरके समान घोररूप होगई३६ वहसबपृथ्वीराजकुमार

और महाबली क्षत्री और पड़ेहुये हाथी घोड़ों से ३७ युद्ध में ऐसी दुर्गम होगई जैसेकि पर्व्वतोंके गिरनेसे होतीहै, वहांमहात्मा पांडव अर्जुनके रथका मार्ग नहींरहा३८ इससे हेराजाभल्लोंसे शत्रुओंको और घोड़े हाथियोंको मारतेहुये रथोंके पाये बड़े पीड़ितहोतेथे ३६ उन रुधिररूपकीच रखनेवाले युद्धमें उसघूमनेवाले अर्जुनके पीड़ा· मान पायोंको घोड़ोंने अच्छे प्रकारसे चलाया ४० मन और बायुके समान सदैव शीघ्रगामी वह घोड़े बहुत थकगये फिर धनुषधारी अर्जुनके हाथसे घायलवह सबसेना ४१ बहुधा मुखफेरकर सन्मुख नियत नहींहुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्ध में संसप्तकों के बहुत समूहोंको बिजय करके निर्द्धूम अग्निके समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ ४२।४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहासंसप्तकयुद्धे अष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले हे महाराज निर्भय होनेवाले के समान आपराजा दुर्योधनने बहुत बाणोंके छोड़नेवाले युधिष्ठिरको रोका १ धर्मराज ने उस अकस्मात् आतेहुये आपके पुत्र महारथीको शीघ्र घायल करके तिष्ठ तिष्ठ इसबचनकोकहा २ फिर उसने तीक्ष्णधारवाले नौ बाणोंसे उसको घायल किया और अत्यंत क्रोध युक्त होकर उसने भल्लसे उसके सारथी को घायल किया ३ इसके पीछे युधिष्ठिरने सुनहरी पुंखवाले तेरह बाणों को दुर्योधनके ऊपर फेंका ४ फिर महारथीने चार बाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको मारकर पांचवें बाण से उसके सारथी का शिरशरीर से जुदाकरदिया ५ फिरछठे बाण से राजाकी ध्वजाको सातवें से धनुषको और आठवें से खड्ग को पृथ्वीपर गिराया फिर धर्मराजने पांचबाणों से राजा को अत्यन्त पीड़ित किया ६ तबवह उसमरे सारथी और घोड़ेवाले रथसे कूद कर बड़ी आपत्तियोंमेंफंसाहुआ आपकापुत्र पृथ्वीपरही नियतहुआ फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपाचार्य आदि उस आपत्ति में फंसेहुये

राजाको देखकर७।८ उसको चाहतेहुये अकस्मात् सन्मुख आनकर बर्त्तमान हुये फिरसबलोगोंने युधिष्ठिर को चारोंओरसेघेरकर युद्ध में पीछे २ चलेहेराजा इसके पीछे युद्धजारीहुआ औरउस महायुद्धमें हजारोंबाजेबजे६।१० और कलकला शब्दप्रकटहुआ जिसस्थानपर पांचाल कौरवोंसेयुद्धकर रहेथे ११ वहांमनुष्य मनुष्यसे हाथीहाथी से रथी रथियोंसे घोड़े घोड़ेसे अश्वसवार अश्वसवारसे १२ हे महा-राजउसयुद्धमें देखनेकेयोग्य बुद्धिसेबाहर शस्त्रोंसे संयुक्तनानाप्रकार से उत्तम द्वन्द्व युद्ध हुये १३ युद्धमें बड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सब सवारोंने अपर्व तीव्रता पूर्वक चित्त रोचकयुद्ध किया १४ और युद्ध कर्त्ताओंकी वृत्तिमें नियत होकर उनलोगोंने युद्ध में परस्पर शस्त्रोंके प्रहारकिये और किसीदशामेंभी मुखको नमोड़ा १५ हेराजा वह युद्ध एकमुहूर्त्त पर्यन्त देखनेमें बड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान बेमर्याद युद्ध बर्त्तमान हुआ।१६ तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे चीरते हुये रथीने हाथीको पाकर टेढ़ेपर्व वाले बाणोंसे मारकर यमपुरको भेजा १७ युद्धमें बहुतसे युद्धकर्त्ता-ओं को फेंकते हुये हाथियों ने जहां तहां घोड़ों को सन्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशासे चीरडाला १८ बहुतसे घोड़े रखने वाले अश्वसवारोंने उत्तम घोड़ोंको घेरकर इधर उधर दौड़कर तलकेशब्द किये १६इसकेपीछे अश्वसवारोंने उसदौड़ते और भागतेहुये हाथि योंकोबगल और पीठकी ओरसे घायल किया २० हेराजामतवाले हाथी बहुतसे घोड़ोंको भगाकर किसीने दांतोंसे किसीने पैरोंसे मलकर मारा २१ और क्रोधयुक्त होकर सवारों समेत घोड़ोंको दांतोंसे घायलकिया फिरदूसरे पराक्रमियोंने अत्यन्त वेगसे एकने एकको पकड़कर फेंक दिया २२ पदातियों के हाथ से इन्द्रियोंपर घायल हाथियोंने चारों ओरसे पीड़ा के घोर शब्द कियेऔर दशों दिशाओंको भागे २३ फिर उसमहायुद्धमें एकाएकी छोड़कर भाग-ने वाले पदातियोंके आभूषणोंको झुककर उसयुद्ध भूमिमें से उठा लिया २४ विजय के चिह्न पानेवाले बड़े २ हाथियों के सवारोंने

हाथीको झुकाकर अपूर्व २ भूषणोंकोलेलिया औरउनको छेदा २५ वहांउन बड़ेवेगवान पराक्रमसे मदोन्मत्त पदातियोंने उन युद्धकरने वाले हाथियोंके सवारोंकोघेरकर मारा २६ बड़े युद्धमेंअच्छे शिक्षित हाथियोंकी सूंड़ोंसे आकाश को फेंकेहुये अन्ययुद्धकर्त्ता पृथ्वीपर गिरतेहुये दांतोंकी नोकोंसे अत्यन्त घायल हुये २७ कितनेही अकस्मात् पकड़करदांतोंसे मारेगये और कितनेही पदाती सेना के मध्य को पाकर २८ बड़े हाथियोंसे बारंबार उछाले हुये होकर घायल हुये और कितने ही युद्धमें पंखेके समान घुमा २ कर मारेगये २९ हे राजा कोई २ मनुष्य जो हाथियोंके सन्मुखथे उनके शरीर उस युद्ध भूमिमें जहां तहां अत्यन्त घायल हुये ३० और कितनेहीहाथी प्रासतोमर और शक्तियोंसे दोनोंदांतोंके मध्यमें कुंभ और दन्तवेष्टों पर कठिन घायल हुये ३१ बगल में नियत बड़े भयानक रूप युद्ध कर्त्ताओंके हाथसे घायल होकर कितनेही हाथी रथ और रथके सवार वहां शरीरसे घायल होकर गिरगड़े ३२ उस महायुद्धमेंघोड़ों समेत सवारोंने ढाल बांधनेवाले पदातियोंकोबड़ी शीघ्रतासे अपने तोमरों से मर्दनकिया ३३ हे श्रेष्ठराजाधृतराष्ट्र जहां तहां हाथियों ने आभूषणोंसे अलंकृत कितनेही रथियों को पाकर और पकड़कर ३४ अकस्मात उस घोररूप युद्धमें फेंकदिया और नाराचोंसेघायल होकर बड़े २पराक्रमी हाथी भी जहां तहां गिरपड़े ३५ युद्धमेंशूरोंने शूरोंको पाकर मुष्टिकाओंसे व्यथितकिया ३६ और परस्पर शिरके बालों को पकड़कर एकने दूसरे को गिरादिया और घायलकिया और किसीने ध्वजाओंको उठाके पृथ्वीपर गिराकर ३७ चरणसे छातीको दबाकर फड़कते हुये शिरोंकोकाटा ३८ इसीप्रकार दूसरों नेभी शस्त्र को जीवते शरीर में प्रवेश करदिया हे भरतवंशी वहां युद्धकर्त्ताओं का मुष्टि युद्ध अच्छे प्रकारसे हुआ ३९ इसी प्रकार शिरकेबालों का पकड़ना उग्रहुआ और भुजाओं का महायुद्ध बड़ा भयकारी हुआ इसी रीतिसे एक दूसरे से भिड़े हुये युद्ध में नाना प्रकारके शस्त्रोंसे बहुतप्रकार से एकने एकके प्राणोंको हरणकिया

युद्धकर्त्ताओंके भिड़ने और संकुल युद्ध होनेपर ४०।४१ हजारों कबंध अर्थात् धड़ उठखड़े हुये और रुधिरसे भरेहुये शस्त्र कवच ४२ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बड़े रंगोंसे रंगीनबस्त्र इनभयानक शस्त्रोंसे व्याकुल ४३ बड़े युद्धमें उन्मत्त गंगाकेसमान शब्दोंसे जगतको पूर्ण किया बाणोंसे पीड़ामान अपने और दूसरों के कुछ नहीं जानेगये ४४ बिजयके लोभी राजालोग युद्ध करना चाहिये ऐसा समझकर युद्ध करतेहैं हेमहाराज भाइयोंने भाइयोंको और भिड़े हुये शत्रुओंको भी मारा ४५ दोनों सेना बीरोंसे व्याकुलयुद्ध में वर्त्तमानहुई हेराजा टूटेरथ और गिरायेहुये हाथियोंसे४६ और वहां पर पड़े हुये घोड़ोंसे वा गिराये हुये मनुष्योंसे वह पृथ्वी क्षण भरहीमें दुर्गम होगई ४७ हेराजा एकक्षणमेंही रुधिररूप जलकी बहनेवाली नदी होगई वहां कर्णने पांचलों को और अर्जुननेत्रिगर्त्त देशियोंको मारा ४८ और भीमसेनने कौरवलोगों को और हाथियोंकी सेनाको सब रीतिसे मारा इस रीतिसे दिनके तीसरे भागमें सूर्य्य के होतेहुये बड़े यशकी चाहने वाली कौरवी और पांडवी सेनाका यह बड़ा नाशहुआ ४९।५०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैंने बड़े असह्य और कठिन बहुत से दुःखोंको और पुत्रोंके नाशको तुझसे सुना १ हेसूत जैसेकि तू मुझसे कहताहै और जैसे युद्ध वर्त्तमानहुआ वैसे नहींहै यह मुझकोअपनी बुद्धिसे दृढ़ बिश्वास है २ वहां महारथी दुर्य्योधन बिरथ कियागया फिर धर्मपुत्रने किसरीति से उससे युद्ध किया ३ उसके पीछे फिर तीसरी बार रोम हर्षण करनेवाला युद्ध कैसे हुआ हे संजय उसको मूल समेत मुझसे वर्णन कर ४ संजय बोला हेराजासेनाके भिड़ने वा बिभागि यों के घायल होने पर बिषैले सर्पके समान क्रोधयुक्त आपके पुत्र दुर्य्योधन ने दूसरे रथ पर सवार होकर धर्म

राज युधिष्ठिर को देखकर सारथी से कहा कि शीघ्रता पूर्बक मुझ को वहींपहुंचा जहां पर पांडव लोग हैं ५। ६। ७ वह राजा युधिष्ठिर कवच और छत्र धारणकिये हुये शोभाय मानहै राजाकी आज्ञा पातेही सारथीने उसके उत्तम रथको ८ युद्ध में युधिष्ठिर के सन्मुख पहुंचाया उसके पीछे मतवाले हाथी की समान युधिष्ठिर ने सारथी को आज्ञा करी कि जहां दुर्य्योधन है वहीं चल वह रथियों में श्रेष्ठ शूरबीर दोनों भाई परस्पर में सन्मुख हुये ६। १० उन क्रोध युक्त युद्ध दुर्म्मद महाधनुषधारी दोनों बीरोंने युद्धमें परस्पर बाणों की बर्षाकरी ११ तदनन्तर राजा दुर्य्योधनने युद्ध में तीक्ष्णधार वाले भल्लसे उस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुषको काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने उस अपने अपमान को नहीं सहा इसहेतु से क्रोधयुक्त लालनेत्र होकर दूसरे धनुष को लेके सेना मुखपर दुर्य्योधन की ध्वजा और धनुष को काटा १२। १३। १४ फिर उसने भी दूसरे धनुषको लेकर युधिष्ठिर को बहुत घायलकिया तबतो उन अत्यन्त क्रोधयुक्तोंने परस्पर में शस्त्रोंकी बर्षाकरी १५ सिंहोंके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बैलोंकी समानगर्जने बोलेदोनोंने बिजयाभिलाषी होकर परस्पर में घायल किया १६ फिरवहदोनों महारथी अवकाशको ढूंढ़ते हुये फिरने लगे इसके पीछे कर्णपर्य्यन्तखैंचे हुये बाणोंसे घायल दोनों १७ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूले हुये किंशुक के वृक्ष शोभित होतेहैं इसके पीछे बारंबार सिंहनादों को करते १८ उन दोनों नरोत्तमोंने उस बड़े युद्धमें तल धनुष और शंखों के शब्दोंको किया १९ हेराजा उन दोनों ने परस्पर में एकने एकको बहुत पीड़ामान किया फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने आपके पुत्र को २० बज्रके समान वेगवान महाअसह्य तीनबाणों से छाती पर घायल कियाफिर राजा दुर्य्योधनने सुनहरी पुंख युक्त तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणोंसे शीघ्रही उसको घायलकिया २१ इसकेपीछे राजा दुर्य्योधनने तीक्ष्ण बड़ीभारी उल्कारूप लोहेकीशक्ती को फेंका २२ उस अकस्मात आतीहुई शक्तिको देखकर धर्मपुत्र युधिष्ठिरने तीन

तीक्ष्ण बाणोंसेकाटा और उसकोभी पांचबाणोंसे घायलकिया २३ इसकेपीछे सुनहरी दंडवाली महाशब्द करनेवाली वहशक्ति गिर-पड़ी और अग्नि रूपबड़ी उल्का के समान गिरकर शोभायमान हुई २४ हे राजाफिर आप के पुत्रने शक्ति को टूटाहुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौबाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकिया २५ पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिरने दुर्य्योधन को बिचार करके शीघ्रही बाणको लिया २६ हे राजा उस क्रोधयुक्त महाबली युधिष्ठिरने उसबाणको धनुषमें चढ़ाकरछोड़ा २७ फिर उस बाणने आपके महारथी राजाको पाकर अचेतकिया और पृथ्वीको फाड़ा २८ इसकेपीछे युद्धकी इतिश्री करनेकाअभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्य्योधन शीघ्रतासे गदाको उठाकर धर्मराजके सन्मुख गया धर्म-राजने यमराजके समान गदा उठानेवाले दुर्य्योधन को देखकर आपके पुत्रपर उस शक्तिको चलाया जो कि बड़ी वेगवान अग्निके समान देदीप्यमान उल्काके समानथी २९।३० उसगदा से कवच कटकर हृदयपरघायल रथपर सवार अत्यन्त अचेतहोकर गिरपड़ा और अचेतहोगया ३१ उसकेपीछे अपनी प्रतिज्ञाको स्मरणकरने-वालेभीमसेनने उनसे कहा कि हेराजा यह आपके हाथ से नहीं मारा जायगा यह सुनकर युधिष्ठिर लौटगये ३२ इसके पीछे कृत-बर्माने शीघ्रआकर आपकेपुत्र राजा दुर्य्योधन को आपत्तिके समुद्र में डूबाहुआ पाया ३३ और भीमसेनभी सुबर्ण बस्त्रोंसे अलंकृत गदाको लेकर युद्धमें बड़े वेगसे कृतबर्माके सन्मुखगया ३४ हेमहा-राज तीसरेपहर युद्धमें बिजयाभिलाषी आपके पुत्रोंका युद्धपांडवोंके साथइस रीतिसेहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वन्दयुद्धे त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके पीछे युद्धमें दुर्मद आपके युद्ध कर्त्ताओंने कर्णको आगेकरके फिरभी लौटकर देवासुरोंके युद्धके समान युद्ध

किया १ मनुष्य रथहाथीघोड़े और शंखोंके शब्दों से प्रसन्न नाना प्रकारके शस्त्रोंकी आधिक्यतासे क्रोधयुक्तहो उनहाथीरथी और सवारोंके समूहोंने सन्मुख होकर प्रहारकिये २ उत्तम पुरुषोंके श्वेत फरसे खड्ग पट्टिश और नाना प्रकार के भल्लों से हाथीरथ और घोड़े उसमहा युद्धमें मारेगये और अनेक २ प्रकारकी सवारियों से मनुष्य चूर्णहोगये ३ कमल सूर्य्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दांतसुन्दरआंखनाक समेतमुख और अद्भुतकुंडलमुकुटवाले मनुष्यों के कटेहुये शिरोंसे आच्छादित वह युद्ध भूमि बड़ीही शोभायमान हुई ४ तबसैकड़ों परिघमूशलशक्ति तोमर नखरभुशुंडी और गदाओंसेघायल हजारोंहाथी घोड़े मनुष्य रुधिरकी नदी के जारीकरने वालेहुये ५ मृतकघायलभयानक और अत्यन्त घायलरथमनुष्यघोड़े हाथीवालीशत्रुओंसे घायल वहसेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि संसारके नाश करनेमें यमराजकादेश होताहै ६ हे राजा इसकेपीछे आपकीसेनाके मनुष्य और देवकुमारोंके समान आपकेपुत्रों समेत उत्तमकौरवलोग जिनकेआगे चलनेवाली असंख्य सेनाथी सबमिल करसात्विकीके सन्मुखगये ७ रुधिरसे अत्यन्तभय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़ेरथ और हाथियोंसे व्याप्त और उठेहुये समुद्र की समान शब्दायमान वहसेना देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशित होकर शोभायमानहुई ८ इसकेपीछे इन्द्रकेसमान पराक्रमी युद्ध में बिष्णुके समान सूर्य्यके पुत्र कर्णने सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशित प्रषत्कनाम बामबाणोंसे शूरोंमें बड़ेवीर सात्विकी को घायल किया ९ तब शीघ्रता करने वाले सात्विकी ने विषैले सर्पकी समान नानाप्रकार के बाणों से पुरुषोत्तम कर्णको रथ घोड़े और सारथी समेत ढकदिया १० आप के शुभचिन्तक अतिरथी हाथी रथ घोड़े और पदातियों समेत शीघ्रही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्विकी के बाणोंसे पीड़ामान सुषेण के पास गये ११ बड़े शीघ्रगामी शत्रुओंसे दबाई हुई समुद्रके रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदि के हाथसे मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों

का बड़ा बिनाश हुआ १२ इसके पीछे नित्य कर्म से निवृत्त होकर बुद्धिके अनुसार प्रभु शिवजीके पूजनेवाले और शत्रुओंके मारनेमें निश्चय करनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन और केशवजी शीघ्रही आपकी सेनाके ऊपर चले १३ तबटूटे हुये चित्तवाले शत्रुओंने बादल के समान शब्दायमान बायुसे कंपित पताका ध्वजावाले श्वेत घोड़ोंसे युक्त सन्मुख आनेवाले रथको देखा इसकेपीछे रथपर नाचतेहुये अर्जुनने गांडीवधनुष को टंकारकर आकाश और दिशा बिदिशाओं को बाणोंसे आच्छादित किया १४ । १५ और बिमानरूप रथोंको शस्त्र ध्वजा और सारथियों समेत बाणोंसे ऐसा मारा जैसेकि बायु बादलोंको ताड़ित करताहै १६ फिर उसने हाथी हाथीवान और बैजयन्ती शस्त्र ध्वजा अश्वारूढ़ और पत्तियोंको बाणोंसे यमलोकमें पहुंचाया १७ सीधेबाणोंसे मारता हुआअकेला दुर्य्योधन उस यमराज के समान क्रोधयुक्त मुखन मोड़ने वाले महारथी अर्जुन के सन्मुख गया १८ अर्जुनने सातबाणोंसे उसके धनुष और ध्वजा को काटकर सारथी घोड़ोंको मारकर एकबाणसे उसके छत्रको काटा १९ और प्राणोंके नाशकरनेवाले उत्तम नवें बाणको धनुष पर चढ़ाकर दुर्य्योधनके ऊपर छोड़ा उस बाण के अश्वत्थामाने आठ टुकने करडाले २० इसके पीछे अर्जुनने बाणोंसे धनुषको काट रथकेघोड़ों को मारकर कृपाचार्य्यके उसउग्रधनुषकोभी काटा २१ तब कृतबर्माके धनुष और ध्वजाको काटकर घोड़ोंको मारा और दुश्शासनके धनुष को काटकर कर्णके सन्मुख गया २२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्णने सात्वकी को छोड़कर तीन बाणसे अर्जुनको और बीसबाणसे श्रीकृष्णको घायल करके फिर अर्जुनको बारंबार घायलकिया २३ युद्ध में बहुत सायकोंको छोड़ते शत्रुओंको मारते हुये कर्णकी ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्रकी हुई २४ इसके पीछे सात्विकीने आकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको घायल करके एकसौतिन्नानवे उग्र बाणोंसे घायल किया २५ इसके पीछे पांडवोंके इन सब बीरोंने

कर्णको पीड़ामान किया जिनके नाम युधामन्यु शिखंडी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक २६ उत्तमौजा युयुत्सु नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न चंदेर कारुष मत्स्य और कैकय देशियोंकी सेना २७ पराक्रमी चेकितान सुंदर ब्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इन सबोंने उग्रपराक्रमी कर्णको रथघोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर २८ युद्धमें नानाप्रकारके अस्त्रों और शस्त्रोंसे ढकदिया और उग्रबचनोंसे बार्त्तालाप करतेहुये सब कर्णके मारनेमें प्रवृत्त चित्त हुये २९ कर्णने उस अस्त्रोंकी बर्षाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अनेकरीतिसे काटकर अस्त्रोंकेबलसे ऐसेहटादिया जैसे कि बायु वृक्षको काटकर हटादेता है ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णरथी और सवारों समेत हाथीघोड़े और अश्व सवारोंसमेतसहायकोंकेसमूहोंकोमारताहुआदिखाईदिया ३१ कर्णके अस्त्रोंसेघायल वह पांडवीसेना शस्त्रबाण शरीर और प्राणोंसेरहित होकर बहुधालोग मुखोंको मोड़गये ३२ इसके पीछे मन्द मुसकान करतेहुये अर्जुनने कर्णके अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरकरकेदिशा बिदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाशको बाणोंकी बर्षासे ढकदियावहबाण फिर मुशल और परिघोंके समानगिरे कितनेही शतघ्नियोंके समानऔर कोई२ उग्रबज्रों के समान आकाशसे पृथ्वीपर गिरे पत्ति घोड़े रथ और हाथियोंसे संयुक्त वह सेना उन बाणोंसे घायल आंखोंको बंद करनेवाली होकर बहुतघूमी ३३।३४।३५ तबघोड़े हाथी और मनुष्योंने उस युद्धको पाया जिसमें मरना निश्चय होगयाथा तबबाणों से घायल पीड़ामान और भयभीत होकर भागे ३६ युद्धमें प्रवृत्त बिजयाभिलाषीआपके युद्धकर्त्ताओंके बाणोंसेऐसीदशाहुई औरसूर्य्य अस्ताचलको प्राप्तहुआ ३७ हेमहाराज फिर हमने अधिकअंधकार और धूलीकेगुब्बारोंसे अंधेरेमें कुछ अच्छा बुरानहीं देखा ३८ हे भरतबंशी रात्रिके युद्धसे भयभीत बड़े२ धनुषधारी बर्त्तमानलोग सब शूरबीरों समेत युद्धभूमिसे अलगहुये ३९ हेराजा दिनकेसमाप्तहोनेपर सायंकालके समय कौरवोंके हटजानेपर प्रसन्नचित्त पांडव बिजयको पाकर अपने२ डेरोंकोगये ४० और नाना प्रकारकेबाजे

और सिंहनादों समेत गर्ज२ कर शत्रुओंका हास्यकरते अर्जुन और श्रीकृष्णाजीकी प्रशंसा करते चलेगये ४१उन बीरोंके बिश्राम करने पर उनसब सेना के लोगोंने और राजाओंने पांडवोंको अशीर्वाद दिया ४२ उसके पीछे वहां बिश्रामके करनेपर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पांडव और अन्य राजालोग रात्रिमें अपने २ डेरों में जाकर बिश्राम युक्तहुये ४३ इसके पीछे राक्षस पिशाच और भेड़ियेआदि मांसाहारी पशुओंके समूह उस युद्धभूमि में गये जोकि रुद्रजीकी क्रीड़ाके स्थान रूपथी ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमयुद्धे एकत्रिंशोध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवांअध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि यहप्रत्यक्षहै कि अर्जुनने अपनी इच्छासे हम सबकोमारा इसशस्त्रधारीके युद्ध में मृत्युभी मरनेसे नछूटे १ अकेले अर्जुनने सुभद्राको हरणकिया अकेलेनेही अग्निको तृप्तकिया और अबइसीअकेलेनेइसभारी पृथ्वीकोविजयकरके भेजदेनेवाली किया २ दिव्य धनुधारी अकेलेने किरातरूप धारी शिवजीसे युद्धकिया और निवात कवचोंको मारा ३ अकेलेने ही भरतबंशियोंकी रक्षाकरी अकेलेनेही शिवजीको प्रसन्न किया उसउग्रतेज वाले ने सबराजालोगोंकोबिजयकिया ४ और हमारे शूरबीरभी निन्दाके योग्य नहींहैं किंतु प्रशंसा के योग्यहैं जो उन्हों ने किया उसको भी कहोहे सूत इसके पीछे दुर्योधनने क्याकिया ५ संजय बोले उनघायल औरटूटे अंग सवारियोंसे गिरेहुये कवच शस्त्र और सवारियोंसे रहितदुःखित शब्दकरते शत्रुओंसे कंपायमान पराजित अहंकारी उन कौरवों ने ६ फिर दूरन्देशोकी सलाहकरी जोकि टूटीडाढ़ विषसे रहितपैर से दबायेहुयेसर्पोंकी समान थे ७ उसके पीछे सर्पकी समान श्वास लेता हुआ आपके पुत्रको देखता क्रोधयुक्तकर्ण हाथसेहाथोंको मल कर उनसेबोला कि अर्जुन सदैवसावधान दृढ़पराक्रमीऔरधैर्य्यमान है औरश्रीकृष्णजीभी समयके अनुसारउसको समझा देतेहैं ८। ६

अब हम उसके अस्त्रों के छोड़नेसे अकस्मात् ठगेगये हेराजा अब कलके दिन में उसके सब संकल्पोंको नाशकरूंगा १० यहकर्णके वचनसुनकर दुर्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञादी तब उसकी आज्ञापाकर सबराजालोग अपनेडेरोंकोगये ११ उसरात्रिमें सुखपूर्वक निवास करके प्रातःकाल बड़ी प्रसन्नता से युद्धकरनेकेलिये निकलेउन्होंने कौरवोंमेंश्रेष्ठ बृहस्पतिऔर शुक्रजी के मतमें नियत धर्मराजके बड़े उपायसे रचेहुये कठिनतासे बिजय होने वाले व्यूहको देखा १२ इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्योधनने उस शत्रुओंके मारनेवाले बड़ेवीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्ण को स्मरण किया १३ जोकर्ण युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बलमें सहस्त्राबाहुके सम तुल्यथा उसकर्ण में राजाका चित्तगया १४ सब सेनाओं का चित्तभी उस बड़े धनुषधारी कर्णमें ऐसागया जैसे कि प्राणों के संकटमें मन बन्दहोकर एक ओरको जाता है १५ धृतराष्ट्र बोले हे सूत इसके पीछे दुर्योधनने क्याकिया हे हीन प्रारब्धो लोगो जो तुम्हारामन सूर्य के पुत्रकर्ण मेंगया १६ तो सेनाओंके विश्रामकरनेकेपीछे फिर युद्धके जारीहोने पर कर्णको ऐसेदेखा जैसेकि शीतसे पीड़ित मनुष्य सूर्यको देखता है १७ वहां सूर्यका पुत्र कर्ण इस रीतिसे युद्धमें प्रवृत्तहुआ हेसंजय फिर वहां सब पांडवोंने कर्णसे कैसे युद्धकिया १८ अकेलाही महाबाहुकर्ण सृंजियोंसमेत सब पांडवों को मारसक्ता है क्योंकि युद्धमें कर्णकी भुजाओंका पराक्रमइन्द्र और बिष्णुके समान है १९ उस महारथीके पराक्रम संयुक्त शस्त्र बड़े घोरहैं युद्धमें कर्णका आश्रय लेकर राजा दुर्य्योधन मदोन्मत्त है २० इसकेपीछे पांडवके हाथसे अत्यन्त पीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर और पांडवोंकोभी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्णने क्या किया २१ फिर अभागा दुर्य्योधन युद्धमें कर्णका आश्रयलेकर पांडवोंको श्रीकृष्ण और उन के पुत्रों समेत बिजय करने की अभिलाषा करता है २२ यहमहा शोककारी दुःख है जिसस्थानपर कि वेगवान् कर्णने युद्धमें पांडवों

को नहीं बिजयकिया इससे निश्चयकरके दैव बड़ाहै २३ यह द्यूत की निष्ठा बर्त्तमानहै और शोकका स्थानहै मैं दुर्य्योधन के उत्पन्न कियेहुये भालेके समान घोर कठिन दुःखोंको सहरहाहूं हे तात संजय वह दुर्य्योधन शकुनीको नीतिज्ञ मानता है २४। २५ और सदैव राजाके आज्ञावर्त्ती वेगवान् कर्णको भी नीतिमान् मानता है हेसंजय महाभारी युद्धों के बर्त्तमान होनेके कारण २६ मैंने सदैव अपने पुत्रोंको घायल और मृतकसुना और युद्धमें पांडवोंका कोई रोकनेवाला नहींहै २७ जैसेकि स्त्रियोंके मध्यमें डोलतेहैं उसीप्रकार सेनाकोभी मथ्थातेहैं इससेदैव अधिक बलवानहै संजय बोलेकि हे राजा पूर्व्वसमयके धर्म संबंधीबार्ताओंको विचारो २८ जो मनुष्य असंभव कार्य्यको पीछेसे शोचता है उसका वहकार्य्य नहीं होताहै किन्तु शोचसे नाशकोपाताहै २९ हेराजा मुझबुद्धिमानके पूर्वयोग्य बिचारको जोतुमने नहींकिया इसीसे वहकार्य्य तुम्हारे हाथसेजाता रहा ३० हेराजा सदैव मैंने समझायाथा कि पांडवोंसे युद्धमतकरो तुमने अपनी अज्ञानतासे उसबचनको नहींमाना ३१ तुमने पांडवों के साथमें परस्पर मिलकर बड़े २ घोरपापकिये और आपही के कारणसेअच्छे२हजारों राजाओंकानाश बर्त्तमान हुआ३२हे भरत बंशियोंमें श्रेष्ठ अबसमय आगया शोचमतकरो हेअजेय जैसेकि यह घोरनाशहुआ उससबको मुझसेसुनो ३३ प्रातःकालके समय कर्ण राजादुर्य्योधनके पासगया और मिलकर दुर्य्योधनसेकहनेलगा३४ किहेराजाअबमैं यशस्वी पांडवोंसेयुद्धकरूंगा मैंकितो उसवीरअर्जुन कोमारूंगा या वही मुझको मारेगा ३५ हेभरतवंशी राजादुर्य्योधन मेरे और अर्जुनके कार्योंकी आधिक्यतासे मेरी और अर्जुनकी सन्मुखता नहीं हुई ३६ हे दुर्य्योधन मेरे इस बचनको तुमबुद्धिके अनुसार सुनोकिमैं युद्धमें अर्जुनको मारकरनआऊंगा ३७ जिसके बड़े २ वीर मेरेबर्तमान होनेपर युद्धमें मारेगये वह अर्जुन मेरे सन्मुख आवेगाजोकिमैं इन्द्रकीशक्तिसे पृथकहूं ३८ हेराजाजो अपनी रक्षाकरने वाला है उसको तुमसमझो कि मेरे और अर्जुनकेअस्त्रोंका पराक्रम

और प्रताप समानहै शत्रुके बड़े कार्य्यका नाश हस्तलाघवता बाणों का दूरफेंकना और अस्त्र गिरानेकी सावधानीमें अर्जुन मेरे समान नहींहै ४० हेभरतबंशी देहकाबल वा मनकाबल वा अस्त्रों कीशिक्षा वा पराक्रममें लक्षभेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं है ४१ सब शस्त्रोंमेंश्रेष्ठ बिजयनाम धनुष इन्द्रके प्रिय होनेकी इच्छासे बिश्वकर्माजीने उत्पन्न किया४२ हे राजा निश्चयकरके इन्द्रने उसी धनुषकेद्वारा दैत्योंके समूहोंको बिजयकिया और जिसकेशब्दसे दैत्यों की दशोंदिशा मोहितहुईं ४३ वह बड़ाउत्तम धनुष इन्द्रने भार्गव जीको दिया और भार्गवजीने वह दिव्यधनुष प्रसन्नहोकर मुझको दिया ४४ हे महाविजयी उसी धनुषके द्वारामैं महाबाहु अर्जुनसे लडूंगा वैसेहीलडूंगा जैसेकि भागेहुये दैत्योंसे इन्द्र लड़ाथा४५ परशुरामजीका दियाहुआ घोरधनुष गांडीव धनुषसे अधिकहै जिसके द्वारा यहपृथ्वी इक्कीसबार विजयकरी गई ४६ इसधनुषके घोरकर्म कोभार्गवपरशुरामजीने मुझसेकहाहै उनकेउस दियेहुयेधनुषकेद्वारा मैं पांडवोंसे लडूंगा ४७ हे दुर्य्योधन अबमैं बड़े विजयी बिख्यात अर्जुनको युद्धमें मारकर तुझको बांधवों समेत प्रसन्न करूंगा ४८ हेराजा अबपर्व्वत बनद्वीप और समुद्रोंसमेत यहसब पृथ्वीतेरीहोगी जिसकेकि बीरमारे गये और पुत्र पौत्रोंकी प्रतिष्ठा है ४९ अबतेरे अभीष्टके निमित्त मेरी कोई अच्छे प्रकारकी विशेषता ऐसीनहींहै जैसेकि अच्छे धर्मपर प्रीति करनेवाले मनुष्यकी मोक्षहोतीहै ५० वह अर्जुन युद्धमें मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं होसक्ता जैसे कि वृक्ष अग्निको नहीं सहसका मैं जिसहेतुसे कि अर्जुन से कमहूं उसको अब मुझे कहना अवश्यहै ५१ एकतो उसके धनुषकी प्रत्यंचा दिव्यहै और इसी प्रकार उसके दो तूणीर अक्षयहैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजीहैं मेरा वैसा सारथी नहींहै ५२ उसका गांडीव धनुष दिव्य उत्तम होकर युद्धमें सबसे अजेयहै और मेराबिजयनाम धनुष भी दिव्य और उत्तम है ५३ हेराजा वहां मैं उस धनुषके कारणसे अर्जुनसेअधिक हूं और जिन कारणोंसे कि बीर पांडव अर्जुन

मुझसे अधिक है उसको भी मुझसे सुनो ५४ प्रथम तो सबके पूज्य रूप श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्नि देवताका दियाहुआ सुवर्ण जटित रथभी दिव्यहै ५५ हे बीर वह सबप्रकारसे अजेयहै उसके घोड़ेभी चित्तके अनुसार शीघ्रगामीहैं और ध्वजा भी दिव्य प्रकाश मानहै और उस ध्वजामें हनूमानजी बड़े आश्चर्य्यकारीहैं ५६ और संसारके स्वामी श्रीकृष्ण महाराज उसके रथकी रक्षा करतेहैं इन बस्तुओंसे रहित होकर मैं अर्जुनसे लड़ना चाहताहूं ५७ युद्धको शोभा देनेवाला यह राजा शल्य श्रीकृष्णजी के समानहै जो राजा शल्यमेरा सारथी बनजायतो अवश्य तेरी विजय होय ५८ शत्रुओंके साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कंकपक्ष वाले मेरे अनेक बाणोंके बहुतसेछकड़े साथमें ले चलें ५६ हे भरत र्षभ राजेन्द्र उत्तम घोड़ोंके रथमें बैठकर तुमभी मेरे साथहीसाथ चलो ६० मैं अपने गुणोंसे अर्जुनसे अधिक होजाऊंगा शल्य भी श्रीकृष्णजीसे अधिकहै और मैंभी अर्जुनसे अधिकहूं ६१ जिस प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदय नाम बिद्याके जाननेवाले हैं इसी प्रकार महारथी शल्य भी अश्वबिद्या का ज्ञाताहै ६२ और भुजामें राजाशल्य के समान कोई नहींहै इसी प्रकार अस्त्रवेत्ता मेरे समान कोई नहीं है ६३ जो कि अश्वबिद्या में शल्य के समान कोई नहीं है इसीसे यह मेरारथ अर्जुनसे भी अधिक होगा हे कौ-रवोंमें श्रेष्ठ ऐसा करनेसे मैं रथकी सवारीमें अधिक होजाऊंगाऔर युद्धमें अर्जुन को बिजय करूंगा ६४।६५ इन्द्र समेत देवताभी मेरे सन्मुखहोने को समर्थ नहीं हैं हे शत्रुहन्ता महाराज दुर्य्योधन यह काममें तुमसे करवाया चाहताहूं ६६ यहमेरामनोरथपूर्ण करोइस समय को किसी प्रकारसे उल्लंघन न करना चाहिये ऐसा करनेसे सब अभीष्ट सिद्ध होंगे ६७ हे भरतवंशी इसके पीछे जैसा मैं युद्ध करूंगा उसको भी तुम देखोगे मैं सन्मुख आनेवाले पांडवोंको सब प्रकारसे विजय करूंगा ६८ सुर और असुर भी युद्धमें मेरे सन्मुख आनेको समर्थ होनेको समर्थ नहीं हैं हे राजा फिर मनुष्ययोनि

पांडवलोग मेरी सन्मुखता क्या करेंगे ६९ संजय बोले कि कर्णके इन सब बचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्य्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्णसे प्रशंसा पूर्व्वक यह बचन बोला ७० कि हे कर्ण जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातोंको वैसाही करूंगा तूणीरों से भरेहुये रथ तुम्हारे पीछे २ चलेंगे ७१ कंकपक्षसे जटित तेरे बाणोंके बहुत से छकड़े लेचलूंगा और मुझ समेत सब राजालोग तेरे पीछे २ चलेंगे ७२ संजय बोले हे महाराज आपका प्रतापी पुत्र दुर्य्योधन इस प्रकारके बचन कहकर मद्रदेशके राजाशल्यके पास जाकर उससे यह बचन बोला ७३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णदुर्य्योधनबिचारेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे महाराज आपकापुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्य से यह बचन बोला १ हे सत्यव्रती महाबाहु शत्रु शोककारी मद्रदेशकेस्वामी युद्धमेंशूर और शत्रुकी सेनाको भय उत्पन्न करनेवाले २ श्रेष्ठवक्ता आपने कर्णका बचन सुनाहै मैं सब श्रेष्ठ राजाओंमें आपको उत्तम जानताहूं ३ हे अनुपम पराक्रमी शत्रुपक्षके नाशकारी राजा मद्र मैं नम्रता पूर्व्वक आपको शिरसे दण्डवत् करताहूं ४ हे रथियोंमें श्रेष्ठ आप अर्जुन के नाश और मेरी वृद्धिके अर्थ न्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्यहो ५ आपके सारथी होनेसे कर्ण मेरेशत्रुओंको बिजयकरेगा कर्णकी बागडोरों का पकड़ने वाला दूसरा कोई पुरुष नहींहै ६ हे महाबाहु युद्धमें बासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है ७ आप सब प्रकार से कर्ण की ऐसी रक्षाकरिये जैसेकि ब्रह्माजी ने महेश्वरजी की और श्रीकृष्णने सब आपत्तियों में पांडवों की करी है और करते हैं हेमहाराज उसी प्रकार आपभी कर्णकी रक्षा करिये ८ भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण और पराक्रमी कृतवर्मा सौबलका पुत्र शकुनी अश्वत्थामा मैं और हमारी सबसेना ९

हेराजा इसरीतिसे यह नौ भागकियेहैं परन्तु इन भागोंमें महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य का भाग नहींहै १० इन्होंने उन दोनोंभागों को उल्लंघन करके मेरे शत्रुओं को मारा वह दोनों वृद्ध बड़े धनुषधारी युद्धमें छलसे मारे गये ११ हे निष्पाप वह दोनों कठिन कर्मों को करके यहांसे स्वर्गको गये और इसी प्रकार अन्य२ भी बहुतसे पुरुषोत्तम युद्धमें शत्रुओंके हाथसे मारेगये १२ हमारे अनेक शूर वीर युद्धमें बड़े२ पराक्रमों को करके प्राणोंको त्याग कर स्वर्गको गये १३ हे राजा यह मेरी बहुतसी सेना मारीगई पूर्व्वमें भी इन अत्यन्त थोड़े पांडवोंसे मेरे बहुतसे मनुष्य मारेगये अबकौनसी बात करनी उचितहै १४ कुन्तीकेपुत्र महाबली सत्य पराक्रमी हैं सो हेराजा जिस रीतिसे वह पांडवलोग मेरी शेषबची हुई सेनाको नमार सकें वही उपाय आपको करना योग्य है १५ हेसमर्थ यह सेना युद्धमें पांडवोंके हाथसे मृतक हुये शूरबीरवाली है अर्थात् इस के युद्धकर्ता शूरवीर मारेगये अबहमारी वृद्धि चाहने वाला एक महाबाहु पराक्रमी कर्ण और सब लोगोंके महारथीपुरुषोत्तम आप हो हे शल्य अब कर्ण युद्धमें अर्जुनके साथलड़ना चाहता है १६ । १७ हे राजाशल्य उस कर्णमें मुझको बिजयकी बड़ी आशाहै इस पृथ्वीपर उसकाउत्तम सारथी कोईनहींहै १८जैसे कि युद्धमें अर्जुन के सारथी श्रीकृष्णजी हैं उसी प्रकारआपभी कर्णके रथपर सारथी हूजिये १९ हे राजा श्रीकृष्णजीसे युक्तऔर रक्षित होकर जैसे कि वह अर्जुन जिन२ कर्मों को करताहै वहसबके प्रत्यक्षहैं २० पूर्व्व में अर्जुन ने युद्धमें हमारेशत्रुओं को मारा अब श्रीकृष्ण को साथ रखनेवाले इस अर्जुनकापराक्रम है २१हेराजा मद्र अर्जुन श्रीकृष्ण जी के साथ हमारी बड़ीभारी सेनाको प्रतिदिन युद्धमें भगाताही हुआदिखाई देताहै २२ हे बड़तेजस्वी कर्णका और तुम्हारा भाग शेष रहगया है कर्णसमेतआप एकही भागसे उस पांडवी सेनाका नाशकरो जैसेकि सूर्य्यअपनी किरणों से अंधकार को दूर करताहै उसी प्रकार आपभीकर्ण समेत होकर युद्धमें अर्जुनको मारो २४

सूर्य्यके समान उदय होनेवाले बालार्कके समान प्रकाशमान कर्ण और शल्यको देखकर युद्धसे सब महारथी ऐसेभागेंगे जैसेकि सूर्यो-दयमें अरुणको देखकर अंधकार दूरहोताहै २५ इसीप्रकार आपके युद्धमें प्रकाशमान होतेही पांचाल और सृंजियों समेत कुन्तीके पुत्र भी नाशको पावेंगे २६ कर्ण रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठहै और आप रथियोंमें असादृश्यहैं जैसा तुम दोनोंका योगहोगा वैसा संयोग न पूर्व्वमें हुआहै न आगे होगा २७ जैसेकि श्रीकृष्णजी सब दशाओं में पांडवोंकी रक्षा करतेहैं उसी प्रकार आपभी सूर्य्यके पुत्र कर्णकी रक्षाकरो २८ यहकर्ण तुझसारथीकेसाथ होकर इन्द्रसमेत देवताओं से भी युद्धमें अजेयहोगा फिर पांडवोंके युद्धमें कैसे बिजयी न होगा हेराजा तुममेरे बचनोंमेंसन्देह मतकरो२९संजय बोलेकिकुलीनता शास्त्रज्ञता अधिकार और पराक्रमसे अजेय महाबाहु शल्यदुर्य्योधन के बचनको सुनकर क्रोधमें भराहुआ बारंबार हाथियोंकोप्रेरणा करता हुआ भृकुटीको त्रिबलीकरके क्रोधसे रक्तबर्ण नेत्रोंको खोल-कर यह बचनबोला ३० । ३१ हे गांधारीके पुत्र निश्चय करके तू मेरा अपमान करताहै और सन्देह करताहै जो तू निस्सन्देह होकर मुझसे कहताहै कि सारथीपना करो ३२ और कर्णको मुझसे भी अधिक जानकर उसकी प्रशंसा करता है मैं युद्धमें कर्णको अपनी समाननहीं समझताहूं ३३हे राजा तुममेरा अधिकतर भाग बिचार करो मैं युद्धमें उसको बिजय करके जहांसे आयाहूं वहांको चला जाऊं ३४ हे कौरवनन्दन चाहैमैंहो अकेला युद्धकरूंगा अबतुमयुद्ध में मुझ शत्रुहन्ताके पराक्रमको देखो ३५ जैसेकि मुझसा पुरुषउस अपमानको हृदयमें धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्त्ता होजाय वैसेही तुमभी मुझमें सन्देह न करो ३६ अथवा युद्धमें भी मेरा अपमान किसीप्रकारसे न करना चाहिये मेरीवज्ररूपीमोटीर भुजाओंको देखो ३७ और मेरेचित्र धनुष समेत बिषवाले सर्पके समान बाणोंको देखो और बायुके समान वेगमान उत्तम घोड़ोंसे अलंकृत मेरेश्रेष्ठ रथको देखो ३८ हे गान्धारीके पुत्र सुबर्ण सूत्रोंसे

वेष्टित मेरीगदाको देखो मैं संपूर्ण पृथ्वीको फाड़कर पर्व्वतोंको भी तोड़ सक्ताहूं ३९ औरहेराजा अपने तेजसेसमुद्रको शोषण करसक्ताहूं मुझ शत्रुओंके विजय करनेमें समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान को ४० युद्ध में तू नीच अधिरथीके सारथीपने में क्यों संयुक्त करता है हेराजा तुम मुझको नीचकर्ममें संयुक्त करनेको योग्य नहींहो ४१ मैं उत्तम होकर नीचजाति के सेवन करने को नहीं चाहताहूं जोकि प्रीति से समीप आया और स्वाधीनता में नियत हुआ ४२ उसको तू नीचजातिकी आधीनतामें करता है देखो छोटे बड़ों का बिपर्य्यय करना बड़ापापहै ब्रह्माजीने मुखसे ब्राह्मण उत्पन्नकिये और भुजा से क्षत्रियों को उत्पन्न किया ४३ बैश्योंको जंघा से और शूद्रों को चरणोंसे उत्पन्न किया यह वेदका बचनहै इनचारों बर्णों से अनु-लोम प्रतिलोम लोगहुयेहैं हे भरतवंशी चारोंवर्णों की मिलावटसे उत्पन्न होनेवालोंके क्षत्रीलोग रक्षक दंड देनेवाले और दान करने बालेकहेहैं ४५ और ब्राह्मणोंको ब्रह्माजीने यज्ञकरने कराने दान देनेलेने और वेदपढ़ने और शुद्धदानोंके द्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इसपृथ्वीपर नियत कियाहै ४६ बैश्योंका कर्मधर्म से खेती करना पशुपालन और दान करनाहै और शूद्रलोग ब्राह्मण क्षत्री और बैश्योंके सेवा करनेवाले बर्णन कियेहैं ४७ और सूत लोगतो अवश्यही क्षत्री और ब्राह्मणोंके सेवा करनेवालेहैं क्षत्रीकिसी दशा में भी सूतों का आज्ञावर्ती नहीं होसक्ता ४८ हे राजा मैं राजर्षि-योंके कुल में उत्पन्न मूर्द्धाभिषेक नामसे प्रसिद्ध इसरीति से बन्दी-जनोंका पूज्य और स्तूयमानहूं ४९ हे शत्रुसेनापहारी सो मैं ऐसा होकर सूतके सारथीपनेको इच्छानहीं करताहूं ५० मैं अपमान युक्त होकर फिरकिसीप्रकारसेभी युद्धनहींकरूंगा हे गांधारीके पुत्र मैं तुझसे पूछकर अबअपने घरको जाऊंगा ५१ संजयबोले हे महा-राज युद्धमें शोभापानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इसप्रकार से कहकर राजाओं के मध्य मेंसे शीघ्रही उठकर चलदिया ५२ आप का पुत्रबड़ी प्रतिष्ठा पूर्वक उसको पकड़करसब प्रयोजनोंके सिद्धकरने

वालेमीठे २ बचनोंसे बड़ी नम्रतापूर्व्वक बोला ५३ हे शल्य जैसा आप जानतेहो और कहतेहो सो यथार्थहीहै इसमें किसी प्रकारका सन्देहनहींहै इसमेंमेरा प्रयोजनहै उसको आपकृपाकरके सुनिये ५४ हे राजाकर्ण आपसे अधिक नहींहै और न मैं आपपर सन्देहकरता हूं आपमद्रदेशके राजाहैं जो मिथ्या समझें तो उसकाम को न करियेगा ५५ हे पुरुषोत्तम तुम्हारे वृद्धलोगोंको. रतअर्थात् सत्यतायुक्त बोलते हैं उनकी सन्तान होनेसे आप आर्तायन कहे जाते हैं यह मेरामत है ५६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले इस कारण से आप युद्ध में शत्रुओंके शल्यरूप अर्थात् भल्ल रूपहो इसी हेतुसे पृथ्वीपर आप का नामशल्य बिख्यातहै ५७ हे बड़े दक्षिणा देनेवाले आपने जो प्रथम कहाहै उसीकोकरो हेधर्मज्ञ मेरेनिमित्तजो २कहाजाताहै ५८ कर्णसमेत मैंभी आपसे अधिकपराक्रमी नहींहूं परन्तु मैंयुद्धमें आप को उत्तम घोड़ोंका सारथी चाहताहूं ५९ हेशल्यमैंकर्णकोभी उत्तम गुणोंके द्वारा अर्जुनसे अधिक मानताहूं और आपको बासुदेवजीसे भी अधिक मुझसमेत सबलोकमानतेहैं ६० हेनरोत्तमकर्ण अस्त्रोंमें भी अर्जुनसे अधिकहै इसीप्रकार आपभी अश्वबिद्याकेजाननेमें और पराक्रममें श्रीकृष्णसे अधिकहो ६१ जैसेकि बड़ेसाहसी बासुदेवजी अश्व हृदयको जानतेहैं उसी प्रकार उनसेभी द्विगुणित आप जानतेहो ६२ शल्य बोला हे गांधारीके पुत्र कौरवजोतुम सेनाकेमध्य में मुझको श्रीकृष्णजीसे अधिकमानते और कहतेहो इसीसे मैं तुमपर प्रसन्नहूं ६३ अब मैं अर्जुनके साथ युद्ध करनेवाले यशस्वी कर्णके साथ सारथीपनेमें नियतहोताहूं हे बीर जैसेकि तुम मानकर चाहतेहो ६४ हेबीर कर्णके बिषयमें मेरा यहसंकल्पहै अर्थात् प्रतिज्ञाहै कि मैं इसके सन्मुख ब्रह्माके समान कहूंगा ६५ संजय बोलेहेभरत वंशी राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र कर्ण समेत बोलाकि जैसी राजा मद्रकी इच्छाहै वैसाही हो ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसारथ्यंत्रयत्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

———※———

चौंतीसवांअध्याय॥

दुर्य्योधन बोले हेराजा मद्र आपसे जोमैं कहताहूं उसको फिर भी तुम सुनों हेसमर्थ जैसेकि पूर्व्व देवासुरोंके संग्राममें जोवृत्तान्त हुआ १ उसीको महर्षी मार्कण्डेय जीने जिसरीतिसेमेरेपितासे कहा हे राजऋषभ आप उसको मुझसे सुनिये और चित्तसे समझिये २ तुमका इसमें बिचार न करना चाहिये हेराजा परस्परमें विजयकी इच्छासे देवता और असुरोंका प्रथमयुद्ध ३ तारक संबंधीहुआ तब दैत्य देवताओंसे हारगये यह हमने सुना ४ हेराजा दैत्योंके हारने परतारक के तीन पुत्र ताराक्ष कमलाक्ष बिद्युन्माली ५ उग्र तपोहोकर बड़ेभारी नियममें नियतहुये हेशत्रु संतापी उन तीनोंने तपस्याओंसे अपने२ शरीरोंको दुर्बल करदिया उन की शान्त चिन्ततातप नियम और समाधीसे प्रसन्न होकर बरदाता ब्रह्माजीने उनको बरदानदिये ७ हेराजा उन सब मिलेहुओंने सब जीवमात्रकेहाथसे मृत्युका नहोना लोकके पितामह ब्रह्माजीसे बरमांगा तब ब्रह्माजीने उनसे कहा कि सबकी अबिनाशिता नहींहै हेअसुर लोगोंइसबिचार से लौटो ८ और इसके सिवाय जो दूसरा बर चाहतेहोउसको मांगो हेराजा इसके पीछे वह सब मिलेहुये प्रभुका बारंबार ध्यान करके १० और सर्वेश्वरको नमस्कार पूर्व्वक यह बचन बोले हेदेवता पितामह हमको यह बरदानदो ११ कि हम तीनपुरोंमें नियत होकर आपकी कृपासे इस लोक में इस पृथ्वीपरघूमें १२ इसके पीछे हजार बर्षके अनन्तर परस्परमें मिलेंगे हेनिष्पाप यह तीनों पुर एकही रूप होजांय १३ हेभगवान् उस समयजो देवता हमारे इस मिलेहुये पुरको एकही बाणसे ढानेवाला होगा उसीसे हमारी मृत्युहो१४ ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्गमें चलेगये फिरवह तीनों बर प्रदानको पाकर अत्यन्त प्रसन्नहुये १५ और तीनपुर बनानेके लिये असुरोंके बिश्वकर्मा अजर अमर और दैत्योंसे पूजितजोमय नामदैत्यहै उससे बोले१६ उसकेपीछेउसबुद्धिमान् मयदैत्यने अपने

तपसे तीन पुरोंको उत्पन्नकिया उनमें एक सुवर्णका दूसरा चांदी-
का तीसरा लोहेकाथा १७ वह सुवर्णकापुरतो स्वर्गमें नियतहुआ
चांदीकाअंतरिक्षमें और लोहेकापुर इच्छाके अनुसार पृथ्वीपरचलने
वालाहुआ १८ उनमें प्रत्येक पुर सौयोजन वर्गात्मक गृह अट्टादि-
कों संयुक्त प्राकार और तोरणोंसे शोभित अत्यन्त शोभित धामोंसे
भराहुआ और खुलाहुआ निविड़तासे रहित बड़े २ चौड़े मार्गोंका
रखने वाला नाना प्रकारके हर्म्य और स्वच्छ द्वारोंसे शोभायमान-
था १९ । २० हेराजा उन तीनोंपुरोंमें जुदे२ राजाहुये सुवर्णकापु-
रतो महात्मा ताराक्षका हुआ और चांदीवाला कमलाक्षका हुआऔर
लोहे वाला विद्युन्मालीका हुआ वह तीनों दैत्योंके राजा अस्त्रोंकेते-
जोंसे तीनों लोकोंको जीतकर नियत हुये २१ । २२ और कहनेलगे
कि कौन प्रजापतिहैउन उत्तम बीर दैत्योंकी संख्या प्रयुत अर्बुदोंथीं
और किरोड़ों दैत्य जहां तहांसे आये वहमांस भक्षी महाबली
पूर्व समयमें देवताओंसे पराजित २४ बड़ेऐश्वर्यके चाहने वाले
त्रिपुरनाम गढ़में आश्रितहुये फिर मयदैत्य इनके सब मनोरथोंका
पूरा करनेवाला हुआ २५ वह सबदैत्य उसमयकी रक्षामें होकर
निर्भय रहतेथे त्रिपुरके राजाओंने जिस जिस अभीष्टको मनसे ध्यान
किया २६ उस अभीष्ट को उनके निमित्त मयदैत्यने अपनीमा-
यासे प्रकटकिया तारताक्षके पुत्रवीर पराक्रमी हरिनामने बड़ीघोरत-
पस्या करी २७ उसतपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये तब ब्रह्माजीको प्रस-
न्न जानकरउसने यहबर मांगा कि हमारे पुरमेंएकऐसीबापीअर्थात्
बावड़ी उत्पन्नहो २८ जिसमें शस्त्रोंसे मृतकलोग उसमें डालने से
सजीवहोकर बलवान होजांय हे राजा उस तारकाक्ष केपुत्र हरिने
इस वरको पाकर २९ वहां मृतक संजीविनी बावड़ीको तैयार किया
फिरमरेहुये दैत्य जिसरूप और पोशाकथे उसमें डालेगये ३० वह
उसीरूपकोधारणकिये पोशाकसमेत उत्पन्नहुये उन्होंनेउसबावड़ी
को पाकर फिर उन सबलोकोंको पीड़ित किया ३१ वहसबदैत्य बड़े
बड़ेतपस्वी और सिद्ध लोगोंके भीभयके बढ़ानेवाले हुयेहेराजा कभी

उनकी युद्धमें पराजय नहींहुई ३२ उसके पीछे लोभमोहसे व्याप्त निर्बुद्धीनिर्लज्जहोकर वह सबलोभमें फंसेहुयेनियतहुये३३ बरदान से अहंकारी होकर वह सबजहां तहां देवताओंकेसमूहोंको भगाकर अपनी इच्छा के अनुसार घूमने लगे ३४ देवताओं के प्रिय कारी सब क्रीड़ा स्थानोंको वा ऋषियों केपवित्रआश्रमोंको और अनेक सुन्दर सुन्दर देशोंकोनाश करके उनदुष्टकर्मी दैत्योंने मर्यादाओंको भी बिगाड़ा इसकेपीछे सबके पीड़ितहोनेपर मरुद्गणोंसमेत इन्द्रने ३६ चारों ओरको वज्रोंके प्रहारसेतीनों पुरोंसे युद्ध किया जब इन्द्र उन बरदान पानेवालोंकेपुरों के तोड़ने और पराजयकरनेकी समर्थ नहीं हुआ तब भयभीत होकर वह उनपुरों को छोड़कर ३७ । ३८ देवताओंकोसाथलेकर ब्रह्माजीके पासगया वहां जाकर उसने असुरोंकी प्रबलता ब्रह्माजीसे वर्णन करी ३९ फिर शिरोंसे दण्डवत् करके उनका मूलवृत्तान्त वर्णनकिया और उनके मारनेका उपाय ब्रह्माजीसे पूछा भगवान् ब्रह्माजी इन्द्रके बचनको सुनकर देवताओं से बोलेकि जो तुमसे शत्रुता करताहै वह मेराभी शत्रुरूप और अपराधीहै निश्चय करके वह देवताओंसे बिरोधकरने वाले निर्बुद्धी असुर जो तुमको पीड़ित करतेहैं इसीसे वह सदैव अपराधीहैं ४२ मैं सब जीवमात्रको निस्सन्देह समान दृष्टिसे देखताहूं परन्तु धर्म के बिरोधी जीवमारने केहीयोग्यहैं यही मेरा नियतब्रत है ४३ मैं उनपुरोंको एकही बाणसे तोडूंगा इसमें मिथ्यान होगा उनपुरोंको एकही बाणसे शिवजीके सिवाय तोड़ने वाला दूसरा देवता कोई समर्थनहींहै ४४ हे देवताओ तुमउस युद्धकरने वाले अचल आदि ईश्वर शिवजी की शरणलो जिससे कि वह शिवजी उन असुरोंको मारे ४५ इन्द्रसमेत सब देवता ब्रह्माजीके बचनोंको सुनकर ब्रह्माजीको आगे करके शिवजीकी शरणमें गये ४६ वह धर्मज्ञ देवता ऋषियों समेत तप और नियमोंमें नियत होकर सनातन वेदोंको पढ़ते हुये सर्वात्मारूप शिवजीके पासगये ४७ हे राजाउन्होंने उस सर्वात्मा निर्भयता देनेवाले जगदीश्वर शिवजीको उत्तम २ स्तुतियों

से प्रसन्न किया जिसआत्मारूपसे सब जगत् व्याप्तहै ४८ और नाना प्रकारके मुख्यतपोंसे मनकेयोगवाली सबवृत्तियोंको रोकने कोजानताहै और जिसका चित्तभी सदैव अपने आधीनहै४९ उसने उससर्वशक्तिमान् षड़ैश्वर्य्यके स्वामी उपाधि रहित शिवजीको देखा ५० और उसी अद्वितीय ईश्वर कोही नानाप्रकार के रूपोंका धारणकरने वाला कल्पनाकिया अर्थात् उस परमात्मामें अपनेसंकल्पकेअनुसार अनेक रूपोंको ५१ और एकने दूसरेके रूपको देखा जिसने विष्णुरूपसे कल्पना किया उसको विष्णुरूप दृष्टपड़े और जिसने इन्द्ररूप ध्यान किया उसको इन्द्ररूप दिखाई दिये यह देखकर सब आश्चर्य्ययुत होकर उसजगत्के स्वामी अजन्माको सर्वरूप देखकर ५२ देवता और ब्रह्मऋषियोंनेशिरोंको पृथ्वीमेंधर कर प्रणाम किया फिर शिवजीने उठकर उनको स्वस्ति बचनसे पूजन किया ५३ फिरमन्द मुसकान करते हुये भगवान्ने कहा कि कहौ कहौ किस निमित्त आयेहो तबतो शिवजीकी आज्ञापाकरवहु सब देवता नियत चित्ततासे तप नियमोंमें नियत होकर सनातन वेदको पढ़ते हुये शिवजीकी स्तुति करनेलगे (स्तोत्र) नमोनमो नमस्तेस्तुप्रभोइत्यनुवनूवच: । नमोदेवाधिदेवायधन्विनेवनमालिने ५५ प्रजापतिमखघ्नायप्रजापतिभिरीड्यते । नमोस्तुतायस्तुत्यायस्तूयमानायशंभवे ५६ विलोहितायरुद्रायनीलग्रीवायशूलिने । अमोघायमृगाक्षायप्रवरायुधयोधिने ५७ अर्हायचैवशुद्धायक्षयायक्राथनायच । दुर्वारणायकाथायब्रह्मणेब्रह्मचारिणे ५८ ईशानायाप्रमेयायनियंत्रेचर्मवाससे । तपोरतायपिंगायव्रतिनेकृत्तिवाससे५९ कुमारपित्रेत्र्यक्षायप्रवरायुधयोधिने । प्रपन्नार्त्तिविनाशायब्रह्मद्विट्संघघातिने६०वनस्पतीनांपतयेनराणांपतयेनमः । गवांचपतयेनित्यंयज्ञानांपतयेनमः ६१ नमोस्तुतेससैन्यायत्र्यंबकायामितौजसे । नमोवाक्मंभिर्देवत्वांप्रपन्नान्भजस्वनः ६२ ततःप्रसन्नो भगवान्स्वागतेनाभिनंद्यच ॥ प्रोवाचव्येतुवस्त्रासोब्रूतकिंकरवाणिव ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणित्रिपुरवधाख्यानेचतुर्स्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियों के समूहोंको शिवजीने निर्भयतादी उसनिर्भयताके देनेपर ब्रह्माजी शिवजीकी प्रशंसा करके यह लोकोंका हितकारी बचन बोले १ हे देवताओं के ईश्वर आपके दियेहुये प्रजापति के पदपर बर्त्तमान होकर मैंने दैत्योंको बड़ाभारी बरदान दियाथा २ उन मर्य्यादा उल्लंघन करनेवाले असुरोंके मारनेको आपकेसिवाय किसीको सामर्थ्यनहींहै हेभूतभविष्यके स्वामी आपही उनके मारनेको विरोधी शत्रुहो ३ हे देवेश्वर शंकर देवता तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओंके ऊपर कृपाकरो और दानव लोगोंकोमारो ४ हे बड़ाईदेनेवाले आपकी कृपासेही सब संसार वृद्धिपाता है हेलोकेश आपही रक्षाके स्थानहैं हमसब आपकी शरण हैं ५ शिवजीने कहा कि तुम्हारे सब शत्रुमार डालनेकेही योग्यहैं यहमेरा मतहै परन्तु मैं अकेला उनके मारने को उत्साह नहीं करताहूं क्योंकि वह बहुतसे असुर बड़े २ पराक्रमीहैं ६ सोतुमसब बड़े २ पराक्रमी मेरे साथी होकर मेरे आधेतेजसे उनशत्रुओंको युद्धमें बिजय करो ७ देवता बोले कि हे बिश्वनाथ जितना हमारा पराक्रम है उससे द्विगुणित उनका पराक्रम युद्धमें हममानते हैं क्योंकि उनका तेजबल हमने देखाहै वहबास्तवमें हमसे द्विगुणित बलवान्हैं ८ श्रीभगवान् बोले कितुमसे शत्रुता करनेसे वहसब पापात्मा हैं इससे बधके अवश्य योग्यहैं तुमउन शत्रुओंको मेरेआधेतेज और बलसेमारोगे ८ देवता बोले हे महेश्वरजी हमआपका आधातेज और बल धारण करने को समर्थनहींहै आपही हमसबके आधेबलसे शत्रुओंको मारो १० श्रीभगवान् शिवजीने कहा जो मेरापराक्रमधारणकरनेको तुम्हारी कोईसामर्थ्य नहींहै तो तुम्हारे आधेतेजसे वृद्धिपानेवाला मैंहीं उनको मारूंगा ११ तबदेवताओंने कहा बहुतअच्छा यह देवताओं के बचनको सुनकर देवेश्वर शिवजी सबके आधेतेजको लेकर अधिक

होगये १२ अर्थात् शिवजी उनकेआधेबलसे सबसेअधिकबलवान् होगयेतभीसे शिवजीकामहादेवनामप्रसिद्धहुआ १३इसकेपीछेमहा-देवजीबोले कि हेदेवताओ मैं धनुषबाण धारीहूं और युद्धभूमिमेंरथ की सवारीकेद्वारा तुम्हारे उनशत्रुओंको मारूंगा १४ इसहेतुसेतुम मेरेरथ और धनुष बाणको बिचार करके तबतक खोजोजबतक कि उनशत्रुओंको पृथ्वीपर न गिराऊं १५ देवता बोले कि हे देवेश्वर हमजहांतहांसे तीनोंलोकोंका सबतेज इकट्ठा करके उससे आपके प्रकाशमान रथको तैयार करेंगे १६ फिर जैसा कि बुद्धिके अनुसार बतायागया वैसाही विश्वकर्माजीने शुभ और उत्तम रथको तैयार किया तदनन्तर उन उत्तम देवताओंने उस बनेहुये दिव्य रथको अच्छे प्रकारसे अलंकृतकिया १७ विष्णुजी चंद्रमा और अग्निदेवता यह तीनोंतो शिवजीके बाणमें कल्पितहुये अग्नि शृंगहुआ और चंद्रमा भल्लहुआ १८ और विष्णुजी उस उत्तम बाणमें कुंतलहुये और बड़े२पुरोंकी धारणकरनेवालीधरा अर्थात्पृथ्वीदेवी शिवजी का रथबनी वहपृथ्वी पर्वत वा द्वीपोंसे युक्तहोकरअखिलजीवोंकी धारण करनेवालीथी उस समय मन्दराचल पर्वत अक्षहुआ और उसकी जंघामहानदी हुई २० तबदिशाविदिशारथकेपरिवारहुये औरनक्षत्रों केसमूहईशाहुये उसरथमें सतयुगजुआहुआ औरसर्पोंमें श्रेष्ठवासुकी सर्परथका कूबरहुआ२१हिमाचल और विंध्याचल यह दोनों रथके पहियोंके उपस्करहुये उदयाचल और अस्ताचल पायेहुये२२ और दानवोंका उत्तम स्थान समुद्र अक्षबना और सप्तऋषियोंका मंडल रथका पुरस्कर हुआ २३ गंगा सरस्वती सिंधु और आकाश धुर हुआ और जल समेत सबनदियांभी रथको उपस्कर हुई २४ दिन रात्रि और कलाकाष्ठा नाम समय और सब ऋतुओं समेत प्रकाश मान् ग्रह अनुकर्षहुये और नक्षत्र बरूथहुये २५ धर्म अर्थ कामसे संयुक्त त्रिवेणु द्वार और बन्धनहुये औषधी वीरुध और फल फूल युक्त वृक्ष घंटेबने २६ उस महा उत्तम रथमें सूर्य्य और चन्द्रमा पूर्व और पश्चिमके पायेहुये और दिन वा रात्रि पूर्व्वापरनाम शुभपक्ष

हुये२७ तब धृतराष्ट्र नाम नागपतिको आदिलेकर दशनागपतियों को ईशाकिया और श्वासलेनेवाले बड़े २ सर्पोंको योक्तरकिया २८ सर्पको दूसरा जुआबनाया और संवर्त्तक वा बलाहक नामबादलों का जुयेका चर्मबनाया कालपृष्ठ नहुष कर्कोटकधनंजय औरअन्य२ सर्प घोड़ोंके बालबंधनहुये और दिशा विदिशा आदि घोड़ोंके मार्ग हुये ३० संध्या पृथ्वी मेधा स्थिति सन्नति और नक्षत्रों से चित्रित आकाशको रथका चर्म्मकिया ३१ मद्यजल और प्रेतोंकेस्वामी लोकेश्वरोंकोघोड़ाबनाया पर्व्वअमावास्याओर पूर्व्वपूर्णिमाओर उत्तर अमावास्यावा उत्तर पूर्णमासी इनसुन्दरब्रत वालियोंकोयोक्तबनाया३२उसरथमेंउसअमावास्या आदिके अधिष्ठातापितरोंको इरावन कीकीलकबनाई उनकीलकोंमें धर्मसत्य और तपको रस्सियां बनाई ३३ उस रथका आधारमनहुआ और सरस्वती प्रचारमार्गहुईऔर नाना प्रकारके वर्णवाली विचित्र प्रेरणाही उत्तमपता काहुई ३४ बिजलीइन्द्रधनुषसेअलंकृत प्रकाशमान रथको प्रकाशितकिया वषट्कारमंत्र चाबुकहुआ और गायत्रीशिरका बंधनहुई३५ पूर्व्वसमयमें यज्ञके मध्यमें महात्मा महेश्वरजीका जो संबत्सर नामधनुषनियत हुआथा वही धनुष ठहरायागया और बड़ीशब्दवाली सावित्री जी प्रत्यंचाबनी ३६ और दिव्य कवच वह नियतकिया जो कि बड़ोंके योग्य रत्नोंसे जटित खंडित न होनेवाला रजोगुण रहित कालचक्र से बाहरथा ३७ श्रीमान् सुवर्णका मेरु पर्व्वत ध्वजाको यष्टीहुआ और बिजलियोंसे अलंकृत बादल पताकाहुआ ३८ और अध्वरोंके मध्यमें देदीप्यअग्नियां प्रकाशमानहुईं फिरदेवतालोग उसअलंकृत रथको देखकर आश्चर्य्य युक्तहुये ३९ हेश्रेष्ठ इसकेपीछे देवताओं ने सबलोकोंके तेजको एक स्थानपर इकट्ठा देखकर उस सजेहुये रथको ४० उस महात्माके सन्मुख वर्त्तमान करके वर्णनकिया हे महाराज नरोत्तम इस प्रकारसे देवताओं की ओरसे उसशत्रुओं के मारनेवाले उत्तम रथके तैयार होनेपर ४१ शंकर जीने अपने अस्त्र शस्त्रों को उस रथपर रक्खा औरआकाश को ध्वजाकी यष्टी बनाके

नंदीगण को उसपर नियत किया ४२ ब्रह्मदंड कालदंड रुद्रदंड और तप यह चारों सब दिशाओं से युक्त रथके ओर पासके रक्षक हुये ४३ अथर्वा और अंगिरस उस महात्मा के रथ चक्रों के रक्षक हुये ऋग्वेद सामवेद और पुराण यहसब आगे चलनेवालेहुये ४४ इतिहास और यजुर्बेद पीछेके रक्षक हुये और दिव्यबाणी और बिद्या यह रथके चारों ओर नियत हुये ४५ हे राजेन्द्र स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुखमें शोभा करनेवाले हुये ४६ और छओं ऋतुओं समेत वर्षके अन्तको बिचित्र धनुष करके अपने सन्मुख अबिनाशी छायारूप साबित्रीको युद्धमें धनुष की प्रत्यंचा बनाई ४७ वेगवान् रुद्रजी कालरूप हुये और उनका धनुष वर्षान्त रूप हुआ इसहेतुसे रौद्री कालरात्री कोधनुषकी प्रत्यंचा बनाया ४८ बिष्णु अग्नि और चन्द्रमा भी बाण रूप हुये यह सब जगत् अग्निषोम नाम दोरूपवाला बैष्णव कहा जाताहै ४९ और बिष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारणसे उन्होंने शिवजीके धनुषकी प्रत्यंचाके स्पर्शको न सहा ५० ईश्वरने भृगु वा अंगिरा ऋषिके क्रोधसे उत्पन्न बड़ी कठिनता से सहनेके योग्य तेज संकल्पवाले असह्य क्रोधाग्निको उस बाणमें लगाया ५१ और नीललोहित धूम्रबर्ण दिगम्बर भयकारी दशहजार सूर्य्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेज को ५२ कठिनतासे गिरने के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अधर्मी लोगों का संहार कर्त्ताथा ५३ शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक बल और रूपचित्तके समान शीघ्रगामी इन अपने गुणोंसे युक्त भगवान् शिवजी प्रकाशमान हुये ५४ यह जड़ चैतन्य रूप विश्व उनशिव जीके अंगोंमें शरणरूप होकर अपूर्व्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ ५५ वह धनुषधारी शिवजी उस तैयार हुये रथको देखकर और चन्द्रमा बिष्णु और अग्निसे उत्पन्न होनेवाले उस बाणको

लेकर ५६ नियत हुये हे प्रभु राजा शल्य तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओं में श्रेष्ठ बायुको पवित्र गंधियोंका पहुंचानेवाला बिचार किया ५७ तब सावधान शिवजी देवताओंको भी भयभीत करते हुये पृथ्वी को कंपायमान करके उस रथपर सवार हुये ५८ उस रथपर सवार होनेके अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणोंने स्तुतिमान किया ५९ ब्रह्मऋषियों से स्तुतिमान और बन्दीजनों से प्रतिष्ठित और नृत्यबिद्यामें कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से शोभायमान ६० खड्ग बाण और धनुषधारी बरदाता शिवजी देवताओं से बोले कि हमारा सारथी कौनहोगा ६१ तब देवगणोंने कहा कि हे देवेश आप जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथी होगा ६२ फिर शिवजीने कहा कि जो मुझसे श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छीरीति से बिचारकर शीघ्रही मेरा सारथी बनावो बिलम्ब न करो ६३ इसके पीछे शिवजीके इस बचनको सुनकर देवतालोग ब्रह्माजी के समीप पहुंच बहुत प्रसन्न करके यह बचन बोले ६४ कि हे देवता असुरों के मारने में जो२ आपने कहा वह सब हमनेकिया और शिवजी हमपर प्रसन्न हैं ६५ हमने बिचित्रशस्त्रोंसे युक्त रथको तैयार किया है हम नहीं जानतेहैं कि उस उत्तम रथमें सारथी कौन होगा ६६ हे देवोत्तम इसहेतुसे आपही किसी सारथीको बिचार कीजिये हेसमर्थ देवता हमारे इसबचनके सफलकरनेको आपही समर्थ हैं ६७ हे भगवान् तुमने पूर्व समय में हम लोगों से ऐसा कहाहै किमैं तुमलोगोंका हित करूंगा उसको आपकरनेके योग्य है ६८ हे देव तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनतासे सहने के योग्य शत्रुलोगोंका भगानेवाला पिनाक धनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध करनेवाला बिचार कियागया वह दानवोंको भयभीत करता हुआ वर्तमान है ६९ उसीप्रकार चारोंवेदयही चारों उत्तम घोड़ेहुये और पर्वतों समेत पृथ्वी रथहुई नक्षत्रोंसमेतआकाश निवासस्थान और

शिवजी युद्धकर्त्ताबने हैं परन्तु सारथी जाननेके योग्यहै इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव रथघोड़े समेत लड़ने वाला देवता नियतहै ७०।७१ और हे पितामहजी कवच धनुष और शस्त्र भी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आप के सिवाय दूसरा हम नहीं देखतेहैं ७२ हे प्रभु आपही सबगुणों से संपन्न देवतासे अधिकहो सो तुम शीघ्रही उत्तमरथपर सवार होकर घोड़ोंकी बाग पकड़ो ७३ आपको देवताओं के विजय और असुरोंके नाशकेलिये ऐसा करना उचित है यह कहकर उन देवताओंने तीनोंलोकों के ईश्वर ब्रह्माजीको शिरसे दण्डवत्करी और उनको सारथी बनने के निमित्त प्रसन्न किया ब्रह्माजी बोले हे देवताओ तुमसे जो कहा है उसमें कुछभी मिथ्यानहींहै ७४।७५ अब मैं युद्धकर्त्ता शिवजी के घोड़ोंको थांभताहूं यह कहकर वह संसारके स्वामी ब्रह्मा जी ७६ देवताओं की प्रार्थनासे सारथी नियतहुये उन लोकेश ब्रह्माजी के रथपर सवार होनेपर ७७ उन बायु के समान शीघ्रगामी घोड़ोंने शिरोंसे पृथ्वीकोप्राप्तकिया अपनेतेजसेही प्रकाशमान भगवान्७८ ब्रह्माजीने रथपर चढ़कर बागडोरों समेत चाबुकको हाथ में लिया उसके पीछे देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी उन बायुके समान घोड़ोंकोउठाकर ७९ शिवजीसे बोलेकि रथपर सवारहूजिये इसके अनन्तर शिवजी बिष्णु अग्नि और चन्द्रमासे उत्पन्न होनेवाले उसबाणको लेकर ८० धनुषसे शत्रुओं को कंपाते सवार हुये परम ऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओंके गणोंने उस रथारूढ़ देवेश की स्तुति करी वह शोभायमान खड्ग धनुष बाणधारी बरदाता ८१।८२ अपने तेजसे तीनों लोकोंको अत्यन्त प्रकाश करतेहुये रथ पर सवार हुये और इन्द्रादिक देवताओंसे फिर कहनेलगे ८३ कि यह तुमसन्देह न करना कि शत्रुनहींमारे जायगे ८४ इस बाण से तुम असुरोंको मराहुआही जानना उन देवताओं ने कहा कि सत्य है असुरमारेगये यह बचन जोआपके मुखसे निकला है वह मिथ्या नहीं है ८५ देवतालोग ऐसा विचारकर बड़े प्रसन्नहुये उसकेपीछे

सब देवगणों समेत देवेश शिवजी ८६ उस बड़ेरथ में बैठे हुयेचले जिसके समान कोईनहीं वहबड़ा यशस्वी देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारोंओरसे धमकातेहुये अपने पार्षदोंसे शोभित तथा ८७ महाबाहु तपोमूर्त्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणों ने महादेवजी की विजयकी आशाकरी ८८ हे नरोतम इसरीति से लोकोंको निर्भय करनेवाले लोकेशके चलनेपर सब संसारी जीवों समेत देवतालोग प्रसन्नहुये ८६ वहां ऋषिलोग बहुतसे स्तोत्रोंसे शिवजीको स्तुतिको करते हुये बारंबार इनकेतेजकी वृद्धिकरनेवाले हुये ९० उनके यात्राकरनेपर प्रयुतों अर्बुदों गंधर्वोंने नानाप्रकारके बाजोंकोबजाया ९१ इसकेपीछे बरदाताब्रह्माजीके रथपरसवारहोने औरअसुरोंकीओरको चलनेपर मन्दमुसकान करतेहुयेशिवजीबोले कि धन्यहै धन्यहै९२हेदेवता उधरकोचलो जिधर दैत्यलोगहैं और सावधानहोकर तुम घोड़ोंको तेजकरो अब तुम मुझ शत्रुहन्ताकेयुद्ध में भुज बलको देखो९३हेराजा इसके पीछेमन और बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया और जिस ओर को दैत्य दानवोंसे संयुक्त वह त्रिपुरथा उधरकोही उनका मुखकिया ९४भगवान् शिवजी देवताओंकी बिजयके निमित्त लोकपूजित इन आकाशके पान करनेवाले घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रता सेचले ९५ शिवजीको रथपर सवार होकर त्रिपुरके सन्मुख चलनेके समयनन्दीगण दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ बड़ेवेग से गर्जा ९६ वहां देवताओंके शत्रु तारकदैत्य इस नन्दी गणके महाभयकारी शब्दको सुन करनाशको प्राप्तहुये ९७ तब दूसरे असुरलोग वहां युद्धकेनिमित्त सन्मुखगये हेमहाराजइसके पीछे त्रिशूलधारी शिवजी क्रोध मेंज्वलितहुये ९८ तब सबजीव धारी और तीनोंलोक भयभीत हुये और पृथ्वीकंपायमान हुई और धनुषके चढ़ातेही बड़े२ शकुनहुये९९उस समय चन्द्रमा अग्नि विष्णु ब्रह्मा और रुद्रसमेत जो धनुषथा उसकेवेगसे वह रथ अत्यंत पीड़ाको पाताथा१००इसके पीछे नारायण जीउसबाणके भागमेंसे बाहर निकले और वृषभरूप होकर उसबड़े

रथको उठालिया १०१ रथके पीड़ित होने और शत्रुओंके गर्जने पर उन महाबली शिवजीने भ्रांतोंसे शब्दकिया १०२ इसकेपीछे बैल के मस्तक और घोड़ों के पीछे नियत होनेवाले रथपर बैठकर उन शिवजीने दानवोंके पुरको देखा १०३ हे नरोत्तम तबबैल और घोड़ों पर नियत रुद्रजीने उनके घोड़ोंके स्तनोंकानाशकरके खुरोंकेटुकड़े२ करदिये १०४ हे राजा शल्य आपका भला हो तभी से गौ और बैलोंके पैर बीचमेंसे फटे और उसीसमय से घोड़ोंके स्तन नहीं हुये १०५ अद्भुतकर्मी महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ितकर अपने धनुष को संधान बाणको चढ़ाके पाशुपत अस्त्रसे संयुक्त करके त्रिपुरको अच्छेप्रकार से चिन्ता युक्त किया हे महाराज उस धनुषधारी शिव जीके नियत होने १०६।१०७ पर दैवकी प्रेरणा से समय के आने पर वहतीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्तहुये फिर उन त्रिपुर नामकी एकदशा होनेपर देवताओं को बड़ी प्रसन्नताहुई १०८ इसके पीछे महेश्वरजीकी स्तुति करतेहुये देवगण और सब सिद्धमहर्षियोंनेयह शब्दकियाकि विजय करिये इसके पीछे त्रिपुर और असुरोंके मारने वालेक्षमान करनेवाले तेजस्वी देवता शिवजीके शरीरमेंसे एकमहा उग्ररूपवालादूसरारूपप्रकट हुआ फिर उस भगवान् लोकेश्वर ने अपने उसदिव्यधनुषको खैंचकर १०९।११०।१११ उस तीनोंलोक के सारवान बाणको त्रिपुरके ऊपरमारा हे महाराज उसउत्तम बाण के छोड़नेपर११२ पृथ्वी पर वह तीनोंपुर गिरपड़े और उनके पीड़ित शब्द बड़े भयकारीहुये उस बाणने उन दैत्य गणों को नाश करके पश्चिमी समुद्र में डालदिया ११३ इसप्रकार क्रोधयुक्त महेश्वर जीके हाथसे तीनोंलोकों का दुःखदाई त्रिपुर नाशको प्राप्त हुआ उनकानाश तीनोंलोकोंकी वृद्धिका कारण हुआ और दैत्यभी सब मारेगये११४ इसके पीछे बड़े हाहाकार करके अपने क्रोधसे उत्प-न्नहोनेवाली उस प्रचंडअग्निको शान्तकिया और उसको रोककर शिवजीने कहा कि तू संसार को भस्ममत कर ११५ इसके अनन्तर सब देवगण ऋषि और महर्षिलोग स्वस्थचित्तहुये और उत्तम२ व-

चनोंसे शिवजीको प्रसन्न करके सबने स्तुतिकरी ११६ इनबातोंके पीछेब्रह्मादिक सब देवता शिवजीको प्रणामकर उनकी आज्ञाले २ कर जहां२ से आयेथे वहां२ को चलेगये ११७ इसरीतिसे उस संसारके स्वामी देवऋषियोंके पूज्य महेश्वरजी महाराज ने लोकोंके कल्याणको किया११८ जैसे कि सृष्टिके कर्त्ता भगवान् ब्रह्माजीने वहां रुद्रजीके सारथ्य कर्मको किया ११६ उसीप्रकार आपभीशीघ्रता से महात्मा कर्णके सारथीहोकर घोड़ोंकी रस्सीपकड़िये १२० हे राजाओंमें श्रेष्ठ आप श्रीकृष्ण कर्ण और अर्जुनसे अधिकश्रेष्ठहो यह निश्चयहै कि यहकर्ण युद्धमेंरुद्रजीके समानहै और आप नीतिमें ब्रह्माजीके बराबरहो इसकारणसे आप मेरे उन शत्रुओंके मारनेको वैसे समर्थहो जैसे कि इन्द्रअसुरोंके मारने को समर्थ होता है १२१।१२२ हेशल्य अब यह कर्णश्रीकृष्ण सारथी समेत श्वेत घोड़ेवाले अर्जुनको युद्धमें मथन करके जिस रीतिसे अर्जुनको मारे वही प्रकार आपको करना उचितहै १२३ हे मद्रदेशके स्वामी तुम्हारेही कारणसे हमको राज्य मिलने की और अपने जीवनकी आशा है अबमुझकर्णके मंत्रीकीबिजयहै अर्थात् तुम्हीं हमारे राज्यकीप्राप्ति और शत्रुओंके नाश के हेतुहो १२४।१२५ जिसको धर्मज्ञ ब्राह्मणने मेरेपिताके सन्मुख कहाहे शल्य इसकारण अर्थ और कर्म से युक्त अपूर्व्व वचनको सुनकर बड़ेनिश्चयके साथ कर्मकरो इसमें किसी बातका बिचार मतकरो १२६ भार्गवबंशमें बड़े यशस्वी जमदग्निजी उत्पन्नहुये उनके पुत्र तेजगुणमें पूर्ण परशुराम जी प्रसिद्ध हुये १२७ उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्री ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम व्रतोंको धारण करके शिवजीको प्रसन्न किया १२८ उसकी भक्ति और शान्तचित्ततासे प्रसन्नहोकर शिवजीने उनको दर्शनदिया १२६ और परशुरामसे कहा हेपरशुरामजी तुम्हाराकल्याणहो मैं प्रसन्नहूं और तुम्हारे चित्तकी इच्छाभी मुझको बिदित हुईतुम अपनी आत्माको पवित्रकरो सबअभीष्टोंकोपावोगे१३० और जबतुम पवित्रहोसे तभीतुमको अस्त्रदूंगा क्योंकि यहअस्त्र अपात्र और अस

मर्थको भस्म करते हैं १३१ शिवजीके इसबचन को सुनकर परशु रामजीने उत्तरदिया १३२हेदेवेश जब आपमुझको पवित्र और पात्र जानें तभी अस्त्र दीजियेगा१३३दुर्योधनने कहा कि हे शल्य इसके पीछे तपशांति और नियम पूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रोंके द्वारा१३४बहुत वर्षोंतक शिवजीकी आराधना करी तब उन महादेवजीने महात्मा भार्गवजीको१३५ प्रशंसा देवी पार्वतीजीके सन्मुख वर्णन करी कि यह दृढ़व्रत रखनेवाले परशु राम सदैव मुझमें भक्ति रखनेवालेहैं१३६हेशत्रुहन्ता इसप्रकार से प्रसन्न होकर शिवजीने देवता और पितरोंके सन्मुख उन परशु रामजीके बहुतसे गुणोंकावर्णनकिया १३७ इसकेपीछे उसीसमय में दैत्यलोग बड़े पराक्रमीहुये और प्रबल और अहंकारी राक्षसों से देवतालोग पराजित होकर घायल हुये १३८ तब उनकेमारनेमें निश्चय करनेवाले देवताओंने इकट्ठे होकर उन शत्रुओंके मारनेका उपाय किया परन्तु उनके मारनेको समर्थ नहीं हुये १३६ इसके पीछे देवताओंने उमापति महेश्वरजीको भक्तिसे प्रसन्नकिया और प्रार्थनाकरी कि शत्रुओंके समूहोंको मारिये १४० इसके अनन्तर वह देवेश शिवजी देवसंतापी दैत्योंके नाश करनेका प्रणकरके भार्गव परशुरामजीको बुलाकरयह बचन बोले १४१ कि हे भार्गव देवताओंके सब आयेहुये शत्रुओंको हमारी प्रीति और लोकोंके हितके अर्थ तुममारो १४२ यह बचन सुनकर परशुरामजीने शिव जीसे प्रार्थना करी कि हे देवेश युद्धमें दुर्म्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारनेको अस्त्रोंसे अभिज्ञकैसे मारनेको समर्थहोसक्ताहैमहेश्वरजीने कहा कि मेरी आज्ञासे तुम वहांजावोशत्रुओंको मारोगे१४३।१४४ और शत्रुओंके समूहोंको बिजय करके बड़े गुणोंको प्राप्त होगे इस बचनको सुनकर परशुरामजी सब बातोंकी अंगीकार करके १४५ स्वस्तिबाचन पूर्व्वक दानवोंकी ओरचले वहां जाकर बडे अहंकार और बलसे उन दानवोंसे बोले१४६ कि हे युद्धदुर्म्मद दैत्यलोगो मुझसे युद्धकरो हे महा असुर लोगो मुझको महादेवजीने तुम्हारे

बिजय करनेको भेजाहै १४७ फिर भार्गवजीके इस बचनको सुन कर दैत्योंने युद्धकिया उससमय उस भार्गवनन्दनने बज्र और बि-जिलीके समान स्पर्शवाले प्रहारोंसे युद्धमें उन दैत्योंको मारकर शिवजीका दर्शन किया फिर जमदग्नि जीके पुत्र ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ परशुरामजी दानवोंके हाथसे घायल शरीर शिवजीके हाथकेस्पर्शसे घातजन्य पीड़ासे रहित हुये और शिवजी महाराजने इनके उस कर्मसे अत्यन्त प्रसन्न १४८।१४९।१५० होकर इन महात्माभार्ग-वजीको बहुतसे बरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्त्ति शिवजीने पर-शुरामजीसे कहा १५१ कि शस्त्रोंके आघातसेयह तेरे शरीरमें पीड़ा हुई उस पीड़ासे हे भृगुनन्दन तेरामानुषी कर्म नष्ट होकर दिब्यकर्म प्राप्तहुआ १५२ अब तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे दिब्यअस्त्रोंको लो, दुर्योधनने कहाकि इसके पीछे परशुरामजी सब अस्त्रोंको और अनेक अभीष्ट बरोंको पाकर शिरसे दण्डवत् कर शिवजीकी आज्ञा लेकर वहांसेचलेगये १५३ तब ऋषिने इसरीतिसे प्राचीन वृत्तान्त को बर्णन कियाभार्गवजीनेभी अत्यन्त प्रसन्नअन्तःकरणके साथ दिब्य धनुर्बेद महात्मा कर्ण को दिया हे पुरुषोत्तम राजा शल्य जो कर्णमें कुछ पापहोतातो भृगुनन्दन जी काहे को दिब्यअस्त्र उसको देते और में भी उसको सूत के वंशमें उत्पन्न नहीं समझता हूं १५४।१५५।१५६ में इसको क्षत्रियोंके बंशमें उत्पन्न देवकुमार जानताहूं और यहकुलके गुप्तकरने को आज्ञादियाहै यह मेरामत है१५७हे शल्ययह कर्ण सबप्रकारसे क्षत्रीहै और सूतकेवंशमें नहीं उत्पन्न हुआहै कुंडलऔर कवचधारी महाबाहु महारथी१५८सूर्य्य के समानतेजस्वी सिंहको मृगी कैसे उत्पन्न करसक्ती है और जैसे कि इसकेदोनों भुजागजराजकी सूंड़के समान मोटी हैं १५९ उसी प्रकार हेशत्रुहन्ता इसकी बड़ी छातीको भी देखो यह सूर्य्यका पुत्र धर्मात्माकर्णकोई प्राकृतिपुरुष नहींहै१६०हे राजेन्द्र यह कर्ण म-हात्मपराशुरामजीकाप्रतापवान् और महापराक्रमीशिष्यहै१६१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यदुर्य्योधनसंवादेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधनबोले कि इसरीतिसे वहां सब लोकोंके पितामह भगवान् ब्रह्माजीने सारथ्य कर्म किया और श्रीरुद्रजी रथी हुये १ हे-बीर रथीसे अधिक रथका सारथी करना योग्यहै हे पुरुषोत्तमइस हेतुसे तुम युद्धमें घोड़ोंकोथांभोजैसेकि शिवजीके निमित्त देवगणोंने भगवान् ब्रह्माजीको सारथ्यकर्मके लिये प्रार्थना करी उसीप्रकार हमलोगोंकी ओरसेकर्णसे भी अधिकआप प्रार्थनाकिये गयेहो २।३ जैसेकि देवताओंकी ओरसे शिवजीसे बड़ेभी ब्रह्माजी प्रार्थनाकिये गये हे महाराज उसी प्रकार आपभी कर्णसे अधिक होनेकेकारण प्रार्थना किये गयेहैं जैसेकि ब्रह्माजीने रुद्रजीके घोड़ोंको थांभा ४ उसी प्रकार आपभी बड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ोंको थांभो शल्य बोले कि हेनरोत्तम मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनके मुखसे कही हुई इस उत्तम अद्भुत कथाको बहुधा सुनाहै जैसे कि ब्रह्माजी ने शिवजीके सारथ्यकर्मको किया है ५ और जैसेकि शिवजीने एक ही बाणसे सब असुरोंको मारा हेभरतबंशी यह भूतकाल का वृत्तान्त श्रीकृष्णजीका भी जानाहुआहै६।७जैसेकि भगवान्ब्रह्माजी सारथी हुये उसी प्रकार श्रीकृष्णजी भी भूतभविष्य के वृत्तान्तोंको जानतेहैं ८ इसीहेतुसे जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजी नेशिवजीके सारथ्य कर्मको किया हे भरतबंशी उसी प्रकार श्री-कृष्णजीने अर्जुनकी रथवानी अंगीकारकरी ९जो कर्ण किसी दशा मेंभीअर्जुनको मारडालेगातो अर्जुनके मरने के पीछे आपश्रीकृष्ण-जी युद्ध करेंगे १० शंख चक्र गदाके हाथमेंधारण करनेवाले श्री-कृष्णजी तेरी सेना को भस्मकरेंगे उस समय इन क्रोधयुक्त श्री-कृष्णजीके सन्मुख तेरी सेना मेंसे कोई भी युद्धकरनेको समर्थ न होगा ११ संजय बोले कि शत्रुओं का बिजय करनेवाला महा-साहसी आपका पुत्र दुर्य्योधन ऐसे बचन कहनेवाले शल्य से बोला हे महाबाहु तुम सूर्य्यके पुत्र महापराक्रमी कर्णका अपमान

मतकरो १२ । १३ जो कर्ण कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठहोकर सर्व शस्त्रोंका पारगामीहै जिसके धनुषकी भयानक प्रत्यंचा के शब्द को सुनकर १४ पांडवी सेना दशोंदिशाओं को भागतीहै हे महाबाहु आपके नेत्रोंकेही सन्मुख हुआथा जैसे कि वह मायावी सैकड़ों मायाओंका प्रकट करनेवाला घटोत्कच मारागया और अर्जुन किसी प्रकार से भी सेनाके सन्मुख नहीं हुआ १५।१६ बड़ा भयभीत अर्जुन इस सर्वदिनोंमेंकभी सन्मुखनहींहुआ और पराक्रमी भीमसेन धनुषकी कोटिसे प्रेरित किया गया १७ हे राजा बहुतसे लोगोंने कर्णसे कहाथा कि तू पेट पालन करने वालोंके समान अज्ञानहै इसी प्रकार बड़े युद्धमें माद्रीके पुत्रशूरबीर नकुल और सहदेवको बिजय करके १८ किसी प्रयोजनसे युद्धमें नहीं मारा हे श्रेष्ठ जिस कर्णनेवृष्णियोंमें बड़ाबीर और यादवोंमें श्रेष्ठ महा पराक्रमी सात्यकीको १९ युद्धमें बिजय करके रथसे विहीन करदिया और उसी मन्द मुसकान वालेनेसृंजियोंकोआदि लेकर अन्य सब योद्धाओंको जिनमेंमुख्य धृष्टद्युम्नथा उनको बारंबार युद्धमें बिजय किया उस महारथी पराक्रमीकर्णको पांडव लोग युद्धमें कैसे बिजय करसक्तेहैं २०।२१ जो क्रोधयुक्त होकर युद्धमें वज्रधारी इन्द्रको भी मारसक्ताहै और आप सर्वविद्या सम्पन्न महाअस्त्रज्ञ और पंडित हो २२ और पृथ्वी पर आपके भुजबलके समानभी कोईनहींहै तुम शत्रुओंके भल्लरूप होकर पराक्रममेंभी अक्षयहो २३ हे शत्रुहन्ता राजा शल्य इसीहेतुसे आपका नाम बिख्यात है आपके भुजबल को पाकर सब यादव लोग समर्थ नहीं हुये २४ हे राजा श्रीकृष्णजी आपके भुजबलसे अधिकहैं जैसेकि अर्जुनके मरनेपर श्रीकृष्णजीसे सेना रक्षाके योग्यहै २५ उसीप्रकार कर्णके नाशहोजाने पर सेनाके लोग आपसे रक्षाके योग्यहैं जैसेकि बासुदेवजी युद्धमें सेनाको रोकेंगे उसी प्रकार आपभी सेनाको अवश्यमारोगे २६ आपके कारणसे युद्धमें अऋणता प्राप्त करना चाहताहूं और सब सगे भाई इष्टमित्र और अन्य सब राजाओंकी अऋणता चाहताहूं २७

शल्य बोला हे प्रशंसा करनेवाले दुर्य्योधन तुम सब सैनाकेसमक्ष जो कृष्णजीसे भी अधिक मुझको कहतेहो इस हेतुसे मैं तुझपर प्रसन्न हूं अबमैं प्रसन्नतासे अर्जुनसे लड़नेवाले यशस्वी कर्णके साथ उसके रथपर इस प्रतिज्ञासे सारथी बनताहूं कि मैं जिससमय जो चाहूंगा वह कर्णके विषय में कहूंगा उसका किसी प्रकार का मान नहीं करूंगा २८।२६।३०संजयबोले हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र तब आपका पुत्र कर्ण समेत यहबोला कि ऐसाही होय यह कहकर सब क्षत्रियोंके समक्षमें ३१ शल्यके सारथी होनेसे बिश्वास युक्त होकर दुर्य्योधन बड़ी प्रसन्नतासे कर्णसे प्रीति पूर्ब्बक मिला ३२ और बड़ी प्रशंसा करके कहनेलगा कि युद्धमें तुम सब पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र सब दानवोंको मारताहै ३३ इसके अनन्तर घोड़ोंकेहांकनेपर शल्यके तैयारहोनेपर प्रसन्नचित्त होकर कर्णने दुर्य्योधनसे कहा ३४ यह मद्रदेशका राजा अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर बात नहीं करताहै हे राजा आप मीठे बचनोंसे फिर इस प्रकारसेकहो ३५ तब महाज्ञानी सर्बशास्त्र और अस्त्रोंका वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्य्योधन मद्र देशियोंके महाराजसे बोला ३६ हे शल्य अबकर्ण बादलके समान घिरेहुये शब्दयुक्तबाणोंसे युद्धभूमि को पूर्णकरना मानताहै कि अर्जुनके साथ युद्धकरना चाहिये३७ हे पुरुषोत्तम आपयुद्धमें उसके घोड़ोंको थांभो कर्ण आप सबयोद्धाओं को मारकर फिर अर्जुनको मारना चाहताहै३८ हेराजा मैं बारंबार आपकोकर्णके सारथी बननेके निमित्त अपनीइच्छासे प्रार्थनाकरता हूं जैसेकि सारथियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुनकेमन्त्रीहैं उसीप्रकार आपभी कर्णकी सब ओरसे रक्षाकरो ३९ । ४० संजयबोले इसके पीछे प्रसन्नचित्त हो राजाशल्य आपके पुत्र दुर्योधनसे बड़ेस्नेहसे मिलाप करके यह बचन बोला ४१ हेगांधारीके पुत्रअपूर्व दर्शन राजा दुर्योधन जो तुम मुझको ऐसा मानतेहो इसहेतुसे तेराजोअभीष्टहै उस सबको मैं करूंगा ४२हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ शत्रुसंतापी मैं जिसजिस कर्मके योग्यहूं और जहां जहां जैसा२मैं करसक्ता

हूं वहां २ अपने मनसे सर्वात्मासे तेरेकर्मको करूंगा ४३ मैं वृद्धि-का चाहने वालाहोकर कर्णसे जो कुछ प्रियवार्त्तक हूं उसबचनको आप और कर्णदोनों सब प्रकारसे सहनेके योग्यहैं ४४ कर्णबोला हेराजा मद्र जिस प्रकारसे ब्रह्माजी शिवजी के और श्रीकृष्णजी अर्जुनके सारथीहुये उसी प्रकार तुमभी हमारी वृद्धिमें प्रवृत्तहूजि-ये ४५ शल्यनेकहा कि अपनी निन्दा और स्तुति और दूसरे की निन्दा और स्तुति यह चार प्रकारके कर्म अच्छे लोग नहीं करते हैं ४६ हेबुद्धिमान् फिरभीमैंतेरे निश्चयहोनेके लिये अपनीप्रशंसा से भरेहुये बचनको कहताहूं उसको तुम यथार्थही समझो हेप्रभु मैं मातलिके समान सावधानी व अश्वकी रथवानी अथवा आगेहोने वालेदोषके जानने और उसके दूरहोनेकेउपाय के जानने से और दोषोंके दूरकरनेकी सामर्थ्य रखने से इन्द्रके सारथी होने केयोग्य हूं ४७। ४८ हेनिष्पापकर्ण इसहेतुसे युद्धमेंअर्जुनसे युद्धकरनेवाले तुझ रथीके साथसारथी होकर तपसे पृथक्घोड़ोंको चलाऊंगा ४९

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणि सारथ्यस्वीकारेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५

छत्तीसवां अध्याय ॥

दुर्योधनबोला हेकर्ण यहराजामद्र तेरासारथी बनेगा यहतुम्हारा सारथी श्रीकृष्णजीसे भी ऐसा अधिकहै जिसप्रकार इन्द्रकासारथी मातलि १ जैसेकि मातलि हरितघोड़ोंकेरथको चलाताहै उसीप्रकार यहशल्यभीतेरेरथके घोड़ोंको चलावेगा २ तुझयुद्धकर्त्ता केरथीहोनेऔर राजामद्रकेसारथीहोने पर तुम्हाराही उत्तम रथ निश्चय करके पांड वोंकोविजयकरेगा ३ संजयबोले हेराजा इसकेअनन्तर प्रातःकाल होजानेपर राजा दुर्योधनने उस वेगवान् राजा मद्र सेफिर कहा ४ किहेराजा मद्र आप अब युद्धमें कर्णके उत्तम घोड़ोंको थांभो तुमसे रक्षित होकर यह कर्ण अर्जुनको अवश्य विजय करेगा ५ हे भरत वंशीयह बचन सुनकर शल्यने रथपर नियत होकर कहाकिऐसाही होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य केपास आकरयह

बचन बोला किहे सूत आपमेरेरथको शीघ्र तैयार करो उसकेपीछे सारथी शल्यने कहा बिजयकरो यह शब्दकहकर रथोंमे श्रेष्ठ गंधर्व नगरके समान६।७ बुद्धिके अनुसारअलंकृतकल्याणरूप और बिजयी रथको बड़ी शीघ्रता से तैयार करके वर्त्तमान किया उसउत्तम रथको प्रथमतो महारथी कर्णने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहितके द्वारा बुद्धिके अनुसारपूजके परिक्रमा कर बिचार पूर्वक सूर्यका उपस्थान करके ८। ९ सन्मुख वर्त्तमान हुये शल्यसेकहा कि आप सवार हूजिये इसके पीछे बड़ा तेजस्वी शल्य कर्णके उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथ पर ऐसे चढ़ा १० जैसेकि पर्वतपर सिंह चढ़ता है तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथ को शल्य के स्वाधीन देख कर ११ ऐसे सवारहुआ जैसे बिजली सेभरेहुये बादल पर सूर्य्य सवार होताहै फिरवह सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमानदोनों एकरथपर सवारहोकर १२ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि स्वर्गके सूर्य्य और चन्द्रमा दोनों बादलों में शोभित होतेहैं उससमय वह महात्मा बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये १३ जैसेकि यज्ञमें ऋत्विज् और सदस्योंसे स्तुतिमान इन्द्र और अग्नि होतेहैं फिर वहकर्णरथ पर नियत होगया जिसके घोड़ोंको शल्यने पकड़ रक्खाथा १४ बाणरूप किरणोंका रखनेवाला कर्णघोर धनुषको टंकारताहुआ अपने उत्तम रथपर ऐसे नियत हुआ जिस प्रकार मंडलयुक्त सूर्य्य नियत होताहै १५ वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकिमन्दराचल पर्ब्बत पर सूर्य्य नियतहोताहै फिर शल्य उस महाबाहु रथपर चढ़ेहुये तेजस्वी कर्णसे १६ यह बचन बोलाकि हेबीर कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मजीसे कठिन कर्म नहीं कियागया १७ तुमसब धनुषधारियोंके समक्षमें उसको करो मेरे चित्तमें यह पूर्ण बिश्वासथा कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य १८ अवश्य अर्जुन और भीमसेनको मारेंगे हेबीर उस महायुद्धमें जो बीरताका कर्म उन दोनोंसे नहींहुआ१९ हेकर्णतुम द्वितीय इन्द्रकेसमानहोकर उस कर्मको करो तुम धर्मराजको बांधो अथवा अर्जुनकोमारो २० हेकर्ण

तुम भीमसेन समेत माद्रीकेपुत्र नकुल और सहदेव कोभी मारो हे पुरुषोत्तम तुम यात्राकरो तुम्हारा कल्याणहै और विजय होगी २१ वहांजाकर पांडवोंकी सबसेनाको भस्मकरोइसकेपीछेतूरी नामादि हजारों बाजे और भेरी बजाईं२२ उनका शब्द ऐसा सुन्दर बिदित हुआ जैसेकि स्वर्गमें बादलोंके शब्द होतेहैं फिरवह महारथी रथमें बैठाहुआ कर्ण उसके बचनको अंगीकार करके २३ उस युद्धमेंअ- त्यन्त सावधान शल्यसे बोलाहेमहाबाहुघोड़ोंकोतीक्ष्णकरोमैं अर्जुन को मारूंगा २४ और भीमसेन समेत दोनों नकुलसहदेव और राजा युधिष्ठिरको मारूंगा हेशल्य अब तुम अर्जुनको और मुझ हजारों बाण फेंकनेवाले के भुज बलकोदेखो अबमैं बड़े प्रकाशित बाणोंको २५।२६ पांडवोंके नाश और दुर्योधनकी विजयके लिये फेंकताहूं शल्यबोला हेसूतके पुत्र तुम इसरीतिसे पांडवोंका अपमानकरते हो २७ वह पांडव सब अस्त्रशस्त्रोंके ज्ञाता बड़े धनुषधारी अतिबली कभी मुख न मोड़नेवाले महाभाग अजेय और सत्य पराक्रमीहैं २८ जो साक्षात् इन्द्रकोभी भयके उत्पन्न करनेवालेहैं हेकर्ण जब बज्रके समान२९ गांडीवधनुषके शब्दकोसुनैंगे तब ऐसानहींकहोगे अथवा जबकि भीमसेनके हाथसे३० हाथियोंकी सेनाकोखंडित दन्तहोकर मृतक देखोगे तब ऐसा नहींकहोगे जब युद्धमें धर्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेवको देखोगे३१औरजबतीक्ष्ण बाणोंसे आकाशको आ- च्छादितकरनेवाले बाणोंके चलानेवाले हस्तलाघवकरनेवालेअजेय शत्रुओंको अथवा अन्य २ बड़े २ प्रतापी राजाओं को देखोगे तब तुम ऐसे बचन नहीं कहोगे ३२।३३संजय बोले कि इसकेपीछे कर्ण राजामद्रके कहेहुये बचनोंको निन्दित करके उस वेगवान् राजा मद्रसे कहने लगा कि अबचलो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसंवादेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि प्रसन्न मूर्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी

युद्धाभिलाषी कर्णको देखकर चारों ओर से पुकारे १ इसके पीछे दुन्दुभी और नाना प्रकारके बाणों के घोड़ों की गर्जना समेत शब्दोंको करते आपके युद्धकरनेवाले २ युद्धमें मृत्युको लौटाकर निकले इसकेपीछे कर्णसमेत प्रसन्नचित्त युद्धकर्त्ताओंके चलनेपर ३ पृथ्वी कंपायमान हुई और बड़ी दूरतक शब्दायमान होगई और सूर्य्यादि नवग्रह युद्धके निमित्त निकलतेहुये दृष्टपड़े ४ और उल्काओंका गिरनावा शुष्कविद्युत्पत न होना प्रारंभहुआ और महाभयकारीबायु चली उस समय महाभय सूचक पशु और पक्षियों के समूह आपकी सेनाको बहुधा दाहिने हुये और यात्रा करने वाले कर्णके घोड़े पृथ्वीपरगिरे और अन्तरिक्षसे अस्थियोंकी महाभयकारी बर्षाहुई ५।६।७ अस्त्रशस्त्र अग्निरूपहुई ध्वजा कंपायमान हुई और बाहनोंने अश्रुपातकिया ८ ऐसे२ अनेकभय और अशुभ सूचक उत्पात कौरवोंके नाशके लिये प्रकटहुये ९ परन्तु दैवसे मोहितहुये उनसब राजाओंने इन भयकारी उत्पातोंको कुछ नहीं गिना और यात्रा करनेवाले कर्णसे कहने लगे कि बिजय करो उस स्थान पर कौरव लोगोंने पांडवोंको पराजय माना १० हे राजा इसके पीछे शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला रथियोंमें श्रेष्ठ यह रथपर बैठा हुआ कर्ण बड़े पराक्रमी सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान भीष्म और द्रोणाचार्य्यको बिचारकर ज्वलित रूपहुआ ११ अहंकार और क्रोधज्वलित रूप श्वासाओंको लेता हुआ कर्ण अर्जुन के अद्भुत कर्म को बिचार कर शल्यको सन्मुख करके यहबचन बोला कि हे शल्य मैं शस्त्रधारी रथमें सवार होकर युद्धमें बज्रधारी इन्द्र से भी नहींडरताहूं भीष्महो जिनमें मुख्य गिनेजातेथे उनको पृथ्वीपर पड़ा हुआ देखकर मुख न मोड़ना यह जो प्रशंसा है वह मुझको त्याग करतीहै१२।१३ जबकि महाइन्द्र और विष्णुकेरूपवाले निर्दोष अत्यन्त उत्तम रथ और घोड़ेवाले और हाथियों के संहार करनेवाले घायलनहोनेके समान भीष्म और द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओंके हाथसे मारेगये इसहेतु से इसयुद्धमें मुझको भी भय नहींहै १४ बड़ेअस्त्रज्ञ

ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ गुरूजीने सारथी वा हाथी और रथों समेत बड़े २ बीरपराक्रमी राजाओंको युद्धमें शत्रुओंके हाथसे मराहुआ देखकर किस कारण से युद्धमें सब शत्रुओं को नहीं मारा १५ सो मैं इस प्रबल घोरयुद्धमें द्रोणाचार्य्यको स्मरण करताहुआ सत्य २ कहता हूं हे कौरव तुमउसको समझो तुममेंसे मेरेसिवाय कौनसा दूसरा मनुष्यहै जो उसमृत्युके समान सन्मुख आनेवाले उग्ररूप अर्जुनसे सन्मुखलड़े १६ द्रोणाचार्य्यजी में शिक्षाकरना वा बल धैर्य्य और महान् अस्त्रज्ञता पूर्व्वक नम्रताथी जो वहमहात्मा मृत्युके बशीभूत हुये तो मैं अबउसको आसन्न मृत्युही मानताहूं १७मैं इसलोक में शोचताहुआ कर्म और दैवयोग से सबको नाशमानही जानताहूं गुरूके गिरायेजानेपर सूर्य्योदयके समय सन्देहसे रहितकौनमनुष्य अपने जीबने की आशा करसक्ता है १८ निश्चय करके अस्त्र, बल पराक्रम, कर्म, श्रेष्ठनीति और उत्तमशस्त्र मनुष्यके सुखके कर्म को नहीं करसक्तेहैं क्योंकिजब इसरीतिसे गुरूजी शत्रुओंके हाथसेमारे गये १६ तबकोईभी अस्त्रादिकउन असहिष्णुअग्निवा सूर्य्यकेसमान तेजस्वी पराक्रम में इन्द्र और विष्णु के सदृश नीति में शुक्र और वृहस्पतिके समान गुरूजीको रक्षाकरनेको समीपतामें नियत नहीं हुये २० स्त्री वा बालकों के पीड़ित और रोदनकरनेपर और दुर्य्योधनके उपायोंके निष्फल होनेपर मुझको कर्म करना उचितहै यह मेरामतहै हे शल्य इसहेतुसे शत्रुओंकी उससेनामें चलो २१ जहां सत्य संकल्प राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी, सात्यकी, सृंजय नकुल और सहदेव नियतहैं उनसे युद्धकरने वालामेरे सिवाय अन्य दूसरा कौनहै २२ इसहेतुसे हे राजा मद्र शीघ्रचलो मैं युद्धमें सन्मुख होकर उन पांचालोंको वा सृंजियों समेत पांडवों को मारूंगा वाउनके हाथसे मरकर द्रोणाचार्य्यके समानयमराजके समीप जाऊंगा २३ हेशल्य यहबात नहींहैकिमैं भीष्मादिकशूरोंके समान न मरूंगाकिंतुमरना अवश्यहै परन्तु मुझसेमित्रकेद्रोहकरने वाले नहीं सहेजाते इसहेतुसे उनसे पराक्रमपूर्वक लड़करप्राणोंको

त्यागकरके द्रोणाचार्य्यके पीछे जाऊंगा २४ जीवनकेअन्त होनेपर मृत्युके चाहेहुये बुद्धिमान् और अबुद्धिमान् दोनों बच नहींसक्ते हे बुद्धिमान इसहेतुसेमैं पांडवोंके सन्मुख जाऊंगा निश्चयकरके दैवके उल्लंघन करनेको कोई समर्थ नहींहै २५ राजा धृतराष्ट्रका पुत्र सदैवसे मेरा शुभचिन्तक और मित्ररहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्धहोनेके लिये प्रियभोग और कठिनतासे त्यागनेकेयोग्य अपने प्राणोंकोभी त्यागकरूंगा २६ वह व्याघ्रचर्मसे मढ़ाहुआ रथ मुझको परशुरामजीने दियाहै जोशब्दरहित चक्र सुवर्णमयत्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ोंसे संयुक्तहै २७ हे शल्यचित्र बिचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शंखको देखो २८ मैं इसपताकाधारी बज्रके समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तूणीरोंसे शोभायमान रथोंमेंश्रेष्ठ इसरथपर आरूढ़होकर युद्धमें अपने पराक्रमसे अर्जुनको मारूंगा २९ जो युद्धभूमिमें सदैव सावधान सबकानाश करनेवाला कालभी अर्जुनकी रक्षाकरे तोभी युद्धमें सन्मुख होकर उसको अवश्य मारूंगा अथवा भीष्मके समक्ष यमराजकेपास जाऊंगा ३० जो युद्धमें यमराज बरुण कुबेर इन्द्र अपने सबसमूहों समेत इकट्ठे होकरभी अर्जुनकी रक्षाकरें तबभीमें उनसब समेत अर्जुनको बिजय करूं गा बहुतबातोंके कहनेसे क्या प्रयोजनहै ३१ संजयबोले कि कर्णके बचनोंको सुनकर पराक्रमी राजाशल्य उसका अपमान करके हंसा और निषेधकरके उत्तर दिया ३२ शल्यनेकहा हेकर्ण अपनीप्रशंसा मतकरो हे बड़ेअहंकारी तुमबड़ाबोल बोलतेहो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि कहांतो नरोत्तम अर्जुन और कहां नराधम तुम३३ अर्जुनकेसिवाय कौन पुरुषबिष्णु-जी और इन्द्रसे रक्षित देवस्वरूप यदुभवन को बिलोड़न करके श्रीकृष्णकी छोटीबहिन सुभद्राको हरणकर सक्ताथा३४और मृगबध कलहमें अर्थात् शूकरके शिकार करनेमें इन्द्रके समान पराक्रम वाले अर्जुन के सिवाय कौनसापुरुष इसलोक में त्रिभुवनके स्वामी

ईश्वरोंकेभी ईश्वर शिवजीको युद्धमें बुलासक्ताहै ३५ अर्जुनने अग्नि की गौरवतासे असुर, सुर, महाउरग, मनुष्य, गरुड़, पिशाच, यक्ष और राक्षसों को अपने बाणोंसेबिजयकिया औरअग्निको यथेच्छ भोजन रूप हव्यदिया३६ तुझको स्मरणहैकि जबयुद्धमें कौरवों समेततुम सबको पराजय करके गन्धर्वोंने इसधृतराष्ट्रकेपुत्र दुर्य्योधनकोबांध लियाथा और तुमलोग भाग आयेथे उससमय इसी अकेलेअर्जुनने सूर्य्यके समान प्रचंड शायकोंसे गन्धर्वोंको पराजय करके उसको छुटायाथा ३७।३८ फिर गोहरणमें सेना वा सवारी समेत चढ़ाई करनेवालेगुरु, गुरुपुत्र और भीष्मादिकतुमसब उस पुरुषोत्तमकेहाथ सेबिजयकियेगयेथेउससमयतुमनेक्योंनहींअर्जुनकोबिजयकिया३९ संजय बोले कि इस रीतिसे शत्रुओंकी प्रशंसा बड़ेसाहसी शल्यके मुखसे होनेपर कौरवी सेनाका सेनापति कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजामद्रसे बोला४०ऐसाही होगा ऐसाहीहोगा क्याअधिक वर्णन करते हो अबतो निश्चय करके मेरा उसका युद्ध वर्त्तमानहै जो वह इस युद्धमें मुझको बिजय करलेगा तब तेरा यह कहनाठी-क २ होगा ४१।४२ राजामद्रने कहा ऐसाही होय यह कह-कर उत्तर नहीं दिया तब युद्धकी इच्छाकरके कर्णने शल्यसे कहा कि हे शल्य सावधान होजाओ ४३ वह श्वेत घोड़ोंसेयुक्त शल्यको सारथी रखनेवाला युद्धमें शत्रुओं को मारता हुआ उन बीरशत्रुओं के सन्मुख ऐसे गया जैसे कि अन्धकार को दूरकरता हुआ सूर्य्य जाता है उसके पीछे व्याघ्रचर्म से मढ़हुये श्वेतघोड़ों के रथके द्वारा वहां पहुंचकर सब पांडवी सेनाको देखकर बड़ी शीघ्रतासे अर्जुन को पूछा ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंबादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय॥

इसके अनन्तर यात्राकरनेमें आपकी सेनाको प्रसन्न करते हुये कर्णने युद्धमें प्रत्येकको देखकर पांडवोंसेकहा १ कि इससमय

जोपुरुष महात्मा अर्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंहमांगा धनदूं२
और जो पुरुष अर्जुनको मुझसे थोड़ाजाने उसको मैं रत्नोंका भरा-
हुआ एक शकटदूं ३ और जो अर्जुन काबतलानेवाला पुरुषउस-
कोभी थोड़ा माने तोमैं उसकोभोजन और कांस्य दोहिनियोंसमेत
सौगौवें दूं ४ अर्जुन के दिखलाने पर सौ उत्तम गांवदूं और खच्चरों
समेत रथभी दूं ५ अथवा इन सबको भी थोड़ाजाने तोमैं उसको
कृष्ण केशोंसे शोभित स्त्रियोंको दूंगा जो अर्जुन का दिखलाने-
वाला इसकोभी साधारण जाने ६ तो उसको सुनहरी हाथीकेसमा-
न छःबैलोंसे युक्त रथदूं और इसीप्रकारउसे ऐसी वस्त्रा लंकारयुक्त
स्त्रियोंका एक सैकड़ा दूंगा ७ जोकि निष्ककी माला धारणकिये
गीत वाद्यमें कुशल श्यामांगीहों अथवा जोअर्जुनका दिखलानेवाला
उसकोभी कमजाने उसको सौहाथी सौगांव सौरथ औरदशहजार
सुवर्ण सेयुक्त ८। ९ सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलनेमें समर्थ
होंय ऐसे घोड़े दूंगा और सुवर्ण शृंगोंसेयुक्त सवत्सा चारसौगौवें
दूंगा १० जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा
माने ११ उसकेलिये दूसरा बर देकर ऐसे पांचसौ घोड़ेदूं जोकि
श्वेतवर्ण और सुवर्ण से मंडित स्वच्छ मणियोंके भूषणोंसे अलं-
कृत हों १२ इसके विशेष मैं अठारह अच्छे शिक्षित अन्यघोड़ों को
भीदूंगा और अतिउज्वल सुवर्ण से अलंकृत कांबोजी भी घोड़ों से
युक्त रथदूं १३ जोअर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष उसकोभी न्यून
समझे १४ तो दूसरादानदूं अर्थात् नानाप्रकारके स्वर्णभूषणोंसे और
मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छदेशोंमें उत्पन्न और माल्य
वान हाथीवानोंसेशिक्षितसौ हाथी दूं और जोइसकोभी थोड़ामाने
१५। १६ उसको बहुत वृद्धियुक्त धनसेपूर्ण बन जंगलवाले ऐसे
चौदहगांवदूं जोनिर्भयऔर अच्छेराजाओंके भोगनेकेयोग्य होंय१७
इसी प्रकार निष्ककी माला धारण करनेवाली मगधदेशी दासियों
का एक सैकड़ादूं और जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको
भी थोड़ा माने तो जोवह मांगेवहदूं अर्थात् बेटी स्त्रीको आदिलेनी

मेरा प्रियधन होय उसको भी दूंगा इसके बिशेष जोजो मेरा धनहै और वह चाहता है वह सब उसको देसक्ताहूं जो अर्जुन को मुझे बतावे वदिखावे १८।१९।२० श्रीकृष्ण और अर्जुनको एक समय मेंहीमारकर उनका सबधन उसको दूं जो अर्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे २१ युद्धमें ऐसे बचनोंको कहते हुये कर्णने समुद्र से उत्पन्न हुयेअपने शंखको बजाया२२ हे महाराजकर्णके इनबचनों को सुनकरदुर्य्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्नहुआ २३ इसकेपीछे हे पुरुषोत्तम दुन्दुभी आदि मृदंगोंके सबप्रकारके शब्द वा बाजोंसमेतसिंहनाद और हाथियोंके शब्द२४ सेनाओं के मध्य में प्रकटहुयेइसीप्रकार अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरोंके अनेकशब्द हुये २५ तबतो सेनाके प्रसन्न होनेपर राजामद्रहंसकर उसशत्रुओं के विजयकरनेवाले और अपनी प्रशंसा करतेहुये जानेवालेमहारथी कर्णसे यह बचन बोला २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णावलेपेष्टत्रिंशोऽध्याय: ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोले हे सूतपुत्र दानकरनेसे बन्द हो तू सुवर्णमयहाथी के समान छः बैलोंसे संयुक्त रथको पुरुषके अर्थ अर्थात् ब्रह्मके अर्पणकरो तबतुम अर्जुनको देखोगे १ हेराधाकेबेटे तुम यहां बाल बुद्धिसे अज्ञानोंके समान धनको देतेहो अब तुम बिनाउपायकेही अर्जुनको देखोगे २ तुम अज्ञानियोंके समान जो निरर्थक धनको देतेहो सोअपात्रकेदानदेनेमें जोदोषहैं उनकोभी अपने मोहसे नहीं जानतेहो ३ जो तुम बहुतसे धनको देतेहो उसधनके द्वारा तुमको उचितहै कि यज्ञोंकोकरो४जोतुम अपनी अज्ञानतासे श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारना चाहतेहो वह निरर्थकहै शृगालोंसे सिंहोंकामार-ना हमनेकभी और कहीं भी नहींसुनाहै ५ तू अप्रियता को और अप्राप्तको चाहताहै तेरे शुभचिंतक मित्रहैं जो कि तुझको अग्निमें गिरतेहुयेनहीं रोकतेहैं६ तू शुभाशुभ कर्मकोभीनहीं जानताहै और

निस्संदेह तू कालके गालमें फंसताहै जीवनकाचाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुननेके अयोग्य बार्त्ताओंकोकरे ७ जैसे कि गलेमें पत्थरकी शिलाको बांधकर समुद्रमें पैरना चाहै अथवा पर्व्वतके शिखरसे गिरनाहोय वैसेही प्रकारका तेराईप्सितकर्महै ८ जो अपना कल्याण चाहते हो तो तुमसब योद्धाओंसे युक्त सजीहुई अपनी सेनासमेत अर्जुनसे युद्धकरो ९ मैं दुर्योधनकी वृद्धिकेलिये तुझसे कहताहूं जो तू जीवनकी इच्छारखताहै तो मेरे बचनोंको शत्रुता और ईर्षासंयुक्त नजान १० कर्णबोला मैं अपनेही भुजबलकेआश्रितहोकर युद्धमें अर्जुनको चाहताहूं हे उत्तममित्र तुम शत्रुरूप होकर मुझको भयभीत करातेहो ११ अबमुझको मेरे इसबिचारसे कोईभी नहीं हटासक्ता इन्द्रभी जो बज्रदिखाकर मुझकोयुद्धसे निवृत्त कियाचाहै तो नहीं निवृत्त होसक्ता फिर मनुष्यकी क्या सामर्थहै १२ संजयबोले कि फिर कर्णको क्रोध युक्त करनेकी इच्छासे मद्रदेशकेस्वामी शल्यने कर्णके बोलने के पीछे इसउत्तर रूप बचनकोकहा १३ किजब अर्जुनके बेगसेयुक्त प्रत्यंचासे प्रेरित तीव्र हाथोंसे छोड़ेहुये कंकपक्षसे जटित तीक्ष्णनोकवाले बाणतेरे सन्मुख आवेंगे तब तू अर्जुनके विषयमें ऐसे बचन कहनेको दुखी होगा १४ जब सेनाको संतप्त करताहुआ तुझको तीक्ष्णनोक वाले बाणोंसे मर्द्दन करना चाहनेवाला अर्जुन अपने दिव्य धनुष को लेकरतेरे सन्मुख आवेगा तब हेसूतपुत्र तू महादुखीहोगा १५ जैसेकि माताकी गोदीमें कोई सोताहुआ बालक चन्द्रमाके पकड़नेकी इच्छा करताहै उसीप्रकार अबतुम इसरथपर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुनको अपने मोहसे बिजय किया चाहत्तेहो १६ हे कर्ण अबतुम अत्यंत तीक्ष्णधारवाले त्रिशूल से चिपटकर अपने अंगोंको घसीटते हो जो कि अत्यंत तीक्ष्ण धारवाले त्रिशूल कर्मी अर्जुनके साथमें लड़ना चाहते हो १७ जैसे कि अज्ञानबालक वा बेगवान नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरीसिंहको युद्धके निमित्तबुलावे हेसूतपुत्र इसीप्रकारसे तू भी अर्जुनको बुलाता है १८ हे सूतके

पुत्र तू राजकुमारको मतबुलावे जैसे कि मान्ससे तृप्तहुआ शृगा-
लबनमें केसरी सिंहको नहीं बुलासक्ता उसीप्रकार तुम अर्जुन
को प्राप्त होकर अपना नाशकरना चाहतेहो सो मतकरो १६
जैसेकि शृगाल ईशाके समान दांत रखनेवाले मुख और गंडस्थल
से मद झाड़नेवाले बड़े हाथी को युद्धमें बुलावे हेकर्ण उसीप्रकार
तुम पांडव अर्जुनको बुलातेहो २० तुम अपनी अज्ञानता और बल
बुद्धिसे बिलमें बैठेहुये क्रोधयुक्त महाबिषधर कालेसर्पको लकड़ीसे
मारतेहो जोअर्जुनसे युद्धकरना चाहतेहो २१हेकर्ण अवश्शृगाल रूप
अज्ञानहोकर तुम केसरीसिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पांडवअर्जुनको
उल्लंघन करके गर्जते हो २२ और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु
के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत पराक्रमी गरुड़के समान वेगवान
महाबली पांडव अर्जुन को बुलातेहो २३ सब जलोंके स्वामीभया
नक मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदय में प्रसन्नरूप वृद्धिपाने
वाले मूर्त्तिमान समुद्रको भुजाओंसे तरनाचाहतेहो २४ हेकर्णबछड़े
के समान तुमदुन्दुभी रूप क्षुद्रघंटिकाओंके शब्दरखनेवाले होकर
तीक्ष्ण शृंगसे घात करनेवाले बड़े बैलके समान पांडवअर्जुन को
युद्धमें बुलातेहो २५ तुम मेंढकके समान होकर लोकमें घोरजल बर
सानेवाले नररूप बादलके समान अर्जुनकेसन्मुखऐसेगर्जतेहो २६
जैसेकि अपने घरमें नियत कुत्ता बनमें वर्त्तमान व्याघ्रको अपने
स्थानसे भोंकताहै उसीप्रकार तुमभी कुत्ते के समान नररूपव्याघ्र
अर्जुनकी ओरको भोंकतेहो २७ हेकर्णखरगोशोंसेयुक्तशृगालभीवन
में निवास करताहुआ अपनेको उस समयतक सिंहरूप मानता है
जबतक किसिंहको नहीं देखताहै २८ हेराधाकेपुत्र इसीप्रकार शत्रु
ओंके बिजय करनेवाले अर्जुनको नदेखके तुमभीअपनेकोसिंहरूप
मानरहेहो २९ जबतक एकरथपर सूर्य्य और चंद्रमाकेसमाननियत
श्रीकृष्ण और अर्जुनको नहीं देखतेहो तबतकतुम अपनी आत्माको
व्याघ्र मानते हो ३० हेकर्ण जबतक कि तुम युद्ध में गांडीव धनुष
के शब्द को नहीं सुनतेहो तभीतक तुम इनअस्तव्यस्त बचनों को

मुखसे बोलरहेहो रथ और धनुषों से दशोंदिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शर्दूलके समान गर्जनेवाले अर्जुन को देखकर तू शृगालरूप होजायगा ३१ । ३२ तुम सदैव शृगाल रूप हो और अर्जुन सदैव सिंहरूपहै हे अज्ञान इसकारण वीरलोगों से शत्रुता करने में तू शृगालके समान दिखाई देताहै ३३ जैसेकि चूहाबिलार और महाबनमें कुत्ता और व्याघ्रहोय और जैसे शृगाल और सिंह होंय और जिसप्रकार खर्गोश और हाथी होंय ३४ अथवा मिथ्या और सत्य वाविष और अमृतहोंय उसीप्रकार तुम और अर्जुनभी अपने२ कर्मसे विख्यातहो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवाअध्याय ॥

संजय बोलेकि तेजस्वी शल्यसे निन्दाकियाहुआकर्ण अत्यन्तक्रोध-युक्तहोकर बचन रूपभालोंको सहनकरताहुआबोला १ कि हेशल्य गुणवानोंके गुणों को गुणवानही जानताहै गुणहीन मनुष्य नहीं जानताहैतुमगुणोंसेरहितहो इसीसे गुणऔर अवगुणोंकोक्याजान-सक्तेहो२हेशल्य मैं महात्मा अर्जुनके बड़े अस्त्रोंको वाक्रोध बलपरा-क्रम धनुष और बाणोंको अच्छे प्रकारसे जानताहूं ३ और राजाओं मेंवा यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीकी भी महानताको जैसा किमैं जानताहूं वैसा तुम नहीं जानतेहो ४ मैं अपने और पाडवोंके परा-क्रमको अच्छेप्रकार से जानता हुआ युद्धमें उस गांडीव धनुषधारी को बुलाताहूं ५ हे शल्य यह सुन्दर पुंखवाला रुधिर पीनेवाला तरकसमें अकेलाही रहनेवाला स्वच्छ अलंकृत ६ चन्दन सेलिप्त बहुत बर्षोंसे पूजित सर्परूप बिषधर उग्रमनुष्य घोड़े और हाथियों के समूहोंका मारनेवाला ७ घोररुद्ररूप कवच समेत अस्थियोंका चूर्णकर्त्ता जिसके द्वारामैं क्रोधयुक्त होकर मेरुपर्व्वत सरीके बड़े२ पर्व्वतों को भी चीर डालताहूं ८ मैं अर्जुन और देवकीनन्दन श्रीकृष्णके सिवाय उस बाणको कभी दूसरे परनहीं चलाऊंगा

इसहेतुसे मैं सत्य२ बचन कहताहूं ६ किमैं अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर उसबाणसे अर्जुन और वासुदेवजीसे लड़ूंगा यह कर्ममेरे ही योग्य है १० सब वृष्णवंशी वीरोंकी लक्ष्मी श्रीकृष्णजीमें नियत है और सब पांडवोंकी बिजय अर्जुन में नियत है ११ इससे अब दोनों कोपाकर कौन लौटसक्ता है वह दोनों पुरषोत्तम भागेहुये हैं वा रथपरनियत हैं १२ मुझअकेले के सन्मुख होनेपर हे शल्य मेरेयुद्धकी शोभाको देखना बुआ और मामाकेबेटे अजेय दोनोंभाइयोंको १३ सूतमें पोहीहुई दोमणियोंके सदृश मेरेहाथ से मृतक ही देखोगे अर्जुनके पास गांडीवधनुषहै श्रीकृष्णकेपास सुदर्शनचक्रहै और गरुड़ वाहनूमानजीकेरूप रखनेवाली दोनों ध्वजाहैं १४ हेशल्य भयभीतोंको भयके उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नता के बढ़ानेवाले वह दोनोंहैंदुष्ट प्रकृति अज्ञानी महायुद्धमें अनभिज्ञ भयसे विदीर्ण चित्त तुमभयभीत होकर बहुतसे भयकारी बचनों को कहतेहो हेपापीदेश में उत्पन्न होनेवाले निर्बुद्धी नीच क्षत्रियों के कुलको कलंक लगानेवाले अब युद्धमें उनदोनोंको मारकरतुझको भी बांधवों समेत मारूंगा १७ तू मित्रहोकर शत्रुके समान शत्रुओंकी प्रशंसाकरताहै मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुनसेक्याडराता है कैतो वह दोनों मुझकोही मारेंगे वामैंहीं उन दोनोंको मारूंगा १८ मैंअपने पराक्रमको जानता हुआ श्रीकृष्ण और अर्जुनसे नहीं डरताहूं मैं अकेलाही हजारों बासुदेव और अर्जुनोंको मारसक्ताहूं १६ हे दुर्देशमें उत्पन्न होनेवाले मौनहो दुष्ट अन्तष्करणवाले मद्र देशियोंके विषयमें क्रीड़ाके निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्रीबालक वृद्ध मनुष्य बहुधा जिन कथाओंको गान करके पढ़ा करते हैं हे शल्य उन गाथाओंको मुझसे सुनो २० । २१ और पूर्व समय में इन्हीं कथाओंको राजाओंके समक्षमें ब्राह्मणोंनेभी जिस प्रकारसे वर्णन करीहैं हे अज्ञानी तुम उनको एकाग्र चित्तसे सुनकर क्षमाकरना वा उत्तरदेना २२ अर्थात मद्रदेशी सदैव मित्रसे शत्रुता करनेवाले हैं जोहमसे शत्रुता करताहै हम उसको मद्रदेशीही जानतेहैं मद्रदे-

शोमें मेल मिलाप नहींहोताहै और आपसमें क्षुद्रबचन बोला करते हैं २३ हमने सुनाहै किमद्रदेशीय लोग सदैव दुष्टात्मामिथ्या वादी और कुटिलहोते हैं २४ पिता,माता,पुत्र,सास,ससुर,मामा,जामात्र, लड़की,भाई,पोते, बांधव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत, और अन्यदासी दास आदि सब मिलेहुये हैं और बुद्धिमान होकरभी अज्ञानियोंके समान अपनीइच्छासे पुरुषोंसे विषय भोगकरनेवालेहैं २५।२६इसीप्रकार जिननीच अचेततामेंयुक्त मत्स्यखादकोंके घरमें गौके मान्ससमेत मद्यकोपीकर पुकारते और हंसतेहैं २७ और अयोग्यगीतोंकोभी गातेहुये इच्छानुसार कर्मोंको करतेहैं और परस्पर में भीइच्छानुसार वार्त्तालाप करतेहैं उनमें धर्म कैसे होसक्ताहै २८ जो किमद्रदेशी अहंकारीहोकर दुष्टकर्मीबिख्यातहैं इसहेतुसेमद्रदेशियों से मित्रता और शत्रुतादोनों नकरे २९ मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहींहोती और वह सदैव अपवित्र हैं मद्रदेशी और गान्धार देशियोंमें पवित्रता नष्टहोगई है३०राजा जिस में याचकहै उसयज्ञमें जो दियाजाता है वहसब जैसे नष्टताको पाताहै और जिसप्रकार शूद्रोंका संस्कार करनेवाला तिरस्कारको पाता है और जैसे इसलोकमें ब्राह्मणोंके शत्रु सदैव नाशहोतेहैं उसीप्रकार मद्रदेशियोंसे प्रीतिकरके मनुष्य नष्टताको पाता है ३२ मद्रदेशोंमें मेलमिलाप नहींहै हे बिषैले बिच्छू मैंने तेरे विषको अथर्वणवेदके मंत्रोंसे शांत कियाहै ३३ इसीप्रकार ज्ञानीलोग बिच्छूके काटेहुये विषके वेगसे घायल मनुष्यकी औषधीकरतेहैं वहभी सत्य२ देखनेमें आतेहैं ३४ हे बुद्धिमान कैतो मौन होजाओ नहीं तो ऐसे २ बचनों को सुनोगे जिन वचनों को मद्यसे मदोन्मत्त स्त्रियां गाकर नाचती हैं ३५ उस स्वेच्छाचारी पति वंचक भोगों में अनियम स्त्रियों का पुत्र मद्रदेशी किसरीति से धर्म कहनेको योग्य होसक्ता है ३६ जो स्त्रियां कि ऊंट और गधोंसमान खड़ी खड़ी पेशाब किया करतीहैं उन बेधर्म और निर्लज्ज ३७ स्त्रियों का पुत्र होकर तू धर्म कहना चाहता है जो स्त्रियां कांजी मांगनेपर कीचों को खींचती हैं ३८ और न

देने की इच्छा से इन भयकारी असह्य वचनों को कहती हैं कि कोई हमसे कांजी मतमांगो वह हमारी बड़ीप्रिय है ३९ बेटी को दें पतिको दें परन्तु कांजी को न देंगे कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्ज हैं और कम्बलोंकी धारणाकरनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्टहैं इसरीतिसे अन्यलोगभी शिरकीचोटीसे पैरके नखोंतक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियों के विषय में कहाकरते हैं और यहभी हमने सुनाहै कि४०।४१।४२पापिष्ट देशमें उत्पन्न होने वाले म्लेक्षरूप धर्म्मों से रहित मद्र,सिन्ध, और सौबेर देशीलोग कैसे धर्म्मोंको जानेंगे क्षत्रियोंका यह श्रेष्ठधर्म्म है ४३ कि युद्धभूमिमें मृतक होकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमान होकर पृथ्वीपर शयनकरें इसहेतुसे जो में युद्धभूमिमें जीवनको त्यागकरूं ४४ तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथम कल्पहै ऐसा मैं बुद्धिमान दुर्योधन का प्यारामित्र हूं ४५ उसके लियेही मेरेप्राण और धन हैं हेपापी देशमें पैदा होनेवाले विदित होताहै कि तूभी पांडवोंसे भगायाहुआ है तुम शत्रुकेसमान जैसे कर्म हमारेसाथमें करतेहो वह सब तुम इच्छापूर्बक करो यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीके सैंकड़ों मनुष्योंसेभी युद्धमें अजेयहूं जैसेकि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के बचनोंसे धूपकेमारे सारंग पक्षीके समान बिलापकरके शरीरको सुखाताहै४६।४७।४८उसीप्रकार क्षत्रीके व्यवहारमें नियतहोकरमैं डरानेके योग्य नहींहूं पूर्व्बसमयमें मेरेगुरू श्रीपरशुराम जीने युद्धमें मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तम लोगों की जो गति कहीहै उसको मैं स्मरण करताहूं और धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी रक्षा और शत्रुओंके नाशकरने में प्रवृत्तहूं ४९ । ५० मुझको उत्तम व्यवहार में नियत पुरूरवाबंशी जानों हे राजामद्र मैं तीनोंलोकों में ऐसा किसी जीवधारीको नहींदेखताहूं ५१ जो मुझको इस बिचार से हटावे यह मेरा सिद्धान्त है हे बुद्धिमान ऐसा जानकर मौन हो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है ५२ हे मद्रदेशियों में नीच मैं तुझकोमारकर कच्चेमान्स भक्षियोंको नहींदूंगा हेशल्य तुममित्र

और मित्रकेपिता धृतराष्ट्र इनदोनों बिचारोंसे और कठिनबचनों की सहनशीलतासे अबतक जीवते बचेहो हेराजा मद्र जो तू फिर ऐसे बचनोंको कहैगा ५३।५४ तो तेरेशिरको अपनी बज्रकीसमान गदासे काटकर पृथ्वीपर गिराऊंगा हे दुष्टदेशमें उत्पन्नहोने वाले अब यहां इसबातके देखने और सुननेवालेहैं ५५ कि श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्णको मारें अथवा कर्ण उनदोनोंको मारे हे राजा इसप्रकार कहकर ५६ फिर कर्ण राजामद्र से बोला कि निर्भय होकर तुम रक्षाकरो रक्षाकरो ५७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यकर्णपरस्परनिन्दाकरनेचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

इकतालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ फिर शल्य युद्धकेअभिलाषी अधिरथी कर्णके बचनोंको सुनकर उससे यह विश्वासरूप बचनबोला १ कि मैं अपने धर्ममें निश्चल यज्ञकर्त्ता युद्धमें मुख न मोड़नेवाले मूर्द्धाभिषेक राजाओंके बंशमें उत्पन्नहुआहूं २ हेकर्ण जैसे मदिरासे उन्मत्त मनुष्य होताहै वैसाही तू मुझको दिखाईदेता है इससे अबमैं उसीप्रकारसे शुभचिन्तकतासे तुझ मतवालेकी चिकित्सा करताहूं ३ हेनीच कुलकलंकी कर्ण इसमेरी कहीहुईकाकोपमाको समझो उसको सुनकर अपनी इच्छाके अनुसार कर्मकरना ४ हेकर्ण मैं अपने बिषय में उस दोषको स्मरण नहींकरताहूं अर्थात् नहीं जानता हूं जिसके हेतुसे हेमहाबाहु तुममुझ निरपराधीको मारनाचाहते हो५ मुख्यकर राजाका अभ्युदय चाहनेवाले रथपर सवारहोकर मैं तेरे हानिलाभके कहनेके योग्यहूं मेरे इनबचनों को समझो ६ कि टेढ़ासीधा मार्ग रथके सवारोंकीबल निर्बलता रथकी सवारी में घोड़ों का क्लेश और थकावट ७ शस्त्रोंकाज्ञान पशु पक्षियोंके शब्दभारकी न्यूनाधिकता बाणोंके भालोंकी चिकित्सा८ अस्त्रोंकायोगयुद्ध और शकुन यह सब बातें मुझरथके रक्षकसे तुमको जानने केयोग्यहैं ९ हे कर्ण इसहेतु से यहदृष्टान्त तुझसे कहताहूं ठठ समुद्र के किनारे

पर एक बड़ाधनीवैश्य अनाज रखनेवाला था १० वहवैश्य यज्ञोंका करनेवाला महादानी शान्तचित्त होकर पवित्रता पूर्वकअपनेकर्म में नियत बहुतसे पुत्रपौत्रादि से युक्त प्रीतिमान और जीवमात्रोंपर दया करनेवालाथा ११ वहधर्मपर चलनेवालेराजाके देशमें निर्भयतासे निवासकरताथा उसके कुमार बालकोंकी जूठनकाखानेवाला एक उच्छिष्टभृतनामकाक था उसको वैश्यके कुमार बालक सदैव मांस उष्ण अन्न दही दूध खीर मधु घृत यहसबवस्तुखिलायाकरतेथे उसबालकों के जूठन खानेवाले अहंकारी काकने अपने बराबरवाले वा अपनेसे बड़ोंकीभी निन्दाकरी इसके पीछे किसी समय दैवयोगसे समुद्रके तटपर चलनेमें गरुड़के समान मनके समान बड़े शीघ्रगामी प्रसन्नचित्त चक्रांगआदिक हंसआये तबवह वैश्योंके बालक उनहंसोंको देखकर अपने जूठन खानेवाले को ऐसे बोले १६ हे आकाशचारीकाक आपतो सब पक्षियों से उत्तमहो यह प्रशंसा सुनकर उस निर्बुद्धी काकने अपने अहंकार और अज्ञानतासे उसबचनको सत्यहीजाना और उन दूरजानेवाले बहुतहंसों के पासजाकर उस दुर्बुद्धीने कहाकि तुमलोगों में से जोश्रेष्ठ होय वहमेरे साथउड़े यहसुनकर वहसब आयेहुयेहंस हंसे १८।१९।२० और उन आकाशचारी मनगामी और पक्षियोंमें श्रेष्ठ हंसोंमेंसे चक्रांगनाम हंसने उस अहंकारी काकसे कहा २१ कि हमहंसों की गतिमनके समानहै और दूर जानेके कारणसे हम सब पक्षियों में शिरोमणि गिनेजातेहैं हे निर्बुद्धी तू काक होकर अपने साथहमको उड़नेकेलियेकैसेबुलाताहै २२।२३ भला कहतो सहीकि तूहमारे साथकिस प्रकारसे उड़ेगा यहसुनकर उसनिकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आपकरनेवाले काकने हंसोंके कहेहुये वाक्योंको बारंबार निन्दा करके उत्तरदिया २४ किमैं निस्सन्देह सौ प्रकारकी गतिसे उड़सक्ताहूं और प्रत्येकगति शतयोजनलंबी चित्रबिचित्र औरजुदे२ प्रकारकीहै २५ उनगतियों के यहनामहैं उड्डीन अर्थात् ऊपरको उड़ना अवडीन, नीचेकोचलना प्रडीन, सबओरको जानाबिडीन,

केवल उड़नानिड्डीन,धीरेचलना संडीन, चित्तरोचकगति विरङ्कीडीन गतिभी चारप्रकार कीहै २६ विडीन,बड़ीबिस्तृत परिडीन,सबओर सेचलनापराडीन,पीछेको उड़ना सुडीन, स्वर्गमार्गमें चलना अभि-डीन,सन्मुखचलनामहाडीन,पवित्र और ऊंचीगतिखडीन, आकाश कोजाना परिडीन, चारोंओरको चलनाअवडीन, चढ़ना प्रडीन, अ-द्भुतगति संडीन,डीन, डीनक, ऊपरकी ओरकीगतें विडीन, उड्डीन, संडीन, पुनड्डीन, बिडीन २८ संपात, समुदीष, व्यतरिक्त, गता-गत, प्रतिगत,वहुही निकुलीनइत्यादि अनेकप्रकार की गतिहैं २६ उनगतियोंकोमैं तुम्हारे सन्मुख करताहूं इसीसेमेरे पराक्रमको दे-खोगेमैं उनगतियोंमेंसेएकगतिके द्वाराआकाशमेंउड़ताहूंहेहंसलोगो आपजिसगतिसेकहौउसीगतिसेउडूं ३१हेपक्षियोंनिश्चय करके इस निराश्रय आकाशमें इनगतियोंसे उड़सक्तेहो तोतुमभी अच्छेप्रकार से निश्चय करके मेरेसाथउड़ो काकके इसवचनको सुनकर ३२एक हंसने हंसकरकाकको उत्तरदियाहैहेकर्ण उसवचनको मुझसेसमझो अर्थात् हंसनेकहा हेकाकतुम निश्चयकरके सौ प्रकारकी गतिको उड़ौगे ३३ और मैं उसीगतिसे उडूंगा जिसगतिसे सबपक्षीउड़तेहैं क्योंकिमैं इसएकगतिके सिवायदूसरीगतिको नहीं जानताहूं ३४ हे ताम्राक्ष अबतुमभीचाहे जिसगतिसे उड़ो इसकेपीछे जो वहां और काक इकट्ठे होगयेथे वह सबहंसे ३५ और कहनेलगेकि हंसएकही गतिवालाहोकर सौगति जाननेवालेको कैसे परास्तकरसक्ताहै ३६ इसके अनन्तर हंस और काक ईर्षाकरके उड़े अर्थात् एकगतिउड़ने वाला हंस सौगतिवाले काककेसाथउड़ा ३७ काकउड़तेही वृक्षोंपर बैठ२ अहंकारमें भराहुआ इधरउधरफिरता बोलनेलगा ३८उसकी ऐसीगतिको देखकरसबकाक प्रसन्नहुये और सब हंस उसकीअभ्यता देखकर हंसनेलगे ३९ इसरीतिसे एकमुहूर्त्त तक उड़करहंस को पुकार २ करकहताथाकि ४०।४१ मेरी इनकलाओंको देखकर आपभी अपनी कलाओं को प्रकटकीजिये ४२ हंसउसके वचन को सुन बहुतसा हंसकर पश्चिम समुद्रको ओरको चला ४३।४४ और

उसकेसंगकाकभी अपनेपरों को चपल करताहुआ चला समुद्र के ऊपरचलते २ कुछदूरपरकाक थकित होगया ४५ और कोई वृक्षटापून देखके धैर्य्यता से रहित होकर उड़नेलगा ४६ जब उसके सब पक्ष शिथिलहोगये तब समुद्रमें गिरपड़ा ४७ उसको गिराहुआ देखकेवहहंसवहां स्थिरहोकरहंसकर कहनेलगा ४८ हेकाक आप अपनाव्रत और स्नान शीघ्रकरके चलो क्योंकि अभी समुद्रका पाट सौयोजनहै कहो सौगतियोंमेंसे यहकौनसी आपकी गतिहै कि जलमें मौनहोकर अपनेपक्ष और चोंचकोडुबाते और निकालतेहो यहबचनसुनकरवहनीच बायस आरत बचनोंसेबोला हेहंसअब आप अपनीओरकोदेखकरमेरेऊपर क्षमाकरो और जलसे निकालकर मुझकोआनन्ददो और हमने अपनी कुमतिके बसीभूत होकर जो आपसेकुत्सित बचनकहे उनको अपने हृदयसे दूरकर दयाकरके मुझको जलसे निकालिये हे कर्ण यह काकके बचन सुनकर हंसने अपने पंजेसे उसको पकड़कर स्थलमें लाकर डाल-दिया सो जैसेकि वैश्यकेघरमें उच्छिष्ट खाखाकर काकपुष्टहुआ और हंससे प्रणकरके अपनाहास्य कराया उसीप्रकार तुमभीधृतराष्ट्र के घरमेंखाके मोटेहोकर बढ़ेहो अब तुमकाकके समानहो हंसरूपी पार्थसे लड़कर अपना हास्यकराया चाहतेहो अरे विराटनगर में द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य औरभीष्मादिकसरीकेशूरबीरोंको पार्थने बिजयकिया तब तुमने अकेलेअर्जुनको क्योंनहींमारा ४६। ७३। उसस्थानपर पृथक् २ और संयुक्त तुमसब लोगोंको अर्जुनने ऐसे बिजयकिया जैसेकि शृगालोंको सिंह बिजय करताहै तबतेरापरा-क्रम कहांथा ७४ युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारेहुये भाईको देखकर सबकौरवीवीरोंके देखतेहुयेप्रथमतो तुम्हींभागे ७५ हेकर्णइसीप्रकार द्वैतवनमें गन्धर्वोंसे सन्मुखता होनेमें प्रथम तुमहीं सब कौरवोंको छोड़कर भागेथे ७६ वहांभी हेकर्ण अर्जुननेही युद्धमेंगंधर्वोंकोमार-कर और चित्रसेनादिकोंको बिजयकरके स्त्रीसमेततेरे मित्रवपालन करनेवाले दुर्य्योधनको छुटायाथा ७७ हेकर्णफिर परशुरामजी ने

राजाओंके मध्य सभाकेबीच अर्जुनऔर केशवजीका प्राचीनप्रभाव बर्णानकियाथा ७८ तुमने राजालोगोंकेसमक्षमें श्रीकृष्ण औरअर्जुन को अवध्यबर्णान करनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य्यके बारंबारकहे हुये बचनोंको सुना मैं उसको कहांतक तुझसे कहूं अर्जुन अनेक प्रकारसे तुझसे ऐसा अधिकहै जैसेकि सबजीवोंसे ब्राह्मण अधिक होताहै७६।८०तूअभीरथपरचढ़ेहुये बसुदेवनन्दन और कुन्तीनन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखेगा जैसे कि बुद्धिमें नियत होकर काकहंसके पास शरणागतहुआ उसीप्रकार तूभी बासुदेव जी और अर्जुनके पास जाकर शरणागतहो८१।८२ हेकर्ण जब तुम युद्धमें पराक्रमी अर्जुन और बासुदेवजीको एक रथपर देखोगे तब ऐसी२ बातेंन कहोगे ८३ जब अर्जुन सैकड़ों बाणों से तेरे अहंकार का नाशकरेगा तभी तुम अपने और अर्जुनकेबलाबल रूप अन्तरको देखोगे ८४ अरे जोनरोत्तम देव असुर और मनुष्योंमें प्रसिद्ध हैं उनका अपमान तुमऐसे मतकरो जैसे कि पट बीजना सूर्य्य का अपमान नहीं करसक्ता ८५ जैसे कि सूर्य्य और चन्द्रमा हैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेजसे बिख्यातहैं तुममनुष्यों में पटबीजने के समान हो ८६ हेबुद्धिमान सूतकेपुत्र कर्णतू अर्जुन और केशवजी का अपमान मतकर वह दोनों नरोत्तम महात्मा हैंमौन होजा अपनी प्रशंसा मतकर ८७॥

दोहा॥

सूर्य्यचन्द्रसम बिदितहै पारथ कृष्ण अमान।
तिनकीसरवरि जिनकरो तुमखद्योतसमान १
बरप्रभाव हरिपार्थको पूर्व कह्यो बलिराम।
सोभुलाय कत मोहबश लरन चहत जयकाम २

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिशल्यसंबादेहंसकाकोपाख्यानेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय बचनों कोसुन-

कर शल्य से बोला कि मैं ठीक २ जानताहूं जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्ण जी हैं १ मैं अर्जुन के रथके हांकनेवाले केशवजी और अर्जुन के पराक्रम समेत बड़े अस्त्रोंको भी अच्छी रीति से जानताहूं हेशत्रुरूपशल्य उसको तू नहीं जानता है २ मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भय रूप श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करूंगा परन्तु ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजीका दियाहुआशाप अब मुझको अधिकतर दुःख देरहाहै ३ हे शल्य शापका कारण यहथा कि मैं पूर्व समय में दिव्य अस्त्रोंका अभिलाषी होकर ब्राह्मण का रूप बनाकर कपटसे परशुरामजी के पास ठहरने को गयाथा वहांभी अर्जुन की हीउन्नति चाहनेवाले देवराज इन्द्रने ४ भयानकरूप कीटके शरीर में प्रवेश करके मेरी जंघा में चिपटकर काटनेसे बिघ्नकरदिया अर्थात् मेरी जंघापर शिर रखकर गुरू परशुरामजी के सोने पर उस कीटने मेरीजंघाको काटा ५ और बड़े घाव होनेके कारण मेरी जंघामें से बहुत सा रुधिर प्रकट हुआ परन्तु मैंने गुरूजीके भयसे शरीर को जराभीन कंपाया इसके पीछे जब गुरूजी जागे और उस मेरी जंघाके रुधिर को देखा ६ उन्होंने उस घाव से भी मुझको धैर्य्यतामें नियत देखा तब यह बचन कहा कि निश्चयकरके तू ब्राह्मण नहींहै कौन है यह सत्य२ कहो हेशल्य तबतो मैंने सूतके समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृत्तान्तकहा ७ उससमय क्रोधयुक्त होकर महा तपस्वी गुरूजीने मुझको देखकर शापदियाकि हे सूत तैंने अपनी ज्ञातिको गुप्तकरके जो इस अस्त्रकोप्राप्त कियाहै वह युद्धकर्मके समय पर तुझको स्मरण नरहैगा ८ इसके सिवाय और कालमें इस अस्त्रसे तेरी मृत्युहोगी क्योंकि ब्राह्मण के बिना मन्त्र और वेदरूप ब्रह्म अचल होकर स्थिर नहीं होता है अब इस भयकारी कठिन युद्धमें उसबड़े अस्त्रका प्रयोग संहार स्मरण नहींआताहै ९ हेशल्य जोयह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतवंशियों में उत्पन्न हुआ है यह कालरूप युद्ध बहुतसे बड़े२ क्षत्री शूर वीरोंको निश्चय करके संतप्त

करेगा परन्तु मैं उस उग्र धनुषधारी महावेगवान् भयानक कठिनतासे सहने के योग्य सत्य पराक्रम और प्रतिज्ञावाले पांडव अर्जुन को युद्धमें मृत्युके मुखमें पहुंचाऊंगा१०।११वहमेराअस्त्र वर्त्तमानहै उसीकेद्वारा युद्धमें शत्रुओंके समूहोंको और प्रतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महाउग्र धनुषधारी तेजस्वी निर्दयी शूर रुद्रशत्रुओंके नाशकरनेवाले अर्जुनको युद्धमें ऐसेमारूंगा जैसेकि महावेगवान् अप्रमेय जलोंकास्वामी समुद्रअनेकजीवोंको अपनेमें मग्न करलेताहै १२।१३ जैसे समुद्र बड़ावेगवान् बुद्धिसे परे मर्य्यादा और किनारों समेत बड़े २ प्रभाववालोंको धारणकरताहै १४ इसीप्रकार अबमैंभी इस लोकके युद्धमें मर्मोंके भेदी बीरोंके मारनेवाले तीक्ष्णबाण समूहोंके छोड़नेवाली प्रत्यंचा खैंचनेवालोंमेंश्रेष्ठ अर्जुनकेसाथ युद्धकरूंगा १५ इसरीतिसे बाणोंके बलके प्रतापसे उसबड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्र की समान महादुर्जय बड़े २ शूरबीर राजाओं के नाशकरनेवाले अर्जुनको ऐसे सहूंगा जैसेकि समुद्रको मर्य्यादा सहलेतीहै १६ अब युद्धमें जिसके समान दूसरे धनुषधारीको नहीं समझता और मानताहूं वह देवता और असुरोंको भी युद्धमें बिजय करसक्ताहै उस के साथ अबमेरे महाघोर युद्धकोदेखो युद्धाभिलाषी महा अहंकारी अर्जुन दिब्य महाअस्त्रों के द्वारा मेरे सन्मुख आवेगा १७ तब मैं युद्धमें उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे हटाकर उत्तम बाणोंसे उस सूर्य्यके समान उग्रदिशाओंके तपानेवाले अर्जुनको गिराऊंगा १८ जैसे कि बड़ाबादल सूर्य्यको ढकदेताहै उसीप्रकार अग्निरूपक्रोध रखनेवाले महातेजस्वी इसलोक के भस्म करनेवाले अर्जुन को अपने बाणोंसे आच्छादित करदूंगा १९ मैं बादलरूप अपने वर्षा रूप बाणोंसे युद्धमें उस अग्निरूप बल पराक्रम रखनेवाले प्रहार कर्त्ता बायुरूप उग्र अर्जुनको शांतकरूंगा २० हिमालय पर्वत के समानयुद्धमें अग्निके समान क्रोधरूपपण्डितसत्यवक्ताअर्थ मार्गोंमें समर्थ महाबली अर्जुनको देखूंगा२१लोकमें अद्वितीयधनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसनेसबपृथ्वीको बिजयकिया नें

युद्धमें सन्मुखहोकर उस अर्जुनसेलडूंगा २२जिस अर्जुनने इन्द्रप्रस्थ
के समीप खांडव बनमें देवताओं समेत सबजीवोंको विजयकिया
२३ उसबीरके सन्मुख मेरे सिवाय इच्छा पूर्व्वक कौन युद्धकर
सक्ताहै वह महाअहंकारी अस्त्रज्ञ हस्तलाघवका करनेवाला दिव्य
अस्त्रोंके प्रयोग संहारोंका ज्ञाता प्रलयका मचानेवालाहै २४ अब
में तीक्ष्ण बाणोंसे उसअतिरथीके शिरकोदेहसे जुदाकरूंगा हेशल्य
में युद्धमें विजयको और मृत्युको आगेकरके इसअर्जुन से लड़ूंगा
२५ ऐसामेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्यनहींहै जो कि उसइन्द्रके
समान पराक्रमीके साथ एकरथसे युद्धकरे में युद्धमें प्रसन्नचित्त
होकर क्षत्रियोंके देखतेहुये उसपांडव अर्जुनकी बीरता बर्णन कर-
ताहूं २६ तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठसेउस अर्जुन
की बीरता को क्याकहतेहो जो पुरुष सबका अप्रिय कठोर चित्त
नीच और अशान्तचित्तहोताहै वह शान्तचित्तवालोंको निन्दाकरता
है २७ में इसप्रकारके सैकड़ों पुरुषोंको मारसक्ताहूं परन्तुमें क्षमा
करने के समय आनेपर क्षमाकरदेताहूं हे पापात्मा शल्य तू अज्ञा-
नी के समान मुझकोडराकर अर्जुन के लिये प्रियबचनोंको कहता
है २८ हे सत्यताके समय मित्रसे शत्रुताकरने वाले कुटिलबुद्धी
निश्चयकरके मित्रता सातपदोंसे संबंध रखनेवालीहै वह भयकारी
समय सन्मुख आताहै जिससे कि दुर्य्योधनने युद्धको प्राप्त किया
है २९ और मैंभी उसीके अभीष्ट सिद्धीका चाहने वालाहूं परन्तु
तुमउसी बातको मानतेहो जिसमेंकि प्रीतिनहीं है अर्थात् हमारापक्ष-
क्षवालाहोकरभी अन्यके साथप्रीति करताहै मित्रशब्द मिदधातुसे
संबंध रखताहै जिसका अर्थमोदहै वामिदि धातुसे जिसका अर्थप्र-
सन्न करना तृप्त करना रक्षाकरना और अन्तमें कुशल करनाहै अ-
थवासुखसे संपन्न करना कहाहै इनलक्षणोंसे मित्रकहाजाताहै३०
मैं तुझसे सत्य२कहाताहूं कि यह सबगुणमुझमेंप्राप्तहैं राजादुर्य्यो-
धन मेरेइन सबगुणोंको जानताहै और मारना शासन करनास्वा-
धीनकरना दंडदेना उम्देस्थानसलेनमें पकड़लेना और पीड़ितकरना

इनगुणोंके होनेसे शत्रु कहाजाताहै ३१यह सबगुण बहुधातुझमेंनियत हैं इस निमित्त अबमैं दुर्य्योधनकी वा तेरीइच्छा अथवा अपनीशुभकीर्ति और ईश्वरकी प्रसन्नताके लिये अर्जुन और बासुदेवजी से लड़ूंगा अब उसकर्मको वा ब्रह्मास्त्रआदि महाउत्तम और दिव्य अस्त्रोंको औरमानुषी शस्त्रोंको देखो ३२।३३ मैं उस उग्रपराक्रमी को ऐसे प्राप्तकरूंगा जैसे कि बड़ा मतवालाहाथी दूसरे मतवालेहाथी को और विजयकेहेतु उस अजेय ब्राह्मअस्त्रको मनसे अर्जुनके ऊपर चलाऊंगा ३४ उस मेरे अस्त्रसेभी युद्धमें कोईशत्रु नहीं बचसक्ताहै जो कदाचित् यह रथकाचक्र किसी गढ़ेमें नहींगिरे३५तो हेशल्य मैं दण्डधारी यमराज पासभृत् वरुण गदाधारी कुबेर बज्रधारी इन्द्र और युद्धाभिलाषी शत्रोंसे मारनेवाले किसीप्रकारकेभी शत्रुसे३६ नहीं डरताहूं इसीहेतुसे मुझको अर्जुन और श्रीकृष्णजीसे जराभी भयनहीं है ३७ मेरायुद्ध उनदोनोंके साथ परलोक के निमित्तहोगा हेराजा इसकाहेतु यहहै कि एक समय अस्त्रोंके सीखनेमें मैंने घोररूपअस्त्रोंकोफेंकाथा ३८वहां अज्ञानतासे एकब्राह्मणकी होमसाधन करनेवाली गौकाबछड़ा जो निर्जन वनमें चररहाथा वह मेरेबाणसे मारागया उसके मरजानेसे उसब्राह्मणने कहा कि३६ जो तुझबड़े मतवालेंने मेरीहोमकी गौके बछड़ेको माराहै इसहेतुसे तुझ युद्ध में लड़नेवालेंको रथका पहिया पृथ्वीमें घुसजायगा यह ब्राह्मणने मुझको शापदियाहै४०।४१ इसहेतुसेमैं ब्राह्मणके शापसे बहुत डरता हूं इन ब्राह्मणोंका राजा चन्द्रमा है इसीसे यह सब ब्राह्मण सुख दुःखके स्वामीहैं ४२ हेमद्रदेशाधिपति मैंने हजारों गौ और बैल देनेसेभी उसको प्रसन्न करनाचाहा परन्तु वह किसी प्रकारसेभी प्रसन्न नहींहुआ ४३ वह उत्तम ब्राह्मण सातसौ हाथी और सैकड़ों दास दासी देनेपरभी मुझपर प्रसन्न नहींहुआ ४४ श्वेतबत्सा चौदह हजार कृष्णागौवोंकेभी भेटकरनेसे उसकाचित्त मुझसे प्रसन्न नहींहुआ इसके सिवाय सब पदार्थोंसेयुक्त मैंने अपनेस्थान धनआदि जो२ मेरीबस्तुथीं ४५ उनसबकोभी बारम्बारउसकोभेटकि-

या तबभी उसने इच्छानहींकरी ४६ और मुझ अपराध क्षमाक-रानेवाले से कहाकि हेसूत जोमैंने कहाहै वह वैसेहीहोगा मिथ्या कभीनहीं होसका ४७ मिथ्या बोलना सन्तानका नाशकरनेवाला होताहै पापकाभागी होताहै इसकारण धर्मको रक्षाके निमित्त में मिथ्या नहीं बोलसक्ताहूं ४८ तू ब्राह्मणको गतिको नाश मतकर तुमने बड़ाअपराध किया है इसलोक में मेरे बचनको कोई मिथ्या नहींकरसक्ता इससे मेरेशापको अंगीकार कर ४६ हेअनम्र होने-वाले मैंने शुभचिन्तकतासे यह कहाहै मैं तुझ निरादर करनेवाले को जानताहूं तू मौनहोकर उत्तरको सुन ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसम्बादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज इसके पीछे शत्रुबिजयी कर्ण राजामद्र को सम्बोधन करके यह बचन बोला १ हे शल्य जो तुमने निदर्शन के निमित्त अर्थात् दृष्टान्तार्थ मुझसे कहाहै सोमैं युद्धमें तेरेबचनोंसे भयभीत नहीं होसका जो देवताओं समेत इन्द्र भी मुझसे युद्धकरें तौभी मैं भयभीत नहींहोसक्ता फिर श्रीकृष्णजीको साथरखनेवाले अर्जुनसे क्या भय करसक्ताहूं वह क्या करसक्ते हैं २ । ३ मैं केवल बातोंहींसे किसीदशामेंभी भयभीत होनेको योग्य नहींहूं हेशल्यवह कोई दूसरेही मनुष्यहोंगे जो युद्धमें अर्जुनसे डरें ४ नीच मनुष्यको इतनीही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर बचन कहे हे दुर्बुद्धी मेरी प्रशंसा करनेको असमर्थ होकर तुम बहुतसी बातें करतेहो ५ हे मद्रदेशी इसलोक में कर्ण भयकेलिये नहीं उत्पन्न हुआहै किन्तु यश कीर्त्ति और पराक्रमके हेतु मैंने जन्मलिया है हेराजाशल्यतुम इनतीन कारणोंसे जीवतेबचेहो एक तो सारथ्यकर्म्म करनेसे उत्प-न्नहुई मित्रता दूसरे मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र दुर्य्योधनके कार्य्य सिद्धकेलिये ६ । ७हे शल्य राजादुर्य्योधनका बड़ा भारी कार्य्य बर्त्तमान होकर मुझमें नियतहै इसहेतु से अल्पकाल

तक मेरेहाथसे जीवतेहो क्योंकि प्रथम में नियम करचुका हूं कि तेरेअप्रिय बचनोंकोसहूंगा में शल्यकेबिनाभी शत्रुओंको बिजयकर सक्ताहूं क्योंकि में अकेलाही हजार शल्य के बराबर हूं ८। ९ और मित्रसे शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारणसे तुम जीवते हो १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसम्बादेत्रिचत्वारिंशोध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोला हेकर्ण निश्चय करके येसब निष्फल बातेंहैं जिनको तुम शत्रुओं केबिषयमें कहतेहो युद्धमें हजार कर्णके बिनाभी मेरे हाथसे शत्रु बिजय होनेके योग्यहैं अर्थात् में हजार कर्णके समतुल्यहूं १ संजय बोलेकि इसपीछे कर्णने इस प्रकारके कठोर बचन कहने वाले शल्यसे फिर प्रथमसेभी द्विगुणित ऐसेकठोर बचन कहे जो देखने और सुननेके अयोग्यथे २ कर्ण बोला हेराजा मद्र तुम चित्तकोस्थिर करके उनबचनोंको सुनोजोदुर्य्योधनके समक्षमें ३ ब्राह्मणोंने धृतराष्ट्रकी सभाके मध्य नाना प्रकारके अद्भुत देशोंके भूत भविष्य वृत्तान्तोंको राजाओंसे बर्णन कियाथा वहां एक वृद्धब्राह्मणोत्तम भूतकालीन वृत्तान्त विषयक कथाओंको कहता वाहीकऔर मद्रदेशोंको निन्दा करता हुआ यह बचन बोला ४। ५ कि जोलोग हिमाचल पर्व्वत श्रीगंगाजी सरस्वती यमुना और कुरुक्षेत्रसे अलग कियेगयेहैं और जो लोग पंजाब और सिन्धके मध्यमें निवास करनेवालेहैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालोंको त्यागकरें ६। ७ वहांपर गोबर्धन अर्थात् गौओंके मारनेको स्थान और मद्य पीनेवालोंके चौतरे यही दोनों राजकुलके द्वारहैं मैं बालकसे लेकर वृद्धोंतकके मुखसे सुना हुआ स्मरण करताहूं ८ मैंने बड़ेकार्य्य के कारणसे वाहीक देशियोंमें सातरात्रि निवास करके वहांका सब चरित्र जाना ९ उनमें शाकलनाम नगर और आपगानाम नदी वा जरत्का नाम वाहीक इन तीनोंका चरित्र महा निन्दितहै १०

यह लोग जौ और गुड़की मद्यको पानकर लहसनकेसाथ गोमांस को खाके मांसके पूप आदि बाजारके सम्पूर्ण भोजनोंकी करनेवाली शीलतासे रहित नग्नशरीर और दिखानेको माला चंदन आदि धारण करनेवाली स्त्रियां नगरके स्थानोंमें अथवा नगरके वप्रागारमें गाती और नाचतीहैं ११।१२ और गधे वा ऊंटोंके समान शब्दोंसे नाना प्रकारके निर्लज्ज गीतोंसे मतवाली विषय भोगोंमें अपने और पराये जाति कुजातिका विवेक न रखनेवाली सब प्रकारसे स्वैरिणी अर्थात् स्वेच्छाचारिणी कुत्सित कर्म करानेवालीहैं १३ उन मदोन्मत्त असभ्य वार्त्ता करनेवालियोंने बड़ेबिनोद पूर्वक इन गीतोंको गाया कि हे घायलभग हे घायलभग हेपति और स्वामीसे वाड़ितभग १४ वह संस्कार रहितअजितेन्द्री स्त्रियां इस रीतिसे पुकारती हुईं उत्सवों के दिनोंमेंयथेच्छ नृत्यकरतीहैं फिर ब्राह्मणने कहा कि वाहीक बासियोंसे भ्रष्ट कुरु जांगल देशोंमें निवास करनेवाली १५ अप्रसन्न चित्त स्त्रियोंने यह गीत गायाकि निश्चय करके कुरु जांगल देशोंमें रहती गोरी औरसूक्ष्म कंबलोंकी धारणकरनेवाली स्त्रियां शाक लहसनके मिलनेपरकाक के समान हर्षित होतीहैं १६ औरमद्यपान करहंसती और नाचतीहैं ऊंटवा गधेके समान स्वरसेहर समय गान कियाकरतीहैंसदैवमैथुनमें ऐसी रतहैं कि कभीनहींअघातीहैं १८ औरपुरुषोंको बुलाकर अपने आप प्रसन्नतासे मिलतीहैं और अपने वा परायेपुरुषके बर्णकाभी जहां बिचार नहीं वह स्त्रियां कलह हास्य औरबिहारमें परस्पर गालियों से बातेंकरतीहैं १८वहां स्त्री पुरुषरात्रिदिन इसी प्रकारसे बकते रहतेहैं और अपनी पराई स्त्री वा अपना परायापुरुष इन बातोंका जो बिचार करे वह कुत्सित गिना जाताहै १९ और जहांबासह कुक्कुटगौ गधाइनकेमांसकोजोनखाय अथवा मद्यका जो पान न करे उसका जन्म निष्फल गिना जाता है २० इस प्रकारसे कहकरवह ब्राह्मण पंचनदोंकेनाम राजासे कहनेलगा कि २१चन्द्रभागाशतद्रू बिपाशाइरावतीवितस्ताऔर छठवांसिंध इननदोंकेमध्यमें

वह पुरुष बसतेहैं जिनके पूर्वजन्मके पापसंचित होतेहैं २२ उनका दियाहुआ देव पितर और ब्राह्मण ग्रहण नहीं करतेहैं कुत्सितकर्म करनेवाले अशुभ भेष भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्यका बिचाररहित जिस देशमें धर्मका लवलेशभी नहींहोताहै२३इस वृत्तान्तकोअन्य ब्राह्मणोंनेभी कौरवों को सभा में हमसे कहाकि यह पांचो नदियां जहां बहती हैं २४ वहां पीलूनाम वृक्षोंके बनहैं वह धर्म्महीनदेश आरट्टनामसे प्रसिद्धहैं२५यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंसे रहित दासी पुत्र कुचाली यज्ञोंके न करनेवाले वाहीकोंके इनदेशों में नहींजाना उचित है२६देव पितर और ब्राह्मणभी उनके हव्यकव्य औरदानों को नहीं ग्रहण करते कष्टकुण्ड नाम मृत्तिका विशेष और मट्ठोके पात्रोंमें भोजनकरतेहैं२७।२८सत्तू वा मद्यसेअहंकारी उच्छिष्टभोजी कुत्ते भेड़ी ऊंट गधे इनकादूध और मांस खाते पीतेहैं पुत्रोंकेमारने वाले महामूर्ख सबअन्न और दूधके खानेवालेहैं२९।३०वह आरट्ट वाहीक पण्डितलोगोंसे त्यागनेके योग्यहैं हेशल्य इसकोसमझकर फिर उस दूसरी बातको तुझसे कहताहूं३१।३२ जिसको अन्यब्राह्मणोंने कौरवोंकी सभामें वर्णनकियाहै कि युगंधरदेशजहांभक्ष्याभक्ष्यका बिचार नहीं है उसमें दूधपीकर और अच्युतस्थल नाम नगरमें निवासकरके३३।३४औरभूतल तड़ाग जिसमेंचांडाल और ब्राह्मण सब संगस्नान करते हैं उसमें स्नान करके कैसे स्वर्ग को जायगा जहां यह पांचोंनदी पर्व्वतसे निकलकरवहतीहैं३५।३६उस आरट्टनाम वाहीक देशमें श्रेष्ठमनुष्य दो दिनभी न बासकरें बिपाशानदीमें वहि और हीकनाम दो पिशाचहैं ३७।३८उन दोनों की सन्तान वाहीकलोगहैं यहब्रह्माजीकी सृष्टिमें नहींहैं वह नीचयोनि मेंउत्पन्न होनेवाले नानाप्रकारके धर्म्मोंको कैसेजानसक्ते हैं३९।४० कारस्कर माहिष कलिंग केटल कर्कोटक और वीरक इन भ्रष्ट धर्मियोंको त्यागकरनायोग्यहै४१।४२बड़ेउलूखलकेसमान मेखला रखनेवाली किसी राक्षसीने तीर्थयात्रा करनेवाले एकरात्रि घरमें निवासकरनेवालेब्राह्मणसे यहबचनकहा४३।४४कि वह आरट्टदेश

और वाहीक नाम जल ब्राह्मणोंके निमित्त सदैव ब्रह्माजी के काल के समान हैं ४५ उन जाति वेदरहित यज्ञहीन पूजनादिके अकर्त्ता दासी पुत्र कुटिल बुद्धि संस्कारसेहीन लोगों के अन्नको देवता पितर भोजन नहीं करते हैं ४६ प्रस्थल मद्र गान्धार आट्टनाम पखश व साति सिन्धु और सौवीरनाम देशों के रहनेवाले बहुधा निन्दित हैं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्याय: ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

कर्णबोला हेशल्य समझो मैं फिरभी तुमसे कहताहूं तुम चित्त को स्थिरकरके अच्छेप्रकारसे मेरे बचनोंको सुनो १ निश्चयकरके पूर्व्वसमय में एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घर में आया और हमारे आचारको देखकर प्रसन्नचित्त होके कहनेलगा २ कि मुझ अकेले ने बहुतकाल पर्य्यंत हिमाचल के शिषरपर निवासकिया था तब वहां मैंने नानाप्रकार के धर्म्मोंसेयुक्त देशोंको देखा ३ जहां प्रजा-लोग किसी अधर्म्मसेभी शास्त्रके बिरोधी नहींहोते हैं वहांके वेद-पारग ब्राह्मणोंके कहेहुये सब धर्म्मोंको तुझसे कहताहूं ४ हेमहा-राज नानाप्रकार के धर्म्मोंसेयुक्त देशोंमें घूमताहुआ वाहीकदेशोंमें आनेके समय मैंनेसुना ५ निश्चयकरके उसदेश में ब्राह्मण होकर फिर क्षत्री होता है वैश्य शूद्र और वाहीक होकर फिर नाईहोता है ६ नाई होजाने के पीछे ब्राह्मण होता है फिर वह द्विजहोकर दास होजाता है ७ सब कुलभरे में एकही वेदपाठी होताहै और अन्य सब भाईलोग बर्णसंकर स्वेच्छाचारी कर्मोंके करनेवाले होतेहैं ८ गांधार मद्रदेशी और वाहीक यह निर्बुद्धी होते हैं मैंने संपूर्ण पृथ्वीको घूमकर उस वाहीक देशमें धर्मोंका संकर करने वाला यह बिपर्य्यय सुनाहै उसकोमैं फिर कहताहूं ९ तुम चित्तसे सुनो इस वाहीकोंके निन्दित वृत्तान्तोंको एकअन्य ब्राह्मणने कहा है १० वहभी मैंनेसुनाहै कि पूर्वकालमें किसी पतिव्रता स्त्रीको उस

आरट्टदेशसे चोरोंने हरलियातब वह अधर्म युक्तहोगईतबउसस्त्रीने उनको शापदिया ११ कि जो मुझवाला और भाइयों वालीको तुम ने अधर्मसे प्राप्तकिया इस कारणसे तुम्हारे कुलकी सब स्त्रियां वेश्या होजांयगी १२ हेनीच मनुष्यो तुम इस घोरपापसे कभी न छूटोगे इस हेतु से उनके पापभागी भानजेहैं पुत्रनहींहैं अर्थात् माताके धनकी लेनेवाली बेटीही होतीहै और पिताके धनका लेने वाला पुत्र होताहै यद्यपि वह दोनों कुकर्मसे उत्पन्नहैं तौभी पुत्र तो पिताकानहीं कहलाताहै परंतु बेटी माताकीही कहलातीहै इस हेतुसे भानजाही अंशका भागी होताहै १३ कौरव, पांचाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काश, पांडू, कलिंग, मागध १४ और चंदेरी देशी यह महाभाग सनातन धर्मको जानतेहैं वाह्लीक देशमें केवल असन्त लोग रहतेहैं १५ मत्स्य देशियोंसे लेकर कौरव पांचाल देशी और नैमिष देशियोंसे लेकर चंदेरी देशियों तक जो उत्तम और संतलोगहैं वह सब प्राचीन धर्मोंसे अपना कर्म धर्म और नि-र्वाह करतेहैं इन कुटिल पांचाल और मद्रदेशियोंके सिवाय १६ हे बुद्धिमान राजाशल्य इसरीतिसे धर्म कथाओंमें मौन और जड़के समान होकर तुम उन मनुष्योंके रक्षक होकर उनके पाप पुण्यके छठेभागके लेनेवालेहो १७ अथवा तुम उनकी रक्षा न करने वाले पाप भागीहो क्योंकि प्रजाकी रक्षा करनेवाला राजा पुण्यका भा-गीहै परन्तु तुम पुण्यभागी नहींहो १८ पूर्व्व समयमें सबदेशोंके बीच सनातन धर्मके पूजित होनेपर ब्रह्माजीने पंजाब देशके धर्म को देखकर कहा कि धिक्कारहै १९ सतयुगमें भी संस्कारसे रहित अशुभकर्मी दासी पुत्रोंका धर्म ब्रह्माजीसे निन्दित होनेपर तुम वाह्लीक लोकमें क्याकहा करतेहो २० जिनब्रह्माजीने पंजाबके धर्म कोनष्टकहाहै उनब्रह्माजीने सब वर्णोंको अपने २ धर्ममेंनियत होने परभी उनकी प्रशंसा नहींकी २१ हेशल्य इसको तुमसमझो और दूसरा वृत्तान्त कहताहूं जो कल्मष पादके सरोवरमें डूबनेवालेरा-क्षसने कहाहै २२ क्षत्री का मल भिक्षाहै और ब्राह्मण का मल व्रत

का न करनाहै और संपूर्ण पृथ्वी भरेका मल वाह्लीकलोगहैं और स्त्रियोंका मल मद्रदेशकी स्त्रियांहैं २३ किसी राजाने उस डूबनेवाले राक्षस को डूबने से निकाल कर उससे जो २ पूछा और उसने जो २ उत्तर दिये उन सबको मुझसे सुनों २४ मनुष्योंकामल वह म्लेच्छहैं जो पापमें प्रवृत्त होकर अप शब्द बोलतेहैं और म्लेच्छों का मल औष्ट्रिकाहैं औष्ट्रिकों का मल नपुंसक हैं और नपुंसकों का मलराजपुरोहित अथवा राजाके यज्ञ करानेवाले होतेहैं २५ राजा से बिनयकरके याचना करनेवाले वा उसके याज्ञिक लोगोंका और मद्रदेशियोंका जो मलहै वह तुझको प्राप्तहोय जो हमको नहीं त्याग करताहै २६ राक्षससे वा भूतादिकके आवेशसेव्याकुल और पीड़ित मनुष्योंकी चिकित्सा कौलकरारकरके पीछेस्वाधीन होनेवालाराक्षसहोताहै २७पांचालदेशी वेदोंका संचय रखनेवालेहैं कौरवलोगधर्म संयुक्त कर्मके करनेवालेहैं मत्स्य देशीसत्यवक्ताहैं सूरसेनदेशी यज्ञ को करतेहैं और पूर्वके बासीदासहैं अर्थात् शूद्रधर्म वालेहैं और मत्स्यों के खानेवालेहैं दाक्षिणात्य लोग धर्माभ्यासीहैं परन्तुवाह्लीक और सुराष्ट्र देशी चोर औरवर्ण संकरहैं २८ कृतघ्नता दूसरेका धनहरना मद्यपीना गुरूकी स्त्री से संभोग करना कठोर बचन कहना गौको मारना और घरसे बाहर रात्रिमें अन्यकी स्त्री से भोग करना अन्य पुरुषोंके वस्त्रोंकाधारण करना यहअवगुणहो २९ जिनलोगोंका धर्म हैउनमेंकहो कि अधर्मनहींहै नहीं अवश्यहै परन्तुआरट्ट और पंजाब देशियोंको धिक्कारहै पांचाल देशियोंसे लेकर कुरव देशियोंतक और नैमिष देशियोंसे लेकर मत्स्यदेशियोंतकके लोगभी धर्मको जानते हैं फिर उत्तरमें रहनेवाले अंग और मगधदेशी वृद्ध मनुष्य उत्तम धर्मोंसे अपना बर्त्तावकरके निर्वाह करतेहैं ३० जिनमें मुख्यअग्नि है वह देवता पूर्व्व दिशा में रहते हैं और शुभकर्म करनेवाले यमराजसे रक्षितहोकर दक्षिण दिशामें पितरलोग निवास करतेहैं ३१ और पराक्रमी बरुणदेवता सब देवताओं समेत पश्चिम दिशाकी रक्षाकरता है और भगवान् चन्द्रमा ब्राह्मणों समेत उत्तर दिशाकी

रक्षाकरताहै ३२ हेमहाराजइसीप्रकार राक्षस और पिशाचहिमालय नामश्रेष्ठपर्व्वतकोगुह्यक गन्धमादन शैलकोरक्षाकरतेहैं ३३ औरसब जीव मात्रोंकी भगवान्विष्णुजी रक्षाकरते हैं मगधदेशीलोग अंग चेष्टाओंसे उत्पन्न होनेवाले वृत्तान्तोंके जाननेवाले हैं और कौशल देशी प्रत्यक्ष और प्रकटहुये वृत्तांतोंके ज्ञाताहैं ३४ कौरव पांचाल देशी आधीबात केही कहनेसे पूरीबातके जाननेवालेहैं शाल्वदेशी सब आज्ञाओंके पूरे करनेवाले हैं और पर्व्वती विषमहैं इससे कठिनतासे आधीन होनेवालेहैं ३५ हेराजा मुख्यकरके सब बातोंके जाननेवाले सुरयुवन अर्थात् यूनानीम्लेच्छ बनावटके धर्मपरचलते हैं अर्थात् वैदिक धर्मको नहीं मानतेहैं और अन्य लोग बिना समझायेहुये मंगलपूर्व्वक पूर्णहोनेवाले बचनोंको नहीं समझतेहैं ३६ वाह्लीकलोग अपनेशुभचिन्तकोंके बिरोधीहैं और मद्रदेशी कुछ भी नहींहैं हेशल्य इसनिमित्त तुम ऐसे उत्तरदेनेको योग्यनहीं हो इस पृथ्वीपर सब देशोंकामल मद्र देश कहाताहै ३७ मद्यकापान गुरू की स्त्रीसे संभोग कुस्तीलड़ना पराये धनकाहरना यही जिनलोगों का धर्महै उनमें धर्म अवश्यहै उन अरट्टदेशी और पंजाबदेशियोंको धिक्कारहै ३८ इसबातको जानकर मौन होकर विरुद्धता मतकर नहींतो मैं प्रथमतुझकोमारूंगा फिरअर्जुनऔर केशवजीकोमारूंगा कर्णकी इनसबबातोंको सुनकर शल्यबोला हेकर्ण अंगदेशमें रोगी दुखिया लोगोंका त्याग और अपनी स्त्री पुत्रका बेचडालना वर्त्तमानहै उनदेशोंका तू अधिपतिहै ४० भीष्मजीने जो तुमको रथी अतिरथीकी संख्यामें कहा उन अपने दोषोंको जानकर क्रोधरहित होकरक्रोधयुक्त मतहो ४१ हेकर्ण सर्बस्थानोंमेंब्राह्मण क्षत्री बैश्य और शूद्रहैं और सुन्दरब्रतवालीपतिब्रता स्त्रियांहैं ४२ मनुष्य मनुष्य के साथमें हास्य विनोद पूर्व्वक क्रीड़ा करतेहैं और विषय भोग करनेवाले मनुष्य प्रत्येक देशमें परस्पररक्षा करनेवालेहोतेहैं ४३ हरएक मनुष्य सदैव दूसरेकी बुराइयोंमें कुशल होताहै और अपने दोषोंको नहीं जानता वा जानताहुआ भी अज्ञानहोकर मोहित

होजाता है ४४ अपने २ धर्मपर कर्म करनेवाले राजा सब स्थानों में हैं दुराचारियों को दण्ड देते हैं और सर्वत्र धर्म के रखनेवाले मनुष्यहैं ४५ हेकर्ण देशके सामान्य होने से सब मनुष्य पापको सेवन नहीं करते हैं वह अपने स्वभावसे जैसेहोतेहैं वैसे देवताभी नहीं होते संजयबोले कि इसके पीछे राजा दुर्योधन ने मित्रता की रीतिसे कर्णको और हाथ जोड़कर शल्यको निषेधकिया ४७ इसके पीछे हे श्रेष्ठ दुर्योधनके निषेध करनेसे कर्णने उत्तर नहींदिया और शल्यभी शत्रुओंके सन्मुखहुआ ४८ फिरकर्णने शल्यको प्रेरणाकरी कि शत्रुके सन्मुख चलो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंबादेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे धृष्टद्युम्न से रक्षितपांडवों की सेना को देखकर कर्णने शत्रुकी सेनाके सहने वाले अपूर्व व्यूहको अलंकृतकिया १ औररथ शंख और अन्य २बाजोंके द्वारा पृथ्वीको कंपायमान करता हुआ चला २ हेभरतर्षभ बड़े तेजस्वी युद्ध में कुशल शत्रुसंतापी क्रोधयुक्त कर्णने बुद्धि के अनुसार व्यूह को शोभित करके ३पांडवों की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न कर दियाजैसे किआसुरी सेनाको इन्द्र छिन्न भिन्न करदेताहै वहां युधिष्ठिर को घायल करके बाम अंगमें करदिया ४ धृतराष्ट्र बोले हे संजय कर्णने भीमसेनसे रक्षित उन सब पांडवों के सन्मुख जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूहको अलंकृत किया ५ और देवताओं सेभी अजेयबड़े धनुषधारी सबयुद्धकर्त्ताओं को किस२ रीतिसे रोका और हे संजय मेरी सेनाके पक्ष और प्रपक्ष कौन २ हुये ६ और न्यायके अनुसार सेनाका बिभागकरके किस रीतिसेनियत हुये औरपांडवोंनेभी मेरे पुत्रोंके सन्मुख कैसे२ व्यूहको रचा ७ और वह महाभयानक युद्ध कैसे जारी हुआ और उस समय अर्जुन कहांथा जबकि कर्ण युधिष्ठिर के सन्मुख गयाथा ८ क्योंकि अर्जुनके समक्ष में युधिष्ठिर के

सन्मुख जानेको कौन समर्थ होसक्ता है कि जिस अकेलेने पूर्वकाल में खाण्डव बनके सबजीव मात्रोंको बिजय किया उसके सन्मुख कर्णके सिवाय कौनसा पुरुष जीवनकी आशा करके युद्धको करे ६ संजय बोले कि व्यूहकी रचनाको सुनिये और जैसे अर्जुन वहां से गया और जिसरीतिसे अपने २ राजाको घेरे हुये युद्ध जारीहुआ १० हेराजा सारद्वत कृपाचार्य्य वेगवान् मगध देशीय यादव कृतबर्मा यहतो दाहिने पक्षपर नियत हुये ११ और उनके प्रपक्षपर महारथी शकुनि और महारथी उलूकने स्वच्छ प्रास रखने वाले सवारों समेत आपकी सेनाको रक्षित किया १२ भयसे उत्पन्न होंने वाले व्याकुलता से रहित गान्धार देशी लोग और कठिनता से बिजय होंने वाले उन पहाड़ियों समेत जो कि टीड़ीदलके समान पिशाचोंके तुल्य कठिनता से देखने के योग्य थे १३ मुख न मोड़नेवाले चौबीस हजार रथी युद्धमें कुशल संसप्तकों ने बायें पक्षको रक्षित किया १४ वह सब आपके पुत्रोंसे युक्त श्रीकृष्ण अर्जुनके मारनेके अभिलाषी थे और पांडवोंके प्रपक्षमें यवनों समेत कांबोजदेशीय शकजातिके लोग हुये १५ और कर्ण की आज्ञासे रथ घोड़े और पतियों समेत सब लोग श्रीकृष्ण जी और अर्जुन को पुकारते हुये नियत हुये १६ वह अपूर्व कवच बाजूबन्द और माला धारण करने वाला कर्णभी सेना मुखको रक्षित करता हुआ सेनाके मुख पर नियत हुआ १७ वह अत्यन्त क्रोधित आपके पुत्रोंसे व्याप्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरवीर कर्ण सेनाका संहार कर्त्ता मध्य सेना मुखपर शोभायमान हुआ १८ और सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशित अपूर्व दर्शन पिंगलवर्ण नेत्रवाले बड़ेहाथि पर सवार सेना समेत व्यूहके पृष्ठभागपर दुश्शासन नियत हुआ हेराजाउस के पीछे अद्भुत अस्त्र और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्रहुये बड़े शूरवीर मद्र और कैकेय देशियोंसे चारों ओरसे रक्षित आप राजा दुर्य्योधन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओं के मध्यमें रक्षा किया हुआ इन्द्र शोभित होताहै और अश्वत्थामा

वा कौरवों के बड़े२ महारथी शूरम्लेच्छों से युक्त सदैव मतवाले बादलोंके समान मद रूप जलके डालने वाले हाथी उस रथोंकी सेनाके पीछे२ चले १९ । २० । २१ । २२ । २३ वह ध्वजापताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि वृक्ष धारी पर्वत होतेहैं २४ उन पदाती और हाथियों के पाद रक्षक भी पट्टिश और खड्गके धारण करने वाले मुखन मोड़ने वाले हजारों शूरबीर बर्त्तमान थे २५ वह देवासुरों की सेनाके समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियों समेत अलंकृतमहा शोभायमान हुआ २६ उसबुद्धिमान सेनापतिने इसरीति से वार्हस्पत्य व्यूहको रचा उस नाचते हुये महा व्यूहको देखकर शत्रुओंको भय उत्पन्न हुआ २७ उसके पक्ष और प्रपक्षोंसे पती घोड़े रथ और हाथी सबके सब युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलतेथेजैसे कि वर्षाऋतु में बादल निकलतेहैं २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर कर्णको सेना मुखपर देखकर शत्रुओंके मारने वाले अकेले अर्जुनसे बोले २९ हे अर्जुन युद्धमें कर्णके रचेहुये उस महा व्यूहको देखोजो पक्ष और प्रपक्षोंसे संयुक्त शत्रुकी सेनाको प्रकाशित करताहै३० सो तुम इस शत्रुकी वृहत्सेनाको अच्छे प्रकारसे देखकर ऐसी नीति बिचारो जिससेकि यह हमको भयभीत न करे ३१ राजाके इसरीतिके बचनको सुनकर अर्जुन हाथ जोड़कर राजासे कहने लगाकि जैसा आप कहतेहैं वैसाहीहै मिथ्या नहीं है ३२ हेभरतर्षभ जिस रीतिसे इसका मारना बिचार किया है उसको मैं करूंगा इसका मारना बहुत श्रेष्ठहै इससेमैं इसका नाशकरताहूं ३३ युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्णसेलड़ो भीमसेन सुयोधनसे नकुलवृषसेनसे सहदेव सौबल से ३४ शतानीक दुश्शासनसे सात्विकी कृतबर्मासे पांड्यअश्वत्थामासे सन्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्यसे युद्धकरूंगा ३५ और शिखंडी समेत द्रौपदी के सब पुत्र उन शेषबचेहुये धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे सन्मुख होकर लड़नेको जाओ और सब हमारे शूरबीर उनके शूरवीरोंको मारो ३६ संजय बोले कि इस रीति से धर्मराजके

बचनों कोसुनकर अर्जुनने कहाकि ऐसाही होगा यह कहकर अपनी सेनाओंको आज्ञादी और आप सेना मुख परगया ३७ जोकि यह वैश्वानर अग्नि बिश्वका प्रभुहै वह प्रथम ब्रह्माजीके मुखसे उत्पन्न चन्द्रमारूप से प्रकट होनेवालाहै उसीने घोड़ेके रूपको पाया उस घोड़ेको देवता और ब्राह्मणोंने जानलिया कि यह ब्रह्माजीके मुख से उत्पन्नहै वही अकेला एकदेवता अपने चाररूप बनाकर अर्जुनके रथको ले चलताहै ३८ जिसने पूर्व समय में ब्रह्मा रुद्र इन्द्र और बरुणको क्रम पूर्वक सवार कियाहै इसहेतुसे प्रथमतो रथपर सवार होकर केशवजी और अर्जुनचले ३९ तदनन्तर शल्य उस अपूर्व दर्शनीय आतेहुये रथको देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्णसे बोला ४० यह श्वेत घोड़ोंसे युक्तसारथी श्रीकृष्णजी समेत सबसेना ओंसेभी कठिनतासे रोकने के योग्य अर्जुन का रथ आया यह रथ ऐसे कठिनतासे रोकनेके योग्यहै जैसे कि कर्मोंका फल रोकने के योग्य नहीं होताहै ४१ हे कर्ण जिसको तुम पूछतेथे वह शत्रुओंको मारताहुआ अर्जुनचला आताहै उसका ऐसा कठोर शब्दसुनाईदेता है जैसाकि बादलका घोर शब्द होताहै ४२ निश्चयकरके यहदोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं देखो यह उठीहुई धूलि आकाश को व्याप्त करके नियतहै ४३ हेकर्ण रथके पहियेके नीचेसे चला-यमान पृथ्वी कंपायमानहै और महा वेगवान् बायु आपकी सेनाके सन्मुख चलरही है ४४ यह कच्चे मांस खानेवाले राक्षस आदिभी बोलरहे हैं यह मृग भयानक शब्दोंको करतेहैं हेकर्ण इसघोरभय दायक रोमहर्षण करने वालेसूर्यको आच्छादित कियेहुये बादलकी सूरत केतु नक्षत्रको देखो और सब दिशाओंमें नानाप्रकारके पशुओं के झुंड और पराक्रमी शार्दूल सूर्यको देखतेहैं हजारों भागनेवाले और सन्मुख नियतहोनेवाले परस्परमें घोर शब्द करनेवाले कंक और गृद्धोंको देखो और हेकर्ण तेरे रथपरलगेहुये अतिउत्तम चामर भी अग्निके समान होगयेहैं ४६। ४७। ४८ और ध्वजा कांपतीहै बड़े वेगवान् उन्नत बलिष्ठ शरीर वाले घोड़ों के कंपको देखो ४९

जैसे दर्शन करनेके योग्य आकाशमें उड़नेवाले गरुड़ोंको देखते हैं उसीप्रकार निश्चय करके युद्धोंमें हजारों मरे हुये राजालोग पृथ्वी पर आश्रय लेकर ५० शयन करेंगे और शंखोंके कठोर शब्दरोमां च खड़े करनेवाले सुनाई देतेहैं ५१ हेकर्ण ढोल और मृदंगों के शब्दोंको सुनों हेराधाके पुत्र बाणोंके मनुष्योंके और घोड़े हाथियों के शब्द ५२ महात्माके प्रत्यंचा केतलओंके शब्दोंको और कारी गरोंके हाथसे सुवर्ण और चाँदीसे निर्मित बस्त्रोंके बनाये हुये ५३ नाना प्रकारकी वर्णवाली ध्वजाओंसे कंपायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघंटिका युक्त पताका रथपर महा शोभायमान फरारही हैं ५४ हेकर्ण देखो कि अर्जुनकी ध्वजा बायुसे चलायमान ऐसी कणकणारही हैं जैसे कि आकाश में बिजिलियां कण कणाया करती हैं ५५ और महात्मा पांचालोंके यह पताकाधारी रथकैसे शोभायमानहैं ५६ बानराधीशको धारण करनेवाली अति उत्तम बिजय कारिणी ध्वजा संयुक्त आनेवाले अजेय कुन्ती नन्दन अर्जुनको देखो ५७ यह चारोंओरसे देखनेके योग्य महा भयानक शत्रुओंका भयकारी बानर अर्जुनकी ध्वजाकी नोकपर दिखाई देरहाहै ५८ और बुद्धिमान श्री कृष्णजी का यह शंख चक्र गदा और शार्ङ्ग धनुष है जिसमें श्रीकृष्णजी का कौस्तुभमणि न्यारीही शोभादेरहाहै ५९ यह शार्ङ्ग धनुष और गदाहाथमें रखनेवाले पराक्रमी बासुदेवजी बायुके समान शीघ्र गामी श्वेतघोड़ोंको चलातेहुये चलेआतेहैं ६० अर्जुनसे खैंचाहुआ यह गांडीव धनुष कैसे शब्दोंको करताहै उस हस्तलाघवोंके छोड़े हुये यह तीक्ष्णबाण शत्रुओंको माररहेहैं ६१ और मुख न मोड़ने वाले बड़े लंबेरक्त नेत्रधारी पूर्णचंद्रमाके समान मुखवाले शूरबीरों के शिरोंसे यह पृथ्वी आच्छादित होती चली आतीहै ६२ उठाये हुये शस्त्रोंमें कुशल युद्ध कर्त्ताओंके परिघकी समान पवित्र चन्द- नादिसे चर्चित भुजदंड शस्त्रोंके द्वारा गिराये जातेहैं ६३ जिनके नेत्रऔर जिह्वा निकल पड़ीं वह सवारों समेत घोड़े पृथ्वीपर मर

करगिरेहुये सोरहेहैं ६४ पर्व्वतके शिखरको समान रूपवाले यह हाथी मारेगये और अर्जुनकेहाथसे घायल वा चूर्णीभूत अंगवाले हाथी पर्व्वतोंके समान घूमतेहैं ६५ यह गंधर्बनगरके समान रूप वाले रथ जिनके कि राजा मरगये वह स्वर्गबासियों के पवित्र बिमानोंके समान पृथ्वीपर गिरतेहैं ६६ अर्जुन के हाथसे अत्यन्त व्याकुलसेना ऐसी दिखाई देतीहै जैसे कि नानाप्रकारके हजारोंपशुओंके समूह केशरीसिंहसे व्याकुल होतेहैं ६७ आपके हाथीघोड़े रथ और पतियोंके समूहोंको मारनेवाले सन्मुख दौड़नेवाले यहबीर पांडवलोग राजाओंको मारतेहैं६८जैसे कि बादलोंसे सूर्य्य ढकजाताहै उसीप्रकार यह अर्जुन ढकाहुआ दिखाई नहीं देताहै उसकी ध्वजाकी नोकही दिखाई देतीहै और प्रत्यंचाका शब्दभीसुनाजाता है अब उसश्वेतघोड़ेवाले श्रीकृष्णजीको सारथी रखनेवाले युद्धमें शत्रुओं के मारनेवाले बीर अर्जुनको देखोगे ६९ जिसको कि तुम पूछतेथे हे कर्ण अबतुम इनपुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रुओंके संतप्तकरनेवाले एकरथपर नियत अर्जुन और बासुदेवजीको देखोगे७०जिसकेसारथी श्रीकृष्णजीहैं और धनुषजिसका गांडीवहै हे कर्णउसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजाहोगे७१ संसप्तकोंका बुलाया हुआ यह अर्जुन उनके समीप सन्मुख होकर उन महापराक्रमियोंका युद्धमें नाशकररहाहै ७२ ऐसे शल्यके बचनोंकोसुनकर कर्ण महाक्रोधयुक्त होकर बड़े अहंकार से बोला कि हे शल्य तुम महाक्रोधयुक्तसंसप्तकोंसे सबओरसे घिरेहुये अर्जुनकोदेखो ७३ जैसेकि सूर्य्यबादलों से ढकजाय उसीप्रकार ढकाहुआ यह अर्जुन दिखाई नहीं पड़ताहै हे शल्य अर्जुन ऐसेही अन्तका करनेवाला है जोकि युद्धकर्त्ताओंके समुद्रमें डूबरहाहै७४शल्यबोला कि कौन पुरुष वरुणको जलसेमारे और कौन मनुष्य इंधनसे अग्निको बुझावे और कौन हवाको पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्रको पानकरे ७५ मैं युद्धमें अर्जुनका मरना असंभव मानताहूं इन्द्रसमेत देवतालोग भी युद्धमें अस्त्रोंसे अर्जुनको बिजय नहींकरसके ७६ अब तेरीप्रस-

न्नताहै तो अपने बचनको कहकर चित्तको प्रसन्नकर वहतो युद्धमें किसीसेबिजय करनेके योग्यनहींहै अबतू दूसरेमनोरथको कर७७ जोभुजाओं से पृथ्वी को उठासके और क्रोधयुक्त होकर इनसब जड़ चैतन्योंका नाशकरे स्वर्गसे देवताओंको गिरासकै उस अर्जुन को युद्धमें कौन बिजय करसक्ता है ७८ साधारण कर्मी महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्व्वतके समान नियत महाबाहु कुन्तीके पुत्र शूरबीर भीमसेनकोदेखो ७६ कि सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णुबिजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकालकी शत्रुताको स्मरणकरता युद्धमें नियतहै ८० यह धर्मधारियों में श्रेष्ठ युद्धमें शत्रुओंके साथ कठिन कर्म करनेवाला शत्रुओंके पुरोंका बिजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियतहै ८१ यहकठिनतासे बिजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारों के समाननिज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्धमें नियतहैं ८२ यहपांच पर्व्वतोंके समान पांचो द्रौपदीकेपुत्र नियत हैं यह सब अर्जुनके समान युद्धाभिलाषी युद्धमें वर्त्तमानहैं८३बलकीवृद्धिवाले बड़ेतेजस्वी सत्यबक्ता द्रुपदके शूरबीर पुत्र जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न है वहभी नियतहैं ८४ इन्द्रके समान असह्य पूर्व समयमें क्रोधयुक्त मृत्युके समान यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्विकी हमारे सन्मुख आताहै ८५ उन दोनों पुरुषोत्तमोंके इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनोंसेना श्री गंगा और यमुनाके समान बड़े वेगसे भिड़गईं ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंबादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर और अच्छीरीतिसे भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सन्मुख गया और कर्णकैसे पांडवोंके सन्मुखगया१इस युद्धको ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़ेचतुरहो मैं युद्धमें शत्रुओंके पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं २ संजयबोले कि आपके पुत्रके हेतु अन्याय

होनेपर अर्जुनने शत्रुओंकी बड़ी सेनाको नियतजानकर व्यूहको रचा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियोंसे आवृत बड़ी सेनावाला व्यूह जिसमें मुख्यधृष्टद्युम्नथा शोभायमान हुआ३।४ चंद्रमा और सूर्य्यके समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्तिमान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ों समेत शोभितहुआ ५ दिव्य कवच और धनुष रखने वाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्नको ऐसा रक्षितकिया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करतेहैं तदनन्तर सेनाओंके सन्नद्ध होनेपर युद्धमें संसप्तकोंको देख कर ६।७ क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुषको टंकारता हुआ सन्मुखगया इसके पीछे मारने के अभिलाषी संसप्तकलोग अर्जुनके सन्मुख दौड़े ८ वह बिजयमें संकल्प करनेवाले मृत्युको तिरस्कार करके सन्मुखगये मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूहोंसेयुक्त मतवाले हाथी और रथोंसेव्याप्त ९ पत्तियोंसे युक्त शूरबीरोंके उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रतासे पीड़ितकिया अर्जुनके साथमें उनलोगोंका ऐसा कठिन युद्धहुआ १०जैसा कि उसका युद्ध निवात कवचियोंके साथ हमने सुनाथा रथ घोड़े ध्वजा हाथी इन युद्धमें बर्तमानोंको भी ११ बाण धनुष खड्ग चक्र फरसे आदि नानाप्रकारके शस्त्रोंको उठाये हुये भुजाओं वा नानाप्रकारके शस्त्रों १२को और शत्रुओंके हजारों शिरोंको अर्जुननेकाटा तबपातालतलकेसमान उससेनारूपी सागर में १३ इसप्रकार मग्नहुये उसरथको देखकर संसप्तकलोग गरजे तदनन्तर उसने उनशत्रुओं को मारकर फिरभी उत्तरकी ओरसे मारा १४ दक्षिण और पश्चिम ओरसेभी ऐसामारा जैसे कि क्रोध युक्त रुद्र पशुओंको मारतेहैं उसकेपीछे हे श्रेष्ठ पांचाल चंदेरी और संजयदेशियों के युद्ध १५ आपके युद्धकर्त्ताओं से बड़ेभारी कठिन हुये युद्धमें दुर्म्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसमेत सेनाको मारनेवाले प्रसन्नचित्त कृपाचार्य्य कृतबर्मा और सौबलके पुत्र शकुनीनेकोशल काशीमत्स्य कारूषकैकय १६।१७ और शूरसेनदेशी उत्तमशूरोंसमेत

युद्ध किया यह तीनों उनके युद्धका अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणोंके नाश करनेवाले १८ क्षत्री वैश्य और शूद्र बीरोंकेधर्म स्वर्ग और यशके उत्पन्न करनेवालेहुये हे भरतर्षभ इसकेपीछे बड़े बीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित बीर दुर्योधनने भाइयोंसमेत युद्धमें आकर पांडवपांचाल और चंदेरी देशियोंसमेत सात्विकीकेसाथ १६।२० युद्धकरनेवाले कर्णको चारों ओरसे रक्षित किया फिर कर्णने भी तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे बड़ीभारी सेनाको मारकर २१ उत्तम २ रथियोंको मर्दन करके युधिष्ठिरको पीड़ामान कियाहजारों शत्रुओंको वस्त्रशस्त्र शरीर और प्राणोंसेपृथक् कर२२ स्वर्ग और यशको स्पर्श करके अपने शूर बीरोंको प्रसन्नकिया हे श्रेष्ठ इसरीतिसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंका नाश करनेवाला युद्ध कौरव और संजियोंमें देवासुरोंके युद्धके समानहुआ २३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपरस्परयुद्धेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अरतालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय मनुष्योंका नाश करनेवाले कर्णने पांडवों कोउससेनामें जाकर राजा युधिष्ठिरको जैसे अचेतकिया वहसबमुझ सेवर्णनकरो १ युद्धमें पांडवोंके कौन२ से बड़े बीरोंने कर्णको रोंका और अधिरथी कर्णने कौन २ से बीरोंको मथकर युधिष्ठिरको पी-ड़ितकिया २ संजयबोले कि शत्रुओंका बिजय करनेवाला कर्ण सन्मुख बर्त्तमानपांडवोंकोजिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नथा देखकरशीघ्रही पांचालके सन्मुख दौड़ा ३ बिजयसे शोभायमान पांचालशीघ्रही उससन्मुख दौड़नेवाले महात्माके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि हंस सन्मुख जातेहैं ४ इसकेपीछे दोनों ओरसे हजारोंशंखोंके चित्तरोचक शब्द प्रकटहुये और भेरियोंके भयानक शब्द होनेलगे ५ तबनाना प्रकारकेबाणोंकागिरनाऔर हाथीघोड़ेवारथोंकेशब्द और भयकारी बीरोंके सिंहनाद उत्पन्नहुये ६ पर्व्वत वृक्ष और समुद्रसमेत पृथ्वी वायु और बादलोंसमेत आकाश अथवा सूर्य्य चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रा-

दिक समेत स्वर्ग यहसब प्रत्यक्षमें घूमनेलगे ७ सबजीवमात्रउस शब्दको इसप्रकारका मानकर घातकरनेसे बन्दहुये और छोटे २ जीवतो भयभीत होकर मरगये ८ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्तकर्ण ने शीघ्रहीअस्त्रको प्रकटकरके पांडवोसेनाको ऐसेमारा जिसप्रकार आसुरी सेनाको इंद्रमारताहै ६ बाणोंको छोड़तेहुये उसकर्णनेपांडवी सेनामें घुसकर प्रभद्रकोंके बड़े २ सतहत्तर बीरोंकोमारा १० इसके पीछे उस महारथीकर्णने सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार पच्चीसउत्तम बाणोंसेपच्चीसही पांचालोंको मारा ११ फिरउसबीरने सुनहरोपुंख वाले शत्रुओंके चीरनेवाले नाराचोंसे हजारों चंदेरो देशियोंको भी मारा १२ हेमहाराज इसकेपीछे पांचालोंके रथसमूहोंने इसरीति केबुद्धिसेबाहर कर्मकरनेवाले कर्णकोचारोंओरसे घेरलिया १३ फिर तो सूर्य्यकेपुत्रमहात्माकर्णनेदुस्सहपांचविशिखोंको धनुषपरचढ़ाकर पांच पांचालोंकोमारा १४ अर्थात् हेभरतर्षभ युद्धमेंभानुदेव, चित्रसेन सेनाबिन्दु, तपन, शूरसेन इनपांचालोंकोमारा १५ उस युद्धमें शूर बीर पांचालोंके मरनेपर पांचालोंमें बड़ाहाहाकारहुआ १६ हेमहा- राज तबतोपांचालोंके दश महारथियोंने कर्णको चारोंओरसे घेर- लिया उससमयभी कर्णनेशीघ्रही बाणोंसे उनकोमारा १७ इसके पीछे चक्रकेरक्षकदुर्जय कर्णकेपुत्र सुखेन और सत्यसेनने कर्णको त्यागकरयुद्ध किया १८ फिर कर्णके पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेनने कर्णको पीछेकी ओर से रक्षित किया १६ कवच और शस्त्रोंके धारण करने वाले धृष्टद्युम्न, सात्विकी, द्रौपदीके पुत्र, भीमसेन, जन्मेजय, शिखण्डी, और बड़े बीर प्रभद्रक २० चंदेरी, केकय, पांचालदेशी, नकुल, सहदेव, और मत्स्यदेशी शूरबीर यह सब मारने के इच्छा- वान् उस प्रहार करनेवाले कर्ण के सन्मुख दौड़े २१ और नाना प्रकारकी बाण बर्षासे इस कर्णको ऐसा मर्दन किया जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादल पर्व्वत को मर्दन करते हैं २२ इसके पीछे पिताके चाहनेवाले प्रहारकर्त्ताकर्णके पुत्रोंने और आपके अन्य२बीरोंने उन सब बीरोंको रोका २३ सुसेन भल्लसे भीमसेन के धनुषको काटकर

और सात नाराचोंसे भीमसेन को छातीपर घायल करके गर्जा २४ इसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुषको लेकर अपने बाणसे सुसेन के धनुषको २५ काटकर क्रोध से युक्त नाचते हुये भीमसेन ने दश बाणों से उसको घायल किया और बड़ीशीघ्रतासेकर्णकोभी तिहत्तर बाणोंसेघायलकिया २६ औरदेखने वाले मित्रोंके मध्यमें कर्णके पुत्र भानुसेनको घोड़े सारथीरथ शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणोंसेगिरादिया २७फिर क्षुरप्रसे कटा हुआ इसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभितमालूम हुआ जैसेकि नालसे जुदाहुआ कमल होताहै २८ भीमसेनने कर्णके पुत्रको मारकर आपके शूरबीरोंको फिर पीड़ामान करके कृपाचार्य्य और कृतवर्मा के धनुषोंको काटकर उनकोभी ब्याकुलकिया फिर दुश्शासनको तीन बाणसे और शकुनीकोछः लोहेके बाणोंसे घायलकरके उलूक और पत्री इनदोनोंको बिरथकिया हाय सुसेनकोमाराहै ऐसा कहतेहुये भीमसेनने शायकको लिया तबकर्णने उसकेउसबाणकोकाटकरतीन बाणोंसेउसकोभी घायलकिया २९।३१ इसकेपीछे भीमसेनने सुन्दर पर्व्ववाले बाणको लेकर सुसेनके ऊपरछोड़ा फिर कर्णने उसबाण कोभीकाठा ३२ इसकेपीछे पुत्रको चाहते निर्द्दय कर्णने मारनेकी इच्छासे तिहत्तर बाणों से निर्द्दय होकर भीमसेन को फिर घायल किया ३३ फिर सुसेनने बड़े भारबाहक उत्तम धनुषको लेकर पांच बाणोंसे नकुलको दोनोंभुजा और छातीपर घायलकिया ३४ तब नकुलभी भारसहनेवाले बीसबाणोंसे उसकोघायलकरके बड़ेशब्द को गर्जा और कर्णके भयको उत्पन्नकिया ३५ फिरमहारथी सुसेन ने शीघ्रगामी तीक्ष्णदशबाणोंसे उसको घायलकरके शीघ्रही क्षुरप्र से उसके धनुषको काटा ३६ इसकेपीछे क्रोधसे भरेहुये नकुल ने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें नौबाणोंसे सुसेनकोसेंक कर ३७ उस शत्रुहन्ताने बाणोंसे दिशाओंको ढकर इसके सारथीको घायल किया फिर सुसेनको तीनबाणसे ३८ और तीनभल्लोंसे उसके बड़े दृढ़ धनुषके तीनखण्ड करदिये इसकेपीछे क्रोधयुक्त सुसेनने दूसरे

धनुष को लेकर ३६ साठ बाणों से नकुल को घायल करके सात बाणों से सहदेव को छेदा परस्पर के युद्ध में शीघ्रतापूर्वक शायक मारनेवाले बीरोंका युद्ध देवासुरोंके युद्धके समान हुआ फिरसात्विकी तीन बाणों से वृषसेन के सारथी को मारकर ४० । ४१ भल्लसे उसके धनुष को काट घोड़ोंको भी सात बाणों से मारा एकबाणसे ध्वजाको काटकर तीनबाणों से उसकोभी हृदयपर घायलकिया ४२ इसकेपीछे एक मुहूर्त अपने रथपर अचेतहोकर फिर उठखड़ाहुआ युद्धमें सात्विकीके हाथसे सारथी घोड़े रथ और ध्वजासे रहित कियाहुआ वह वृषसेन ४३ सात्विकी के मारनेकी इच्छासे ढाल तलवार बांधकर सात्विकीके सन्मुख गया उस शीघ्रतासे आनेवाले वृषसेनकी ढाल तलवारको सात्विकीने ४४ बाराहकर्णनाम दशबाणोंसे काटा और दुश्शासनने उस रथ और शस्त्रसेहीन वृषसेन को देखकर ४५ अपने रथपर सवार करके शीघ्रही दूसरे रथपर सवारकिया इसकेपीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथपर सवार होकर ४६ तिहत्तरबाणों से द्रुपदके पुत्रोंको और पांचबाणोंसे सात्विकीको चौंसठ बाणोंसे भीमसेनको पांचसे सहदेवको ४७ तीनबाणों से नकुलको सातबाणोंसे शतानीक को दशबाणसे शिखण्डीको और सौबाणोंसे धर्म्मराजको घायलकिया ४८ हेराजा उस धनुषधारी कर्णकेपुत्रने इन और अन्य २ शूरवीरों को पीड़ामान किया ४६ इसकेपीछे उस अजेयने युद्धमें कर्णकेपृष्ठ भागको रक्षित किया फिर सात्विकीने नवीन लोहेके नौबाणों से दुश्शासन को ५० सारथी घोड़े और रथसे विहीन करके तीनबाण से उसके ललाटको घायलकिया फिर वह दुश्शासन बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर ५१ कर्णके बलको बढ़ाताहुआ पांडवोंके साथ युद्ध करनेलगा इसीप्रकार धृष्टद्युम्ननेदश बाणोंसे कर्णको घायलकिया ५२ द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे सात्विकीने सात बाणोंसे भीमसेनने चौंसठ बाणोंसे सहदेवने सात बाणोंसेनकुलने तीनसौबाणसे शतानीकने सातबाणसे ५३ शिखंडीने

दशबाणोंसे और वीर धर्म्मराजने सौबाणोंसे घायल किया ५४हे राजेन्द्र बिजयाभिलाषी इनवीरोंने और अन्यवीरोंने उसमहायुद्ध में बड़ेभारी धनुषधारीको पीड़ामान किया५५ फिररथसे घूमकर उस शत्रुबिजयी वीर कर्णने बिशिषनाम दशदश बाणों से प्रत्येक को घायल किया ५६ हेमहाबाहो हमने महात्माकर्णकेअस्त्र बल और हस्तलाघवताको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया ५७ क्रोधसे बाणों को लेते चढ़ाते औरमारते हुये कर्णको नहींदेखा परन्तु शत्रुओं को मृतक हुआ देखा ५८ उससमय तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाशभर ब्याप्त होगया उस स्थानपर आकाश लालबादलोंसे ब्याप्त होनेकेसमान परिपूर्ण होगया ५९ उससमय धनुष हाथमेंलिये नाचताहुआ प्रतापवान् कर्ण जिन २ के हाथसे घायलहुआथा उन२को एकएक करके तिगुने बाणोंसे घायलकिया ६० फिर हजार बाणोंसे उनको घायल करके बड़ेबेगसे गर्जा इस के पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सबलोग घायल होहोकर हट गये ६१ शत्रुओंका घायल करनेवाला कर्ण बाणोंकी बर्षा से उन बड़े२ धनुषधारियोंको मथकर परस्पर मर्द्दनरूप पीड़ासेरहित हो-कर हाथियोंकी सेनाओंमें आया ६२ वहां उस कर्णने मुख न मो-ड़नेवाले चंदेरी देशियोंके तीनसौ रथोंको मारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकिया ६३ इसकेपीछे हेराजा सबपांडव सात्विकी और शिखण्डी जोकि राजाको कर्णसे रक्षा कररहेथे उन सबनेआकर युधिष्ठिरको चारों ओरसे रक्षितकिया ६४ उसीप्रकार सावधान शूरवीर महाधनुषधारी आपके सब युद्धकर्त्ताओंने युद्ध में दुर्ज्जय कर्णको चारोंओरसे रक्षितकिया ६५ हेराजा फिर नानाप्र-कारके बाजोंके शब्द प्रकटहुये और सन्मुख गर्जनेवाले वीरों के सिंहनाद उत्पन्नहुये ६६ इसके पीछे निर्भय पांडव और कौरव फिर सन्मुखहुये पांडवोंका मुख्य युधिष्ठिरथा और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

संजयबोले कि इसकेपीछे हजारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उससेनाको चीरकर युधिष्ठिरके सन्मुखगया १ वहां कर्ण निर्भयता पूर्व्वक शत्रुओंसे संतप्त होकर नानाप्रकारके हजारों शस्त्रोंको काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणोंसे शत्रुओंको घायलकिया २ कर्णने उनके शिर जंघा और भुजाओंको काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वीपरपड़े और बहुतसे भागगये ३ फिर सात्विकीके कहनेपर द्राविड़ निषाद और शूरवीर पत्तीलोगयुद्ध में मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुखगये ४ वह लोगभी कर्णके हाथ से शायक और भुजाओंसे रहित होकर मारेगये और एकसाथही पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसेकि टूटाहुआ तालका बन गिरपड़ताहै ५ इसरीतिसे युद्धभूमि में दिशाओंको व्याप्तकरते सैकड़ों और हजारों शूरवीर मृतक होकर पृथ्वीपर बर्त्तमानहुये इसके पीछे पांडव और पांचालोंने मृत्युके समान सूर्यके पुत्र कर्णको ऐसे रोका जैसे कि मन्त्र और औषधियोंकेद्वारा रोगको रोकतेहैं ६।७ वहकर्ण उन को भी मर्द्दनकरके फिर युधिष्ठिरके पास ऐसे पहुंचा जैसे कि मन्त्र वा औषधियोंके कर्मको उल्लंघनकरनेवाला महाकठिन रोगहोताहै ८ राज्यके अभिलाषी पांडव पांचाल और केकयलोगोंसे रोकाहुआ वह कर्ण उल्लंघन करनेको ऐसेसमर्थनहींहुआ जैसे कि काल ब्रह्मज्ञानीको नहीं उल्लंघन करसक्ताहै ९ इसकेपीछे समीप बर्त्तमान शत्रुबिजयी रोकेहुये कर्णसे वह क्रोधसे रक्तनेत्र युधिष्ठिरबोले १० हेवृथा दीखनेवाले सूतपुत्र कर्ण मेरे बचनकोसुन तू सदैव युद्धमें महाबेगवान् अर्जुनसे ईर्षा करताहै ११ और दुर्योधन के मतमें होकर सदैव हमलोगोंको पीड़ादेताहै तेरा तेज बल पराक्रम और पांडवोंकेसाथमें जो शत्रुताहै १२ उस सबको तू बड़ीबीरतामें नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्धमें तेरेयुद्धके निश्चयका नाशकरूंगा १३ हेमहाराज पांडव युधिष्ठिरने कर्णसे ऐसेबचन कहके सुनहरी

पुंखवाले दशबाणोंसे उसको घायलकिया १४ हेभरतबंशी शत्रुओं के बिजयी कर्णने हंसकर बिषदन्तनाम दशबाणोंसे उसको घायल किया १५ हेश्रेष्ठ कर्णके हाथसे घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसेकि हव्यके कारणसे अग्नि प्रज्वलितहोताहै १६ प्रलयकालकरनेकी इच्छावाली ज्वालाओंकी मालाओं सेव्याप्त युधिष्ठिरका शरीर ऐसा दिखाई दिया जैसेकि प्रलयकाल में कामनाओंका भस्मकरनेवाला दूसरा संवर्त्तक अग्निहोताहै १७ हेराजेन्द्र इसकेपीछे वह सेनाके मनुष्य जोकि अत्यन्त प्रकाशित शस्त्रोंके धारण करनेवाले थे और जिनके प्रकाशमान बस्त्र और माला गिरपड़ीथीं वेदशोदिशाओंको भागे १८ उसकेपीछे सुवर्णसे जटित बहुतबड़े धनुषको टंकारकर पर्व्वतोंकेभी बिदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्ण बाणोंको चढ़ाया १९ इसकेपीछे राजाने कर्णकेमारने की इच्छासे शीघ्र कर्णतक खींचेहुये यमराजके दण्डकी समान बाणकोछोड़ा २० फिर वह उस बेगवान्के हाथसे छूटाहुआ बिजली के समान शब्दायमान बाण अकस्मात् उस महारथी कर्ण के बाईं कोखमें नियतहुआ २१ तब वह महाबाहु उसबाणसे पीड़ितहोकर रथपर धनुषको छोड़कर अचेत होगया २२ इसकेपीछे दुर्योधन की बड़ीसेनाने कर्णको उसदशामें बिपरीत चेष्टायुक्त देखकर बड़ाहाहाकारकिया २३ हेराजा युधिष्ठिरके पराक्रमको देखकर पांडवोंका सिंहनाद और क्रीड़ापूर्व्वक किलकिला शब्द प्रकटहुआ २४ फिरबड़े पराक्रमी कर्णने थोड़ेहीकाल में सचेतहोकर राजाके मारने का मनोरथकिया २५ और उस साहसीने सुवर्णजटित बिजयनाम धनुष को टंकारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे पांडवोंको घायलकिया २६ इसकेपीछे युद्धमें महात्मा राजाके चक्रकेरक्षक पांचालदेशी चंद्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरप्रोंसे घायलकिया २७ धर्म्मराजके वह दोनों बड़ेवीर दोनों पहियोंकीओर रथके समीप ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि चन्द्रमाकेपास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होतेहैं २८ युधिष्ठिरने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे कर्णको फिरछेदा और सुषेन

वा सत्यसेनको तीनबाणोंसे घायलकिया २६ शल्यको नब्बेबाणों
से और कर्णको तिहत्तर बाणोंसे पीड़ामान किया और उनके उन
रक्षकोंको सीधे चलनेवाले तीन२ बाणोंसे घायलकिया ३० इसके
पीछे धनुषको चलायमान करताहुआ वह कर्ण बहुतहंसा और
भल्लसे राजाको व्यथितकर साठबाणों से घायल करके गर्जा ३१
इसकेपीछे युधिष्ठिर पांडवके बड़े२वीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिरकी
रक्षाकरनेको कर्णके सन्मुखदौड़े और बाणों से उसको पीड़ामान
किया ३२ सात्विकी, चेकितान, युयुत्सु, पांड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौप-
दीकेपुत्र, प्रभद्रक ३३ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपालकेपुत्र,
कारुष्य, मत्स्य, कैकय, काशी, कोशिल इनदेशोंके शेषशूरवीरोंने ३४
सुसेन को घायलकिया और पांचालदेशी जन्मेजय ने शायकों से
कर्णको पीड़ित किया ३५ वाराह, कर्ण, नाराच, नालीक, वत्स-
दत्त, विपाट, क्षुरप्र, चुटका, मुख ३६ और नानाप्रकारके उग्रशस्त्रों
से और रथ हाथी घोड़े और अश्व सवारोंसे कर्णको घेरकर मारने
की इच्छासे सन्मुख दौड़े ३७ सबप्रकार करके पांडवों के उत्तम
शूरवीरोंसे घिराहुआ होकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट करतेहुये उस कर्णने
बाणोंसे दिशाओंको व्याप्त करदिया ३८ इसकेपीछे बाणरूप बड़ी
अग्नि और पराक्रमरूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप कर्ण
पांडवरूपी बनको भस्मकरताहुआ इधरउधर भ्रमण करनेलगा ३९
फिर उस बड़े धनुषधारी वीरकर्णने हंसकर महाअस्त्रोंको चढ़ाकर
बाणोंसे महाराजा युधिष्ठिरके धनुषकोकाटा ४० इसकेपीछे कर्णने
एक पलभरमेंही नब्बे बाणोंको चढ़ाकर युद्धमें राजाके कवच को
छेदा ४१ उससमय वह रत्नजटित सुवर्णसेखचित कवच पृथ्वीपर
गिरताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसाकि बिजलीका रखनेवा-
लाबादल वायुसे ताड़ित होकर सूर्य्यसे चिपटाहुआ होता है ४२
उस महाराजके शरीरसे गिराहुआ अपूर्व्व रत्नों से अलंकृत वह
कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रिके समयबाद-
लोंसेरहित आकाश होताहै ४३ इसकेपीछे बाणोंसे टूटे कवच रु-

धिरसे भरेहुये उस राजाने केवल लोहेकी बनीहुई शक्तिको कर्णके ऊपर फेंका ४४ कर्णने उसअग्निरूपी शक्तिको आकाशमेंही सात बाणोंसे काटा और वहशक्ति पृथ्वीपर गिरपड़ी ४५ इसके पीछे पीछे पांडव युधिष्ठिर चार तोमरोंसेकर्णको दोनोंभुजा ललाट और हृदयपर घायल करकेबड़ी प्रसन्नतासे गर्जा ४६ फिररुधिरभरेक्रोध युक्त सर्पके समान श्वासलेनेवाले कर्णने भल्लसे ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसे पांडव युधिष्ठिरको घायलकिया ४७ और उसकेदोनों तूणीरोंको काटकर रथको तिलतिलके समान चूर्णकरडाला जिन कृष्णवर्णबालरखनेवालेदत्तवर्ण घोड़ोंनेयुधिष्ठिरको सवारकिया ४८ राजा उन घोड़ोंके रथपर चढ़कर मुखमोड़कर घरकोचलदिया इस रीतिसे वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछे रहनेवाला मर गयाथावहहटगया ४६ फिर वह महाखेदितचित्तहोकर कर्णकेसन्मुख होनेको समर्थनहींहुआ फिरकर्णने पांडवयुधिष्ठिरके पासजाकर ५० बज्र अंकुश मत्स्य ध्वजा कच्छप और कमल आदिके चिह्नवाले हाथसे उसको पकड़ना चाहा ५१ और अपने पवित्र होनेको हाथ से कन्धेको छूकर बलसे पकड़ना चाहाही था कि कुन्ती का बचन उसको स्मरण होआया ५२ तब शल्यने कहाकि हेकर्ण इस उत्तम राजाको मतपकड़ो वहपकड़तेही तुझको भस्मन करडाले ५३ हेरा-जा इस बातके सुनतेही वह कर्ण हंसा और पांडवोंकी निन्दाकरता हुआ बोला बड़े कुलमें उत्पन्न क्षत्रीधर्म में नियत होकर ५४ इस बड़े युद्धमें भयभीततासे प्राणोंकी रक्षा करते युद्धको त्यागकर कैसे जातेहो इससे मेरेमतसे आपक्षत्रीधर्ममें कुशल नहींहो ५५ आप ब्राह्मणोंके समूहोंमें वेदपाठ और यज्ञ करनेमें योग्यहो हेकुन्ती-केपुत्र युद्ध मतकरो और बीरोंके सन्मुख मतहो ५६ इनको अप्रिय मतकहो बड़े युद्धमें मतजाओ उस बड़े बीरने इसरीति से कहकर पांडवको छोड़ ५७ पांडवी सेनाको ऐसे मारा जैसे बज्रधारी इन्द्र आसुरी सेनाको मारताहै हे राजा इसके पीछे लज्जायुक्त राजायु-धिष्ठिर शीघ्रही हटगया ५८ तदनन्तर उस अजेय राजाको हटाहु-

आ मानकर आगे लिखेहुये बीर इसके पीछे पीछे चले चंदेरीदेश वाले पांडव पांचाल महारथी सात्विकी ५६ शूर द्रौपदीके पुत्र नकुल सहदेव इत्यादि तदनन्तर युधिष्ठिरकी सेनाको फिराहुआ देख कर ६० अत्यन्त प्रसन्न चित्त कर्ण कौरवों समेत पीछेकी ओरसे चला और धृतराष्ट्रके पुत्रोंके भेरी शंख मृदंग धनुष ६१ औरसिंहनादोंके शब्दहुये हे कौरव्य महाराज फिरयुधिष्ठिरने शीघ्रही६२ श्रुतकीर्त्ति के रथपर चढ़कर कर्णके पराक्रम को देखा फिर धर्मराज अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर ६३ महाक्रोधित हो अपने शूर बीरोंसे बोला कि तुम कैसे खड़ेहो इनको क्योंनहीं मारते तबवह राजाकी आज्ञापाकर पांडवोंकेसब महारथी ६४ जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा आपके पुत्रोंके सन्मुख दौड़े तब वहां शूरवीरोंके बड़े कठोरशब्द हुये ६५ रथहाथी घोड़े औरपत्तियों के जहांतहां शब्द होनेलगेफिर उठो घायलकरो सन्मुख होजाओ दौड़ो६६ इसप्रकार कीपरस्परमें वार्त्ता करतेहुये शूरवीरोंने उसबड़े युद्धमें एकने एकको मारा और आकाशमें बाणोंके कारण घटासी छागई ६७ परस्पर में मारने वाले लौटेहुये उत्तम पुरुषोंके हाथसे युद्धमें ध्वजापताकाओंसे खंडित घोड़े सारथी और शस्त्रोंसे रहित एकएक शरीरकेअंगों से चूर्णित राजालोगमृतक होकर पृथ्वीपरऐसेगिरपड़े६८जैसे कि टूट २ करपहाड़ोंके शिखर गिरपड़तेहैं इसीप्रकार सवारों समेत ६९ उत्तम २हाथी मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसेकिवज्र से टूटेहुये सारोह भूषण और कवचोंसे संयुक्त पर्व्वत गिरतेहैं ७० हजारों सवारों समेत घोड़े जिनके बहुतसे शूरबीर मारेगये वहभी पृथ्वीपर गिरपड़े और जिनके शस्त्र अत्यन्त टूटगये वह रथहीन होकर रथोंसेही मारेगये ७१ और युद्धमें सन्मुख युद्धकरने वाले बीरोंसे पत्तियोंके हजारों समूह मारेगये बड़ी लंबी लाल आंखऔर चन्द्रमा कमलकेसमान मुख रखने वाले ७२ युद्ध कुशल पुरुषोंके उत्तम शिरोंसे सब ओरमें पृथ्वी आच्छादित होगई और जोशब्दा पृथ्वीपर हुआउसकाशब्दमनुष्योंने आकाशमेंभीसुना७३ उत्तमगीत

और बाजों समेत अप्सराओंके समूह हजारों बीरलोगोंको ७४ बिमानोंमें बैठाकर लिये जातेथे उस बड़े आश्चर्यको प्रत्यक्षमेंदेख कर स्वर्गकी अभिलाषासे ७५ अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरबीरोंने बड़ी शीघ्रता से परस्परमें मारा और रथियोंने रथों समेत बड़ी बीरता से अद्भुत युद्धकिया ७६ पत्तियोंने पत्तियोंके साथ हाथियोंने हाथियों के साथ घोड़ोंने घोड़ोंके साथ मनुष्य और हाथियोंका नाशकारक युद्धकिया ७७ इस रीतिके युद्ध जारीहोने और धूलसे सेनाके ढकजानेपर कचाकच युद्धहुआ और एकने एकको वा अपनोंने अपने को मारा और अन्योन्यमें बालोंका पकड़ना दांतोंसेकाटना, नखोंसे विदीर्ण करना ७८ मुष्टि प्रहारकरना भुजासे भुजाको तोड़ना यह सबयुद्ध पाप और प्राणोंके नाशकारी हुये इसरीतिसे हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाश कारक युद्धजारी होनेपर ७६ मनुष्य हाथी और घोड़ोंके शरीरोंसे रुधिरकी ऐसी नदी बह निकली जिस नेहाथी घोड़े और मनुष्योंके कटेगिरे शरीरोंको पृथ्वीपर बहाया ८० मनुष्य हाथी और हाथियोंके परस्पर जुटजाने पर घोड़े हाथी और सवारोंकारुधिररूप जलरखनेवाली ८१ महाघोर मांस रुधिरमज्जा रूप कीचसे संयुक्त नदी मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीरोंकोबहानेवाली और भयभीतोंको भयकी करानेवाली थी बिजयाभिलाषी बीरोंने उस अपार नदी के पार को पाया ८२ और कोई २ उछलते डूबतेहुये स्नान करने के अभिलाषी हुये हेभरतर्षभ उनभय भीत युक्त शरीर वाले उत्तम रक्तवर्ण कवच और शस्त्रों के धारण करने वालोंने ८३ उस नदीमें स्नान किया और पानकरतेही कुम्हलाकर लज्जित हुये हमनेरथ घोड़े मनुष्य हाथी भूषण ८४ कपड़े और टूटे हुये कवचोंको पृथ्वी दिशा और आकाश समेत बहुधा रक्त वर्णही देखा ८५ हे भरतवंशी रुधिरके गंध स्पर्श रस और कठिनतारूप समेत शब्दोंसे ८६ बहुतसी सेनामें व्याकुलता प्राप्त हुई तब भीमसेन और सात्विकी जिनमें मुख्यथे वह बीर उसअत्यन्त घायल और मृतक सेनाके सन्मुख फिरगये ८७ उससमय

उन चढ़ाई करने वाले बीरोंका वेग असह्य हुआ ८८ हे राजा आपके पुत्रोंके समेत बड़ी सेनाकेमुखमुड़ गये और मनुष्य घोड़ोंसे व्याकुल वह आपकी सेना रथघोड़े औरहाथियोंसे रहित होकर८९ टूटीढाल टूटे कवच और खंडित शस्त्र धनुषवाली चारों ओरसे ऐसे तिर्र बिर्र होकर भागी ९० जैसेकि बन में सिंहसे पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागतेहैं ९१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय॥

संजयबोले कि हेमहाराज आपकी सेनाके सन्मुख दौड़नेवालेपांडवोंको देखकर दुर्योधनने सेनाको हरप्रकारसे रोका १ हे भरतर्षभ उस दुर्योधनने बड़े २ शूरबीरोंको और सेनाको अनेक प्रकार से रोका परन्तु आपके पुत्रकेभी पुकारनेसे वहलोग नहीं लौटे २ तबउसके पीछे पक्ष प्रपक्ष समेत सौबलका पुत्र शकुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्धमें भीमसेनके सन्मुख गये ३ कर्णभी राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखकर मद्रके राजासे यह बोलाकि तुम भीमसेनके रथके समीप चलो ४ कर्णकेइस बचनको सुनकर राजा मद्रने हंसवर्णके उत्तम घोड़ोंको वहां पहुंचाया जहांकि भीमसेनथा ५ हेमहाराज युद्धको शोभा देने वाले कर्णके प्रेरित घोड़े भीमसेन के रथको पाकर अच्छे प्रकारसेभिड़े ६ हे भरतर्षभ क्रोधयुक्त भीमसेननेकर्णको आताहुआ देखकर उसके मारनेका उपाय बिचारा ७ और बीरसात्यिकी और धृष्टद्युम्न से बोला कि तुम धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी रक्षाकरो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देहको नकरे और मुझपरकर्णचला आताहै९ सोमैं आजउसको युद्धमेंबधकरके अपनेजयके होने को विधिकरताहूं१० मैंतुमसे सत्य सत्यकहताहूं कि घोर युद्धके द्वारा कितो मैंही कर्णको मारूंगा अथवा कर्णमुझको मारेगा ११ अबमैं राजाको आपलोगोंके सुपुर्द करताहूं तुम सबलोग अनेक प्रकारसे उसकी रक्षाके उपायको करो १२ वहम-

हाबाहु भीमसेन इस प्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्दसे सिं-
हनाद को करके दिशाओंको शब्दायमान करता हुआ कर्णके रथकी
ओरगया १३ इसके पीछे मद्रदेशियोंका स्वामी समर्थ शल्य युद्धके
चाहने वाले शीघ्रता पूर्वक आनेवाले भीमसेनको देखकर कर्णसेबो-
ला १४ हेकर्ण इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुतकालसेदबेहुये क्रोधको
तेरे ऊपर निकालनेकी इच्छावाले पांडुनन्दन भीमसेनको देखो१५
हेकर्ण पूर्व्वमें मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरने परभी इसका
इस प्रकारका रूप नहीं देखा था जैसाकि अब देखने में आता
है १६ यह क्रोधयुक्त तीनों लोकोंके भी हटाने में समर्थहै इससमय
इसने प्रलय कालकी अग्निके समान देदीप्यमान अपने रूपको
धारण कियाहै १७ संजय बोले हेराजा शल्यके इस प्रकारके कह
तेही कहते में महाबिकराल रूप भीमसेन कर्णके सन्मुख बर्त्त
मान हुआ इसके पीछे हंसता हुआ कर्ण उस सन्मुख आये हुये
भीमसेन को देखकर शल्यसे यह बचन बोला १८। १६ हेमद्रदेश
के स्वामी अब तुमने भीमसेनके विषयमें जो बचन मुझसे कहा
वह सत्यहै इसमें सन्देह नहीं है २० यह भीमसेन बड़ा शूरबीर
क्रोधमें भरा शरीरसे असादृश्य पराक्रमियों मेंभी अधिक पराक्रमी
है २१ बिराट नगर में गुप्त रहने वाली द्रौपदीके अभीष्ट चाहने
वालेने केवल भुज बलकेही द्वारा २२ गुप्त उपायमें आश्रित और
प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहों समेत मारा अबकवच
धारी क्रोधसे ब्याकुल यह भीमसेन दण्डधारी मृत्युके संगभी युद्ध
करने को समर्थहै फिर यह मेरे मनका अभिलाष बहुत कालसे
होरहाहै कि मैं युद्धमें अर्जुन को मारूं अथवा अर्जुन मुझेमारै वह
मेरा प्रयोजन भीमसेनके लड़नेसे कदाचित् अभी होजाय क्योंकि
भीमसेन के मरने पर अथवा बिरथ करने पर अर्जुन मेरे सन्मुख
आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभहोगा २३। २४। २५। २६ अब
यहां जो उचित समझतेहो उसको शीघ्रतासेकरो बड़ेतेजस्वी कर्णके
इस बचनको सुनकर २७ शल्य कर्णसे बोला कि हे महाबाहो तुम

बड़े पराक्रमी भीमसेन के सन्मुखचलो २८ तुमभीमसेन कोबिजय करके अर्जुनको पाओगे जोतेरे चित्तका अभीष्ट बहुत कालसे हृदय में वर्त्तमानहै २६ हे कर्ण वह अभीष्टतेरा तुझको प्राप्तहोगा इसमें मिथ्या न होगा ऐसा कहनेपर फिर कर्ण शल्य से बोला ३० कि में युद्धमें अर्जुनको मारूंगा वा अर्जुन मुझ को मारेगा तुम युद्धमें मनलगाकर वहां चलोजहां भीमसेनहै ३१ तबसंजयनेकहाहेराजा फिर शल्य रथके द्वारा वहांगया जहांपर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने आपकीसेनाको भगाया था ३२ हे राजेन्द्र इसके पीछे कर्ण और भीमसेनकी सन्मुखतामें तूरी और भेरी आदिबाजोंके शब्दहोनेलगे ३३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने उसकी महा दुर्जय सेनाको साफ़ और तीक्ष्ण नाराचोंसे दिशाओंमें भगा दि-या ३४ हेमहाराज धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन और कर्ण का महा भयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ ३५ इसके पीछे एकक्षण मात्रमेंही भीमसेन कर्णकी ओर दौड़ा फिर सूर्य्य के पुत्र धर्मात्मा कर्णने उस आते हुये भीमसेनको देखकर ३६ अत्यन्त क्रोधितहो-कर छाती पर घायल किया और बाणोंकी बर्षासे ढकदिया ३७ कर्णके हाथसे छिदे हुये भीमसेनने भी कर्णको बाणोंसे ढककर टेढ़े पर्व्व वाले नौ बाणोंसे देहमें घायल किया ३८ फिर कर्णनेबाणोंसे उसके धनुषको दोस्थानों से काट कर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकारके कवचोंके काटने वाले नाराचसे उसकी छाती को घायलकिया ३६ फिर मर्मों के जानने वाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको ४० मर्म स्थलोंमें घायल कियाऔर पृथ्वी वा आकाश को कंपायमान करता हुआ महा घोर शब्दको गर्जा ४१ फिर कर्णने उसको पच्चीस नाराचोंसे ऐसे घायलकिया जैसे कि बनमें मतवाले हाथीको उल्काओं से घायल करतेहैं ४२ इसके पीछे शायकों से घायल शरीर क्रोधसे व्याकुल क्रोध और ईर्षासे लाल नेत्र करके उसके मारनेकी इच्छासे भीमसेन ने ४३ बड़े भारबाही पर्व्वतोंकेभी छेदने वाले उग्र बाणको धनुषमें चढ़ा-

या ४४ और बड़े धनुषधारी वेगवान् बायुपुत्र भीमसेनने कर्णके मारनेकी अभिलाषा से कर्ण पर्य्यन्त धनुषको खैंच कर वहबाण चलाया ४५ पराक्रमी भीमसेन के हाथसे छूटे हुये बज्र और बिजली के समान शब्दायमान उस प्रबल बाणने युद्ध में कर्ण को ऐसे घायलकिया जैसे कि बज्रकावेग पर्वतको व्याकुल करके घायल करताहै ४६ हे कौरव्य वह सेनापति कर्ण भीमसेनके हाथ से घायल और अचेत होकर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा४७ तबतो राजा मद्र कर्णको अचेत देखकर युद्धमें शोभा देनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूरलेगया ४८ इसके पीछे कर्णके बिजय होनेपर भीमसेन ने दुर्य्योधनकी बड़ी सेनाको ऐसा भगाया जैसे कि पूर्वकाल में इन्द्रने दानवोंको भगायाथा ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णापयानोनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेनने यह अत्यन्त कठिन कर्म किया जिसने अपने हाथ से कर्णको रथके स्थानमें अचेत करके गिराया १ अकेला कर्णयुद्धमें सृंजियोंसमेत सब पांडवोंकोमारेगा हेसंजय यहबात बारम्बार मुझसे दुर्य्योधनने कहीहै २ युद्धमेंभीमसेनके हाथसे बिजय कियेहुये कर्णको देखकरमेरे पुत्र दुर्य्योधनने क्याकिया ३ हेमहाराजयुद्धमें आपकापुत्र कर्णको मुखमोड़ने वाला देखकर अपने निजभाइयोंसे बोला कि ४ तुम्हारा भलाहो तुम शीघ्रजाकर कर्णको भीमसेनके महाकष्टरूपी अथाह समुद्र में डूबे हुये कर्णकी सबओरसे रक्षाकरो ५ राजाकी आज्ञापातेही वह सब लोग महाक्रोधयुक्त होकर भीमसेन के सन्मुख ऐसेहुये जैसे कि अग्निके सन्मुख पतंग होतेहैं ६ श्रुतवान्, दुर्धर, क्राथ, विवित्सु विकट, सम, निषंगी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द ७ दुष्प्रधर्षसुबाहु, वातवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह, दुर्मद, जलसंध, शल, सह, इनमहापराक्रमी रथोंसे रक्षित धृतराष्ट्र के पुत्रोंने भीमसेनको पाकरचारों

औरसेघेरलिया ८।६ औरनानाप्रकारके रूपवालेबाग्ग समूहोंकोचारोंओरसेफेंका फिर वह महाबली भीमसेनने उन्होंके हाथसे पीड़ामानहोकर १० उनआतेहुये आपके पुत्रोंके पन्द्रहरथोंसमेत पचास रथियोंको मारा ११ इसकेपीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेनने भल्लसे विवित्सुके शिरको देहसे जुदाकिया और वह मरकर पृथ्वीपरगिर पड़ा १२ पूर्णचन्द्रमाके समान कुंडलभी उसकेशिरके साथहीगिरा हेराजा तबतो उसके सबभाई उसशूरवीर अपने भाईको मराहुआ देखकर १३ युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेनके सन्मुखगयेइसके अनन्तर उस भयानक भीमसेनने उस महायुद्धमें दूसरेदो भल्लोंसे १४ आपके दोपुत्रोंके प्राणोंका हरणकिया हेराजा हवासे टूटेहुये वृक्षोंके समान देवकुमारोंके समान वह विकट और सहनाम दोनोंभाई भीमरकर पृथ्वीपरगिरपड़े इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने क्राथकोभी यमलोकमें पहुंचाया १५।१६ अत्यन्ततीक्ष्ण नाराचका माराहुआ वहक्राथ पृथ्वीपर गिरपड़ा तबतो महाकठिन हाहाकार उत्पन्नहुआ १७ आपके धनुषधारी वीरबेटोंके मरने और उनकी सेनाके चलायमान होनेपर फिर महाबली भीमसेनने १८ युद्धमें नन्द उपनन्दको यमलोकमें पहुंचाया उसकेपीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल १६ युद्धमें कालरूप भीमसेनको देखकर भागे फिरबड़ेदुःखी कर्णने आपकेपुत्रोंको माराहुआ देखकर २० फिर हंसवर्ण घोड़ोंको वहांहीचलाया जहांपर पांडव भीमसेनथा हेमहाराज राजामद्रके चलायेहुये वह बेगवान् घोड़े २१ भीमसेनके रथको पाकर अच्छीरीतिसे भिड़ हेराजा धृतराष्ट्र युद्धमें कर्ण और पांडव भीमसेनका वह युद्ध महाकठिनघोर रूपरूधिरका उत्पन्नकरनेवाला हुआ फिरउनभिड़ेहुयेमहारथियोंकोदेखकर २२।२३ मैंनेबिचारकिया कि यहयुद्ध कैसेहोगा इसकेपीछे युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेनने बाणों से २४ कर्णको आपके पुत्रोंके देखतेहुये ढकदिया फिरअत्यन्तक्रोधयुक्त अस्त्रोंके जाननेवाले कर्णनेभी भीमसेनको २५ ठेढ़े पर्ववाले नौभल्लोंसे पीड़ामानकिया तबउस घायल महाबाहु भयानक परा-

क्रमी भीमसेनने २६ कानतक खैंचेहुये सात विशिखोंसे कर्णको पीड़ामानकिया हेमहाराज इसकेपीछे बिषैले सर्पकी समान प्रवास लेनेवाले कर्णने २७ बाणोंकी बड़ी बर्षासे भीमसेन को ढकदिया फिरमहाबली भीमसेननेभी अपनेबाणोंकी वृष्टिसे उसकर्णको ढक दिया २८ और कौरवोंके देखतेहुयेगर्जा इसकेपीछे अत्यन्त क्रोध-युक्त कर्णने दृढ़धनुषको लेकर तीक्ष्णधारवाले दशबाणोंसे भीमसेन को पीड़ामान करके तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसकेधनुषकोकाटाइस-केपीछे बड़ेपराक्रमी महाबाहु कर्णकेमारनेकी इच्छासे गर्जनाकरते हुये भीमसेनने सुवर्णबस्त्रोंसे अलंकृत कालदण्डके समानघोरपरि-घको लेकरफेंका कर्णनेउसवज्र और बिजलीके समानआतेहुये परि-घको २९।३०।३१।३२ विषैले सर्पोंकीसमान बाणोंसे टुकड़े २कर दियातबतोशत्रुसंतापी भीमसेनने बहुतबड़े दृढ़धनुषको लेकर ३३ कर्णको मारबाणोंकेआच्छादित करदिया उसकेपीछे कर्णऔरभीम-सेनका ऐसाघोरयुद्धहुआ ३४जैसे कि परस्पर मारनेकी इच्छाकरने वाले महाबली बन्दरोंके राजाओंका युद्ध कटकटकर वारंबारहोता है हेमहाराज इसकेपीछे कर्णने दृढ़धनुषको चढ़ाकर तीनबाणसे ३५ भीमसेनको कर्णमूलपर घायलकिया कर्णकेहाथसे अत्यन्तघायल महाबली भीमसेननेकर्णकेशरीरको छेदनेवालेघोरबिशिखकोहाथमें लेकरफेंकावहबाणउसकर्णके कवचमेंघुस शरीरको छेदकर ३६।३७ पृथ्वीमें ऐसासमागया जैसेकि सर्पबामीमें समाजाताहै इसकठिन घातसे महापीड़ित ब्याकुल और अचेतकेसमान ३८ वहकर्ण रथ-पर ऐसाकंपितहुआ जैसेकि पृथ्वीके भूकम्पमें पर्व्वत हिलताहै हे महाराज इसके पीछे क्रोध और व्याकुलतासे कर्णने ३९ भीमसेन कोपच्चीस नाराचोंसेघायलकिया और अनेकबाणोंसे देहकोघायल करके एकबाणसे ध्वजाकोकाटा ४० और भल्लसे उसके सारथी को कालकेबशकिया और शीघ्रही तीक्ष्णबाणोंसे उसके धनुषको काटकर ४१ हंसतेहुये कर्णने एकमुहूर्त्तमें सावधानीसे भयकारी कर्मकरने वाले भीमसेनको रथसेबिरथ करदिया ४२ हेभरतर्षभवह

बायुकेसमान रथसे बिहीन हंसताहुआ महाबाहु भीमसेन गदाको लेकर उसउत्तम रथसेकूदा ४३ औरबड़े वेगसे दौड़कर भीमसेनने आपकीसेनाको उसगदासे ऐसा तिर्रबिर्र करदिया जैसेकि बादलों को बायु छिन्नभिन्न करदेताहै ४४ फिरउस भयानकरूप शत्रुसंतापी सर्बज्ञ भीमसेनने ईर्षाकेसमान दांतरखने वाले घातक सात सौहाथियोंकोभी छिन्नभिन्न करके ४५ बड़े पराक्रम से उनहाथियों के जावड़ेआंखमस्तक कमर और मर्मस्थलों को घायल किया ४६ इसके पीछे सब हाथी भयभीत होकर भागे और फिरशत्रुओं की ओरसे भेजेहुये अन्य सवारों समेत हाथियों ने उसको ऐसा घेर लिया जैसे कि सूर्य्यकोबादल घेरलेताहै ४७ फिरउस पृथ्वी पर नियतने उनसातसौ हाथियोंको भी सवार शस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इंद्र बज्रसे पहाड़ों को मारता है ४८ इसके पीछे शत्रुओंके विजयी भीमसेनने शकुनी के बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा ४९ इसी प्रकार आपकी सेनाकोकंपायमान करते हुये पांडव भीमसेनने एकसौसे अधिक रथ और हजारों पतियोंको मारा ५० तब आपकी सेना महात्माभी मसेन रूपीसूर्य्यसे संतप्त होकर छिन्न भिन्न होगई ५१ हे भरतर्षभ भीमसेनके भयसे आपके शूरवीर भयभीत होकर युद्धमें भीमसेन को छोड़कर दशों दिशाओंको भागे ५२तबशब्द करनेवाले चर्मके कवच धारी अन्य पांचसौ रथ रथियों समेत भीमसेन पर चारों ओरसे बाणोंकी बर्षाकरते हुये सन्मुख आये ५३ भीमसेन ने उन पांचसौरथ समेत बीरोंको भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदासे ऐसा मारा जैसे कि असुरोंको बिष्णु भगवान् मारते हैं ५४ इसके पीछे शकुनी के आज्ञावर्त्ती शूरोंके अंगीकृत शक्ति दुधारे खड्गऔर प्रासोंके हाथमें रखने वाले तीनहजार अश्व सवार भीमसेनकेसन्मुख गये ५५ तब शत्रुहन्ता भीमसेन ने नाना प्रकार के मार्गों में घूमघूमकर शीघ्रही सन्मुख जाकर बड़े बेग पूर्व्वक गदासे उन अश्वसवारोंकोभी मारा ५६ हेभरतर्षभी तबतो उनसब घायलोंके

ऐसे शब्द प्रकटहुये जैसेकि पत्थरोंसे घायल हुये हाथियों के शब्द होतेहैं ५७ इसरीति से शकुनी के तीनों हजार अश्वारुढ़ोंको मारकर दूसरे रथमें सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्णके सन्मुख गया ५८ वहां उस कर्णने भी शत्रु बिजयी धर्म पुत्र युधिष्ठिर को बाणों सेढक कर सारथी को रथसे गिराया ५९ इसके पीछे वह महारथी युद्धमें सारथीसे रहित रथको देखकर भागा और कर्ण कंकपंखोंसे जटित सीधे बाणोंको मारता हुआ उसके पीछेचला ६० बायुके पुत्र भीमसेन ने राजाकी ओर जाने वाले कर्णको देखकर अपने बाण जालोंसे ढकदिया फिर बाणोंसे पृथ्वी आकाशको ढककर शत्रुओंका बिजय करने वाला कर्ण बहुत शीघ्रलौटा और तीक्ष्णबाणों से भीमसेन को सब ओरसे ढकदिया ६१ । ६२ इसके पीछे हे राजा बड़े धनुषधारी सात्यकीने पीछे होनेके कारण भीमसेन के रथसेव्याकुल कर्णकोपीड़ामान किया ६३ बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित कर्णभी उसके सन्मुख बर्त्तमान हुआ फिर सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ वह दोनों बीर सन्मुख होकर युद्धकरने लगे और हरएकने परस्पर में चौंसठ२ बाण छोड़े उनबाणोंके छोड़ते मेंवह दोनों बीर अत्यन्त शोभितहुये हेराजा उनदोनोंका फैलाया हुआ भयकारी मर्द्दनकर नेवाला६४।६५ रुद्र बाणजाल क्रौंचकी पुच्छके समान रक्त बर्ण दिखाई दिया फिरछोड़े हुये हजारों बाणों के कारणसेहमने और उन सबलोगोंने नसूर्य्यको देखा और नदिशाओंको ऐसेनहीं पहिंचाना जैसे कि मध्याह्न के समय तेजस्वी सूर्य्य के कारण दिशाओं का ज्ञान नहीं होताहै ६६।६७ उस समय कर्ण और भीमसेनके बाण समूहों से हटाये हुये शकुनी अश्वत्थामा कृतवर्मा और अधिरथी कृपाचार्य ६८ यह सब कर्णको पांडवों से भिड़ा हुआ देखकर फिर लौटे हेराजा उनआने वाले बीरोंके ऐसे बड़े कठोर शब्द हुये ६९ जैसेकि चन्द्रके उदयसे उठेहुये महा समुद्रोंके शब्द होतेहैं वहदोनों सेना उस महायुद्धमें परस्पर अच्छेप्रकारसे देखकर खूबलड़ीं ७० और परस्परमें एकएकको घेरकर बड़ीप्रसन्न हुईं इसकेपीछेमध्याह्न

के समय सूर्य्यके वर्त्तमान होनेपर युद्धजारी हुआ ७१ ऐसा युद्ध पूर्व्वमें कभी देखाथा न सुनाथा फिर सेनाके समूह दूसरी सेनाके समूहोंको पाकर ७२ तीव्रतासे ऐसे सन्मुख गये जैसेकि जलोंके समूह समुद्रके सन्मुख होते हैं उससमय परस्पर बाणोंकी बर्षाके ऐसेबड़े२ शब्दहुये जैसे कि गर्जनेवाले समुद्रोंके जलकेबेग की बड़ी ध्वनि होतोहै फिर उनदोनोंवेगवान् सेनाओंने परस्परमें एकएकको पाकर७३।७४एकताको ऐसेपाया जैसेकि दोनदियां परस्पर मिल॰ कर एक होजाती हैं हेराजा इसके पीछेयशके चाहनेवाले कौरव और पांडवोंका घोर रूपयुद्ध जारीहुआ उससमय वहां गर्जनेवाले शूरबीरोंकी बार्त्तालाप जोकि निरन्तर नानाप्रकारकीथीं ७५।७६ और नामोंको ले लेकर होरहीथीं सुनीगईं जिस २ के पितामाताके अवगुण स्वाभाविक दोषथे वह युद्धमें परस्पर एकएकको सुनातेथे हेराजा युद्धमें परस्पर घुड़कनेवाले उनशूरोंको देखकर७७।७८मैंने समझाकि अबइनका जीवन नहींहै और उन क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वि- योंके शरीरोंको देखकर ७६ मुझको अत्यन्तभय हुआ कि यहकैसे होगा इसके पीछे उन महारथी पांडव और कौरवोंने परस्पर में मारते२ प्रत्येकको अपने२ तीक्ष्ण शायकों से घायल किया ८०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१

बावनवां अध्याय॥

संजयबोले हे महाराज परस्परमें मारनेके अभिलाषी और श- त्रुता करनेवाले उनक्षत्रियोंने परस्परमें घायल किया और रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओंके समूह चारों ओरसे आपस में खूब जुटे१।२फेंकेहुयेपरिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल औरभुशुंडियोंके सब प्रकार के प्रहारोंको ३ युद्धमें महाभयकारी देखा और बाणों की बर्षा टीड़ीके समान हजारोंप्रकार से होनेलगी ४ हाथियोंने हाथियोंको परस्परमें पाकर छिन्न भिन्न किया तब घोड़ोंने घोड़ोंको रथियोंने, रथियोंको ५ पत्तियोंने पत्तियोंके समूहोंको वा घोड़ोंके

यूथोंको अथवा रथ और हाथियों और रथवा हाथियोंने घोड़ोंको ६ और शीघ्रगामी हाथियोंने सेनाको अंगोंसेबिहीन करके छिन्नभिन्न करदिया ७ वहांशूरबीरोंके समूह परस्परमें घायल होते औरपुकारतेथे इसहेतुसे युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानक होगई जैसी कि पशुओंको संहार स्थानकी भूमि होतीहै८ हे भरतबंशो उससमय रुधिरसे भरीहुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देतीथी जैसेकि बर्षाऋतुमें बीर बहूटियोंके समूहोंसे पृथ्वीरक्त दिखाईदेतीहै अथवा जैसे कुसुम के रंगेहुये श्वेतबस्त्रोंकोश्यामा स्त्री धारणकरे वह पृथ्वीऐसे प्रकार की होगई मानों मांस रुधिरसे व्याप्तसुबर्णमयी कुंभोंसेही व्याप्त है९।१०हे राजाकटेवा टूटेहुये शिरजंघाभुजा बहुतबड़ेकुंडल आभूषण ढाल पताकाओं के समूह बिशिख और धनुषधारी शूरोंके शरीर पृथ्वीपर गिरपड़े ११।१२ हेराजा हाथियोंने हाथियोंको पाकर दांतोंसे पीड़ामान किया उस समय दांतोंसे कटे रुधिर से भरे हुये हाथी ऐसे शोभायमान हुये १३ जैसेकि सुवर्णकेसे रंगवाले झिरनोंके गिराने वाले और पहाड़ी धातुओंसे शोभित जलोंके गेरनेवाले पर्ब्बत शोभित होतेहैं १४ फिर वह हाथी भ्रमण करने वालेहुये और इसी प्रकारअन्य हाथियोंने भुजासे छोड़े हुयेतोमरों समेत सन्मुख खड़ेहुयेअनेक शत्रुओंको विध्वंस किया १५ फिरनाराचोंसेघायल टूटेकवचवाले उत्तमहाथीऐसेशोभायमानहुये जैसेकि मार्गशिर और पौषके महीने में बादलोंसे रहित पर्ब्बतहोतेहैं १६ सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे छिदेहुये हाथीऐसेशोभितहुये जैसेकि उल्काओंसे पर्ब्बतोंके शिखर प्रकाशमानहोतेहैं१७ कितनेही पर्ब्बताकारहाथी अन्य हाथियोंसे घायलऔर पक्षधारी पर्ब्बतोंके समान उसयुद्धमें नाशकोप्राप्तहुये १८ और बहुतसेशल्यों से पीड़ित घावोंसे खेदित हाथी युद्धमें भागगये और घोरयुद्धमें अपने कुंभों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और बहुतेरे सिंहोंके समान शब्दोंको गर्जेबहुतसे घूमने लगे २० और बहुतसे हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े बाणोंसे मारेहुये बैठगये और

मृतक प्राय होकर दशोंदिशाओं में घूमने लगे २१ बाण वा तोमरोंसे घायल चेष्टाओंको करते हुये बहुतसे हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियोंने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया २२ हे श्रेष्ठ भरतबंशी वहां मनुष्य घायल हो होकर पृथ्वी पर शब्द करने लगे और बहुतसे लोग भाई बन्धु पिता और पितामहादिकों को देखकर २३ किसीने दौड़तेहुये शत्रुओंको देखकर गोत्रनामों समेत अपनीजातोंको बर्णनकिया २४ हे महाराज उनलोगोंके स्वर्णमयी भूषणोंसेअलंकृत भुजदण्ड टूटेहुये हाथ पैरोंमें चेष्टा करकर लिपटते थे और उछलतेथे इसीप्रकार बहुतसी भुजा उछल २ कर अनेक चेष्टाकरतीथीं और हजारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व्व चेष्टाकरतीथीं और किसी २ भुजाओंने पांचमुख रखनेवाले सर्पकी समान युद्धमें बहुतसा बेगकिया २५।२६हेराजासर्पोंकेफणोंकेसमानचन्दनसेलिप्त रुधिरसे भरीहुई वहसबभुजा स्वर्णमयी ध्वजाकेसमान बहुतशोभायमान हुईं २७ इसरीतिसे दशोंदिशाओंमें घोषसंकुलनाम घोरयुद्ध होनेपर अज्ञातरूप परस्परमें युद्ध करनेवालेहुये २८ और धूलसे संयुक्त शस्त्रोंके आघातोंसे व्याकुल युद्धमें अंधेरे होनेके कारण अपने और पराये नहींजानेगये २९ इसरीतिसे वहयुद्ध महाघोररूप और भयानकहुआ वहांपर रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी २ नदियां बहनिकलीं ३० वह नदियां बाणरूप पत्थरोंसे युक्त केशरूप शैवल औरशाद्वलरखनेवाली अस्थिरूपमछलियोंसे पर्णधनुषबाणऔरगदा रूपी नौका रखनेवाली ३१ मांस रुधिररूपी कीचसे भरीहुईं घोर रूप बड़ी भयानक रुधिररूप जलकेबेगकी बढ़ानेवाली होकर बहने लगीं ३२ भयभीतों के भयकी बढ़ानेवाली शूरबीरोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाली घोररूप वह नदियां यमलोककी पहुंचानेवाली होगईं ३३ हेनरोत्तम वह नदियां भीतर जानेवालोंको डुबानेवाली क्षत्रियों का भय बढ़ानेवालीहुईं जहां तहां मांसभक्षी जीवोंकी गर्जना करने से ३४ वह युद्धभूमि घोररूप यमराजपुरीके समान होगया और चारों ओरसे असंख्यों रुंडउठ खड़ेहुये ३५ मांस और रुधिरसे तृप्त

हो होकर जीवोंके समूह नाचतेथे हेभरतबंशी वहां रुधिर और मज्जाका भोजन करके ३६ मांस मज्जा और भेजोंके खानेसे मतवाले सिंह काक गृध्र और बगलेभी दौड़तेहुये दिखाईदिये ३७ शूरबीरोंने त्यागनेके अयोग्य भयको भी त्यागकरके युद्धाभिलाषी होकर निर्भयलोगोंके समान युद्धमेंकर्मोंको किया ३८ उस युद्धमें वह शूरलोग अपनी बीरताको प्रसिद्ध करतेहुये भ्रमण करनेलगे जोकि बाण और शक्तियोंसे युक्तहोकर मांसभक्षियोंसे व्याकुलथे ३६ हे समर्थ भरतबंशी उनलोगोंने परस्परमें गोत्रनामों समेत अपने २ पिताओंकाभी नामलिया ४० हजारोंनेतो अपने गोत्रादि और नामों को सुनाया और बहुत से युद्धकर्त्ता ४१ इधर उधर से तोमरशक्ति और पट्टिशोंके द्वारापरस्पर में मर्दन करनेलगे इस रीतिसे घोररूप महाभयानक युद्ध जारी होनेपर कौरवी सेना ऐसी पीड़ित हुई जैसे कि समुद्रमें टूटीहुई नौका डामाडोल होकर पीड़ित होतीहै ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरेपनवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेश्रेष्ठ इसरीति से क्षत्रियोंके नाशकारी युद्ध के जारीहोनेपर युद्धमें गांडीव धनुष के बड़ेशब्द सुनाईदिये हे राजा जहांपर कि पांडव अर्जुनने संसप्तकोंका वा कोशिल देशियोंका और नारायण नामसेनाका नाशकिया वहां क्रोधयुक्त संसप्तकोंने युद्ध में चारोंओरसे अर्जुनके शिरपर बाणोंकीबर्षाकरी हेराजारथियोंमें श्रेष्ठ वेगसे अकस्मात् उनबाणबर्षाको सहते और मारतेहुये प्रभु अर्जुनने सेनाकोबिलोडनकिया १।२।३।४ और अपनेतीक्ष्णधारवालेबाणोंके द्वाराउसरथवाली सेनाकेपारहोकर उत्तमशस्त्रधारीसुशर्माकोसन्मुख पाया ५ तबउस श्रेष्ठ रथीने बाणोंकी बर्षा से उसको आच्छादित किया और संसप्तकोंनेभी बाणोंकी बर्षासे अर्जुनको ढका ६ इसके पीछेसुशर्माने शीघ्रगामी दशबाणोंसेअर्जुनको और तीनउत्तम बाणों से श्रीकृष्णचन्द्रजी को दाहिनी भुजापर छेदकर ७ दूसरे भल्लसे

ध्वजाकोभी बिदीर्णकिया हेराजाबिश्वकर्मा जीका उत्पन्नकियाहुआ
बानरोंमें श्रेष्ठ वह बड़ा बानर८सबको भयभीत करके बड़ेशब्दको
गर्जा इस हनुमान्जीके शब्दको सुनकर आपकीसेना महाभयभीत
हुई ६ और अत्यन्त भयभीत होकर चेष्टारहित होगई इसके पीछे
हेराजा वह सेनानिश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमान हुई १० जैसे कि
नाना प्रकारके फूलोंसेयुक्त चैत्ररथ बनहोताहै हे कौरव्य इसकेपीछे
उन युद्धकर्त्ताओंने सावधान होकर ११ अर्जुन को बाणों से ऐसा
आच्छादित करदिया जैसेकि पर्ब्बतको बादल आच्छादित करलेते
हैं इसके पीछे सबने अर्जुन के बड़े रथ को घेरलिया १२ उस को
घेरके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके पुकारनेलगे हेश्रेष्ठ इसकेपीछे
वह सब क्रोधयुक्त रथके चारों ओर होकर रथके चक्र और ईशाके
भी पकड़ने को पासगये वह हजारों शूर बीर उसके उस रथको
पकड़कर १३ । १४ और बड़े बलसे उसके सब साथियोंको पकड़
कर सिंहनाद करनेलगे और कितनोंहीने केशवजीकीभी भुजा को
पकड़ लिया १५ और बहुतोंने रथमें सवार अर्जुनको पकड़ लिया
इसके पीछे दोनों भुजाओं को कंपायमान करते हुये केशवजी ने
उन सब को ऐसे गिरादिया जैसे कि मतवाला हाथी हाथीके सवा-
रों को गिरा देता है इसके पीछे उन महारथियों से घिरेहुये क्रो-
धयुक्त अर्जुनने युद्धमें १६ । १७ उस पकड़े हुये रथको देख और
श्रीकृष्णजीकोभी गिराहुआ जानकर बहुतसे रथसवारोंसमेतपदाति
योंको गिराया उसी प्रकार समीप वर्त्तमान शूरबीरोंको समीपहीसे
मारे बाणोंके ढकदिया औरकेशवजीसे कहने लगा१८।१६हेमहा-
राज श्रीकृष्णजीभयकारीकर्मकरने वालेशरीरसे घायल हजारों सं-
सप्तकोंको देखो २० यह रथोंकी बंधावट महाघोरहैं और पृथ्वीपर
मेरे सिवाय ऐसा कोई नहींहैजो नरलोकमें इसबंधनको सहै अ-
र्जुनने ऐसाकहकर अपनेदेवदत्त शंखकोबजाया औरपृथ्वीआकाशा-
दिकोंव्याप्तकरकेश्रीकृष्णजीने भी पांचजन्यशंखकोबजाया २१।२२
हे महाराज उस शंखके शब्दको सुनकर संसप्तकोंकी सेना महा

कंपित हुई और भयभीत होकर भागी २३ इसकेपीछे शत्रु विजयी अर्जुनने बारंबार नागास्त्रको प्रकट करके उनके चरणोंको बांध दि-या२४ हेराजा महात्माअर्जुनके बंधनसे चरणों में बंधेहुये वह लोग लोहेकी मूर्त्ति के समान निश्चेष्ट खड़े रहगये २५ इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्यों को पांडुनन्दनने ऐसेमारा जैसे कि पूर्वसमय में तारक असुरके मारनेवाले युद्ध में इन्द्रने दैत्योंको माराथा २६ युद्ध में घायल होकर उनलोगोंने अर्जुनके उत्तम रथको छोड़दिया और शस्त्रोंका मारनाप्रारंभकिया२७हेराजा चरण बंधनके कारणसे वहलोग हिलचलभी नसके इसकेपीछे अर्जुनने टेढ़ेपर्ववालेबाणोंसे उनकोमारा २८ युद्धमें वह सबशूरबीरलोग सर्पोंसे बंधेहुये खड़ेरह गये जिनको कि अर्जुनने लक्षकरके चरणोंका बन्धनकिया २९ हे राजा इसकेपीछे महारथी सुशर्माने बंधीहुईसेनाको देखकर शीघ्रही गरुड़ास्त्रको प्रकटकिया ३० तबतो बहुतसे गरुड़ सर्पोंको भक्षण करनेको दौड़े और वहसर्प उन गरुड़ोंको देखकर भागे ३१ फिर चरण बंधनोंसे छूटीहुई वहसेना ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सब सृष्टिके संतप्त करनेवाले सूर्य्य बादलोंसे रहित होकर शोभित होते हैं ३२ इसकेपीछे उनबंधनोंसे छूटेहुये शूरबीरोंने अर्जुन के रथपर बाण और शस्त्रोंके समूहोंको छोड़ा ३३ और सबने नाना प्रकारके अस्त्रोंको चलाया तबतो इन्द्रकेपुत्र महाबीर अर्जुनने उनलोगों को बाणोंकी वर्षासे ढककर ३४ युद्धकर्त्ताओंको मारा इसकेपीछे सुशर्मा ने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे अर्जुनको हृदय में घायलकरके दूसरे तीन बाणोंसेपीड़ितकिया तब वह अत्यन्तघायल और पीड़ामान होकर रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया ३५।३६ इसकेपीछेसबोंनेपुकारकरी कि अर्जुन मारागया इसकेपीछे शंखभेरी आदि बाजोंकेशब्द ३७ और सिंहनाद उत्पन्नहुये फिर श्वेतघोड़ोंसे युक्त श्रीकृष्णजीको सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रतासे युक्त अर्जुनने सचेत होकर ३८ ऐन्द्रास्त्रको प्रकटकिया हेश्रेष्ठ इस ऐन्द्रास्त्रसे हजारों बाण उत्पन्न हुये ३९ और सबदिशाओं में दिखाईदिये और युद्धमें आपकेहजारों

रथघोड़े और हाथियोंको शस्त्रोंसेमारा ४० हेभरतबंशी इसकेपीछे सेनाके मरनेपर संसप्तक और गोपालोंके समूहोंको बड़ाभयउत्पन्न हुआ ४१ ऐसाकोई मनुष्य न था और न रहाजोअर्जुन को मारता सबबीरोंके देखतेहुये आपकी सेनामारीगई ४२ वहां पांडव अर्जुन सेनाको घायल और पराक्रमसे थकितदेखताहुआ युद्धमें दशहजार शूरबीरोंको मारकर ४३ निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशित होकरशोभा यमान हुआ हेभरतबंशीमहाराज परीक्षाकरीहुई चौदहसहस्र सेना और तीनहजार हाथियों समेत दशहजार रथों से संसप्तकोंने फिर अर्जुनको आघेरा और यहविचार ठानलिया कि चाहै बिजयहोय वा पराजयहोय युद्धमें लड़कर मरना योग्य है ऐसा बिचारकर आपके शूरबीरोंका और अर्जुनका महाघोर युद्धहुआ ४४।४५।४६।४७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र कृतबर्मा, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि, और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्य्योधनने १ अर्जुनके भयसेपीड़ामान सेनाको देखकर बड़ेवेगसे उनकोऐसेछुटा- या जैसे समुद्र मेंसेटूटीहुई नौकाको निकालतेहैं २ हेभरतबंशी इसके अनन्तर एकमुहूर्त्त तक वहकठिन युद्धरहा जोभयभीतोंको भय और शूरबीरोंकीप्रसन्नताका बढ़ानेवालाथा ३ युद्धमें कृपाचार्य्यकेछोड़े हुये टीड़ियोंकेसमूहोंकेसमान बाणोंने सृंजियोंको ढकदिया ४ इसकेपीछे बहुतशीघ्रतासे शिखंडी कृपाचार्य्यके सन्मुखगया और चारोंओरसे उनश्रेष्ठब्राह्मण कृपाचार्य्यके ऊपरबाणोंको बरसाया ५ फिरमहाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणोंके समूहोंको हटा करयुद्धमें शिखंडीको दशबाणों से पीड़ितकिया ६ फिर शिखंडीनेभी क्रोधयुक्त होकर कंकपक्षसे जड़ित शीघ्रगामी सातबाणोंसे उनक्रोध रूप कृपाचार्य्यको पीड़ामानकिया ७ इसकेपीछे उनमहारथी कृपा- चार्य्यजीने तीक्ष्णबाणोंसे शिखंडीको घोड़ेरथ और सारथीसे रहित

करदिया ८ इसकेपीछे महारथी शिखंडी मृतक घोड़ोंके रथसे कूद करअच्छेप्रकारसे ढालतलवारकोलेकर शीघ्र आचार्य्यजीके सन्मुख गया ९ तबआचार्य्य जीने उसआतेहुयेको टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे ढक दिया यह देखकर सबको आश्चर्य्यसा हुआ १० वहां हमने शस्त्रोंके अपूर्व्व आघातोंको ऐसादेखा जैसे कि शिलाओंका उछलना होताहै जब हेराजा शिखंडी निश्चेष्ठ होकर युद्धमें नियतहुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्नउस कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये शिखंडीको देखकर शीघ्रही कृपाचार्य्यके सन्मुखगया १२ इसकेपीछे महारथी कृतबर्मा ने कृपाचार्य्यके रथकीओर जानेवाले धृष्टद्युम्नकोबड़े वेगसे रोका १३ पीछेसे कृपाचार्य्यके रथकीओर पुत्र और सेनासमेतआने वाले युधिष्ठिर को अश्वत्थामा ने रोका १४ और बाणों की बर्षा करनेवाले आप के पुत्रोंने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेवकोरोका १५ हे भरतबंशी सूर्य्यके पुत्रकर्णने युद्धमें भीमसेन कारुष्य कैकय और सृंजय देशियोंकोरोका इसकेपीछे शीघ्रता से युक्तभस्म करनेके अभिलाषी सारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें शिखंडी के ऊपरबाणोंको चलाया १६।१७ फिर बारंबारखड्गकोफिरातेहुये शिखंडीने उनकृपाचार्य्य के स्वर्णमयीचारों ओरसे फेंकेहुयेबाणोंको काटा१८ हे भरतवंशी फिरगौतम कृपाचार्य्यजीने उसकीसौचन्द्रमा रखनेवालीढालको बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक शायकोंसे तोड़ा इसहेतु से सब मनुष्यपुकारे १९ फिर वह ढालसे रहितहाथमें खड्गलिये जैसे कि मृत्युकेमुखपर रोगी वर्त्त मान होताहै वैसेही कृपाचार्य्यके स्वाधीनतामें वर्त्तमान शिखण्डी उनकेपासगया हेराजाचित्रकेतु कापुत्र बड़ापराक्रमी सुकेत कृपाचार्य्यकेबाणोंसे ढकेहुये महादुखी शिखंडी कोदेखकर शीघ्रही सन्मुखगया २०।२१ युद्धमें बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे ढकताहुआ महासाहसी सुकेत कृपाचार्य्यके रथकेसमीपपहुंचा २२ हेराजाओंमें श्रेष्ठइसकेपीछे शिखंडीयुद्धमें प्रवृत्त उस ब्रतकरनेवाले ब्राह्मणको देखकर शीघ्रही हटगया तदनन्तर सुकेतने कृपाचार्य्य कोनौ बाणोंसे व्यथितकर सत्तरबाणोंसे पीड़ामानकिया फिर दूस-

रीबारभी तीनबाणोंसेघायलकिया २३।२४ और उनकेधनुषकोबाण
समेत काटकर एक बाणसे उनके सारथीकोभी मर्मस्थल में कठिन
घायलकिया २५ इसकेपीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य्यनेदृढ़ नवीनधनुष
लेकर तीसबाणोंसे सुकेतके सब मर्मस्थलोंको घायलकिया २६ तब
वह अत्यन्त कंपायमान और व्याकुल सुकेत अपने उत्तम रथ पर
ऐसेचेष्टा करनेवाला हुआ जैसे कि भूकंपहोने में वृक्ष कांपताहै २७
तबउस कंपायमानके शरीर से प्रकाशित कुंडलों समेत शिरको
पगड़ी समेत क्षुरप्रसे गिराया उससमय उस का शिर पृथ्वीपर ऐसे
गिरपड़ा जैसे कि बाजपक्षीका लायाहुआ मांस पिंड गिरपड़ता है
शिर कटतेही उसका शरीर भी पृथ्वीपर गिरपड़ा २८।२९ इसके
मरनेकेपीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्तहुये और युद्धमें कृपा-
चार्य्यको त्यागकरके दशों दिशाओं में भागगये ३० हे भरतवंशी
प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्धमें धृष्टद्युम्नको रोककर बोला कि
खड़ाहो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्नका वह महा भयकारी
युद्धहुआ जैसे कि मांसके निमित्त लड़नेवाले दो बाज पक्षियोंका अ-
त्यन्त युद्धहोताहै ३१।३२ हार्दिक्यकेपुत्र कृतवर्माको पीड़ित करने
वाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने युद्ध में नौ बाणोंसे कृतवर्माको छातीपर
घायलकिया ३३ फिर धृष्टद्युम्नके हाथसे अत्यन्त घायल कृतवर्मा
ने युद्ध में बाणोंसे धृष्टद्युम्नको रथ और घोड़ोंसमेत ढकदिया ३४
हेराजा रथसमेत ढकाहुआ धृष्टद्युम्न ऐसा दिखाईदिया जैसे कि
जलधारावाले बादलोंसे ढकाहुआ सूर्य्यहोताहै ३५ अर्थात् वह
घायलहुआ धृष्टद्युम्न युद्धमें स्वर्णमयी बाणोंसे उन बाण समूहोंको
हटाकर महा शोभायमान हुआ इसकेपीछे क्रोधयुक्त सेनापति
धृष्टद्युम्नने कृतवर्मापर बड़ी बाणोंकी बरषाकरी ३६।३७ कृतव-
र्मानेभी उस एकाएकी गिरनेवाले बाण समूहोंको हजारों बाणों
से हटाया ३८ फिरउस असह्य हटायेहुये बाण समूहोंको देखकर
युद्धमें कृतवर्माको रोका ३९ और तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसके
सारथीको बड़ेवेगसे यमलोक को भेजा और वहमृतक होकर रथ

पर गिड़पड़ा ४० फिर पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने बड़े बली शत्रु को बिजय करके युद्धमें शायकोंके द्वारा कौरवों को शीघ्रतासेरोका ४१ उसके पीछे आप के शूरवीर सिंहनादोंको करके शीघ्रही धृष्टद्युम्न के सन्मुखगये और युद्धजारी हुआ ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः५४॥

पचपनवां अध्याय॥

संजयबोलेकि सात्विकी और शूरबीर द्रौपदीकेपुत्रोंसे रक्षित युधिष्ठिरको देखकर अश्वत्थामाजी प्रसन्न चित्तके समान सन्मुख वर्त्तमान हुये १ अर्थात् हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण घोर बाणोंको फेंकते और नाना प्रकारके मार्गों समेत अपने अभ्यासोंको दिखलाते हुये सन्मुख आये २ उसके पीछे बड़ेअस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्धमें युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रों से अभिमंत्रित बाणोंकी वर्षाकेद्वारा आकाश को व्याप्तकिया ३ अश्वत्थामा के बाणोंसे आच्छादित आकाशमें कुछनहीं जानागया औरबड़ीयुद्ध भूमिका शिर बाणरूप होगया ४ हे भरतर्षभ आकाशमें सुवर्णजालों से अलंकृत और ढकाहुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि नियत हुआ यज्ञ शोभित होता है ५ उन प्रकाशित बाण जालोंसे जब आकाश ढकगया और बाणोंके युद्धमें आकाश मंडलमें बादलोंकी छायाहोगई ६ ऐसे बाणरूप जालोंकेहोनेपर हमनेएक आश्चर्यको देखाकि अन्तरिक्षका उड़नेवाला कोईजीव नहींउड़ा ७ उपाय करनेवाले सात्विकी और पांडव धर्मराज समेत अन्यसेना के शूरबीर लोग पराक्रम नहीं करसके ८ हेमहाराज वहां महारथी अश्वत्थामा की हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्य्य युक्त होकर वह सब राजालोग उसके सन्मुख देखनेकोभी ऐसे समर्थनहुये ९ जैसे कि संतप्त करनेवाले सूर्यकी कोई नहीं देखसक्ताहै इसकेपीछे सेनाके घायल होने पर महारथी द्रौपदीकेपुत्र १० सात्विकी धर्मराज और सब पांचालदेशी इकट्ठे हुये और घोर मृत्युके भयकोत्याग

करअश्वत्थामाके सन्मुखगये ११ सात्विकीने शिलीमुख नामसत्ताईस बाणोंसे अश्वत्थामाको छेदकरसुवर्णसे अलंकृत सातनाराचोंसे पीड़ामान किया १२ युधिष्ठिरने तिहत्तर बाणोंसे प्रतिविंध्यने सात बाणोंसे श्रुतकर्माने तीनबाणोंसे श्रुतिकीर्त्ति ने सातबाणोंसे १३ सुतसोमनेनौबाणोंसे सतीनीकने सातबाणोंसे और अन्य २ शूरोंने भी चारों ओर से घायल किया १४ हे राजा इसकेपीछे उस क्रोधयुक्त विषैले सर्पके समान श्वासलेनेवाले अश्वत्थामाने शिलीमुख नाम पच्चीस बाणोंसे सात्विकीको घायलकिया १५ श्रुतकीर्त्ति को नौबाणों से सुतसोमको पांच बाणोंसेश्रुतकर्माको आठबाणोंसे प्रतिविंध्यको तीन बाणोंसे १६ सतानीकको नौबाणोंसे युधिष्ठिरको पांचबाणसे और इसीप्रकार अन्य शूरोंकोभी दो २ बाणोंसे घायलकिया १७ और तीक्ष्णधारवाले बाणसे श्रुतकीर्त्ति के धनुषकोकाटा इसकेपीछे महारथी श्रुतकीर्त्ति ने दूसरे धनुषको लेकर १८ अश्वत्थामाको तीन बाणोंसे छेदकर दूसरे तीक्ष्णबाणोंसे पीड़ामानकिया हे भरतर्षभ महाराज धृतराष्ट्र इसकेपीछे अश्वत्थामाने बाणोंकी बर्षासे १६ उससेनाको चारोंओरसे ढकदिया तबतो महासाहसी हंसते हुये अश्वत्थामाने धर्मराजके धनुषको फिर काटा २० और तीनबाणों से पीड़ामानकिया हेराजा उसकेपीछे धर्मपुत्रने दूसरे बड़े धनुष को लेकर २१ अश्वत्थामाको सत्तरबाणोंसे पीड़ितकिया और छाती समेत भुजाओंको घायलकिया तबसात्विकी युद्धमें प्रहारकरनेवाले अश्वत्थामा के २२ धनुषको अपनेतीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाणसे काटकर महाध्वनिसे गर्जा इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखनेवाले अश्वत्थामाने शक्तिसे सात्विकीके रथसे बड़ी शीघ्रतापूर्वक सारथी को गिराया २३।२४ तदनन्तर प्रतापवान् अश्वत्थामाने दूसरेधनुष कोलेकर सात्विकीको बाणोंकी बर्षासे ढकदिया रथसेसारथीकेगिरनेपर युद्धमें उसके घोड़े भागने लगे २५ और जहां तहांभागते हुये दिखाई दिये २६ फिर युधिष्ठिर के साथी शूरबीर तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते बेगसे उस महाशस्त्रधारी अश्वत्थामाके ऊपर बाणोंकीवृष्टि

करनेलगे उनक्रोधरूप आनेवालोंको देखकर शत्रुसंतापी २७ हंसते हुये द्रोणपुत्रने उस महायुद्धमें उनकोरोका इसके पीछे सैकड़ों बाण रूपज्वाला रखनेवाले महारथी २८ अश्वत्थामाने युद्धमें सेनारूपी सूखे बनको ऐसे भस्मकरदिया जैसेकि बनमें सूखे तृणोंको अग्नि भस्म करदेता है हेभरतबंशी अश्वत्थामासे संतप्त करी हुई वह पांडवी सेना २६ ऐसे ब्याकुल होगई जैसे कि तिमिना जीव करके नदीका मुख ब्याकुल कियाजाताहै हे महाराज अश्वत्थामाके ऐसे पराक्रमको देखकर ३० उसके हाथसे सब पांडवोंको मृतकरूप माना फिर क्रोध और शीघ्रतासे युक्त द्रोणाचार्य्यका शिष्य महारथी युधिष्ठिर ३१ अश्वत्थामासे कहनेलगा कि ठीक २ तुममें नतो स्नेहहै और न उपकारको स्मरण करतेहो ३२ हे पुरुषोत्तम तुम मुझीको मारना चाहतेहो तुम ब्राह्मण होकर तपस्यादान और वेदपाठ करनेके योग्य हो ३३ क्योंकि लिखा है कि ब्राह्मण तपदान औरवेदपाठके योग्यहैं क्षत्री धनुष नवाने के योग्यहैं सो आप नाम मात्रकेहीब्राह्मणहैं हे महाबाहो तेरे देखतेही देखते कौरवोंको युद्ध में विजय करूंगा ३४ तुम युद्ध में कर्म करो निश्चय करके ब्राह्मण बन्धुहो हे महाराज इस प्रकार के बचनों को सुनकर हंसते और मंद मुसकान करते हुये अश्वत्थामाने ३५ योग्य और मुख्यबात को बिचार कर कुछ उत्तर नहीं दिया और उत्तर न देकर बाणों की बर्षासे पांडवोंको ऐसेढकदिया ३६ जैसे कि क्रोधरूप मृत्युसब संसारकोब्याप्त करदेतीहै हे श्रेष्ठ तबअश्वत्थामाके हाथसे ढकाहुआ पांडव युधिष्ठिर ३७ शीघ्रही अपनी बड़ी सेनाको छोड़कर दूरहट गया हेराजा उस युधिष्ठिरके हटजानेपर ३८ बड़ेसाहसी अश्वत्थामाजो पश्चिममुख हुये और युधिष्ठिर युद्धमें अश्वत्थामा को छोड़ करकेठोर कर्ममें चित्तकोकरके आपकी सेनाके सन्मुखगया ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपार्थापयानेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

——❋——

छप्पनवां अध्याय॥

संजय बोले कि चंदेरी और कैकयदेशियोंसे युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेनको आपकर्णने रोककर शायकोंसे हटाया १ इसके पीछे कर्णने भीमसेनके देखतेहुये युद्धमें चंदेरी कारुष्य और सं्जय देशी महारथियोंकोमारा २ तब भीमसेन रथियों में श्रेष्ठ कर्णको छोड़कर कौरवीसेनाके सन्मुख गया ३ कर्णने भी युद्ध में हजारों पांचालकैकय और बड़े धनुषधारी सृञ्जियोंकोमारा ४ अर्जुनने संसप्तकोंमें भीमसेनने कौरवों में और कर्णने महारथी पांचालों में प्रलय करदी ५ हे राजा आपके कुबिचार में अग्निके समान उनतीनों बीरों के हाथसे युद्धमें मरनेवाले असंख्य क्षत्रियोंने नाशको पाया ६ हे भरतर्षभ और क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने नौबाणोंसे चारों घोड़ोंसमेत नकुलको घायल किया ७ इसके पीछे बड़े साहसी आपकेपुत्र ने क्षुरप्रसे सहदेवकी स्वर्णमयी ध्वजा को काटा ८ फिर क्रोधयुक्त नकुलने सातबाणोंसे सहदेव ने पांचबाणोंसे आपके पुत्रको घायल किया ९ उससमय अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने पांच २ बाणोंसे उन भरतबंशियोंमें और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेवको घायल करके दूसरे दोभल्लों से उनदोनोंके धनुषोंकोभी अकस्मात् काटडाला और इक्कीस बाणोंसे घायलकिया १० । ११ युद्धमें देवकुमारोंके समान वह शूरबीर दूसरे इन्द्रधनुषके समान शुभधनुषोंको लेकर शोभायमानहुये १२ इसकेपीछे युद्धमें बेगवान् वह दोनोंभाई युद्ध में घोरबाणोंकी बर्षाभाईके ऊपर ऐसे करनेलगे जैसे कि दोबादल पर्व्वतपर बर्षाकरते हैं १३ हेमहाराज तब तो आपकेक्रोधयुक्त पुत्रने बड़ेधनुषधारी दोनों पांडवोंको अपने बाणोंसे रोका १४ उससमय दुर्योधनका धनुष युद्ध में मंडलाकार दिखलाई देताथा और चारोंओरसे दौड़तेहुये शायक दृष्टपड़तेथे १५ सबदिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्यकीकिरणें संसारको व्याप्तकरदेतीहैं इसके अनन्तर आकाश मंडलको बाणरूपी जालोंसे ढकजाने

पर १६ नकुल और सहदेवके निमित्त उसकारूप काल और मृत्यु-रूप यमराजके समान दिखाईपड़ा महारथियोंने आपकेपुत्रके उस पराक्रमको देखकर १७ नकुल और सहदेवको मृत्युकेगालमें फंसा हुआ माना इसके पीछे पांडवोंका महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न १८ वहांगया जहांपर कि राजा दुर्योधनथा वहां जाकर महारथी शूरवीर नकुल और सहदेवको उल्लंघनकर धृष्टद्युम्ननेआपकेपुत्रकोशायकों से रोका तब आपकेसाहसी क्रोधयुक्तपुत्रने हंसकर१९।२०धृष्टद्युम्न को पच्चीस बाणोंसे छेदकर पैंसठबाणों से घायल बड़े शब्दसे गर्ज नाकरी और फिर उसकेबाण और हस्तत्राण समेत धनुषको२१।२२ अपने तीक्ष्णक्षुरप्र से काटडाला तबशत्रुबिजयीधृष्टद्युम्नने उसटूटे धनुषको डालकर २३ बड़ेबेगसे बड़े भारबाहक नबीनधनुषकोहाथमें लिया और बेगसे लालनेत्र क्रोधयुक्त २४ घायल हुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ फिर सर्पोंके समान श्वास लेनेवाले पन्द्रह नाराचोंको मारनेके इच्छावान् धृष्टद्युम्नने राजादुर्योधनके ऊपर छोड़े२५वहतीक्ष्णधार कंक और मोरपक्षीके परोंसे जटितबाणराजा के स्वर्णमयी कवचको काटकर पृथ्वीमें२६बड़े बेगसे समागये फिर वहआपकापुत्र अत्यन्त घायलहोकर ऐसाशोभायमानहुआ २७जैसे कि बसन्तऋतुमें अच्छाप्रफुल्लित किंशुकवृक्ष होताहै नाराचोंसेटूटा कवच और प्रहारोंसे घायल शरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्योधननेभल्लसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटा और बड़ी शीघ्रतासे टूटेधनुषवाले धृष्ट-द्युम्नको २९ दश शायकोंसे दोनों भृकुटियोंमें घायलकिया बड़े-कारीगरके स्वच्छकियेहुये उनबाणोंने उसके मुखको ऐसा शोभाय-मानकिया ३०जैसेकि मधुकेलोभी भ्रमर अच्छेफूले हुये कमलको शोभितकरतेहैं फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुये धनुष को डाल कर ३१ बड़े बेगसे सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुष को लिया इसके पीछे पांचबाणों से दुर्योधन के सारथी समेत घोड़ों को मारकर ३२ एकभल्लसे सुनहरी धनुष कोकाटा फिरधृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र को रथ, उपस्कर, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजा

को दश भल्लोंसे काटा ३३ सब राजाओंने दुर्य्योधनकी उसटूटीहुई ध्वजाको जोकि सुवर्णके बाजूबंदरखनेवाली अपूर्व्व मणियोंसेजटित नाग चिह्नवाली अतिशुभरूप की थी देखा हेभरतर्षभ फिर उस रथसे विहीनटूटे कवच और ध्वजावाले दुर्य्योधन को ३४ । ३५ उसकेनिज भाइयोंने चारोंओरसे रक्षितकिया हेराजा भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित राजादंडधारी दुर्य्यधनकोरथपरबैठा कर ३६ धृष्टद्युम्नके देखतेहुये दूरलेगया फिर राज्यकालोभीमहाबलीकर्ण सात्विकीको बिजयकरके ३७ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मारने वालेउग्रबाणधारी धृष्टद्युम्नके सन्मुखगया फिरबाणोंकोमारताहुआ सात्विकीउसकेपीछे ऐसाशीघ्रचला ३८ जैसे कि हाथीकोहाथीदांतों से जंघास्थानमें पीड़ामान करताहुआ जाताहै ३९ हेभरतबंशी बड़े महात्माआपके शूरबीरोंका वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्नके मध्यमें ऐसाउत्तम युद्धहुआकि जिसमें पांडवोंके और हमारी ओरके किसी पुरुषनेभीमुखको न मोड़ा ४० इसकेपीछे बड़ीशीघ्रतासे कर्ण पांचालोंसेयुद्ध करनेलगा हेनरोत्तम राजाधृतराष्ट्र मध्याह्नके समय घोड़े हाथी और मनुष्योंका विध्वंसन दोनों ओरमेंहुआ फिरविजयाभिलाषी वहसब पांचाल ४१ । ४२ शीघ्रतासे कर्णकेसन्मुख ऐसेगये जैसेकि वृक्षको ओर पक्षी जातेहैं इस रीतिसे क्रोधयुक्त बाणसमूहों सेरोकतेहुये अधिरथी कर्णने उन उपाय करनेवाले साहसी सेनापतिसे मिलेहुये४३ व्याघ्रकेतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंहसेन और दुर्जयको सन्मुखपाया उनबीरोंने उसनरोत्तमको रथमार्गसे घेरलिया ४४ । ४५ जोकि बाणोंका छोड़नेवाला क्रोधयुक्तहोकर युद्धमें शोभादेनेवालाथा उसप्रतापी कर्णने उनदूर से युद्धकरनेवाले ४६ आठों बीरोंको तीक्ष्णधारवाले आठ बाणोंसे पीड़ामान किया हेमहाराज उनको पीड़ित करके महाप्रतापी कर्ण ने ४७ उन अन्य हजारों शूर बीरोंकोभी जो कि युद्ध में बड़े कुशल सेमारा इसकेपीछे उस अत्यन्त क्रोध युक्तने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापी, भद्र ४८ दंड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंहकेतु, रोचमान, म-

हारथी शलभ४६ इन चंदेरी देशोंके महारथियोंको मारा उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्णका शरीर ऐसाहोगया ५० जैसे कि रुधिरसेलिप्त शिवजीका बड़ाशरीर होताहै हेभरतबंशी इसके सिवाय युद्धमें कर्णके बाणोंसे अनेक हाथीभी घायलहुये ५१ बड़ी व्याकुलता उत्पन्नकरनेवाले भयकारी वहहाथी युद्धमें कर्णके बाणों से चारोंओरको भागभागकर पृथ्वीपर गिरपड़े ५२ बज्रसे ताड़ित पर्ब्बतोंके समान घोरशब्द करतेहुये गिरनेवाले हाथी घोड़ेमनुष्य और रथोंसे कर्णके मार्ग की पृथ्वी आच्छादित होगई ५३ युद्धमें भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्य आपके बीरोंनेभी ऐसाकर्म नहींकिया जैसा कि युद्धभूमिमें कर्णने किया५४।५५हेमहाराज हाथी घोड़े रथ औरमनुष्योंका कर्णकेहाथसे नाशहुआ जैसे कि मृगोंकेमध्यमें घूमने वाला निर्भय सिंह पशुओंका नाशकरताहै ५६ उसीप्रकार कर्णभी भयभीत मृगोंके समान पांचालोंमें निर्भयता पूर्ब्बक बिचरता हुआ नाश करताथा जैसे कि सिंह भयभीत मृगोंको दिशाओं में भगा देताहै ५७ उसीप्रकार कर्णने पांचालोंके रथसमूहोंको भगादिया जैसे कि सिंहके मुखको पाकर कोई पशु नहींजीता है ५८ उसी प्रकार महारथी कर्णकोपाकर कोई जीवता नहींरहा निश्चय करके जिसप्रकार सबजीवमात्र बैश्वानर अग्निकोपाकर भस्महोतेहैं ५६ उसीप्रकार हेभरतबंशी सृञ्जीरूपी बनभी कर्णरूपी अग्निसे भस्म होगये हेभारत कर्णने चंदेरी केकय और पांचाल देशियोंके मध्यमें नामोंको सुना२ कर बीरोंके अंगीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा इसकर्णके पराक्रमको देखकर मैंने बिचारकिया ६०।६१ कि कर्ण के हाथसे एकभी पांचालदेशी जीवता न बचेगा कर्णने युद्धमें पां- चालोंको बारम्बार छिन्नभिन्न करदिया ६२ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्म्मराज युधिष्ठिर उसमहायुद्धमें पांचालोंके मारनेवाले कर्णको देखकर सन्मुखदौड़े ६३ हे श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पुत्र, और अन्य हजारोंमनुष्योंने शत्रुकेमारनेवाले कर्णको घेरलिया६४ शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुलकापुत्र, जन्मेजय, सात्विकी, बहव,

प्रभद्रक ६५ और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़ेतेजस्वी युद्ध में सन्मुख होकर धनुषधारी बाणफेंकनेवाले कर्णके सन्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान हुये ६६ वहां अकेला कर्ण युद्ध में उन चंदेरी पांचालदेशी और अन्य शूरवीरोंसमेत पांडवोंके सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पोंके सन्मुख अकेला गरुड़ होताहै ६७ हेराजा उन सबकेसाथ कर्णके ऐसे घोररूप युद्धहुये जैसे कि पूर्ब्ब समयमें देवताओंका युद्ध दानवोंसे हुआथा ६८ फिर उस क्रोधरूपने यमदण्डके समान अपने बाणों से वाहोक कैकय मत्स्य वासत्य मद्र सिन्ध इन देशियोंको सबओरसे मारा ६९ वह बड़ा धनुषधारी अकेलाही युद्धमें लड़ताहुआ बहुत शोभित हुआ और भीमसेन के नाराचोंसे हाथी मर्मस्थलों में घायलहुये ७० जिनके सवार मारे गये उनगिरतेहुये हाथी घोड़े और निर्जीव पत्तियोंने पृथ्वीको कम्पायमान करदिया ७१ युद्धमें घायल रुधिरको बमन करतेहुये और जिनके कि शस्त्र गिरपड़े वह हजारों रथी मारेगये ७२ रथी अश्व सवार सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकरभीमसेनसेभयभीतऔर मरेहुये दृष्टपड़े७३ भीमसेनकेतोड़ेहुये अस्त्र शस्त्रादिकोंसे पृथ्वीभरगई दुर्योधनकी वह सबसेना भीमसेन के भयसेपीड़ित अचेष्टितोंके समान नियतथी ७४ उत्साहसे रहित घायल और अंगचेष्टाबिना अत्यन्त दुःखीरूप युद्धमेंदिखाईपड़ी ७५ हेराजा जैसे कि प्रसन्नकाल में स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर नियतहोताहै उसीप्रकार आपकी सेनाभी निश्चल होगई ७६ अर्थात् क्रोध पराक्रमसेयुक्त आप के पुत्रकी वहसेना अहंकारसे पराजित होकर शोभासे रहित होगई ७७ हेभरतर्षभ वह सेना परस्पर घायलहोकर रुधिरोंसे लिप्तहोकरभागी ७८ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पांडवों समेत सेनाको ७९ और भीमसेनभी कौरवों समेत कौरवी सेनाको भगातेहुये शोभायमानहुये इसरीतिसे महाघोर भयंकर युद्धजारीहोनेपर ८० महाबिजयी अर्जुन सेनासे संतप्तकोंके बहुतसे समूहोंको मारकर फिर बासुदेवजीसे बोला ८१

कि हेजनार्द्दनजी यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्नभिन्नहोकर पराजित
हुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरेबाणों से ऐसे
भागतेहैं ८२ जैसे कि सिंहके शब्दको सुनकर मृग भागतेहैं और
बड़ेयुद्धमें सृञ्जियोंकी बड़ीसेनापृथक्२ हुईजातीहै ८३ हे श्रीकृष्ण
जी राजाओंकी सेनाकेमध्यमें प्रसन्नतापूर्व्वक घूमनेवाले बुद्धिमान्
कर्णकी यह ध्वजा दिखाईदेतीहै जिसमें कि हाथीकी कक्षाकाचिह्न
है ८४ और कोई महारथी कर्ण के बिजय करनेको समर्थ नहींहै
आपभी कर्णको बड़ापराक्रमी जानतेहैं ८५ अब आप वहांचलिये
जहांपर कि वह कर्ण हमारी सेनाको भगारहा है आप इन सबको
त्यागकर युद्धमें महारथी कर्णके सन्मुखचलिये ८६ हेश्रीकृष्णजी
मुझको यह उचित मालूम होताहै अथवा जैसी आपकी इच्छाहो
वही करना योग्यहै उसके इसबचनको सुनकर गोविन्दजी हंसकर
बोले ८७ हेपांडव तुम शीघ्रही कौरवोंकोमारो इसकेपीछे गोविन्द
जीकी आज्ञानुसार अपने सारथीरूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेतहंसब-
र्ण घोड़ोंकी सवारीसे अर्जुन आपकी सेनामें आपहुंचा केशवजीका
आज्ञाकारी सुवर्णके भूषणोंसे युक्त ८८।८९ श्वेतघोड़ोंकेरथके पहुं-
चतेही आपकी सेनाचारों दिशाओंमें हटगई बादलके समानशब्दा-
यमान हनुमान जीकी ध्वजासे संयुक्त चेष्टावान् पताका वाला ९०
वह रथ उससेनामें ऐसे पहुंचा जैसे कि स्वर्गमें बिमान पहुंचताहै
वहां वह अर्जुन और केशवजी दोनोंसेनाको चीरतेहुये प्रविष्ट हुये
९१ और क्रोधसे भरे लालनेत्र कियेहुये वह दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन
शोभायमान हुये युद्धमें कुशल और बुलायेहुये वहदोनों युद्धरूपी
यज्ञभूमिमें ऐसे आपहुंचे ९२ जिसप्रकार विधिपूर्व्वक यज्ञ करने
वालोंसे आह्वापन कियेहुये अश्विनीकुमार होतेहैं फिर क्रोधयुक्त
वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्धमें प्रवृत्त हुये ९३ जैसे कि महाबनमें
तलशब्दसे क्रोधित महाबली हाथी होतेहैं फिर अर्जुन रथोंकीसेना
और घोड़ोंके समूहों को मझाकर ९४ पाशधारी यमराज केसमान
सेना में घूमनेलगा हे भरतवंशी युद्ध में आपकी सेना के मध्य

में पराक्रम करनेवाले उस अर्जुन को देखकर ९५ आपके पुत्रने संसप्तकोंके समूहोंको फिर प्रेरणा करी तब हजाररथ तीनसौहाथी ९६ चौदह हजार घोड़े और दोलाख धनुषधारी ९७ शूरबीरलक्षों के बेधनेवाले चारोंओरसे घिरहुये पदातियों समेत महारथी अर्जुनको बाणोंसे आच्छादित करतेहुये सन्मुख वर्त्तमानहुये ९८ हे महाराज उन सबलोगोंने चारोंओरसे बाणोंकी वर्षा करके अर्जुन को ढकदिया फिर शत्रुकी सेना का पीड़ामान करनेवाला युद्ध में बाणोंसे ढका हुआ वह अर्जुन पाशधारी यमराजके समान अपना रुद्ररूप दिखलाताहुआ और संसप्तकोंको मारताहुआ अपूर्व्व दर्शन केयोग्यहुआ ९९।१००इसकेपीछे बिजलीकेसमान प्रकाशमान सुवर्णसे अलंकृत अर्जुन के चलाये हुये बाणोंसे सब आकाशढकगया १०१ वहां अर्जुनके छोड़े हुये बड़े २ बाणोंके गिरनेसे सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि कद्रू के बेटे सर्पोंसे व्याप्त होकर शोभित होता है १०२ बड़े साहसी पांडवने सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णनोककेसे टेढ़े पर्ववाले बाणोंको सबदिशाओं में छोड़ा १०३ मनुष्योंने अर्जुनकी प्रत्यंचाके शब्दसे यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सबदिशा समुद्र और पर्वत टूटतेहैं १०४ महारथी अर्जुन दशहजार क्षत्री महारथियोंको मारकर शीघ्रही संसप्तकों के सन्मुख गया १०५ वहां अर्जुनने काम्बोज के राजासे रक्षित सेना को नेत्रों के सन्मुख पाकर अपने बाणों के बलसे उसको ऐसे मारा जैसे कि दानव लोगों को इन्द्र मारता है और बड़ी शीघ्रतासे मारने के इच्छावान् शत्रुलोगों के शस्त्र भुजा हाथ और शिरोंको भी काटा १०६।१०७ वह शस्त्रोंसे रहित टूटे अंग होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसे कि संसारी बायुसे टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं १०८ हाथी घोड़े रथ वा पत्तियों के समूहोंके मारनेवाले अर्जुनके ऊपर सुदक्षिणके छोटे भाईने बाणोंकी बर्षाकरी १०९ तब अर्जुनने उस बाणबर्षा करनेवालेकी परिघ के समान दोनों भुजाओंको दो अर्द्धचन्द्रों से और पूर्णचन्द्रमाके समान

मुखवाले शिरको क्षुरप्रसे जुदाकिया ११० उसकेपीछे बड़े रुधिर को गिरानेवाला वह राजा रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बज्रसे फटाहुआ मनशिल पर्व्वतका शिखर गिरताहै सुदक्षिणके छोटेभाई कांबोजदेशी कमलपत्रके समान नेत्रधारी उन्नत बड़ेतेजस्वी अपूर्व दर्शनको इसरीतिसेमारा १११।११२ वह कांचनके स्तंभसमान टूटे हेमगिरिके समान वर्त्तमानथा इसके अनन्तर फिर महाघोर युद्ध जारीहुआ ११३ उसयुद्धमें लड़नेवाले शूरबीरोंकी नानाप्रकारकी अपूर्व्वदशा वर्त्तमानहुई अर्थात् एकबाणसे मरेहुये काम्बोज देशी यवनदेशी और शकदेशीघोड़ोंसे ११४ और रुधिरसेलिप्त शूरबीरों से सब रुधिरमयी भूमि होगई मृतक घोड़े और सारथीवाले रथ वा मृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान और सवारोंवाले हाथियोंसे परस्परमें मनुष्योंका बड़ा नाशहुआ ११५।११६ अर्जुनके हाथसे उस पक्ष और प्रपक्षके मरनेपर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक अश्वत्थामाजी उस महाबिजयी अर्जुनके सम्मुख गये ११७ सुवर्ण जटित बड़े धनुषको कम्पायमान करता सूर्य्यको किरणोंके समान घोरबाणोंको लेता ११८ क्रोध और अशान्तीसे फैलाहुआ मुख रक्तनेत्र वह पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकाल में किंकरनाम दण्डधारी क्रोधरूप अग्नि होताहै ११६ इसकेपीछे उग्रबाणोंकी बर्षाओंको बरसाया हेमहाराज उन छोड़े हुये बाणोंसे पांडवी सेनाको भगाया १२० हेश्रेष्ठराजा उसने रथपरसवार श्रीकृष्णजीको देखतेही फिर उदग्र बाणोंकी बर्षाकरी १२१ तब हे महाराज अश्वत्थामाके छोड़ेहुये और चारोंओरसे गिरतेहुये उन बाणोंसे वह रथपरचढ़ेहुये दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ढकगये१२२ इसकेपीछे तदनन्तर प्रतापी अश्वत्थामाने युद्ध में हजारों तीक्ष्ण बाणोंसे उन श्रीकृष्ण अर्जुनको स्तब्ध करदिया १२३ इसरीति से युद्धके रक्षक उनदोनोंको बाणोंसे आच्छादित देखकर सब जड़ चैतन्य हाहाकार करनेलगे १२४ सिद्ध चारणों के वह समूह चारों ओरसे यह चिन्ताकरतेहुये दौड़े कि अब लोकोंकी कुशलहोगी वा न

होगी १२५ हेराजा ऐसायुद्ध और पराक्रम हमने प्रथम कभी न देखाथा जैसा कि दोनों श्रीकृष्ण अर्जुनको बाणोंसे ढकनेवाले अश्वत्थामाने किया १२६ वहां मैंने शत्रुओंके भयकारी अश्वत्थामा के धनुषका शब्द बारम्बार सुना १२७ इस युद्ध में बाम दक्षिण दोनोंओर को घूमनेवाले सव्यसाची अश्वत्थामा की प्रत्यंचा ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि बादलोंके मध्यमें बिजली चमकतीहै १२८ फिर शीघ्रकर्मी दृढ़हस्तवाले अर्जुनने अश्वत्थामाकोदेख बड़ेमोहको प्राप्तहोकर १२९ अपने बल पराक्रमको हतमाना और युद्धमें दोनोंका शरीर दुर्द्दर्शहुआ १३० हे राजेन्द्र इसप्रकारसे अश्वत्थामा और अर्जुनके महाघोर युद्धहोने और पराक्रमी अश्वत्थामाके प्रबल होने १३१ और अर्जुन के निर्बल होनेपर श्रीकृष्णजी में महाक्रोध उत्पन्नहुआ क्रोधसे श्वासलेते और नेत्रोंसे भस्म करतेहुये उन श्रीकृष्णजीने १३२ युद्धमें अश्वत्थामा और अर्जुनको बारम्बार देखा और क्रोधरूप होकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे प्रीति पूर्व्वकबोले १३३ हेभरतबंशी अर्जुन युद्ध में इसतेरेकर्मको अपूर्व्व मानताहूं कि जहां अश्वत्थामा सरीखा तुझको उल्लंघन करके वर्त्तमानहै १३४क्या तेरा पराक्रम और भुजबल पूर्व्वके समान है क्या तेरा गांडीवधनुष रथमें हस्तगत नियतहै १३५ क्या तेरेदोनोंभुज कुशलहैं और मुट्ठी तो निर्बलनहीं होगई हैं हेअर्जुन मैं युद्धमें अश्वत्थामाकोही प्रबल बिजयी देखताहूं १३६ हे भरतर्षभ अर्जुन यह गुरूका पुत्रहै ऐसा मानकर छोड़ना न चाहिये यह समय त्यागनेकेयोग्य नहींहै १३७ इसरीतिके श्रीकृष्णजीके बचनोंकोसुनकर शीघ्रताकरनेवाले अर्जुन ने चौदह भल्लों को लेकर बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामाके धनुषको काटा १३८ इसीप्रकार से ध्वजा, पताका, रथ, छत्र, शक्ति और गदाको तोड़कर वत्सदन्तनाम बाणों से ढोढ़ीके स्थानपर अत्यन्त घायलकिया १३९ तबतो अश्वत्थामा बड़ा मूर्च्छित होकर ध्वजा की यष्टीके आश्रयहुआ हेराजा फिर अर्जुनसे बचाताहुआ उसका सारथी उस शत्रुओंके भयभीत करनेवाले अचेतरूप अश्वत्थामा

को युद्धसे दूरलेगया फिरउससमय शत्रुसंतापीअर्जुनने १४०।१४१ आपकी हजारों सेनाको मारा यह सब कर्म अर्जुनने उस आपके बीर पुत्रके देखतेहुये किया १४२ इसरीतिसे आपके कुमन्त्रीं के कारण शत्रुओंकेसाथ आपके शूरबीरोंका यह महाघोर नाश वर्त्तमानहुआ १४३ अर्जुनने संसप्तकों को भीमसेनने कौरवों को वा सुषेणने पांचालोंको क्षणमात्रमेंही युद्धभूमि में छिन्नभिन्न करदिया १४४ हे राजा इसरीतिसे उत्तम बीरोंके सन्मुख नाशकारी युद्ध के होनेपर चारोंओरसे असंख्य रुण्ड उठखड़ेहुये १४५ हेभरतर्षभ आघातोंसे कठिन पीड़ामान युधिष्ठिरभी युद्ध में एककोस हटकर नियतहुआ१४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरतर्षभ इस के पीछे दुर्य्योधनने शल्य आदि अन्य राजाओं समेत कर्णसे कहाकि १ दैवइच्छासे यह स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है ऐसे युद्धको स्वर्ग और मोक्षके पानेवाले क्षत्री लोगपातेहैं २ हेकर्ण तू युद्धमें अपने समान युद्ध करनेवाले शूरबीर क्षत्रियों के चित्तका जो प्यारा होताहै वह दिन आज वर्त्तमान होकर नियत हुआहै ३ युद्धमें पांडवों को मारकर वृद्धि युक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्ध में शत्रुओंके हाथसे मरकर बीरों के लोकों को पावोगे ४ वह सब श्रेष्ठ क्षत्री लोग दुर्य्योधन के इस बचनको सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वरसे गर्जे और बाजोंको बजाया ५ इसके पीछे दुर्य्योधनकी उस सेनाके अति प्रसन्न होने पर अश्वत्थामाजी आपके शूरबीरोंको प्रसन्न करते हुये यह बचन बोले कि सबसेनाके मनुष्योंके समक्षमें शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता इस धृष्टद्युम्न के [illegible]से मारागया ६।७ हे राजालोगो इसहेतु से मैं उस क्रोधसे मित्रके लिये भी तुमसे सत्य प्रतिज्ञा करताहूं उसको आपसब समझो ८ मैं धृष्टद्युम्नको जबतक न मार

लूंगा तब तक कवचको नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरीनहोगी तो स्वर्गकोभी मैं नहीं पासक्ता ६ युद्धमें भीमसेन अर्जुन को आदि ले जो कोई शूरबीर धृष्टद्युम्न का रक्षक होगा उसकोभी मैं युद्धमें बाणोंसे मारूंगा १० इसबचनके सुनतेही भरतबंशियोंकी सबसेना एक साथही पांडवों के सन्मुख गई और इसीप्रकार वह पांडव लोगभी कौरवों के सन्मुख दौड़े ११ हे राजा वह महारथियों का संग्राम बड़ा भयकारीहुआ और कौरव वा सृञ्जियोंके आगेमनुष्यों का नाश कुछकम प्रलयहीके समान हुआ १२ इसके पीछे युद्धमें उनकठिन प्रहारोंके बर्त्तमान होनेपर अप्सराओं समेत देवताऔर सब जीवमात्र उन नरबीरों के देखने के अभिलाषी इकट्ठे हुये १३ अत्यन्तप्रसन्न चित्त अप्सराओंने युद्ध में अपने कर्मसेस्वर्ग में पहुंचने के योग्य बड़े २ नरोत्तम बीरोंको दिव्यमाला वा नानाप्रकार की गन्धि और रत्न जटित उत्तम २ अद्भुत भूषणों से बर्षाकरके ढक दिया १४ फिर बायुने उन सब गन्धादिकोंको लेकर उन सबश्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरबीरोंको सेवन किया बायुसे सेवित होकर परस्पर में मारे हुये शूरबीर पृथ्वी पर गिरपड़े १५ दिव्यमाला वा सुनहरी पुंखवाले बिचित्र बाणोंसे व्याप्त उत्तम शूरबीरोंसे बिचित्र वह पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नक्षत्र मंडल से अलंकृत आकाश होताहै १६ इसके पीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्ष के प्रशंसा युक्त बचन बाजोंके शब्दोंसे शब्दायमानधनुष और रथचक्रों के अपूर्व्व शब्दों से अद्भुत रूप होकर व्याकुल रूप होगई १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभूमिअद्भुतरूपवर्णनेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुन कर्ण और भीमसेनके क्रोधयुक्त होनेपर इसरीति से राजाओं का यह अद्भुत युद्ध हुआ १ हे राजा अर्जुन अश्वत्थामाको पराजित करके और दूसरे महारथियों कोभी बिजय करके बासुदेवजीसे यह बचन बोला २ हे महाबाहु श्रीकृष्णजी

भागती हुई पांडवी सेनाको और युद्ध में महारथियों को भगातेहुये कर्णकोदेखो ३ हे श्रीकृष्णजी मैं धर्मराज युधिष्ठिरको नहीं देखता हूं हे बड़े शूरबीर मुझको युधिष्ठिरकी बड़ी ध्वजाभी नहीं दिखाई देती ४ हे जनार्द्दनजी जिनका तीसराभाग शेषहै उन धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्धमें मेरे सन्मुख कोई नहीं आताहै ५ इसहेतु से आप मेरे हितको करतेहुये वहां चलो जहांपर युधिष्ठिर है हे माधवजी में युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिर को कुशल देखकर फिर आनकर शत्रुओं से लडूंगा यह सुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्रही रथकेद्वाराचले६।७ जहांराजायुधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी२ सेना समेत मृत्यु को हाथ में लिये परस्पर में युद्ध करतेथे इसके पीछे मनुष्यों के नाश काल बर्त्तमान होनेपर युद्धभूमि को देखते हुये गोबिन्दजी अर्जुनसेबोले ८।६ हे अर्जुन देखो कि दुर्य्योधन के कारण से पृथ्वी पर क्षत्रियों का और भरतबंशियों का महाघोर रुद्ररूप नाश बर्त्तमानहै १० हे धनुषधारी मरेहुये धनुष धारियों के सुवर्ण पृष्ठवाले धनुष और बहुमूल्य टूटेहुये तूणीरोंकोदेखो ११ और सुनहरी पुंख युक्त टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंको तेलसे सफा किये हुये कांचलीसे रहित सर्पोंकी समान नाराचोंको देखो १२ हाथीदांत का बेंटा रखनेवाले सुवर्ण जटित खड्गों को और टूटेहुये स्वर्णमयी कवचोंको देखो १३ सुवर्ण जटित प्रास और सुबर्ण भूषणों से अलं-कृत शक्ति अथवा स्वर्ण सूत्रोंसे खचित बड़ी२ गदाओंको देखो १४ सुवर्णसे जटित दुधारे खड़्ग और पट्टिश और फरसों को देखो १५ गिरेहुये भारी२मुशल चित्रितशतघ्नी और बड़े२परिघोंको देखो १६ इसमहायुद्धमें टूटेचक्र और तोमरोंकोदेखो विजयाभिलाषी वेगवान् युद्धकर्त्ता लोग नानाप्रकार के शस्त्रों समेत मरेहुयेभी जीवतेहुये से विदितहोतेहैं गदाओंसे अंगभंग मुशलोंसे टूटेमस्तक १७।१८ हाथी घोड़े और रथोंसे घायल हजारों शूरबीरोंकोदेखो हे शत्रुहन्ता अर्जुन मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश १६ घोर रूप लोहेकी परिघ असिकान्त, फरसा

इत्यादिशस्त्रोंसेछिन्नरूप और बहुतसेमृतकरूप शरीरोंसे २० आच्छादितहोकरचन्दनसे लिप्त सुवर्ण के बाजुओंसे अलंकृत २१ हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओंसे पृथ्वी प्रकाशमान हुई हेभरतवंशी हस्तत्राण रखनेवाले अत्यन्त अलंकृत औ छिदीहुई उत्तम भुजा २२ और हाथीकी सूंड़के समान महावेगवानोंकी टूटीजंघा और उत्तम चूड़ामणिसमेत कुंडलधारी २३ उत्तम नेत्रवाले बीरोंसमेत पड़े हुये शिरोंसे पृथ्वी महा शोभायमान होगईहै हेभरतर्षभ रुधिरसे लिप्त अंग जिनकी ग्रीवा टूटीहुई २४ इन सब नानाअंगों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशितहुई जैसे कि शांतज्योतिवालीअग्नियोंसेबन शोभित होताहै और सुनहरी घंटे रखनेवाले बहुत प्रकारसे टूटेहुये शुभरथों से व्याप्त २५ बाणोंसे घायल मृतक वा व्याकुलपड़े हुये आनत्त वाले घोड़ोंकोदेखो अनुकर्ष उपासंग पताका औरनानाप्रकारकी ध्वजाओं को देखो २६ रथी लोगोंके बड़े २ शंख श्वेत चामर और जिनकी जिह्वाबाहर निकलपड़ीं उन पर्वताकार सोतेहुये हाथियोंकोदेखो २७ बैजयन्ती माला वा रथके बिचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलोंकोदेखो २८ फैलनेसे बिचित्रचांदी से जड़े हुये अंकुश और बड़े २ हाथियों समेत गिरकर टूटे घंटोंको देखो २९ बैडूर्य्य मणियोंसे जटित सुन्दर दण्ड युक्त गिरेहुये शुभ अंकुश और सवारोंकी भुजाओंमें बंधेहुये सुवर्ण जटित चाबुकोंको देखो ३० बिचित्र मणियोंसे जटित सुवर्णसे अलंकृत रांकवान मृगचर्मसे बनेहुये पृथ्वीपर पड़े हुये घोड़ोंके स्तर परिस्तोमों को देखो ३१ राजाओंकी चूड़ामणि वा बिचित्र स्वर्णमयी माला वा टूटेहुये छत्रचामर और व्यजनोंकोदेखो ३२ चन्द्रमा और नक्षत्रोंकेसमान प्रकाशमान सुन्दर कुंडलधारी डाढ़ी मूछोंसे अलंकृत भयसंयुक्त वीरोंके मुखोंसे ३३ ढकीहुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वी को देखो और चारों ओरसे शब्द करनेवाले अन्य सजीव जीवोंकोदेखो ३४ हेराजा शस्त्रोंको त्यागकर बारंबार रोनेवाले जातवालोंसे घिरेहुये बहुतसे मनुष्योंको देखो ३५ वेगवान् वा विजयाभिलाषी क्रोधभरे

शूरबीर दूसरे मृतक शूरबीरोंको ढककर फिर युद्धके लिये जाते हैं ३६ इसीप्रकार पड़े हुये शूरबीरोंने जिन जातवालोंसे जल कोमांगा वह मनुष्य जहांतहां दौड़रहेहैं ३७ हेअर्जुन कोई तोजलके निमित्त गये और अनेक मृतकहुये वह शूर उनको अचेत देखकर लौटे ३८ जलकोत्यागकर परस्पर पुकारतेहुये दौड़तेहैं हे श्रेष्ठजल पी२ कर मरनेवालोंको वा जलके पीनेवालोंको भी देखो ३९ कित-नेही बांधवोंके प्यारेमनुष्य अपने प्रिय बांधवोंको त्यागकरजहांतहां इस महायुद्धमें युद्ध करतेहुये दृष्टपड़ते हैं ४० हेनरोत्तम इसीप्रकार दोनों ओष्ठोंको काटनेवाले टेढ़ी भृकुटीवाले मुखोंसे चारोंओरकोदेख-नेवाले अन्य मुनुष्योंको देखो ४१ तब इस रीतिसे बातें करतेहुये श्रीकृष्णजी वहांगये जहांपरकि युधिष्ठिरथे औरअर्जुननेभी राजाके देखनेकेनिमित्त ४२बारंबार गोबिन्दजीको प्रेरणाकरी कि शीघ्रचलो२ ऐसी शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजीने वह युद्धभूमि अर्जुनको दिखाकर ४३ बड़ी धैर्य्यतासे अर्जुनसे यह बचन कहा कि हे अर्जुन राजा युधिष्ठिरको और सन्मुख जानेवाले राजाओंको देखो४४ और महायुद्धमें अग्निके समान क्रोधरूप कर्णकोभी देखो यह बड़ाध-नुषधारी भीमसेनयुद्धमें लौटाहै ४५पांचाल सृञ्जी और जोरपांडवों को उत्तम गिनेजातेहैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्नहै वहसब उस भीमसेनके संगमें लड़तेहैं ४६ और उस लौटनेवाले पांडव भीमसेन से शत्रुओंकी बड़ी सेना फिर पराजयहुई हेअर्जुन यह कर्ण भागने वाले कौरवोंको रोकताहै ४७ हेकौरव्य वेगमें यमराजके समान और इन्द्रके सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ यह अश्वत्थामाभी जाताहै ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्धमें उस भागनेवालेके पीछे जाताहै और युद्धमें मरेहुये सृञ्जियोंको देखो ४९ महाअजेय बासु-देव जीने इसरीतिसे इससब वृत्तान्तको अर्जुनसे कहाहै राजा इस केपीछे महाघोर युद्धजारीहुआ ५० तब मृत्युको निवृत्त करकेदोनों सेनाओंके समागम होनेमें दोनों ओरको सिंहनादोंके महान् शब्द होनेलगे ५१हे पृथ्वीपति राजा धृतराष्ट्र आपके दुर्मन्त्रोंसे पृथ्वीपर

आपके और अन्योंके शूरबीरोंका इसरीतिसे नाशजारीहुआ ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहायुद्धे अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसकेपीछे निर्भय कौरव सृञ्जी और युधिष्ठिरको अग्रगामीकरनेवाले पांडवऔर कर्णको अग्रगामीकरनेवाले हमलोग फिर भिड़गये १उस समय कर्ण और पांडवों का वहयुद्ध फिर जारी हुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराजके देशकी वृद्धि करनेवालाथा२ हे भरतवंशी उस कठिन रुधिर रूप जल रखनेवाले युद्धकेजारीहोनेपर और शूरबीर संसप्तकोंके कुछबाकी रहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पांडव सब राजाओं समेत कर्णके सन्मुख गये तब अकेलेकर्णने युद्धमें आनेवाले प्रसन्नचित बिजयाभिलाषीउन बीरोंको ऐसे धारण किया जैसे कि जलके समूहोंको पर्व्वत धारण करताहै ४।५ वह सब महारथी कर्णको पाकर ऐसे भिन्न२ होगये जैसे कि जलके समूह पर्व्वतको पाकर इधर उधर दिशाओंको चले जातेहैं ६ हेमहाराज इसके पीछे रोमहर्षण करने वाला युद्ध होने लगा तब धृष्टद्युम्न ने कर्णको टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे ७घायल किया उस समय तिष्ठ२ कहकर विजय नाम उत्तम धनुषको खैंच कर महारथी कर्णने ८ धृष्टद्युम्नके धनुषको और बिषैले सर्पोंके समान बाणोंको काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर नौ बाणोंसे धृष्ट-द्युम्नको घायल किया ९ हेनिष्पाप वह कर्णके बाण उसमहात्मा के सुनहरी कवचको छेदकर रुधिरमें भरेहुये बीरबहूटी के समान शोभायमान हुये १० महारथी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे हुये धनुषको डालकर दूसरे धनुष और बिषैले सर्पकी समान बाणोंको लेकर११ टेढ़े पर्व्व वाले सत्तर बाणोंसे कर्णको पीड़ामान किया और उसी प्रकार कर्णनेभी युद्धमें शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको १२ बिषैलेसर्पके समान बाणोंसे ढक दिया फिर द्रोणाचार्य्यके शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे पीड़ामान किया १३ हेराजा

फिर अत्यन्त क्रोध युक्त कर्णने सुनहरी भूषण युक्त द्वितीय यमदंड के समान बाणको उसके ऊपर फेंका १४ हस्तलाघव करनेवाले सात्यकी ने उस अकस्मात् आने वाले घोररूप बाणको सौ प्रकार से काटा १५ तब कर्णने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकी को बाणोंकी बर्षा करके चारोंओर से ढकदिया १६ और सातनाराचों से पीड़ामानभी किया इसकेपीछे सात्यकोनेभी सुवर्णजटितबाणोंसे उसको छेदा १७हेमहाराज इसकेपीछे घोरयुद्धहुआ वहयुद्धनेत्र और कर्णोंको भयभीत करने वाला महा अद्भुत चारों ओरसे देखनेकेहो योग्य था १८ हेराजा वहां कर्ण और सात्यकी के उस कर्मको देख कर सब जीवोंके रोमांच खड़ेहोगये १९ इसी अन्तरमें अश्वत्थामा जोबड़े पराक्रमी उस धृष्टद्युम्नके सन्मुख गये जोकि शत्रुओंका बिजय करने वाला और पराक्रम समेत प्राणोंका हरनेवालाथा २० शत्रुके पुरके बिजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा जी बोले कि हे ब्राह्मणके मारनेवाले ठहरो ठहरो अब मुझसे बच कर जीतानहीं बचसक्ता २१ यहकहकर शीघ्रताकरनेवालेअश्वत्था माने तीक्ष्णधार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणोंसे बीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेगसे ढकदिया २२ हे श्रेष्ठ जैसे कि महारथी द्रोणा-चार्य्यजी युद्धमें उपायकरनेवाले धृष्टद्युम्नको देखकर बड़ेपरिश्रम से उपाय करनेवाले हुये २३ उसी प्रकार शत्रुओंके बीरोंके मारने वाले धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाको देखकर कुछ अप्रसन्न होकर अपनी मृत्युको माना २४ फिर वह युद्धमें अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर बड़ीतीव्रतासे अश्वत्थामाके सन्मुखऐसेगया जैसेकिप्रलय-कालमें काल कालके सन्मुख जाताहै २५ हे महाराजेन्द्र फिर बीर अश्वत्थामा अपने सन्मुख धृष्टद्युम्नको देखकर क्रोधसे श्वासलेता हुआ उसके सन्मुखगया २६ और उनदोनोंने परस्पर देखकरबड़ा क्रोधकिया हे महाराज राजाधृतराष्ट्र इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा २७ सन्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले हेपांचालदेशियोंमें नीच अबमैं तुझको मृत्यु के समीप भेजूंगा २८

जोकि पूर्व्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य्यको मारकर पापकर्म कियाहै अब वह पापका फलतुझको ऐसामिलैगा जिसमेंतेरा कल्याण न होगा २९ हेअज्ञान जो तू अर्जुनसे अरक्षितहोकर युद्धमें नियत होता है या नहीं हटताहै इसीसे सत्य२ तेराकल्याण नहींहै ३० यहबचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने उत्तरदिया कि मेरावही खड्गतेरे उत्तरकोदेगा ३१ जिसने कि युद्धमें उपाय करनेवाले तेरे पिताको उत्तर दियाथा नाममात्र अपनेको ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्य्यजी मेरेहाथसे मारेगये ३२ अब युद्धमें अपने पराक्रमसे तुझकोभी क्यों न मारूंगा हे महाराज क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्नने ऐसाकह कर ३३ अत्यन्त तीक्ष्णबाणसे अश्वत्थामाको घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने टेढ़ेपर्व्व वाले बाणों से युद्धमें धृष्टद्युम्नकीदिशाओंको ढकदिया ३४उससमयचारोंओरसेबाणोंसेढके हुये न शूरबीर दिखाईदिये न दिशाबिदिशासमेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हे राजा इसी प्रकार धृष्टद्युम्नने भी युद्धमें शोभा देनेवाले अश्वत्थामा को ३५।३६ कर्ण के देखते हुये बाणोंसे ढकदिया फिर चारों ओरसे देखनेके योग्य अकेले कर्णनेभी पांचाल पांडव ३७ द्रौपदीकेपुत्र युधामन्य और महारथी सात्यकी को रोका ३८ फिर धृष्टद्युम्न ने युद्धमें अश्वत्थामा के धनुषको काटा तब बेगवान् अश्वत्थामाने उसकोडाल दूसरे धनुषको लेकर घोरजंगमें बिषैले सर्पोंकी समान बाणोंकोफेंका फिर उसने धृष्टद्युम्नकी गदा शक्ति धनुषध्वजा३९।४०रथसारथीऔर घोड़ोंको बाणोंसेएक क्षणमात्रमें मारातब उसधनुष रथ गदा शक्ति रथध्वजा टूटेहुये धृष्टद्युम्नने ४१ बड़े खड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको लिया हेराजेन्द्र तब हस्तलाघवी बीर अश्वत्थामाने शीघ्रही अपने भल्लोंसे रथसे न उतरनेवाले धृष्टद्युम्नके उसखड्गकोभी काटा यहबड़ा आश्चर्य्यसा हुआ ४२।४३ हेभरतर्षभ फिर उपाय करनेवाला महारथी उस रथ गदा शक्ति खड्ग आदिसे रहित बाणोंसे अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मारसका हेराजा जब अश्वत्थामा बाणोंसे उसकी

न मारसका ४४।४५ तब वहबीर धनुषको त्यागकर धृष्टद्युम्नकी ओरकोचला और उससमय हेमहाराज उसमहात्मा श्रमरहित अश्वत्थामाका बेग इसप्रकारकाहुआ ४६ जैसेकि उत्तम सर्पके भक्षण करनेवाले गरुड़का बेगहोताहै उसीसमय श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले ४७ हेअर्जुन देखोजैसेकि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके रथपर बड़ेउपायोंको करताहै वहनिस्सन्देह इसको मारेगा ४८ हेशत्रुओंके विजय करनेवाले महाबाहु जैसे होसके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्युके मुखमें फंसेहुये धृष्टद्युम्न को निश्चयकरकेछुटाओ४९ हेमहाराज ऐसा कहकर प्रतापवान् बासुदेवजी ने घोड़ोंको वहां पहुंचाया जहांकि अश्वत्थामा नियतथे ५० केशवजीके हांकेहुये वह चन्द्रवर्णघोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामाके रथपर पहुंचे ५१ हेराजा महापराक्रमी अश्वत्थामाने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर धृष्टद्युम्नके मारनेमें उपायकिया ५२ तब बड़े पराक्रमी अर्जुनने खिंचे हुये धृष्टद्युम्नको देखकर बाणों को अश्वत्थामा के ऊपर फेंका ५३ गांडीवधनुष से चलाये हुये वह स्वर्णमयी बाण अश्वत्थामाको पाकर उसकेशरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्प बामीमेंघुसतेहैं हेराजा उनबाणोंसे घायल और पीड़ावान् बीर अश्वत्थामा युद्धमें बड़े तेजस्वी धृष्टद्युम्नको छोड़कर रथपर सवार हुये५४।५५ और अर्जुनके बाणसे पीड़ित होकर उत्तमधनुषको लेकर सायकोंसे अर्जुनको घायलकिया ५६ इसी अन्तरमें बीर सहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको रथमें बैठाकर दूरलेगया ५७ हे महाराज फिर तो अर्जुनने भी अश्वत्थामा को बाणों से पीड़ित किया फिर बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने अर्जुन को दोनों भुजा और छातीपर घायल किया ५८ फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने युद्धमें कालके समान दूसरे कालदंडके समान नाराचनाम बाणको अश्वत्थामा के ऊपरफेंका ५९ वहबड़ा तेजस्वी बाण उसब्राह्मण अश्वत्थामा के कन्धेपर गिरा तब बाणके वेगसे व्याकुल होकर अश्वत्थामा रथके बैठनेके स्थानपर बैठगये और महाव्याकुलताको पाया हे महाराज

इसकेपीछे कर्णने अपने बिजयनामधनुषकोटंकारा ६०।६१ युद्धमें क्रोधयुक्त होकर बारंबार अर्जुनको देखने वाले और अर्जुनसे युद्धमें द्वैरथ युद्धकरने के अभिलाषी कर्णने धनुषको टंकारकर ६२ युद्ध भूमिमें शीघ्रता करने वाले अश्वत्थामाकोव्याकुलदेखके रथकेद्वारा युद्धभूमिसे दूर लेगया ६३ हे महाराज धृष्टद्युम्नको छूटाहुआ और अश्वत्थामाको अचेतता पूर्व्वक व्याकुल देखकर बिजय से शोभायमान पांचालोंने बड़े शब्दकिये ६४ हजारों दिव्यबाजे बजे और युद्धमें उस अद्भुतपनेको देखकर शूरबीरोंने सिंहनाद कि-ये ६५ पांडव अर्जुन ऐसाकर्मकरके बासुदेवजीसे बोला कि हे श्री-कृष्णजी आप संसप्तकों के सम्मुखचलो यहमेरा बड़ा कामहै ६६ अर्जुन के बचनको सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी पताका वाले मन और बायुके समान शीघ्रगामी रथकी सवारी से चलदिये ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाअचेतोनामएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसीअन्तर में कुन्ती के पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर को दिखातेहुये श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यहबचन कहा हे पांडव बड़े पराक्रमी मारने के इच्छावान् महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यहतेराभाई राजायुधिष्ठिर बड़ीशीघ्रता से पीछाकिया जाताहै १।२ वहांमहादुर्मदक्रोधयुक्त पांचालमहात्मा युधिष्ठिरको चाहतेहुयेपीछे चले जातेहैं ३ और पृथ्वीका राजा रथसमेत सेनाओं से अलंकृत दुर्य्योधन राजा युधिष्ठिरके पीछे दौड़ताहै ४ हे पुरुषोत्तम सहपरा क्रमी विषैले सर्पके समान स्पर्शवाले सबयुद्धों में कुशल भाइयों समेत मारनेका अभिलाषीहै ५ युधिष्ठिरके पकड़नेकी इच्छा करने वाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पत्तियों समेत ऐसे जातेहैं कि जैसे कि इच्छावान् पुरुष उत्तम मनुष्यके पासजातेहैं ६ यादव सात्यकीबाभीमसेनसे रोकेहुयेयुधिष्ठिरको पकड़नेके इच्छा-वान्यहलोगफिरऐसेनिवृत्तहैं जैसे किइंद्र औरअग्निसे बारंबाररुके

हुये अमृत के चाहने वालेदैत्य होते हैं ७ यह शीघ्रता करने वाले महारथी बहुत होनेकेकारण पांडव युधिष्ठिरकीओर फिर ऐसेजाते हैं जैसे कि बर्षाऋतुमें जलके प्रवाह समुद्रकीओर जाते हैं ८ बड़े २ पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादोंको करते शंखोंको बजाते और शत्रुओंको चलायमान करतेहुये चलेजाते हैं ९ मैं कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर को मृत्युके मुखमें वर्त्तमान मानताहूं और उस कुन्ती के पुत्रको दुर्योधनकी आधीनतामें वर्त्तमानहोकर अग्निमें होमाहुआ बिचार करताहूं १० हेअर्जुन फिर दुर्योधनकी सेना इसप्रकारकीहै कि इसके बाणलक्षमें वर्त्तमानहोकर समर्थभी नहीं बचसक्ताहै ११ युद्ध में बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बीर दुर्योधन के बेगको कौन सहसक्ता है १२ बीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कर्णके बाणोंकाबेग पर्व्वतोंकाभी तोड़नेवाला है १३ शत्रुओंका संतप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवी कर्म कर्त्ता युद्धमें कुशल राजा युधिष्ठिर कर्ण के हाथसे मुख मोड़नेवाला होचुकाहै और बड़े शूरबीर धृतराष्ट्रके पुत्रों समेत कर्ण युद्धमें युधिष्ठिरको पीड़ामान करनेको समर्थहै १४।१५ युद्ध में लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिरके पराजय होनेका गुमान इन और अन्य महारथियोंकोभी प्राप्तहै १६ क्योंकि यह भरतबंशियों में श्रेष्ठ ब्रत करनेवाला समर्थ राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणोंके क्षमा आदि पराक्रमों में नियतहै यह क्षत्री धर्म्मरूप पराक्रम में अर्थात् कठोर प्रकृति आदि में नियत नहींहै १७ निश्चय करके कर्णके साथ भिड़े हुये शत्रुहन्ता युधिष्ठिर बड़े संशयमें प्राप्तहुआ है १८ हेअर्जुन जोकि असहन शील भीमसेन शत्रुओंके सिंहनादों को सहरहा है इससे मैं अनुमान करताहूं कि महाराज युधिष्ठिर जीवतेहुये नहींहैं १९ हेभरतर्षभ युद्धमें बिजयसे शोभायमान बारम्बार गर्जते और शंखोंको बजातेहुये २० यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको प्रेरणा करताहै कि तुम पांडव युधिष्ठिर को मारो २१ हेअर्जुन महारथीलोग इन्द्रजालरूप स्थूणा कर्णनाम

गान्धर्व अस्त्र वा पाशुपति अस्त्र और बाणों के जालोंसे राजाको ढकरहे हैं २२ हेभरतबंशी अर्जुन राजा युधिष्ठिर ऐसा व्याकुलकर दियाहै जैसा कि यह पांचालदेशो अश्वत्थामाने कियाथा पांडवों समेत सब शूरबीर इसकेपीछे हुयेहैं इसीप्रकार तुमसेभी यहराजा रक्षा करनेकेयोग्य है २३ सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरबीर उसपातालमें डूबेहुयेकेसमान युधिष्ठिरको निकालनेकी इच्छा कररहे हैं २४ राजाकी ध्वजानहीं दिखाई देतीहै हेअर्जुन वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डीके देखतेहुये कर्णके बाणोंसे मारागया २५ हेभरतबंशी समर्थअर्जुन वह राजाधृष्टद्युम्न,भीमसेन,सतानीक औरसबपांचाल वा चंदेरीदेशियोंके देखतेहुये मारागया२६ हेअर्जुनयहकर्णबाणोंसे पांडवोंकी सेनाको ऐसे माररहा है जैसे कि कमलके बनोंको हाथी मारता है २७ हे पांडुनन्दन यह आपके रथी भागते हैं हेअर्जुन देखो २ यह महारथी जातेहैं २८ हेभरतबंशी यहहाथी कर्णकेबाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दोंको करते हुये दशों दिशाओंको भागतेहैं २९ हे अर्जुन शत्रुओंके पराजय करने वाले कर्णसेयुद्धमें भगाये हुये यह रथोंके समूह चारों ओरसे भागते चले जातेहैं३० हे ध्वजाधारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन कर्णके रथपर नियत हाथीकी कक्षा का चिह्न रखनेवाली और जहां तहां युद्धमें घूमने वाली ध्वजा को देखो ३१ यह कर्ण हजारों बाणोंको बरसाता तुम्हारी सेनाको मारता हुआ भीमसेनके रथपर दौड़ताहै ३२ इनभगाये हुये महारथी पांचालोंको ऐसा देखो जैसे कि महायुद्धमें इन्द्र से भगायेहुये दैत्य होतेहैं ३३ यह कर्ण युद्धमें पांचाल पांडव और सृञ्जियों को बिजयकरके तेरे निमित्त सब दिशाओंको देखताहैयहमेरा पक्काअनुमानहै ३४ हे अर्जुन यह कर्ण उत्तम धनुष को खैंचता हुआ ऐसा शोभायमानहै जैसे कि देवगणोंसे व्याप्त शत्रुओं को बिजयकरके इन्द्र शोभायमान होताहै ३५ यहसबकौरव कर्णके पराक्रमको देखकर गर्जते हुये शब्दोंको करतेहैं और युद्धमें चारों ओरसे पांडव

और सृंजियोंको डरतेहैं ३६ हे प्रशंसा देनेवाले यह कर्ण युद्धमें सब आत्मासे पांडवों को भयभीत करके सब सेनाके मनुष्यों को बोला ३७ हे कौरव्य तुम्हाराकल्याणहो तुमशीघ्रचलकर सन्मुखताकरो जिससे कि कोई सृंजी युद्धमें तुम्हारे हाथसे जीवता बचकर न जावे तुम शस्त्रोंको धारणकिये सावधानी से युद्धकरो और हम पीछे की ओर से चलतेहैं यह कर्ण इस रीति से कहकर पीछे की ओर से बाणोंको मारता हुआ चलागया ३८। ३६ हे अर्जुन श्वेत छत्रसे शोभायमान कर्णको देखो वह ऐसा मालूम होताहै जैसे कि चन्द्रमा से शोभायमान उदयाचल पर्व्वत होताहै ४० हेभरतवंशी अर्जुन पूर्ण चन्द्रमाके समान शोभायमान सौ शलाका रखने वाले मस्तक पर धारण किये हुये छत्रसमेत ४१ यह कर्ण तुझको सकटाक्ष देखता है निश्चय करके यह बड़ी तीव्रतामें नियत होकर युद्धमें आवेगा ४२ हे महाबाहु बड़े युद्धमें वृहत् धनुषको चढ़ाने वाले विषैले सर्पोंके समान बाणोंके छोड़नेवाले इसकर्णको देखो ४३ हे शत्रुसंतापी अर्जुन यह कर्ण तुझसे युद्ध करनेकोइच्छा करता हुआ तेरा बानरी ध्वजाको देखकर लौटा ४४ यह अपने मरनेके लिये ऐसे आताहै जैसे कि शलभ नाम पक्षी प्रकाशमान अग्नि के मुखमें जाताहै हेभरतबंशी रथकी सेना समेत रक्षाकरने का अभिलाषी दुर्य्योधन अकेले कर्णको ही देखकर लड़ताहै इन सब समेत इस दुष्ट अन्तःकरण वाले दुर्य्योधन को बड़े विचार पूर्वक उपायों से मारना चाहिये ४५। ४६ हे उच्चाभिलाषी शस्त्रोंको अच्छी रीति से जाननेवाले युद्धाभिलाषी यश राज्य औरउत्तम सुखको चाहने वाले तेरे हाथ से मारने के योग्य है ४७ हेराजा जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें देवता और दानवों के युद्ध होतेहैं इसीप्रकार हेभरतर्षभ अत्यन्त क्रोधयुक्त तुझको और कर्णको देखकर ४८ यह क्रोधयुक्त दुर्य्योधन अपनेको बुद्धिमान् विचारकर उत्तरको नहीं पाताहै ४६ हे कुंतीके पुत्र तुम धर्मात्मा युधिष्ठिरकेसाथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्णकेसन्मुख शीघ्र

होजाओ ५० और बुद्धिको प्रबल करके इस महारथी के सन्मुख चलो हे रथियों में श्रेष्ठ यह पांच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तम रथी ५१ पांचहजार हाथी और दशहजार घोड़ोंसमेत हजारों शूरबीरोंको साथलिये ५२ प्रयुतोंपदातियोंसे युक्तहोकरआतेहैं हेबीर परस्परमें रक्षित सेना तेरे सन्मुख आतीहै ५३ हेभरतर्षभ तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्णकोदर्शनदो और बड़ीतीव्रता में नियतहोकर सन्मुख जाओ ५४ यह अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर कर्ण पांचालोंके सन्मुख दौड़ताहै में इसकी ध्वजाको धृष्टद्युम्नके रथपर देखताहूं ५५ हेशत्रुसंतापी में मानताहूं अर्थात् अनुमान करताहूं कि यह पांचालोंके सन्मुख जाताहै हेअर्जुन अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियबार्त्ताको कहताहूं ५६ कि यह श्रीमान धर्मकापुत्र राजा युधि-ष्ठिर आनन्दपूर्व्वक कुशलसेहै और यह महाबाहुभीमसेन सेनाके मुखसे निवृत्तहुआ लौटाहै ५७ और वह भरतबंशी संजियोंकीसेना सात्विकीसेयुक्तहै यह कौरवयुद्धमें तीक्ष्णधार बाणोंसे मररहेहैं ५८ हेअर्जुन महात्मा पांचालोंसे और भीमसेनकेहाथ से दुर्योधन की सेनायुद्धमें मुखोंको मोड़मोड़कर ५६ भीमसेनके बाणोंसे घायलहोकर बड़ी शीघ्रतासे भागतीहै और टूटे कवच रुधिरसे लिप्त शरीरवाली ६० महादुखी भरतबंशियोंकी सेना दिखाईदेतीहै हे भरतर्षभ अर्जुन इस शूरबीरोंकेस्वामी फैलेहुये भीमसेनको देखो कि यहबिषैलेसर्पकी समान क्रोधयुक्त सेनाका भगानेवाला है हेराजा यह लाल पीले काले औरश्वेत सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रोंसे शोभायमान ६१।६२ अलंकृत पताका और छत्रगिरतेहैं मुखन मोड़नेवाले और नाना प्रकारके वर्णवाले पांचालोंके बाणोंसेघायल और निर्जीवहोकर यह रथीअपने२ रथोंसे गिरतेहैं ६३।६४ हेअर्जुन बेगवान पांचाल मनुष्य हाथीघोड़े और रथोंसेजुदे धृतराष्ट्रके पुत्रों केसन्मुखजातेहैं और नरो-त्तम भीमसेनसे रक्षित होकर ६५। ६६ वह अजेय पांचाललोग अपने२ प्राणोंकी आशाछोड़२शत्रुओंको मर्दनकरतेहैं हे शत्रुबिजयी यह सब पांचाल प्रसन्नही होकर शंखोंको बजातेहैं ६७ और युद्धमें

बाणोंसे शत्रुओंको मर्दन करतेहुये दौड़तेहैं इन अपने शूरबीरोंके साहसको देखोकि पांचाल देशी शूर अपने पराक्रमोंसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंकाऐसे मारतेहैं ६८ जैसेकि क्रोधयुक्त सिंह हाथियों को मारते हैं शस्त्रोंसेरहितशूरबीर शस्त्रधारीशत्रुओंके शस्त्रकोकाटकर६९उसी-से इन फलयुक्त शस्त्रधारियों को मारते हुये गर्जनाओंको करतेहैं शत्रुओंके शिर और भुजाभी गिरायी जाती हैं ७० रथ हाथी घोड़े और युद्धके सबबीर लोग शूरताके उत्पन्न करनेवाले शब्दोंकोकर-रहेहैं और यह दुर्य्योधन की बड़ीसेना सबओरको पांचालों के सन्मुख ऐसेवर्त्तमानहै ७१ जैसेकि वेगवान हंसोंसे चारों ओरको व्याप्त श्रीगंगाजी होती हैं श्रेष्ठोंमेंभी अतिश्रेष्ठ बीरकृपाचार्य्य और कर्ण आदि यह सब पांचालों के रोकने में कठिनपराक्रम करनेवाले हुये और भीमसेनके अस्त्रोंसे पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रोंको देखो ७२ । ७३ और शत्रुओंके हाथसे पांचालोंके परा-जय होनेपर निर्भय होकर गर्जनेवाले धृष्टद्युम्न आदि बीरहजारों शत्रुओंको मारतेहैं ७४ बायुका पुत्र भीमसेन शत्रुओंके पक्षोंको मझाकर बाणोंकी बर्षाकरताहै और धृतराष्ट्र की बड़ीसेना महाव्या-कुलहै ७५ और यह रथीभी भीमसेन के भयसे अत्यन्त पीड़मान होकर भयभीत हैं देखो भीमसेन के नाराचोंसे घायल होकर यह हाथीऐसे गिरतेहैं ७६ जैसे कि इन्द्र के बज्रसे टूटे हुये पर्व्वतोंके शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से घायल यह बड़े २ हाथी अपनी सेनाओंको कुचलते दाबते हुये इधर उधरको भागतेहैं भीमसेन कासिंह बड़ेदुःखसे सहनेकेयोग्य जानो ७७।७८ हे राजादण्डधारी यमराजके समान क्रोधयुक्त तोमरोंसे भीमसेन के मारने की इच्छासे यह निषादकापुत्र इसयुद्ध में गर्जने वाले और बिजयसे शोभायमान बीरभीमसेनके सन्मुख आताहै इसकी दोनोंभुजाओंको उसगर्जनेवाले भीमसेनने तोमरसे काटडाला ७९। ८० और देदीप्य अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशित दशबाणों से मारडालाइसको मारकर अब प्रहार करनेवाले दूसरे हाथियों

के सन्मुख आताहै ८१ सवारों समेत सवारियोंको और नीलेबा-
दलोंके समान हाथियोंको शक्ति और तोमरोंसे मारनेवाले भीम-
सेनको देखो ८२ हेराजा तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उन सात २ हा-
थियोंको बैजयन्ती ध्वजाओंको काटकर तेरे बड़े भाई भीमसेन
ने मारडाला ८३ दश २ नाराचोंसे एक २ हाथी मारागया इसीसे
धृतराष्ट्रके पुत्रोंकेशब्द नहीं सुने जातेहैं हे भरतर्षभ इसीप्रकारयुद्ध-
में इन्द्रके समान भीमसेन के लौटनेपर क्रोधयुक्तनरोत्तम भीमसेन
के हाथसे दुर्य्योधन की तीन अक्षौहिणीसेना घायल और रोकीगई
संजय बोलेकि भीमसेनके उन कठिनकर्मोंको देखकर ८४।८५।८६
अर्जुनने शेषबचेहुयेशत्रुओं को तीक्ष्ण धारबाणों से छिन्न भिन्न कर
दिया हे प्रभुवह संसप्तकोंके समूह युद्धमें घायल और भयभीत
होकर दशोंदिशाओं मेंविभागित होकर भागे और इन्द्रके आतिथ्य
को पाकर शोकसे रहितहुये ८७। ८८ पुरुषोत्तम अर्जुनने टेढ़ेपर्व्व
वाले बाणोंसे दुर्य्योधन कीचतुरंगिणी सेनाकोमारा ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे षष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोलेकि पांडव भीमसेन और युधिष्ठिरके लौटने और
पांडव वा सृंजियोंके हाथसे मेरीसेनाके मरने १ अथवा अप्रसन्न
ता पूर्व्वक सेनाकेसमूहों के बारंबारभागनेपर हे संजय मुझको
समझाकर कहोकि कौरवोंने क्या २ किया संजय बोलेकिहेराजा
क्रोधसे रक्तनेत्रवाला प्रतापवान कर्ण महाबाहुभीमसेनको देखकर
उसके सन्मुख गया ३ और उस पराक्रमी भीमसेन से मुखफे-
रीहुई आपके पुत्रकी सेनाकोदेखकर बड़ीयुक्ति और उपायसे निय-
तकिया ४ वह महाबाहु कर्णआपके पुत्रकी सेनाको नियत करके
युद्धमेंदुर्मद पांडवोंके सन्मुख गया ५ फिर युद्धभूमि में धनुषोंको
चढ़ाकर शायकों को छोड़ते पांडवों के महारथीलोग कर्णके सन्मु-
खगये ६ उनके नामयहहैं भीमसेन, सात्विकी, शिखण्डी, जन्मेजय

पराक्रमी धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रक नाम नरोत्तम क्षत्री ७ मारने की इच्छासे अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धके शोभा देनेवाले आपको सेनाके सन्मुख गये ८ हेराजा इसीप्रकार मारने के इच्छावान शीघ्रता करनेवाले आपके भी महारथी पांडवोंकी सेनाके सन्मुख गये ९ हे पुरुषोत्तम रथ हाथी घोड़े पति और ध्वजाओंसेयुक्त वह सेना अपूर्व्व देखनेमें आई १० हेमहाराज शिखण्डी कर्णके सन्मुख गया धृष्टद्युम्न उसआपकेपुत्र दुश्शासन के सन्मुखगयाजोकि बड़ी सेनाको साथ लिये हुयेथा ११ हेराजा नकुल वृषसेन के युधिष्ठिर चित्रसेन के और सहदेव उलूक के सन्मुख गया १२ सात्यिकी शकुनि के द्रौपदीके पुत्र कौरवोंके और युद्धमें कुशल अश्वत्थामा अर्जुनके सन्मुख गया १३ कृपाचार्य्य युद्धमें बड़े धनुषधारी युधामन्युके और पराक्रमी कृतवर्मा उत्तमौजाके सन्मुख गया १४ हे श्रेष्ठ फिर महाबाहु अकेले भीमसेनने सब कौरवों समेत सेनाको साथ रखने वाले आपके पुत्रोंको रोका १५ हेमहाराज इसके अनन्तर भीष्मजी के मारनेवाले शिखण्डीने उस निर्भय के समान घूमने वाले कर्णकोरोका १६ उसकेपीछे रुकेहुये और क्रोधसे चलायमान ओष्ठवाले कर्णने शिखण्डीको तीनबाणोंसे दोनों भृकुटियोंके मध्य में घायलकिया वह शिखण्डी उन बाणोंको धारण किये हुये ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरोंसे उठेहुये सुवर्णके पर्व्वत होते हैं १७।१८ युद्धमेंकर्णके हाथसे अत्यन्तघायल बड़े धनुषधारी शिखण्डीने तीक्ष्णधारवाले नव्वेबाणोंसे कर्णको पीड़ामान किया १९ फिर महारथी कर्णने तीनबाणोंसे सारथीको मारकर क्षुरप्रसे उसकी ध्वजाको काटा २० शत्रुओंके संतप्त करनेवाले महारथी शिखण्डीने मृतक घोड़ोंके रथसे उतरकर अपनीशक्तिको कर्णकेऊपर फेंका २१ हे भरतवंशीफिर कर्णने तीनशायकों से उस शक्तिको काटकर तीक्ष्ण बाणोंसे शिखण्डीको घायलकिया २२ इसके पीछे अत्यन्त व्याकुल शिखण्डी कर्णके धनुषसे निकलेहुये बाणोंको रोकताहुआ शीघ्रही हटगया २३ हे महाराज इसकेपीछे कर्णने

पांडवी सेनाको ऐसा भिन्न २ करदिया जैसेकि बड़ा पराक्रमी वायु रुईके ढेरोंको तिर्रबिर्र करदेता है २४ फिर आपके पुत्रके हाथसे पीड़ामान धृष्टद्युम्नने तीन बाणोंसे दुश्शासनको छातीपरछेदा २५ फिर दुश्शासनने उसकी बाईंभुजाको छेदा हे भरतबंशी सुनहरी पुंख टेढ़े पर्व्ववाले भल्लसे घायल २६ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने घोर-बाणको दुश्शासनके ऊपर फेंका २७ हेराजा आपके पुत्रने धृष्टद्युम्नके चलाये हुये बड़े वेगवानबाणको तीनबाणोंसे काटकर २८ सुनहरे अंगवाले सत्रह भल्लोंसे धृष्टद्युम्नको दोनोंभुजा और छाती पर घायलकिया २९ इसकेपीछे उसक्रोधभरे धृष्टद्युम्नने अत्यन्त तीक्ष्णक्षुरप्रसे दुश्शासनके धनुषकोकाटा तबतो मनुष्य पुकारे ३० इसकेपीछे हँसतेहुये आपके पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंके समूहोंसे धृष्टद्युम्नको चारोंओरसे रोका ३१ वह सब शूरवीर और सिद्धोंसमेत अप्सराओंके समूह आपके पुत्रके पराक्रमको देखकर युद्धमें आश्चर्य्यसा करनेलगे ३२ उपायकरनेवाले बड़े पराक्रमी दुश्शासनसे रुकेहुये धृष्टद्युम्नको ऐसे नहींदेखा जैसे कि सिंहसे रुकेहुये बड़ेहाथीको नहीं देखते ३३ हे पांडुके बड़ेभाई इसके पीछे सेनापतिके चाहनेवाले पांचालोंने रथहाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्रकोरोका ३४ हेशत्रु संतापी इसके पीछे आपके शूरवीरों का युद्धदूसरों के साथहोनेलगा वह युद्ध महाघोर भयानकरूप और समय पर प्राणोंका हरनेवाला था ३५ पिताके सन्मुख नियत वृषसेनने पांचलोहेके बाणोंसे और तीनअन्यबाणों से नकुलको छेदा ३६ इसके पीछे हंसतेहुये शूरबीर नकुलने अत्यंत तीक्ष्ण नाराचसे वृषसेनको हृदयपर कठिन पीड़ामान किया ३७ पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल उसशत्रुओंके पराजय करनेवाले बीसबाणोंसे शत्रुको पीड़ामानकिया और उसनेभी उसकोपांच बाणोंसे व्यथितकिया ३८ उसके पीछे उनदोनों पुरुषोत्तमों ने हजारों बाणोंसे परस्पर ढकदिया तदनन्तर सेना छिन्नभिन्न होगई ३९ हे राजा कर्णने दुर्योधनकी भागीहुई सेना को देखकर

उनको पीछे से जाकर रोका ४० इसके पीछे कर्णके लौटने परनकुल कौरवोंकी ओर चला फिर कर्णके पुत्रने युद्धमें नकुलकोछोड़कर ४१ फिर शीघ्रतासे कर्णकीही सेनाको रक्षित किया वहां क्रोधयुक्त उलूकको युद्धमें प्रतापवान सहदेवने रोककर ४२ उसकेचारों घोड़ोंको मार सारथीको यमलोक में पहुंचाया हेराजा इसके पीछे पिताको प्रसन्न करनेवालाउलूक रथसे उतरकर शीघ्रही त्रिगर्त्त देशियोंकी सेनामें गया ४३ और हंसते हुये सात्विकीने तेजधार वाले बीसबाणोंसे शकुनिको छेदकर एकबाणसे उसकी ध्वजाकोकाटा ४४ हे राजा फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान शकुनी ने युद्धमें उसके कवचको चीरकर उसकी सुनहरीध्वजाको काटा ४५ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले सात्विकीने बाणोंसे उसके घोड़ोंको यमलोक में पहुंचाया हे भरतर्षभ फिर शकुनी अकस्मात रथसे कूदकर शीघ्रही ४६।४७ महात्मा उलूकके रथपर सवारहुआ तब युद्धको शोभा देनेवाले सात्विकी ने उसको शीघ्रही हटाया ४८ हे राजा फिर सात्विकी आपकी सेनाके सन्मुख गया और सेना भिन्न भिन्न होगई ४९ सात्विकी के बाणोंसे ढकीहुई आपकी सेना के लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान गिरपड़े ५० फिर आपके पुत्रने युद्धमें भीमसेनकोरोका तबभीमसेनने एकमहूर्त्त भरमेंही वहां उस पृथ्वीके राजा दुर्योधनको घोड़े रथ सारथी और ध्वजासे रहित करदिया ५१ उसकर्म से सब मनुष्य प्रसन्नहुये इसके पीछे राजा दुर्योधन भीमसेनके आगेहटगया ५२ फिर सब कौरवी सेनाने भीमसेनको घेरा वहां भीमसेनके मारने के इच्छावान शूरवीरोंके बड़े शब्दहुये ५३ युधामन्युने कृपाचार्यको छेदकर शीघ्रही उनके धनुषको काटा इसके पीछे शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्यने दूसरे धनुषको लेकर ५४ युधामन्युकी ध्वजा सारथी और छत्रको पृथ्वीपर गिरादया इसके पीछे महारथी युधामन्यु रथकी सवारीसे हटगया ५५ उत्तमौजाने भयानकरूप और भयानक पराक्रम वाले कृतवर्माको बाणों से

अकस्मात ऐसा ढकदिया जैसेकि बादल पानीकी बर्षासे पर्वतको ढकदेताहै ५६ हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र वह महाघोर युद्धऐसा बहुत बड़ाहुआ जैसाकि मैंने पहले कभी न देखाथा ५७ इसके पीछे कृतवर्माने युद्धमें उत्तमौजसको हृदयपर पीड़ामान किया तब वह अकस्मात रथके अंगपर बैठगया ५८ फिर सारथीरथके द्वाराउस महारथीको दूरलेगया इसकेपीछे सब कौरवीसेना भीमसेनकेऊपर चढ़आई ५६ दुश्शासन और शकुनीने हाथियोंकी बड़ीसेना समेत भीमसेनको घेरकर क्षुरप्र नामबाणोंसे घायलकिया ६० तब क्रोध-युक्त भीमसेन सैकड़ों बाणोंसे क्रोधयुक्त दुर्य्योधनको बिमुख करके बड़ी तीव्रतासे हाथियोंकी सेनापर आटूटा ६१ वहां अत्यन्तक्रोध-युक्त भीमसेनने उसअकस्मात आनेवाली हाथियोंकी सेनाकोदेख-कर दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ६२ हाथियोंको हाथियोंसे ऐसेमारा जैसेकि वज्रसे इन्द्र असुरोंको मारताहै ६३ इसकेपीछे युद्धकेबीच हाथियोंको मारतेहुये भीमसेननेबाणोंके समूहोंसे आकाशको ऐसा ढकदिया जैसेकि टीड़ियोंसे वृक्ष ढकजाताहै इसकेपीछे भीमसेनने मिलेहुये हाथियोंके हजारों झुण्डोंको बड़ेवेगसेऐसे छिन्न भिन्नकर-दिया जैसेकि बादलोंके समूहोंको वायु तिर्र बिर्र करदेताहै सुवर्ण और मणियोंकेजालोंसे ढकेहुयेहाथी ६४।६५ युद्धमें ऐसे अधिक शोभायमानहुये जैसेकिबिजली रखनेवाले बादल हेराजाभीमसेन के हाथसे घायल होकर सबहाथी शब्द करतेहुयेभागे ६६ कितने ही हाथी हृदयमें घायलहोकर पृथ्वीपरगिरपड़े उन गिरेहुयेसुवर्ण भूषणोंसेअलंकृत हाथियों से ६७ वहां पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसेकि फैलेहुये पर्वतोंसे प्रकाशित मुखवाले रत्नों से अलंकृत गिरनेवाले हाथियोंके सवारोंसे होतीहै ६८ अथवा पृथ्वी ऐसी मालूमदेतीथी जैसेकि क्षीणपुण्यवाले ग्रहोंके गिरनेसे शोभायमान होतीहै इसकेपीछे मदझाड़नेवाले टूटेहुये मुखवालेसैकड़ों हाथीभीम-सेनके बाणोंसे घायलहोकर युद्धसेभागे भयसे पीड़ित बाणोंसे घा-यलअंगरुधिरको वमनकरनेवाले पर्वताकार अनेकहाथी ६६।७०

धातुयुक्तपर्व्वतोंके समानभागे हमने भीमसेनकी दोनोंधनुषखैंचने- वाली भुजाओंको बड़ेसर्पकी समान चन्दन अगरसे अलंकृत देखा और उसके वज्रके समान शब्दवाले ज्याशब्दको सुनकर ७१। ७२ मूत्र विष्ठाको करतेहुये हाथी बड़े कठिनशब्दों को करते हुये भागे हेराजा उस अकेले बुद्धिमान भीमसेनका वहकर्म ७३ इसरीति का शोभितहुआ जैसेकि सबजीवोंके मारनेवाले रुद्रजीकाहोताहै ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंसकुलयुद्धे एकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर श्वेतघोड़ोंसे युक्त और श्रीनारायण- जीके थांबेहुये उत्तम रथपर नियत श्रीमान् अर्जुन आकर सन्मुख हुआ १ हेभरतर्षभ अर्जुनने युद्धमें आपकी उसबड़ी घोड़ोंवालीसेना को ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसेकि वायुबड़े समुद्रको उथल पुथल करदेताहै २ अर्जुनके प्रमत्त होनेपर आधीसेनाको साथ लियेहुये आपके पुत्र दुर्य्योधनने अकस्मात् सन्मुख आकर ३ आते हुयेक्रोध- युक्त युधिष्ठिरको रोककर तिहत्तरबाणों से घायल किया ४ तबतो कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर बड़े क्रोधयुक्तहुये और शीघ्रही उसने बीस भल्लोंको आपके पुत्रके शरीरमें प्रविष्ट किया ५ इसकेपीछे युधि- ष्ठिरकेपकड़नेकी इच्छासे कौरव दौड़े तब महारथीलोग शत्रुओंका दुष्ट विचार जानकर ६ उसकुन्तीके पुत्रयुधिष्ठिरको चाहतेहुये सब आनकर इकट्ठे होगये नकुल सहदेव और पर्षतका पौत्रधृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिरके पासदौड़े ७ और युद्धमें आपके महारथियोंको मर्द्दन करताहुआ भीमसेनभी शत्रुओंसेघि- राहुआ ८ राजाको चाहताहुआ दौड़ा हेराजा सूर्य्यके पुत्रकर्णने उन आनेवाले सब बड़े धनुषधारियोंको ९ बाणोंकी वर्षासे रोका और बाणोंकीवर्षा करते तोमरोंको चलाते १० तब उपायकरनेवाले लोग भीकर्णकी ओरदेखनेको समर्थनहींहुये फिर कर्णनेउन सबशस्त्रकुशल बड़े धनुषधारियोंको ११ बड़ी बाणोंकी वर्षा करके रोका और शीघ्र

अस्त्रके प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेवने दुर्य्योधनके सन्मुखहोकर शीघ्रही बीसबाणोंसे छेदा सहदेवके हाथसे घायल पर्व्वतके समान राजादुर्य्योधन १२।१३ मदोन्मत्त हाथीकेसमान रुधिरसे लिप्तहुआ फिरवहां बाणोंसे घायलहुये आपके पुत्रकोदेखकर १४ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा तब दुर्य्योधनको देखकर शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकिया १५ उसअस्त्रसे युधिष्ठिरकी सेनासमेत धृष्टद्युम्नको घायल किया इसके पीछे महात्मा कर्णकेहाथसेघायल और पीड़ामान युधिष्ठिरकी सेना अकस्मात्भागी १६ हेराजा वहां नानाप्रकारके बाणपरस्परमें फेंकेगये १७ कर्णके धनुषसे निकले हुये बाणोंने भल्लोंसे पुंखोंको काटा हेराजा अन्तरिक्षमें परस्पर गिरनेवाले बाण समूहोंकी १८ घिसावटसेअग्नि उत्पन्न हुई इसके पीछे कर्णने चलनेवालीटीड़ियोंकेसमान शत्रुकेशरीरमें प्रवेशकरजानेवाले बाणोंसे बड़े बेगयुक्त होकर दशोंदिशाओंका आच्छादितकरदियालालचन्दनसेचर्चितसुबर्ण और मणियोंसेअलंकृत१६।२०भुजाओंको उत्तमअस्त्रकेदिखानेवाले कर्णनेचेष्टावान्कियाइसके अनन्तर अपनेशायकोंसे सबदिशाओंको व्याप्तकरके २१ कर्णने धर्मराज युधिष्ठिर को बहुत पीड़ित किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त धर्मके पुत्र युधिष्ठिरने २२ तीक्ष्ण पचास बाणोंसे कर्णको घायलकिया वह युद्धभूमि बाणोंसेअन्धकार युक्त होकरमहाभयकारीदिखाईदी २३ हे श्रेष्ठराजा धृतराष्ट्रतबधर्मपुत्रकेहाथसेसेनाकेघायलहोजानेपर आपके शूरबीरोंनेबड़ा हाहाकारकिया २४ फिर कंकपक्ष वालेअनेक शायक तीक्ष्णधारवाले बहुतसे भल्ल नानाशक्ति दुधारे खड्ग और मुशलों से उस धर्मात्माने जहां जहां अपने क्रोधको प्रकटकिया हेभरतर्षभ वहांवहां आपके शूरबीर छिन्नभिन्न होगये २५।२६ फिर अत्यन्तक्रोध युक्त कर्णनेभी धर्मराज युधिष्ठिरको नाराच अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणोंसे घायलकिया २७ वह अशान्तचित्त क्रोधयुक्त महासाहसी कर्ण क्रोधसे ओठोंको चबाताहुआ शायकोंको लेकर युधिष्ठिरकेपास गया २८ तब युधिष्ठिरने उसको सुनहरी पुंखवाले

सौ बाणोंसे घायलकिया फिर हंसतेहुये कर्णने तीक्ष्ण कंकपक्षसे जटित २६ तीनभल्लोंसे उस युधिष्ठिरको छातीपर घायलकिया उससे अत्यन्त पीड़ामान राजायुधिष्ठिर ३० रथके अंगपर बैठकर सारथीसे कहनेलगा कि चल तदनन्तर सब धृतराष्ट्र के पुत्र और राजालोग पुकारे ३१ कि राजाको पकड़ो यह कहकर सब दौड़े उसकेपीछे प्रहार करनेवाले केकय देशियोंके एकहजार सातसौ रथियोंने ३२ पांचालों समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको रोका और ३३ मनुष्योंके नाशकारी उस कठिन युद्धके जारीहोनेपर बड़े पराक्रमी भीमसेन और दुर्य्योधन परस्परमें सन्मुखहुये ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

संजय बोलेकि कर्णने आगे नियत होनेवाले महारथी केकय-देशियोंकोअपने बाणजालोंसे छिन्नभिन्न करदिया रोकनेमेंहीउन के-कयदेशियोंके पांचसौ रथोंको कर्णने यमलोकको भेजा १।२ इसके पीछेशूरबीर लोगनियतहुये कर्णको रोकनेको समर्थ होकर उसके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेनके पासगये ३ फिर कर्ण एकही रथकेद्वाराबाणोंके बलसेरथकी सेनाओंको चीरताहुआ युधि-ष्ठिरके पासगया ४ अपने डेरेको जानेवाले बाणोंसे घायल शरीर धीरे २ चलनेवाले अचेतहुये नकुल और सहदेवके मध्यवर्त्तीबीर ५ राजाको पाकर दुर्य्योधनकी प्रसन्नताकी इच्छासे कर्णने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम बाणोंसे पीड़ामानकिया और इसीप्रकारयुधि-ष्ठिरनेभी कर्णको छातीपर घायल करके तीन बाणोंसे सारथी को और चारबाणोंसे घोड़ोंको पीड़ामानकिया६।७फिरशत्रुसंतापीनकुल सहदेव और जो लोग कि अर्जुनकी सेनाके रक्षकथे वहसब कर्ण की ओर इस निमित्त दौड़े कि यह कहींराजाको न मारे ८ उनदोनों नकुल और सहदेवने कर्णके ऊपरबाणोंकी वर्षाकरी और बड़ेउपाय में प्रवृत्तहुये ९ इसीप्रकार प्रतापवान् कर्णनेभी उनशत्रुओंके विजयी

महात्मा दोनों नकुल और सहदेवको बड़े तीक्ष्ण भल्लोंसे घायल किया १० फिर कर्णने धर्मराजके दन्तवर्ण कालेबाल और चित्तके समान शीघ्रगामी घोड़ोंकोभीमारा ११ इसकेपीछे बड़े धनुषधारी हंसतेहुये कर्णने दूसरे भल्लसे युधिष्ठिरके छत्रको गिराया १२ इसीप्रकार प्रतापी बुद्धिमान् कर्णने नकुलके भी घोड़ोंको मारकर उसके रथकेईशा और धनुषकोकाटा १३ तब मृतक घोड़े और टूटे रथवाले अत्यन्त घायल वह दोनोंभाई सहदेव के रथपर सवार हुये वहांशत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला मामाशल्य उन दोनोंको विरथ देखकर १४ करुणा करके कर्ण से बोला कि हे कर्ण तुझ को पांडव अर्जुन से लड़ना चाहिये १५ तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराज के साथ क्यों लड़ताहै शस्त्र अस्त्र कवचबाण और तूणीर से रहित १६ रथके सारथी और घोड़ेवाला होकर यह शत्रुओंके अस्त्रोंसे टूटेअंगहैं तुम अर्जुनको पाकर हास्य के योग्य होगे १७ इसरीतिके शल्यके बचनको सुनकर क्रोधयुक्त कर्णनेवैसी दशामेंभी युधिष्ठिरको घायलकिया १८ और पांडव नकुल और सहदेवको तीक्ष्णबाणोंसे छेदा फिर कर्णने हंसकर बाणोंसे उनका मुखफेरदिया १९ इसकेपीछे उसक्रोधयुक्त युधिष्ठिरके मारनेमें प्रवृत्त कर्णको शल्यने हंसकर फिरयह बचनकहाकि हे कर्ण आपको दुर्य्योधनने जिस प्रयोजनकेलिये प्रतिष्ठित कियाहै २० उस अर्जुन कोमारो युधिष्ठिरके मारनेसे तेराक्यालाभ होगा २१श्रीकृष्ण और अर्जुनके बड़ेशंखोंके यहबड़े शब्द और धनुषका यह शब्द ऐसा सुना जाताहै जैसेकिवर्षाऋतु में बादलोंके शब्द होतेहैं २२ यह अर्जुन बाणोंकी बर्षासे महारथियोंको मारता हुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण इसकोतुम युद्धमें देखो २३ उस शूरके पृष्ठ के रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजसहैं और इसकी उत्तरीयसेनाका सात्विकी रक्षकहै २४ इसी प्रकार धृष्टद्युम्न उसकी दक्षिणी सेना का रक्षकहै और भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे युद्ध करताहै २५ सो अब हम सबके देखतेहुये वहभीमसेन जैसे उस दुर्य्योधन को नहीं

मारे और जिसप्रकार से वह छूटजाय हे कर्ण उसी प्रकार तुमको करना चाहिये २६ युद्धकीशोभा देनेवाले और भीमसेन से निगले हुये इस दुर्य्योधनको देखोजो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य्य होय २७ इसबड़े संशयमें पड़ेहुये दुर्य्योधन को बचाओ माद्रीके पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारनेसे क्या लाभहै २८ हेराजा कर्णने शल्यके इनबचनोंको सुनकर और महायुद्धमें भीमसेनसे पराजित दुर्य्योधनको देखकर २६ राजा का अत्यन्त चाहनेवाला और शल्यकेबचनसे चलायमान बड़ापरा क्रमी कर्णअजातशत्रु युधिष्ठिर और पांडव नकुल सह देवको छोड़ कर ३० आपके पुत्रकी रक्षा करनेको दौड़ा हेश्रेष्ठधृतराष्ट्र राजामद्र की प्रेरणासे और मानों आकाशगामी घोड़ोंके द्वारा ३१ कर्णके चलेजानेपर कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर और पांडवनकुल सहदेव शीघ्र- गामी घोड़ोंके द्वारादूर चलेगये ३२ वह लज्जायुक्त राजायुधिष्ठिर बाणोंसे घायल उनदोनों भाइयों समेत शीघ्रही डेरेको पाकर ३३ बहुतशीघ्र रथसेउतरा वहां जिसके भल्ल निकालेगये वह राजायुधि- ष्ठिर हृदयके भालोंसे महापीड़ामान होकर अपने शुभ शयन पर जाकर लेटगया ३४और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेवसे बोला हे पांडव तुम दोनों बहुत शीघ्र भीमसेनकी सेनामेंजाओ ३५ वहभीमसेन बादल के समान गर्जताहुआ लड़ता है इसके अनन्तर बड़े भाईकी आज्ञापाकर शत्रुओंके पीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी दोनोंभाई नकुल और सहदेव दूसरेरथपर सवार होकर उत्तम बेग वाले घोड़ोंके द्वारा भीमसेन कीसेनाको पाकर ३६ । ३७ दोनोंभाई अपनी सेनाओं समेत वहां नियत हुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा इसके पीछे रथकी सेनाके बड़े समूहों स-

मेत अश्वत्थामा जी अकस्मात् वहां पहुंचे जहां पर अर्जुन नियत था १ श्रीकृष्णजी को साथ रखने वाले शूरवीर अर्जुनने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को तत्क्षण ऐसे रोका जैसे कि मर्य्यादा समुद्र को रोकतीहै २ हेमहाराज इसकेपीछे क्रोधयुक्तप्रतापवान् अश्वत्थामाने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को ढकदिया ३ इसके पीछे वहां पर महारथी कौरवोंने श्रीकृष्ण अर्जुनको ढकाहुआ देख कर बड़ा आश्चर्य्य किया ४ इसके अनन्तर हेभरतर्षभ हंसते हुये अर्जुन ने दिव्य अस्त्रोंको प्रकट किया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्र कोरोका ५ फिर अर्जुनने मारनेकी इच्छा से जिस२ अस्त्रको चलाया उस उस अस्त्रको बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाशकरदिया६ इसके पीछे बड़े भयकारी अस्त्रोंको युद्ध वर्त्तमान होनेपर युद्धमें हमने अश्वत्थामा को मुख फाड़ेहुये काल के समान देखा ७ उसने बाणोंसे दिशा बिदिशाओं को आच्छादित करके तीनबाणोंसे बासुदेव जीको दाहिनी भुजापर छेदा८ इसके पीछे अर्जुनने उस महात्माके सब घोड़ों को मारकर युद्धभूमिपर रुधिरों के प्रवाह वाली नदीको बहाया ९ वह भयानक नदी सबलोकको परलोक में प्राप्त करने वाली महाघोररूपीथी युद्धमें अर्जुनके धनुषसे निकले हुये बाणोंसे रथों समेत सब रथियोंको १० और अश्वत्थामा के घोड़ों को मृतक देखा और उस महाघोर शत्रुओंको परलोकमें पहुंचाने वाली नदीको इसरीति से जारी किया ११ कि उनदोनों अश्वत्थामाऔर अर्जुन के महाघोर संग्राम होनेपर अमर्य्यादासे युद्धकरने वाले शूरबीर पीछेकी ओरसे दौड़े १२ हेराजा अर्जुन ने युद्धमेंघोड़े सारथी समेत रथ वा मृतक सवार वाले घोड़े और हाथियोंके हजारों यूथोंको मारकर मनुष्योंका घोरनाश करदिया अर्जुनके धनुष सेनिकले हुये बाणोंसे हजारों रथी मरकर गिरपड़े १३।१४ और जिनघोड़ोंके योक्तछूट गये वह घोड़े जहांतहां चारोंओर को दौड़े युद्धमें शोभायमान पराक्रमी अश्वत्थामा अर्जुनके उस कर्मको देख कर १५ उस बिजयी अर्जुनके पास शीघ्रही जाकर स्वर्णमयी बड़े

धनुषको टंकारता हुआ १६ तीक्ष्ण बाणोंसे उसको चारोंओरसे ढकने लगा हेमहाराज अश्वत्थामा ने बाणोंसे अर्जुनको फिर आच्छादित करके १७ बड़ी निर्दयता पूर्व्वक उसको छातीपर अत्यन्त घायल किया हेभरतबंशी उस अश्वत्थामा के हाथसे युद्धमें अत्यन्त घायल १८ गांडीव धनुषधारी बड़े बुद्धिमान् अर्जुनने बाणों की बर्षा से अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुष को काटा १६ तब उस टूटे धनुष वाले अश्वत्थामा ने युद्धमेंबज्र के समान स्पर्श वाली परिघकोलेकर अर्जुन के ऊपर फेंका २० हे राजा उस स्वर्णमयी आतेहुये परिघको हंसतेहुये पांडुनन्दन अर्जुनने अकस्मात् काट डाला २१ फिर अर्जुन के शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बज्रसे घायल टूटेहुये पहाड़ गिरतेहैं २२ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी अश्वत्थामाने इंद्रास्त्र के बेगसे अर्जुन को ढकदिया २३ तब उस बेगवान् पांडव अर्जुन ने उसके फैलेहुये इन्द्रजालको देखकर अपने गांडीव धनुष को लिया २४ और महाइन्द्रके उत्पन्नकिये हुये उत्तम अस्त्रकोलेकर इन्द्र जालको दूरकर के अर्जुन ने महा इंद्रकी शक्तिसे युक्त उसजालको फाड़कर एक क्षणभरमेंही अश्वत्थामाके रथको ढकदिया इसके अनन्तर अर्जुनके बाणोंसे दबेहुयेअश्वत्थामाने समीप मेंआकर२५ अर्जुनकी उस बाण वृष्टिको सहके और अपने बाणों से शत्रुकी दृष्टिके सन्मुख करके सौबाणोंसे अकस्मात् श्रीकृष्णजीको घायल करता हुआ तीन क्षुद्रकनाम बाणोंसे अर्जुनको घायल किया२६ इसके पीछे अर्जुनने सौशायकों से गुरूके पुत्रको मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरबीरों के देखते हुये घोड़े सारथी कवच और धनुषको काटा २७ फिर उस शत्रुओंके मारने वाले अर्जुनने मर्मस्थलोंमें छेदकर भल्लसे उसके सारथी को रथकी नीड़से गिरादिया २८ फिर उसने आप घोड़ोंको थांभकर बाणोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको ढकदिया वहांहमने अश्वत्थामा के इसशीघ्र पराक्रम को देखा २९ किजिसने घोड़ोंको भी थांभा और अर्जुनसे भी युद्ध किया

हे राजा युद्धमें सब शूरबीरोंने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकरी ३० इसके पीछे अर्जुनने हंसकर अपने क्षुरप्रनाम बाणोंसे शीघ्रही अश्वत्थामाके घोड़ोंकी बागको काटा ३१ फिर बाणकेवेगसे पीड़ा-मान होकर वह घोड़ेभागे हे भरतबंशी इसके पीछे आपकी सेना का घोर शब्द हुआ ३२ फिर चारों ओरसे तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते बिजयाभिलाषी पांडव बिजयको पाकर आपकी सेनापर दौड़े ३३ हे महाराज युद्धमें बिजय से शोभायमान बीर पांडवों के हाथसे दु-र्योधनकी बड़ी सेना बारंबार छिन्न भिन्न हुई ३४ तब अपूर्व युद्ध करने वाले आपके पुत्र और सौबलके पुत्र शकुनी और कर्णके देखते हुये सबभागे ३५ उससमय चारों ओरसे पीड़ामान आपके पुत्रोंसे रोकीहुई बड़ी सेना युद्धमें नियत हुई ३६ हे महाराज उसके पीछे आपके पुत्रोंकी बड़ी सेना चारों ओरसे भागने वाले शूरवीरों के कारण व्याकुल और भयभीत होगई ३७ तदनन्तर ठहरो ठहरो इस प्रकार से कर्ण के कहने परभी महात्माओं के हाथ से घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई ३८ हे महा-राज इसके पीछे दुर्योधनकी सेनाको चारोंओरसे भागी हुई देखकर बिजयसे शोभायमान पांडवोंने बड़े शब्दकिये ३९ तब दुर्योधन बड़ी नम्रता पूर्वक कर्णसे बोला हेकर्ण देखो पांचालोंके हाथसे बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित होगईहै ४० तेरेनियत होनेपर भी भागी हे शत्रुबिजयी महाबाहो इसबातको समझकर उचित कर्मकरो ४१ हे पुरुषोत्तम बीर पांडवोंके हाथसे भगायेहुये हजारों शूरबीर युद्धमें तुझीको पुकारतेहैं ४२ दुर्योधनके इसबड़े बचनको सुनकर हंसताहुआ कर्णभी मद्रदेशके राजासेयह बचन बोला ४३ हे राजा अस्त्रोंसमेत मेरी दोनों भुजाओंके पराक्रम को देखो अबमें युद्धमें पांडवों समेत सब पांचालोंको मारताहूं ४४ हे नरोत्तमअब तुम कल्याणके निमित्त घोड़ोंको निस्सन्देह चलाओ हेमहाराज प्रतापी कर्णने इस बचनको कहकर ४५ बिजयनाम उत्तम और प्राचीन धनुषकोलेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़ता से पकड़कर ४६

सच्चेप्रकारसे शूरबीरोंको रोककर उस शूर पराक्रमी और साहसी ने भार्गव अस्त्रको धनुषपर चढ़ाया इसके पीछे उस महायुद्धमेंलाखों प्रयुतों और अर्बुदों तीक्ष्णबाण धनुषसे निकले ४७। ४८ उन अग्निरूप घोरकंक और मोरके पंखोंसे जटित बाणोंसे पांडवी सेना ऐसीढकगई कि कुछभी नहीं जानपड़ताथा ४९ हेराजा युद्धमें भार्गव अस्त्रसे पीड़ामान पराक्रमी पांचालोंका बड़ाहाहाकार हुआ ५० हेनरोत्तम राजा धृतराष्ट्र चारों ओरसे गिरतेहुये हजारोंहाथी घोड़े रथ और चारोंओरसे मृतक हुये मनुष्योंसे पृथ्वी कंपायमान हुई और सब पांडवीसेना व्याकुल हुई ५२ हे नरोत्तम शत्रुओं का तपानेवाला अकेला कर्ण शत्रुओंको भस्मकरताहुआ निर्धूम अग्नि के समान शोभायमान हुआ ५३ कर्णके हाथसे घायल वह पांचाल चन्देरी देशियों समेत जहां तहां ऐसे अचेत होगये जैसे कि बनके भस्म होनेमें हाथी अचेत होजातेहैं ५४ हेनरोत्तम वह उत्तम पुरुष व्याघ्रोंके समान पुकारे इसके पीछे युद्धमें उनभयभीत पुकारने वाले ५५ और चारोंओरसे दौड़ने वालोंके ऐसेबड़े शब्द उत्पन्न हुये जैसे कि महाप्रलयमें जीवोंके शब्द होते हैं ५६ हे श्रेष्ठ फिर कर्णके हाथ से घायल उन जीवोंको देखकर पशु पक्षी जीवभी भयभीत होगये ५७ युद्धमें कर्णके हाथसे घायल वह संजय अर्जुन और बासुदेव जीको बारंबार ऐसे पुकारतेथे ५८ जैसे कि यमपुरीमें दुःखीजीव यमराजको पुकारतेहैं कर्णके शायकोंसे घायल होनेवालोंके शब्दोंकोसुनकर ५९ कुन्तीकापुत्र अर्जुन वहांपर छोड़ेहुये भार्गवास्त्रको देखकर बासुदेवजीसे बोला ६० हेमहाबाहो श्रीकृष्णजी भार्गवास्त्र के पराक्रमको देखो यह अस्त्र युद्धमें कैसे नाश करनेके योग्य नहींहै ६१ हेश्रीकृष्णजी युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रम में यमराजके समान क्रोधरूप कर्ण कोदेखो ६२ यह कर्ण घोड़ोंको चलाचला कर प्रतिपद बारंबार मुझको देखताहै मैं युद्धमें कर्णसे भागनेवाला नहींहूं ६३ मनुष्य युद्धमें विजय और पराजय दोनों पाताहै हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी मृतक

मनुष्यकीतो पराजयहीहोतीहै विजय कैसे होसक्तीहै ६४ अर्जुनके इसवचनको सुनकर श्रीकृष्णजीने बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठअर्जुनसे समयके अनुसार यह बचनकहा ६५ कि कर्णके हाथसे राजायुधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआहै हेअर्जुन तुम उसको देखकर और भरोसा देकर फिर कर्णको मारोगे ६६ हेराजा ऐसा कहकर युधिष्ठिरको देखना चाहते और युद्धमें कर्णको थकावटमें पकड़ना चाहते श्रीकृष्णजी चले ६७ इसकेपीछे केशवजीकी आज्ञासे अर्जुन बाणोंसे पीड़ामान् राजा युधिष्ठिरके देखनेको रथकी सवारीकेद्वारा युद्धभूमिसे शीघ्रही अपने डेरोंकोगया ६८ तब चलतेहुये अर्जुनने धर्मराजके दर्शनकी अभिलाषा से सेनाको देखा और उसमें अपने बड़ेभाई को नहीं देखा ६९ हेभरतबंशी वह अर्जुन अश्वत्थामासे युद्धकरके और उस बज्रधारी इन्द्रसे भी न रुकनेवाले अपने गुरू के पुत्रको पराजय करके चलदिया ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसकेपीछे उग्रधनुषधारी शत्रुओंसे अजेयअर्जुन नेअश्वत्थामाको पराजय कर बड़े कठिन शूरोंके कर्मोंको करके फिर अपनी सेनाको देखा १ महात्मा अर्जुन शूरोंकेसाथयुद्ध न करनेवाली सेनाके मुखपर नियत शूरबीरोंको प्रसन्नकरता और पहलेप्रहारोंसे घायल और नियतहुये बहुत रथियोंकी प्रशंसा करताहुआ २ और अजमीढ़बंशी अपने भाई युधिष्ठिरको न देखकर भीमसेन के पास जाकर यह बचन बोला कि राजा कहां हैं और किसरीतिसे उसने युद्धकिया ३ भीमसेननेकहा कि कर्णके बाणों से पीड़ामान धर्मपुत्र युधिष्ठिर यहां से हट गयाहै और किसी प्रकार से जीवताहै ४ अर्जुनने कहा कि हे भीमसेन आप शीघ्रतासे उस कौरवों में श्रेष्ठ राजाकी खबर लेनेको यहांसे चलो निश्चय करके वह राजा युधिष्ठिर कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल होकर अपने डेरे को गया

है ५ द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णधार बाणोंके प्रहारोंसे अत्यन्त घायल होकर भी वेगवान् राजा युधिष्ठिर विजयकी अभिलाषा करके जब तकवहां नियत नहीं हुआ था तबतक द्रोणाचार्य्य जी भी नहीं मरे थे६ वह महानुभाव बड़ा पांडव अब युद्धमें कर्णके हाथसे संशय संयुक्त हुआहै हेभीमसेन अब तुम बड़ी शीघ्रतासे उनके निश्चयकरने को जाओ और मैं शत्रुओंको रोककर नियतहूंगा ७भीमसेन बोले हे महानुभाव तुम भी उसभरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्तको जानोहो और हे अर्जुन जो मैं यहां से चलाजाऊगा तो बड़े शूर बीर शत्रु मुझको अपने से भयभीतहुआ कहेंगे ८ तब अर्जुनने भीमसेनसे कहा कि संसप्तक मेरी सेनाके सन्मुख नियत हैं अब उनको बिना मारे इनशत्रु समूहों के स्थानसे जाना योग्य नहींहै ९ हे कौरवों में बड़े बीर तब भीमसेन अपने पराक्रमको पाकर अर्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सन्मुख युद्धकरने को जाऊंगा हे अर्जुन तुम चले जाओ १० शत्रुओंके मध्य में भाई भीमसेन के कठिनतासे होने के योग्य इस बचनको कि हे अर्जुनमैं अकेला बड़ोकठिनतासे बिजय होनेवाले महा असहनशील संसप्तकों की सेना को रोकूंगा सुन कर११महापराक्रमी सत्यवक्ता बानरध्वज अर्जुन महात्माकौरवोंमें श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी भाई युधिष्ठिर के देखनेको चलनेवाला होकर उन वृष्णिबंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजी से बोला कि हे इंद्रियों के स्वामी इस समुद्र रूप सेनाको त्यागकर घोड़ोंको चलाइये हे केशवजी अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको मैं देखना चाहताहूं १२।१३ संजय बोला कि तदनन्तर घोड़ोंको चलायमान करतेहुये सबयादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण जी भीमसेन से यह बात बोले कि हे भीमसेन अब यह तेरा कर्म कुछ अपूर्ब्ब नहींहै मैं जाताहूं तुम बाणोंके समूहोंसे शत्रुओंके समूहों को मारो १४ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्ण जी गरुड़के समान शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रतासे जहां राजा युधिष्ठिरथा १५ वहां गये हे राजेन्द्र उस शत्रुबिजयी भीमसेनको युद्धके बिषय में समझाकर सेनाके सन्मुख नियत करके १६ फिर

पुरुषों में बड़े बीर दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिर के समीपगये और वहां अकेलेही सोतेहुये राजाको पाकर दोनोंने रथसे उतरकर धर्मराजके चरणोंको नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्जुनउसपुरुषो-त्तमको कुशल पूर्वक देखकर ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि इंद्रको देख कर अश्विनीकुमार प्रसन्न होतेहैं१७।१८ फिर राजाने भी उनकोऐसा प्रसन्न किया जैसेकि इंद्र अश्विनीकुमारोंको औरजैसे महाअसुर जंभके मरने पर वृहस्पतिजी ने इन्द्र और बिष्णुको किया था१६ संजय बोलेकि इसकेपीछे शत्रुसंतापी राजा युधिष्ठिर कर्णको मृतक मानताहुआ बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक बाणोंसे भिदेहुये रुधिरसे लिप्त शरीर महाप्रतापी लालनेत्रवाले उन बड़े पराक्रमी साथ आने वाले अर्जुन और केशवजीको देखकर युद्धमें गांडीव धनुषधारी के हाथसे कर्णको मृतक माना २०। २२ हेभरतर्षभ मन्द मुसकान पूर्व्वक दोनोंकी प्रशंसाकरते युधिष्ठिरने उन शत्रुसंहारी श्रीकृष्ण अर्जुन को बड़ी मृदुता और मिष्टबाणीसे प्रसन्न किया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे पंचषष्टितमोध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोलेकि हेश्रीकृष्णजी आपका आगमन शुभकारीहोतुम दोनों श्रीकृष्णजी और अर्जुनका दर्शन मुझको अत्यन्त अपूर्व्वहै १ अक्षत और निर्बिघ्नआपदोनोंके हाथोंसेवह महारथी कर्ण मारागया हीजानो जो युद्धमेंविषधर सर्पकेसमान सबशस्त्रोंमें कुशल २ धृत-राष्ट्र के पुत्रोंका सहायक और सबकौरवी सेनाका रक्षक और वृद्धि कर्त्ताधनुषधारी वृषेण वा सुषेणसे रक्षित श्रीपरशुरामजीसे अस्त्रों का सीखनेवाला बड़ापराक्रमी दुर्जयसंसारमें अद्वितीय महारथीधृत राष्ट्र के पुत्रोंका रक्षक सेनाके मुखपर जानेवाले शत्रुओं का मारने वाला वा मर्दन करनेवालाहै३।५ दुर्य्योधनके हितमेंयुक्त हमारेपीड़ा देनेकेनिमित्त युद्धमेंदेवताओं समेत इन्द्रसेभी अजेय तेजबलमें अग्नि बायुकेसमान पातालके समानगंभीर मित्रोंकी प्रसन्नता का बढ़ाने

वालाहै ६।७उसमेरे मित्रोंकेमारनेवाले कर्णकोयुद्धमेंमारकरप्रारब्ध से तुमदोनोंऐसे आयेहो जैसेकिअसुरको मारकर दो देवता आतेहैं ८ सबसृष्टिके मारनेके अभिलाषी यमराजके समान अपनेको बड़ामानने-नेवाले उस कर्णनेहेश्रीकृष्णाओर अर्जुनमेरेसाथबड़ाघोरयुद्ध किया ६ उसनेमेरी ध्वजा काटकर दोनोंआगेपीछेवाले सारथियोंकोभी मारा तदनन्तरमैं सात्विकीके देखतेहुये मृतकघोड़े वालाहोगया १० धृष्ट-द्युम्न नकुल सहदेव बीरशिखंडी वा द्रौपदीकेपुत्र और सबपांचालों के देखते हुये उसने ऐसा कर्म किया ११ हे महाबाहो उस उपाय करनेवाले महापराक्रमी कर्णने शत्रुओंके बहुतसेसमूहोंको मारकर मुझको बिजयकिया १२ हे शूरोंमें श्रेष्ठ अर्जुन उसकर्णने जहांतहां मुझकोपराजय को करके निस्सन्देहपूर्बक बहुतकठोर असभ्यबचन कहे १३ हे अर्जुनमैं भीमसेनके प्रभावसे अबतक जीवताहूं बहुतसी बातोंके कहनेसे क्या प्रयोजनहै मैं उसकर्ण को अबनहीं सहसक्ता हूं १४ हे अर्जुन मैंने तेरह बर्षतक जिससे भयभीत होकर न रात्रि को निद्राली न दिनको कहींसुखचैनपाया १५ हे अर्जुनउसकी शत्रु-तासे युक्त होकर भस्म होरहाहूं और अपने मरणको प्राप्त होकर बाध्रीनसमेढ़के समान भागाहूं १६ बहुतकालसे मुझचिन्तासे युक्त होनेवालेका अब यहसमय बर्त्तमानहुआहै वहकर्ण युद्धमेंमेरे हाथ से कैसे पराजय होनेको योग्य होय १७ हे अर्जुन मैं जागते सोतेउठते बैठते चलतेफिरते जहांतहां हरसमय कर्णहीको देखताहूं अर्थात् सब संसार मुझको कर्णहीरूप दीखताहै १८ हे अर्जुन मैंकर्णसे ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहांजहां जाताहूं वहां२ कर्ण कोही नियत देखताहूं १६ हे श्रीकृष्ण अर्जुन उस युद्धसे कभी न हटनेवाले बीर कर्णने मुझको घोड़े और रथ समेत बिजय करके जीवता त्याग कियाहै २० अबमुझ कर्णके हाथसे पराजय पानेवाले का इस संसार में जीवना व्यर्थहै २१ पूर्बमें भीष्मजी द्रोणाचार्य्य वा कृपाचार्य्यसे भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पायाथा जैसा कि अब युद्धमें इस महारथी कर्णसे पायाहै २२ हेअर्जुन अबमैं तुझसे यह

पूछताहूं कि किस रीतिसे निर्विघ्नता पूर्व्वक तेरे हाथसे कर्ण मारा गया उससब वृत्तान्तको यथावस्थित ब्यौरे समेत मुझसे वर्णन करो २३ पराक्रम में यमराज और पुरुषार्थ में इन्द्रके समान और अस्त्रोंमें परशुरामजी के समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया २४ महारथी और सब युद्धोंमें कुशल धनुर्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सबमें अकेला पुरुषार्थी २५ वह कर्ण तेरेही निमित्त पुत्रों समेतधृत-राष्ट्रसे स्तुति किया गयाथा वह तेरेहाथसे कैसे मारागया २६ हे पुरुषोत्तम अर्जुन वह दुर्य्योधन सदैव सब शूरोंके मध्यमें कर्णहीको तेरा मारनेवाला मानताथा वह कर्ण तेरे हाथसे कैसे मारागया २७।२८ और तुमने उसके शुभचिन्तकोंके देखतेहुये उस युद्ध करने वालेका शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरुनाम मृगका शिर सिंह काटताहै २६ छःहाथी दानकरने का इच्छावान् युद्धमें तुझकोचा-हने वाले जिस कर्णने दिशा और विदिशाओंको सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंसे ३० युद्धमेंमरा हुआ पृथ्वीपर सोताहै युद्धमें तैंने कर्णको मारकर मेरा बड़ाभारी अभीष्टकिया ३१ जोकर्ण सदैव पूजित और अहंकार युक्त होकरतेरे निमित्त सबओर को दौड़ा वह अपनेको शूर मानने वाला तुझको युद्धमें पाकर अबक्या मारागया ३२ हेतात जोकि तेरेनिमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथोंको दूसरे लोगोंको देनेकी इच्छा कररहाथा और सदैव युद्धमें ईर्षाकरनेवालाथा वह पापात्मा क्या युद्धमें तेरे हाथ से मारागया ३३ जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवोंकी सभामें निरर्थक बार्त्तालाप करताथा और उस दुर्य्योधन का अत्यन्तप्रियथा अबवह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ३४ सन्मुख होकर तेरे चलाये हुये रक्तांगवाले आकाशचारी बाणोंसे शरीर में अत्यन्त घायलथा वह पापी कर्ण क्या अबसोताहै दुर्य्यो-धनकी भुजा ढीली और निर्बल हुईं ३५ जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्यमें दुर्य्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहंकारमें भराहुआ सदैव अपनी यहप्रशंसा करताथा किमें अर्जुनका मारने

वाला हूं क्या उसका वह बचन ठीक नहीं हुआ ३६ किमैं तबतक कभी पदाती रूपसे नहीं दौडूंगा जबतक कि अर्जुन नियत होकर वर्त्तमानहै उस निर्बुद्धीका सदैव यही ब्रतथा हे इन्द्रकेपुत्र अर्जुन वहकर्ण क्या अबतेरे हाथसे मारागया ३७ जिस दुष्ट बुद्धी कर्णने सभामें कौरवी बीरोंके मध्य में द्रौपदीसे यह कहाथा कि हे कृष्णा तूइन अत्यन्त निर्बल और नाशयुक्त पुरुषार्थ रहित पांडवोंको क्यों नहीं त्याग करतीहै ३८और उसीकर्णने तेरेबिषयमें प्रतिज्ञाकरी थी किमैं श्रीकृष्ण समेत अर्जुनको बिनामारे हुये यहांनहीं आऊंगावह पाप बुद्धी तेरे बाणोंसे घायलहुआ अबक्या सोरहा है ३६ सृञ्जियों और कौरवों के इसयुद्ध को क्या तुमजानतेहो जिसमें किमेरी यह दशाहोगईहै अबवह दुरात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया४० हेअर्जुन तुमनेयुद्धमें अपने गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये अग्निरूप बाणोंसे उस अत्यन्त निर्बुद्धीकर्णकाकुंडलों समेत देदीप्यमान शिर क्या शरीर से काट डालाहै ४१ हे बीर जो मुझ बाणों से घायलने तुमको कर्णके मारनेकेनिमित्त ध्यान कियाहै अबतुमने कर्णके मारनेसेक्या वह मेरा ध्यान सफल किया ४२ जोदुर्योधनकर्णके आश्रितहोकर हमको देखताहै अबतुमने उस दुर्योधन के रक्षकको क्या पराजय किया ४३ पूर्व समयमें जिसने सभाके मध्यवर्त्ती होकर कौरवोंके सन्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसककहा वह दुर्बुद्धी और क्रोधसे भराहुआ कर्ण सन्मुख होकर क्यायुद्धमें तेरेहाथसेमारागया ४४पूर्व काल में जिस हंसतेहुये दुरात्मा कर्णने शकुनीसे जीतीहुई द्रौपदी को बड़ी हटतासे कहाथा कि इस द्रौपदीको यहांलाओ वहकर्णक्या अब तेरे हाथसे मारागया ४५ और जिसनिर्बुद्धीने विख्यात शस्त्र धारी महात्मा पितामहकी निन्दाकरी हे अर्जुन वह अर्द्धरथी क्या तेरे हाथसे अबमारागया ४६ हे अर्जुन अबतुम इसबातको कहकर कि वह कर्ण युद्धमें मेरे हाथ से मारागयाहै मेरे हृदयकी जलती हुई अग्नि को बुझाओ क्योंकि वह अग्नि अमर्ष जनित बायु से प्रेरित मेरेहृदयमें प्रदीप्तहोकरसदैवनियतरहतीहै ४७ सो हे अर्जुन

तेरे हाथसे कर्णकैसे मारागयाहै उसमेरे दुष्प्राप्यमनोरथको वर्णन करो हे बड़ेबीर मैं तुझकोसदैव ऐसे ध्यानकरताहूं जैसेकि वृत्रासुर केमरनेपर भगवान् इन्द्र ध्यान कियेगयेथे ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसहस्रसंहितायांवय्यासिक्यांकर्णपर्वणियुधिष्ठिरवाक्येषटषष्टितमोध्यायः ६६॥

सड़सठवां अध्याय॥

संजय बोले किवह अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अतिरथी अर्जुन उस क्रोधयुक्त धर्मके अभ्यासी राजाके उस बचनको सुनकर उस निर्भय और महापराक्रमी युधिष्ठिरसे बोला १ हेराजा अब कौरवी सेनामेंआगे चलनेवाला अश्वत्थामा विषैले सर्परूप बाणोंकोछोड़ता मुझ संसप्तकोंसे भिड़ेहुयेके सन्मुख आकर अकस्मात् नियतहुआ २ हे श्रेष्ठ वह अश्वत्थामा बादल के समान शब्दायमान मेरे रथको देखकर सबसेना के मध्यमें आकर नियतहुआ तबमैंने उसके पांच सौ वीरों को मारकर फिर अश्वत्थामाको पाया हे महाराज वह बड़ा सावधान मुझको पाकर ऐसे मेरे सन्मुखहुआ जैसे कि सिंहके सन्मुख गजराज आता है हेमहाराज उसने मरनेवाले कौरवीरथों के बचानेका उपाय किया३।४तदनन्तर दुःखसे कंपायमान कौरवों के अत्यन्त श्रेष्ठशूरबीर उस आचार्य्यके पुत्रनेयुद्धमें श्वेतरंगवाले कुछ कम विष और अग्निके समान बाणोंसे श्रीकृष्णजी समेत मुझको अत्यन्त पीड़ामान किया ५ उस मुझसे लड़नेवाले अश्वत्थामा के बाणों को आठ बैल रखनेवाले आठसौ छकड़े लेचलतेहैं मैंने उसके छोड़े हुये उन बाणोंको अपने बाणोंसेही ऐसे नाशकरदिया जैसे कि बादलोंके जाल समूहोंको वायु नाशकरदेतीहै इसके पीछेसुशिक्षित अस्त्रोंके बलसे बड़ेप्रयाससे कर्ण पर्य्यंत खेंचेहुये अनेकबाण समूहों कोऐसे छोड़ताहुआ जैसेकि बर्षाऋतुमें कालमेघ नामबादल जलको बरसाताहै ६।७ हमने उस बाणलेते और चढ़ातेहुये को नहीं जाना किवह बायें हाथसे वा दक्षिण हाथसे बाणोंको फेंकताहै वह अश्व

त्थामा युद्धमें सन्मुख बर्त्तमानहुआ ८ जिसअश्वत्थामाका प्रत्यंचासे युक्त धनुष मंडलके समान दिखाई देताथा उस अश्वत्थामाने पांच बाणोंसे मुझको और पांचही बाणोंसे बासुदेवजीको छेदा ६ तबतोमैंने एकपलमात्रमेंही बज्रके समान तीसबाणोंसेउसको पीड़ामानकिया फिर मेरे पृषत्कनाम वाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षणमेंही स्वावितके समान रूपवाला होगया १० सब अंगोंसे रुधिरको डालताहुआ वह अश्वत्थामा मुझसे पराजित होकर सेनाके बड़े २ श्रेष्ठ मनुष्योंको अपने रुधिर भरेहुये शरीरसे देखताहुआ कर्णकेरथोंकी सेनामें चलागया ११ उसके पीछे मारनेवाला कर्ण युद्धमें अपनी सेनाको भयभीत और हाथी घोड़े और रथोंको भगाताहुआ देखकर पचास उत्तम रथियोंकोसाथमें लियेहुये बड़ी शीघ्रता करताहुआ मेरे सन्मुख आया १२ मैंउनको मारकर युद्धका भार भीमसेन के सिपुर्द कर और कर्ण को छोड़करके आपके देखने को बड़े वेग से शीघ्रता करके आयाहूं सब पांचाल लोग कर्णको देखकर ऐसे भयभीत हुये जैसेकि केसरी सिंहको देखकर गौवें भयभीत होतीहैं १३ हेराजा प्रभद्रकनाम क्षत्री मृत्युके फैलेहुये मुखको प्राप्तकरके और कर्णको पाकर युद्ध करनेवालेहुये तब कर्णने मृत्युरूपी नदीमें डूबेहुये उन सातसौ रथियोंको मृत्युलोकमें भेजा १४ हेराजा वह कर्णभी तब तक चित्तसे पीड़ामान और क्रांत चित्तही रहा जबतक कि उसने हमलोगोंको नहीं देखा फिरतुमको उससे भिड़ाहुआ और अश्वत्थामासे पहिले बहुत घायलहुआ सुनकर १५ मैं कर्णसे हटजानेका आपका समय मानताहूं हेध्यानसे बीरोंके कर्मकरनेवाले राजायुधिष्ठिर मैंने पूर्व्वही कर्णका यह अपूर्व्वरूप वाला अस्त्रदेखा १६ सृंजियोंमें कोई ऐसा शूरबीर नहीं बर्त्तमानहै जो अब उस महारथी कर्णका सामना करसके हेराजा मेरी सेनाका रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्विकी १७ और युधामन्यु, उत्तमौजस यह दोनों राजकुमार भी पीछेकी ओरसे मेरी रक्षाकरें हे महानुभाव मैं कठिनतासे पारहोनेके योग्य महाबीर और रक्षापूर्व्वक शत्रुकी सेनामें बर्त्तमान उससूत

पुत्रकर्ण से अपने सहायकों समेत सन्मुख होकर युद्ध में ऐसे युद्ध करूंगा जैसेकि बज्रधारी अपने बज्रसे युद्धकरताहै हेराजाओंमें श्रेष्ठ भरतबंशी अबजोवह इसयुद्धमें दिखाईदेताहै १८।१६ उस सूतपुत्र का और मेरा युद्ध जयके निमित्त आपऐसे देखोगे जैसे कि नदीके मुखके आश्रयी प्रभद्रक कर्णके सन्मुख जातेहैं २० हेभरतबंशी वह राजकुमार बांधे मारे और युद्धमें सबलोकके अर्थडूबे इससे हेराजा अबजो मैं हटकरके बांधवों सहित उस लड़नेवाले कर्ण को नहीं मारूं तो प्रतिज्ञाके नकरने बालेकी जो घोरगतिहै उसकोमैं पाऊंमैं आपसे पूछताहूं आप युद्धमें मेरी बिजयको कहिये और मेरेआगे २ भीमसेन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको ग्रसे २१।२२ तब हेराजाओंमें श्रेष्ठमैं कर्णसमेत सेनाको और शत्रुओं के सब समूहोंको मारूंगा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअर्जुनप्रतिज्ञायांसप्तषष्ठितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय॥

संजय बोले कि बड़ातेजस्वी कर्णके बाणोंसे पीड़ामान युधिष्ठिर कर्णको समर्थ और बड़ापराक्रमी सुनकर अर्जुनसे महाक्रोधयुक्त होकर यहबचन कहनेलगा १किहेभाईतेरी सेनाभागी और जैसीरीति से अब पराजित हुई वह श्रेष्ठ नहींहै तुम कर्ण के मारने को समर्थ नहीं होसके हो इसी हेतुसे तुम भीमसेन को वहां छोड़कर भयभीत होकर यहांचलेआयेहो २ हेअर्जुन तुमने कुन्तीकेगर्भसे उत्पन्नहोकर जैसी प्रीतिकरी वह श्रेष्ठ नहींहै कि कर्णकेमारने में समर्थन होकर भीमसेनको त्यागकरके हटआया ३ द्वैतबनमेंजोतुमने सत्यप्रतिज्ञा करीथी कि मैं एकरथसे कर्णको मारूंगा उस बचनको कहकर अब कैसे कर्णसे भयभीत होकर भीमसेनको छोड़कर हटआयाहै ४ जो तू द्वैतबनही में यह कहदेता कि हे राजा मैं कर्णसे लड़नेकोसमर्थ न होऊंगा तो हे अर्जुन हम अपने समयके अनुसार सब कामोंको करते ५ हे बीर तैंने मेरे सामने उसके मारने की प्रतिज्ञा करके उस प्रतिज्ञाको पूरानहींकिया इसी प्रतिज्ञाने हमसबको शत्रुओंके

मध्यमें लाकर युद्धभूमिरूपी शिलापर छोड़कर किसहेतुसे पीसाहै ६ इसके विशेष हे अर्जुन बनजानेके अभिलाषी हमलोगोंने तेरेविषय में विश्वास करके बहुतसे अपने अभिमत कल्याणोंकी आशाकरी थी हे राजपुत्र हम सबफल चाहने वालोंकी वह सब आशा ऐसे निष्फल होगई जैसेकि बहुतसे फलरखनेवाला वृक्ष निष्फलहोय ७ अथवा जैसे कि मांससे ढकीहुई बंशी और भोजनसे ढकाहुआ बिष होताहै इसीप्रकार तुमनेभी मुझराज्याभिलाषीके नाशकेअर्थ राज्य रूपी अनर्थको दिखलायाहै ८ हेअर्जुनहम उनतेरह बर्षोंतक सदैव आशाकरके तेरेहीपीछे ऐसे जीवतेरहेजैसे कि बोयाहुआबीज समय पर देवताइन्द्रकी कृपासेबर्षाकी आशाकरताहै सोतुमने हमसबको नर्कमेंडुबाया ९ तुझ निर्बुद्धीके उत्पन्न होनेके सातदिन पीछे अन्त-रिक्षसेयह आकाशबाणी हुईथी कि यहपुत्र इन्द्रकेसमान पराक्रमी उत्पन्नहुआहै यह शत्रुरूप शूरबीर मनुष्यों को बिजय करेगा १० औरमद्रकलिंग और केकयदेशियोंकोभी बिजयकरकेराजाओंके मध्य में सब कौरवोंको मारेगा ११ इससे उत्तमकोई धनुषधारी नहीं होगा कोईजीवधारी इसकोकभी बिजयनहीं करसकेगा यहजितेन्द्री और सब विद्याओंमें पूर्ण होकर अपनी इच्छासे सबजीवमात्रोंको अपने आधीन करेगा १२ हे कुन्ती यह तेरा पुत्र कांति और शोभा में चन्द्रमाके समान तीव्रता और शीघ्रतामें बायुकेसदृश औरस्थिर तामें मेरुपर्व्वतके समान क्षमा करनेमें पृथ्वीके तुल्य तेजमें सूर्य्य के समान लक्ष्मी में कुबेरकेशूरतामें इंद्रके पराक्रममें विष्णुके समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआहै १३ जैसेकि शत्रुओंके मारनेवाले दितिके पुत्र बिष्णुजी अपने लोगोंके बिजय और शत्रुओं के मार-नेके निमित्त सब जगत में बिख्यात महातेजस्वी धनुष चलाने वाले उत्पन्न हुये हैं १४ शतशृंगके मस्तकपर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वी लोगोंके सुनते हुये आकाशबाणीने कहाहै सो वह जैसा कहाथा वैसानहीं हुआ इससे निश्चयकरके देवताभी मिथ्या बोलतेहैं १५ और इसीप्रकार सदैवतेरी प्रशंसा करने वाले अन्य२

उत्तम ऋषियों के बचनों को सुनकर दुर्य्योधन के शिष्टाचार को अंगीकार नहीं करताहूं और कर्णके भयसे पीड़ामान तुझ को नहीं जानताहूं १६ हे अर्जुन त्वष्टा देवताके बनाये हुये निश्शब्द पहिये वाले हनुमान् जी की ध्वजा रखने वाले उस शुभरथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी बेष्टनसे अलंकृत खड्गको और ताल वृक्षके समान इस गांडीव धनुषको लेकर १७ केशवजी के साथ रथपर सवार होकर तुम कर्ण से भयभीत होकर कैसे हट आये अब उस धनुष को केशवजी को दो और तुम युद्ध में केशवजी के सारथीबनों १८ तबकेशवजी उस उग्र कर्णको ऐसे मारेंगे जैसेकि बज्रधारी इन्द्रने वृत्रासुरको माराहै जोतू अब इसघूमने वाले उग्रकर्णके मारने में समर्थनहीं है १६ तोजो राजा अस्त्रविद्या में तुझसे अधिकहो उसको यह गांडीव धनुष देदो हे पांडव अब यह लोकपुत्र स्त्रियोंसे रहित और राज्यके नाशकरने के हेतुसे आनन्द और कुशलतासे रहित हमलोगोंको २० उस पापियोंसे सेवित अगाध और घोरनर्कमें पड़ाहुआ देखेगा जो तूकुंतीके गर्भमें नपैदा होतातो इसदुःखमें काहे को पड़ता २१ हेराजपुत्र निर्बुद्धी वहीं तेराकल्याणहोजाताजो तूयुद्धसे हटकरन आता गांडीव धनुषको और तेरे भुजबल को २२ धिक्कारहै और तेरे असंख्य बाणोंको भी धिक्कारहै और हनुमान् रूप धारण करने वाली तेरी ध्वजाको भी धिक्कार और अग्नि के दियेहुये तेरे रथको धिक्कार है २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णप्रतियुधिष्ठिरक्रोधवाक्येअष्टषष्टितमोऽध्यायः६८॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि हेभरतर्षभ युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित बाक्योंको सुनकर महा क्रोधरूप होकर कुन्तीके पुत्र अर्जुनने मारने की इच्छा करके हाथमें खड्गको लिया १ तब अन्तर्य्यामी सब केमनके जानने वाले श्रीकृष्ण जी ने उसके क्रोधको देखकर कहा कि हेअर्जुन यह बृथाबातहै जोतैंने खड्गको हाथमेंलिया२ हेअर्जुन

तुझसे लड़ने के योग्य में किसीको नहींदेखताहूं बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंकोघेरलियाहै ३ वह राजा देखने के योग्यहै इसहेतुसे हटआयाहै हेअर्जुन उस राजाको तुमने कुशल पूर्व्वक देखा४ सोतुमउस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूल के समान पराक्रमीअ-पनेभाई राजा युधिष्ठिरको देखकर और प्रसन्नताका समयवर्त्तमान होनेपर जो भूलसे यह कर्महोगया तो क्या हुआ ५ हेकुन्तीके पुत्र मैंऐसा किसीको नहीं देखताहूं जोतुझको मारने के योग्यहोय किस हेतुसे तू प्रहारकरना चाहताहै तेरेचित्तकी भ्रान्तिक्याहै ६तुमकिस कारणशीघ्रतासे बड़े खड्गको पकड़तेहो हेकुन्तीके पुत्र अबमैंतुझसे पूछताहूं कितेरी कौनसे कर्मकरने कीइच्छाहै ७ जो महाक्रोधितहो-कर इस बड़ेभारी खड्गको पकड़ता है फिर श्रीकृष्णजीके बचनोंको सुनकर युधिष्ठिरको देखताहुआ ८ सर्पके समान श्वासलेता क्रोध युक्त होकर अर्जुन श्रीगोबिन्दजीसे बोला कि आप इसगांडीव धनुष को किसीदूसरेको देदो जो मुझको इसरीतिसे प्रेरणाकरे में उसके शिरकोकाटूंगा ९यहमेरा अपांशुब्रतहै अर्थात् गुप्तब्रतहै हे अतुलबल पराक्रमवाले गोबिन्दजी जैसा कि इसराजाने आपके सन्मुख मुझसे कहा १० उसके सहनेको में उत्साहनहीं करसक्ताहूं इसहेतुसे उस धर्मसे भयभीत राजा को मारूंगा ११ इस नरोत्तमको मारकर अपनी प्रतिज्ञाको पूराकरूंगा हे यदुनन्दन मैंनेइसी निमित्त खड्ग को पकड़ाहै १२ हे जनार्द्दनजी सो मैं युधिष्ठिरको मारकर सत्य सं-कल्प होकर शोक और ज्वरसे निवृत्त होऊंगा १३ अथवा ऐसे समयके बर्त्तमान होनेपर आप क्या उचित आज्ञादेतेहैं जिसकोमैं योग्य समझकरकरूं १४ मैं आपकी जो आज्ञाहोगी उसीको क-रूंगा संजय बोले कि इसबातको सुनकर गोबिन्दजीने बड़ी धिक्का-रियां देकर अर्जुनसेकहा १५हे अर्जुन मैं निश्चयजानताहूंकि तुमने वृद्ध लोगोंका सेवननहीं कियाहै पुरुषोत्तमजो तुमको क्रोधहुआ है यह क्रोध समयके समान नहीं है १६ हे अर्जुन धर्मके प्रकारों का ज्ञातापुरुष ऐसानहीं करसक्ताहै जैसे कि अब यहां तुमधर्म से भय-

भीतहोकर निर्बुद्धीसेहोरहेहो १७ जो मनुष्य करनेकेअयोग्यकर्मोंको और योग्य कर्मोंको एककरताहै हेअर्जुन वह अधमपुरुष कहाजाता है १८ पंडितलोग जिसधर्म पर आरूढ़ होकर ईश्वरका उपस्थान करतेहैं उसीके अनुसार इतरलोगभी आचरण करतेहैं १९ हे अर्जुन योग्यायोग्य कर्मोंके निश्चयमें दृढ़ता रखनेवाला मनुष्यविवश होकर ऐसाही अज्ञानी होजाताहै जैसे कि तुमहोगयेहो २० उचित और अनुचित कर्म किसी प्रकारसेभी आनन्द पूर्व्वक जाननेके अयोग्यनहींहै यह सब शास्त्र कहतेहैं तुम उसका बिचार नहीं करते हो २१ तुम पूरे बुद्धिमान् नहींहो जिसबुद्धिके द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्मकी रक्षा करताहै हे अर्जुन जो धर्मके अभ्यासी होकर भी पाप पुण्यकारी कर्म नहीं जानतेहो २२ हे तात जीवोंका न मारनाही उत्तम धर्महै यहमेरामतहै चाहै मिथ्या बचन किसी समय कहदेपरंतु हिन्सा कभीनकरे २३ सो हेनरोत्तम तुम इसधर्ममें पंडित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिरको कैसे मारनेको प्रवृत्तहो जैसेकि कोई साधारण मनुष्य होताहै २४ हे प्रशंसादेनेवाले सुनकि युद्धन करनेवाले वा युद्धसे मुखमोड़नेवाले वा भागनेवाले औरघरमें आश्रयलेनेवाले शत्रुअथवा हाथ जोड़नेवाले वाशरणागत और मदोन्मत्तों के मारनेको उत्तमलोगनहीं प्रशंसा करतेहैंवह सबगुणतेरे गुरूरूप बड़ेभाई युधिष्ठिरमेंहैं २५। २६ हेअर्जुन पूर्वसमयमें तुमने बाल्यावस्थासे ऐसा ब्रतकियाथा इसीहेतुसे अपनी अज्ञानता करकेअधर्म युक्त कर्मको निश्चय करतेहो २७ हेअर्जुन धर्म्मोंकी कठिनतासे मिलनेवाली सूक्ष्मगतिको अच्छेप्रकारसे धारणनकरके तू किसहेतु से अपने गुरूरूप बड़ेके मारने की इच्छासे दौड़ताहै २८ हे पांडव धर्मकी इस गुप्तबार्त्ताको भीष्मजीके अथवा पांडव युधिष्ठिरके द्वारा मैं तुझसे कहूंगा २९ वा बिदुरजी और यशस्विनी कुन्ती तुमसेकहैगी हेअर्जुन इसको मैं मूलसमेत कहूंगा तुम चित्तसे सुनना सत्य बोलनेवाला साधुहै ३० गृहस्थाश्रमीसेकोई आश्रमी श्रेष्ठनहींहै बड़े दुःखसे जाननेकेयोग्य अभ्यास करीहुई सत्यताकोमूलसमेतदेखो ३१

सत्यता कहनेके योग्यनहीं होतीहै अर्थात् सत्यतामें कोई दोषनहीं कहसक्ता परन्तु जबसत्यतामें मिथ्यापन होताहै तबवह सत्यताभी मिथ्या कहनेके योग्यहोतीहै ३२ अर्थात् किसी२अस्थानपरसत्यता से अधर्मभी होताहै जैसे कि बिवाहके समय वा बिषयभोग करनेके समय वा प्राणोंके नाशमें वा सबधनके चोरीहोनेमें और ब्राह्मणके मनोरथ सिद्धहोनेमें मिथ्याबोलना इनपांचों स्थानोंमें मिथ्याबोलने का कोईपापनहींहोताहै ३३ सबधनके चुरायेजानेमें मिथ्याबोलना योग्य होताहैऐसेस्थानमें सत्यभी मिथ्याहोताहै३४ बुद्धिमान्साव- धान पुरुष इसरीतिसे देखताहै अभ्यास करीहुई सत्यताको देखो कि सत्यता दोषलगानेके योग्यनहींहै और अभ्यासकरीहुई कहनेके योग्यनहीं प्रथमसत्य और मिथ्याको अच्छीरीतिसेजानकर निश्चय धर्म का ज्ञाताहोता है ३५ क्या अद्भुत कर्म देखने में आताहै कि बड़ाज्ञानी वा बड़ाभयकारी मनुष्यभीबहुत बड़े पुण्यको ऐसे प्राप्त करता है ३६ जैसे कि बलाकनाम बधिकने व्याघ्रके मार डालने से पुण्यप्राप्त किया फिर क्या आश्चर्य्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्म का अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पाप को प्राप्तकरे जैसे कि न- दियोंके समीप कौशिक ने प्राप्त किया था ३७ अर्जुनबोले हे श्री- कृष्णजी इसबलाकनदी और कौशिक संबंधीकथा को ऐसे बिचारसे कहिये जिसमेंमैं समझूं ३८ बासुदेवजीबोले हेभरतबंशीपूर्वसमय में बलाकनाम एक बधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकोंको पोषणके अर्थ मृगोंको माराकरताथा अपनी इच्छासे नहींमारताथा अपनेवृद्ध मातापिता और अन्यआश्रित लोगोंकी पालना करताथा ३९और अपने धर्ममें प्रीतिवान्होकर सत्यबक्ता और किसीकेगुण में दोषनहीं लगाताथा एक समय उस मृगाकांक्षीको कोई मृग नहीं मिला तब बहुत खोज करते करते एकजलपीताहुआनाकही जिसकी नेत्र रूपथी ४०ऐसे श्वापद व्याघ्रको उसने देखा ऐसे रूपकाजीव उसने पहले नहीं देखाथा इसी हेतुसे उसकोभी अपूर्व दर्शनजानक रमारा उस अंधेश्वापदके मारनेपर आकाशसेपुष्पोंकी वर्षाहुई ४१

और उत्तम गीत बाद्योंसमेत अप्सरानाचीं औरउस बधिककेलेजा-
नेके लिये स्वर्गसे बिमान आया ४२ हे अर्जुन निश्चय करके उस
स्वापद जीवने सब जीवोंके नाशके लिये तपस्याकरके बरदानपा-
याथा इसीसे ब्रह्माजीने उसको अंधा करदिया ४३ सबजीवोंके ना-
शमें निश्चय करनेवाले उसजीवको मारकर पीछेसे वह बलाकस्व-
र्गकोगया इसरीतिसे धर्मकी बड़ी सूक्ष्मगति है बड़ी कठिनतासेजा-
ननेके योग्यहै ४४ और कौशिक ब्राह्मणभीएक बड़ा तपस्वी और
शास्त्रोंका जाननेवालाथा वह गांवसे दूर नदियोंके संगमपर निवा-
स करताथा ४५ सत्यबोलनेका सदैवव्रतरखताथा इसीसेहे अर्जुन
वह सत्य वक्ता बिख्यात हुआ ४६ इसके पीछे कितनेही मनुष्य
चोरोंके भयसे उसबनमें रहनेलगे वहांभी क्रोधयुक्तचोरोंने बड़े उपा
योंसे उनकोढूंढ़ा ४७। ४८इसके अनन्तर उन्होंने सत्य बोलनेवाले
कौशिकके पास आकरकहा कि हे भगवन् बहुतसे मनुष्योंका समूह
किस मार्गसे गयाहै हम सत्य२ पूछतेहैं जो आप जानतेहोयं तो क-
हिये सत्यतासे पूछेहुये उस कौशिकने उनसेकहा४९ कि बहुत वृक्ष
लता बल्लीवाले उसबनमें रहतेहैं उस कौशिकने उनको प्रकटकरके
मूल वृत्तान्त कोभी प्रकट किया ५० इसकेपीछे उन्होंने उन क्रूर
मनुष्योंको पाकर मारडाला यह सुनाजाताहै सूक्ष्म धर्मोंसे अनभिज्ञ
वह कौशिक उनबड़े अधर्म रूप कहेहुये दुष्ट बचनसे महादुःखरूप
नर्कको ऐसे गया जैसे कि थोड़े शास्त्रका जाननेवाला अज्ञानी धर्मोंके
प्रकारोंको न जानकरजाताहै ५१।५२ अपने संदेहोंको वृद्धलोगोंसे न
पूछने वाला बड़े नर्कके योग्य होताहै उस धर्म और अधर्म का मूल
निश्चय करनेके लिये तेरायोग्यताका कोईतो बचन होगा ५३
कठिनतासे प्राप्तकरनेके योग्य उत्तमज्ञानको तर्कसे निश्चय करतेहैं
और बहुतसे लोग कहतेहैं कि धर्मवेदसे होताहै ५४ इसहेतुसेतुझको
दोष नहींलगाताहूं सब नहीं किया जाता है क्योंकि जीवधारियोंकी
उत्पत्तिकेलिये धर्मका बर्णन किया गया ५५जो अहिंसासेयुक्त होता
है वही धर्महै और धर्मरूप बचनभी हिंसा न करनेवालोंकी अहिंसा

के निमित्त बर्णनकिया गयाहै ५६ धारण करनेसे धर्म कहागया है क्योंकि वह सृष्टिको धारण करताहै अर्थात् उत्पत्ति और पोषणकरता है जिस हेतुसे कि वह धारण नाम गुणसे युक्तहै इसी कारणसे वह निश्चयकरके धर्मकहाजाताहै ५७ जो किसीसमयपर अन्यायसेचोरी करतेहुये धर्मको चाहतेहैं अथवा वेदके बिरुद्ध मोक्षपदको चाहते हैं उनकेसाथ कभी बार्त्तालापभी न करना चाहिये ५८ अथवा अवश्यक बोलनेके समय परभी वेदवा लौकिक बचनका सन्देहहोय अर्थात् इस बिषयके बिचार करनेके समयकि यहब्राह्मण चोरहै वानहीं ऐसे समयमें वहां मौनहोना अवश्यहै और जो कदाचित् मौन होनेसेभी काम न होसके तोवहांमिथ्या बोलनाभी योग्यगिनाजाताहै वहबिना बिचारेसेभी सत्यहीके तुल्यहै ५९ जोकिसी कामके बिषयमें ब्रतकरके कर्मसे उसको पूरा न करे अर्थात् बिरुद्धकर्मकरे उसके बिषयमें बुद्धि मानलोगोंका बचनहै कि वह उसकेफलको नहींपाताहै ६० किसी के प्राणजानेमें बिवाह में सबजाति के नाशमें और जारी होनेवाले कर्ममें कहाहुआ बचनमिथ्यानहीं कहलाताहै ६१ धर्मतत्वकेजानने वाले वा देखनेवालेइसबातमें अधर्मको न देखते हैं न जानतेहैं जो शपथोंके खानेमेंभी चोरोंसे मिलाहुआनहींहै ६२ वहां मिथ्या कहना हीश्रेष्ठहोताहै वहभीबिना बिचारकेसत्यहै और समर्थहोने परउनको किसी दशामें भी धनदेनेके योग्यनहींहै ६३ पापियों को दियाहुआ धनदाताको भी पीड़ित करताहै अर्थात् नर्कमें डालताहै इसीकारण धर्मकेनिमित्त मिथ्याकहनेसे मिथ्याके फलकोभोगनेवाला नहींहोता है मैंनेबुद्धिके अनुसारयह लक्षणोद्देश तुझसे बिधिपूर्व्वक कहा ६४ यहसबमुझ शुभचिन्तकनेधर्म और बुद्धिकेअनुसार कहाहै हे अर्जुन इसकोसुनकर अबतुमकहो कि यह युधिष्ठिर तेरेमारनेके योग्यहैवा नहीं ६५ अर्जुनबोले बड़ाज्ञानी और बुद्धिमान् जिसरीतिसेकहै और जिसरीतिसे हमाराभलाहोय उसीप्रकारका यहआपका बचनहै ६६ हे श्रीकृष्णजी आपहमारेमाता और पिताकेसमान होकर परमगति और परमस्थानहो ६७ तीनोंलोकों में आपसे कोई बातछिपी नहींहै

इसीसे आप सबप्रकारके उत्तम धर्मोंको ठीक २ जानतेहो ६८ मैं धर्मराजपांडव युधिष्ठिरको अवध्य अर्थात् मारनेकेअयोग्य मानताहूं आपइसमेरे संकल्पमें प्रतिज्ञाके रक्षाकाकोई उपायबर्णनकीजिये६९ अथवा इस स्थानपर मेरेहृदयमेंबर्त्तमान कहनेके योग्यउत्तमबातोंको सुनिये हे श्रीकृष्णजी आपमेरे ब्रतकोजानतेहैं जो कोईमनुष्य सब मनुष्योंकेआगे मुझसे ऐसाबचनकहैकि ७० हेअर्जुन तुम इसगांडीव धनुषको ऐसेमनुष्यको देदोजो बलपराक्रम और शस्त्रबिद्यामें तुमसे अधिकहो हे श्रीकृष्णजी मैं ऐसे कहनेवाले मनुष्यको हठकरके ऐसे मारूंजैसेकिमिथ्याशब्दके कहनेसेभीमसेन मारताहै ७१ हेवृष्णियों में बीर श्रीकृष्णजी आपकेसन्मुख राजायुधिष्ठिरने इसीशब्दकोबारं-बार मुझसेकहा कि धनुषको दूसरेकोदे हे केशवजीजोमैं उसकोमार डालूंतो मैं थोड़ेसमयतकभी इसजीवलोकमें नियतनहीं रहूंगा ७२ इससे निश्चयकरके मैं निष्पाप राजाकेमारनेको ध्यानकरके पराक्रम से हीन अचेतहोकर अपने शरीरको त्यागकरूंगा हे धर्मधारियों में श्रेष्ठजिससे कि मेरीप्रतिज्ञा संसारकी बुद्धिमेंसत्य समझी जाय ७३ और जिसप्रकार पांडवयुधिष्ठिर और मैं जीवतारहूं हे श्रीकृष्णजी वैसेहीआपभीअपना सम्मतमुझकोदीजियेबासुदेवजीबोलेहेबीरयुद्ध मेंकर्णकेतीक्ष्ण धारवाले बाणोंकेसमूहोंसे राजायुधिष्ठिरमहाघायल दुःखी थकावटसे युक्त बारंबार युद्धकरनेमें कर्ण के बाणोसे विदीर्ण होगयाहै ७४ इस हेतुसे इसने महादुखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसेकहेजिससे कि तुम क्रोधयुक्त होकर युद्धमें कर्ण को मारो इसी कारणसे बारंबारतुझमें क्रोध बढ़ानेकेलिये कहाहै कि तू युद्धमेंक्रोध रूप होकर कर्णकोमारे ७५ यह युधिष्ठिरभी इसलोक में उसपापी कर्ण के समान अथवा उससे सन्मुखता करनेवाला तेरे सिवाय किसी दूसरेको नहीं समझता है हे अर्जुन इसी हेतुसे मेरे सन्मुख अत्यन्तक्रोधयुक्तहोकर राजाने तुमसे यह कठोर बचन कहेहैं ७६ युद्धमें सदैवसन्नद्ध दूसरेके सहनेको अयोग्य कर्णमेंही अब यहरूपी द्यूत बांधागया है उसीके मरनेपर कौरव लोग विजय होंगे ऐसी

बुद्धिराजायुधिष्ठिरमेंहै ७७ इसकारणसे धर्मपुत्र युधिष्ठिरमारने के योग्य नहीं है हे अर्जुन तुझको अपने प्रणको पूराकरना योग्य है औरअपने योग्यउस बातको तू मुझसे समझ जिससे कि यह जीवताहुआभी मृतकके समान होजाय ७८ जब प्रतिष्ठाके योग्यमनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्तहोतीहै तभी वह इस जीवलोकमें जीवता रहताहै और जब प्रतिष्ठित पुरुष अपमानको पाताहै तब वह जीवताहुआ भी मृतकके समान कहाजाताहै ७९ यह राजायुधिष्ठिर सदैवसे भीमसेन नकुल सहदेव और तुझसे अच्छी रीतिसे प्रतिष्ठा किया गयाहै और लोकमें वृद्ध वा शूरबीर लोगोंनेभी इसकी प्रतिष्ठा की हैइसीप्रकार तुमभी बातोंकेही द्वारा इसका अपमान करो ८० हे कुन्ती के बेटे उसके साथ ऐसा कर्म करके अधर्म युक्त कर्मको कर ८१।८२यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुतिहै कल्याणके चाहनेवाले पुरुषोंको सदैव इस श्रुति को काममें लाना योग्य है ८३ यही बिना मारेहुये मारना कहाजाताहै और यही समर्थ गुरुतम कहाजाताहै हेधर्मज्ञ तुम इस मेरे कहेहुये वचनको धर्मराजसे कहो ८४ हेपांडव यह धर्मराज तेरे हाथसे इसरीतिपर मरनेको अयोग्यजानता है इसके पीछे इसके चरणोंको दण्डवत् करके बड़े मीठेबचनोंसेइससे शुभ चिन्तकताकी बातेंकहो ८५ बुद्धिमान् तेराभाई राजायुधिष्ठिर भी धर्मको बिचारकर फिरकभी तुझपर क्रोधनकरेगा हे अर्जुनभाई के मिथ्या मारनेसे अलग होकर तुमबड़ेहर्षसे युक्तहोके इससूत के पुत्र कर्णको मारो ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेएकोनसप्तति तमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि श्रीकृष्णजीके इसरीतिकेवचनको सुनकर अपने मित्र श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करनेलगा और बड़े हठको करके धर्मराजसे ऐसे कठोर बचन बोलाजैसे पूर्व्वकभीनहींबोलाथा १ हेराजा तुमतो युद्धसे एक कोश दूरनियतहो तुमऐसा मुझसेकभी मतकहो

जोचाहै तो भीमसेनमेरी निन्दा करनेकोयोग्यहै किसब लोकके शूर बीरोंसे लड़ताहै २ वहकाल रूप भीमसेन युद्धमें शत्रुओं को पीड़ा मान करके बड़े२शूरबीरराजाओंको उत्तमरथोंको श्रेष्ठतर हाथियोंको उत्तमअश्वारूढ़ोंको और असंख्य बीरोंको ३ हाथियोंसमेत मारकर बड़ेकठोरसिंहनादको गर्जनाकरताहै औरजैसे कि मृगोंकोसिंह मारताहैउसीप्रकार युद्धभूमिमें दशहजार कांबोजदेशी औरपहाड़ी शूर बीरोंकोमारकर वहबीरबड़े२ ऐसेकठिनकर्मोंकोकरताहै जिनको तुम कभीकरने को समर्थ नहींहोसक्ते और रथसे कूद गदाको हाथमें लेकर उसके प्रहारोंसे युद्धमें घोड़े रथऔर हाथियों को मारकर सिंहके समान दहाड़ताहै ४।५ इसके बिशेष खड्गसे भी घोड़े रथ और हाथियों को अथवा रथांग और धनुष से शत्रुओं को मारकर फिरबड़े क्रोध और पराक्रमका रखने वाला दोनों भुजाओं से पकड़ कर चरणोंसेही शत्रुओंको मारडालताहै ६ वह कुवेर औरयमराज केसमान महा पराक्रमी बड़े हठकरके शत्रुओंकी सेनाका मारने वालाहै वह भीमसेन मेरी निन्दा करने के योग्यहै न कि तुम जोकि सदैव शुभ चिन्तकों से रक्षा किये जातेहो ७ अकेला भीमसेनही बड़े२ रथ हाथी घोड़े और असंख्यों पदातियोंकोमथकर धृतराष्ट्र के पुत्रोंमें मग्नहै वह शत्रुओं का बिजयी मेरी निन्दा करने केयोग्य है ८ जोकि कलिंग बंग अंग निषाद और मगध देशियों को और नीले बादलके समान मतवाले हाथियोंको और शत्रुओंके मनुष्यों को सदैव मारताहै वह शत्रुसंहारी भीम मेरी निन्दाके योग्य है ९ वहबड़ा बीर महा युद्धमें समय पर उचित रथपर सवार होकरधनुष को चलायमान करताहुआ बाणोंसेपूर्ण ऐसी बाणों की बर्षा करता है जैसे जलधाराओं की बर्षा बादल करता है १० जिस भीमसेनने अभी मुखकी नोंक सूंड़ और अङ्गों समेत घायल करके आठसौ बड़े २ हाथी युद्धभूमिमें मारडाले वह शत्रुओंका मारनेवाला मुझसे कठोर बचन कहने के योग्यहै ११ बुद्धिमान् मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों के बचनमें पराक्रमको और बहुतसे क्षत्रियों में पराक्रमको कहते हैं

हेभरतबंशी तुम बचनमें बली और कठोरहो और तुम्हीं मुझकोजा-
नतेहो जैसा किमैं पराक्रमीहूं १२ जोकि मैं स्त्रीपुत्र जीवन औरआत्मा
केसाथ तेरे चित्तकाप्रियकरनेको सदैव प्रवृत्त रहताहूं इसपरभी जो
तू मुझकोबचनरूपी बाणोंसे भेदकर मारताहै हमतुझसे उससुखको
नहीं जानते १३ तू द्रौपदीकी शय्यापर नियतहोकर मेरा अपमान
मतकर मैं तेरेही निमित्तमहारथियोंको मारताहूंहेभरतबंशी इसहेतु
से तुमशंका करनेवाले होकर महानिष्ठुर प्रकृतिहो मैंने तुझसेकभी
सुखको नहींपाया १४ हेनरदेव युद्धमेंसत्यसंकल्प भीष्मजीने अपने
आपतेरेही अभीष्टकेलिये अपनी मृत्यु को तुझसे कहा द्रुपदकापुत्र
शिखण्डी बीर महात्माहै उसीनेमेरे आश्रयमें होकरउनकोमारा १५
जो कि तुम पांशोंकी बाजीमें कार्य्योंके बिगाड़ने में प्रवृत्त हुये इस
हेतुसे मैं तेरे राज्यकी प्रशंसा नहीं करताहूं तुम नीचों से सेवित
अपनेआप पापोंको करके हमारेद्वारा शत्रुओंको बिजयकरना चाह-
तेहो १६ तुमने पांशोंकी बाजीमें धर्मके बिपरीत बहुत से दोषोंको
जिनको कि सहदेवने बर्णन किया तुम नीचोंसे सेवित उन दोषोंके
त्याग करनेकी इच्छानहीं करतेहो इसीकारणसे हम सब दुःखोंमें
पड़ेहुयेहैं १७ किसी प्रकारकाभी सुखतुमसेहमको नहीं हुआ क्यों
कि तुम पांशोंके खेलमें बड़े मतवालेहो हेपांडव तुम आप दुःखको
उत्पन्न करके अब हमको कठोर बचन सुनातेहो १८ हमारे हाथ
से अंगभंगमारी हुई शत्रुओंकी सेना पृथ्वीपर सोतीहुई पुकारतीहै
तुमने ऐसा निर्दयकर्म किया जिसके दोषसे कौरवोंका मरण उत्पन्न
हुआ १६ उत्तर के रहनेवाले मारे पश्चिमी लोगोंका नाश किया
और पूर्बी वा दक्षिणी मारेगये युद्धमें हमारे और उनकेशूरबीरों ने
वह अपूर्व और अद्भुत कर्मकिया २० तुम द्यूतके खेलनेवालेहो
तुम्हारेही कारणसे राज्यका नाशहुआ हे नरेन्द्र हमारा दुःख तुझ
से पैदाहोनेवाला है हे राजा हमलोगोंको बचन रूपी चाबुकों से
पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मतकरना २१
संजय बोले कि वह स्थिरबुद्धी धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्जुन

इन कठोर अप्रतिष्ठित बचनोंको सुनाकर कुछपापकियाहुआ समझ
कर उदास होगया अर्थात् वह इंद्रका पुत्र बारंबार श्वासलेता
हुआ पीछे से महा दुखी हुआ और फिर खड्गको निकाल लिया
तब श्रीकृष्णजी बोले आप इस आकाश रूप खड्गको फिर किस
निमित्त म्यानसे अलग करतेहो २३ इसका हमको उत्तर दोगे तब
मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होने को कुछ कहूंगा
पुरुषोत्तमजीके इस बचनको सुनकर अर्जुन बड़ा दुखीहोकर केशव
जीसे बोला कि जो मैंने अप्रिय रूपी पापकर्म कियाहै इससे अपने
शरीरको नाशकरूंगा धर्म धारियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुन के इस
बचनको सुनकर यह बचन बोले कि २५ हे अर्जुन तुम इसराजासे
ऐसे बचन कहकर घोरदुःखमें क्यों प्रवृत्तहुये हे शत्रुओं के मारने
वाले अर्जुनजो तुम अपघात करना चाहतेहो यह कर्म सत्पुरुषों
का नहींहै २६ हेनरबीरजो तुम अब इसधर्मात्मा बड़े भाईकोखड्ग
से मारोगे तो तुझ धर्मसेडरने वालेकी कीर्त्ति किस प्रकारकी होगी
इसका तुमक्या उत्तर दोगे २७ हे अर्जुन धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर
कठिनतासे जानने के योग्यहै तुम बड़े २ बुद्धिमानोंके कहेहुये
धर्मको समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने
से महाघोर नरक में पड़ोगे २८ हे अर्जुन अब तुम यहां अपने
बचनसे अपनेही गुणोंको बर्णन न करो जिससे कि तुमहतात्माहो-
जाओ इस बचनको इंद्रके पुत्र अर्जुनने पसन्द किया कि हे श्री-
कृष्णजी ऐसाहीहो २९ फिर धनुषको लचाकर धर्म धारियोंमें श्रेष्ठ
युधिष्ठिरसे बोला कि हेराजा सुनो कि महादेवजीकेसिवाय मुझसा
धनुषधारी कोईनहींहै ३० मैं तुझमहात्माकी आज्ञासे एक क्षणभर
मेंही सब स्थावर जंगमजीवों समेतसंसारभरेको मारसक्ताहूं हेराजा
मैंने दिग्पालों समेत सब दिशाओंको बिजय करके तेरे अधीनकर
दीन्हीं ३१ वह पूर्णदक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ औरआपकी वह दिब्य
सभा मेरेही पराक्रमसे हुई और मेरेहाथोंमें तीक्ष्णधारवाले बाणहैं
और बाणोंसेयुक्तप्रत्यंचावाला लम्बायमानधनुषहै ३२ औरमेरे चरण

रथ और ध्वजा समेतहैं और युद्धमें वर्त्तमान होकर मुझको कोई शूरबीर बिजयनहीं करसक्ताहै मैंने पूर्व्वीय पश्चिमीय उत्तरीय और दक्षिणीय राजालोगोंको मारा ३३ संसप्तकोंका कुछ शेषबाकीहै इसरीतिसे सबसेनाका आधाभाग मारडाला हे राजा देवसेनाके समान यह भरत बंशियोंकी सेना मेरे हाथसेही मारीहुई पृथ्वीपर सोरहीहै ३४ जो अस्त्रोंके जाननेवालेहैं उनकोमैं अस्त्रोंहीसे मारता हूं इसीहेतुसेयह अस्त्रलोकोंके भस्मकरनेवालेहैं हेश्रीकृष्णजीभयके उत्पन्न करनेवाले इस विजयीरथपर सवारहोकर कर्णके मारनेको चलें ३५ अबयह राजायुधिष्ठिर सुखीहोजाय मैं युद्धमें अपनेबाणों से कर्णको मारूंगा ऐसाकहकर अर्जुनने धर्मधारियोंमेंश्रेष्ठयुधिष्ठिर से यहबचनकहा ३६ कि अबकर्णकीमाता अपनेपुत्रसे रहितहोगी अथवा कुंती मुझसे पृथकहोगी मैं सत्य२ कहताहूं कि अबयुद्धभूमि में कर्णको बाणोंसे मारेबिनामैं अपने कवचको नहीं उतारूंगा ३७ संजयबोलेकि अर्जुननेयुधिष्ठिरसे ऐसाकहकरफिरभी शस्त्रोंकोउतार धनुषछोड़ बड़ीशीघ्रतासे खड्गको म्यान में रखकर३८बड़ीलज्जा से नीचा शिरकिये हाथजोड़कर युधिष्ठिरसेकहा कि हे राजा प्रसन्न हूजिये और मेरे कहेहुयेको क्षमाकरिये आप समय पाकर जानेंगे अब आपको नमस्कारहै ३९ इसरीतिसे अप्रसन्नराजाको प्रसन्न करकेफिर यहबचनबोलाकि इसकार्य्यमें बिलम्बनहोगी बड़ीशीघ्रता पूर्वक यहकार्य्यहोगा मैं इसलौटतेहुयेके सन्मुख जाताहूं ४० अबमैं सर्वात्मभाव से भीमसेनको युद्धसेछुटाने और कर्णको मारनेको जाताहूं मेराजीवन केवल आपके अभीष्टकेही निमित्तहै हेराजा मैं आपसे सत्य २ कहताहूं आप मुझको आज्ञादीजिये ४१ यहकहकर बड़ातेजस्वी अर्जुन चलनेके समय भाईके चरणोंको पकड़कर उठा फिर पांडवधर्मराजने अपनेभाई अर्जुन के इस कठोर बचन को सुन कर ४२ महादुःखीहो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्जुन से कहा हे अर्जुन मैंने वहमहादुष्ट कर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःखप्राप्तहुआ ४३ इसकारणसे मुझकुलके नाशक

महापापीदुःखोंसेयुक्तअज्ञानबुद्धी आलसी भयभीत वृद्धोंकेअपमान करनेवाले इसनीच पुरुषके शिरको काटडालो तेरेरूखे २ बचनों के सुननेसे मेराकोई प्रयोजन नहींहै अबमैं महापापी बनकेही जानेके योग्यहूं मैं अवश्यबनहीको जाऊंगा और आपमुझसे पृथक् होकर सुखसेराज्यकोकरो ४४।४५ महात्माभीमसेनराजाहोनेकेयोग्यहै मुझ नपुंसकका राज्यमें क्याकामहै और तुझक्रोधयुक्तके इनकठोरबचनों के सहने कोभी मैं समर्थ नहीं हूं ४६ हे बीर मुझ अपमानवाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजाकरने के योग्य न होगा इसरीति के बचनों को कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयन स्थान को छोड़कर उछला ४७ और बनके जानेकी इच्छाकरी तब तो बासुदेव जीने बड़े नम्रहोकर युधिष्ठिरसे कहा हेराजा यह आप समझिये ४८ कि जैसे कि सत्यप्रतिज्ञ गांडीव धनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनीगई अर्थात् जो कोई कि ऐसा कहै कि गांडीव धनुष दूसरे के देनेके योग्यहै वहपुरुष लोकमें उसके हाथ से मारने के योग्य है और यहतुमने उससे कहा इस हेतुसे अर्जुन ने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञाकी रक्षाकरीहै ४९।५० हेराजायह तेराअपमान मेरीइच्छासे कियागयाहै क्योंकि गुरुओं का अपमानही मारने के समान कहा जाताहै ५१ हे महाबाहो राजा युधिष्ठिर इसहेतुसे सत्यकी रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुनकी अनम्रताको आप क्षमा करिये ५२ हे महाराज हमदोनों आपकी शरणमें बर्त्तमानहैं हेराजामुझप्रणात रूप प्रार्थना करनेवालेका अपराध क्षमाकरिये ५३ अबयहपृथ्वी उस पापात्मा कर्णके रुधिरकोपानकरेगी यहमैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूंकि अबतुम कर्णको मराहुआहीजानो ५४ जिसकातूमरना चाहताहै अबउसकी अवस्था जीवनकीभी समाप्तहुई तब श्रीकृष्ण जीके बचनको सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने ५५ भ्रान्ती से युक्त झुकेहुये श्रीकृष्णजीको उठाकर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजी से यह बचनकहा ५६ कि हे श्रीकृष्णजी जैसा आपने कहाहै वैसाही है कि इसमें मेरी अमर्य्यादा होय हेमाधव गोबिन्दजी मैं आपकेसम-

ज्ञाने से समझ गयाहूं ५७ हे अविनाशी अबहम तुम्हारे कारणसे घोर दुःखसेछूटे और अपनी अज्ञानतासे अचेतहम दोनोंआप रूप स्वामीको पाकर इसघोररूप दुःखसमुद्रसेपारहुये ५८ हमसबअपने मंत्रियोंसमेतआपकीबुद्धिरूपी नौकाकोपाकरदुःख और शोक रूपी नदी से पारहुये हेअविनाशी हमतुमसे सनाथहैं ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरप्रबोधनेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके पीछे धर्मात्मा यदुनन्दनगोबिन्दजी धर्मराजके इसप्रीति युक्त बचनों को सुनकर अर्जुन से बोले १ और अर्जुन इसरीतिसे श्री कृष्ण जी के बचनसे युधिष्ठिरको कठोरबचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछपापको करके उदास होतेहैं २ तब हंसतेहुये बासुदेवजी उस पांडव से बोले कि हे अर्जुन यहकैसे हो सक्ताहै जो उसधर्मनिष्ठ धर्मके पुत्रको तीक्ष्णधारवाले खड्ग से मारे तुमराजासे यह कहकरएक पापमेंपड़े ४ हेअर्जुन राजाकोमार करपीछे से तुमक्या करते इस रीतिसे अल्प बुद्धियोंसे बड़ीकठिनता पूर्वक धर्मजानने के योग्यहै ५ सो आपधर्म के भयसे बड़े भाई के मारनेकेद्वारा बहुत बडे घोर नर्क में अवश्य पड़े ६ सो तुम धर्मधारियों में श्रेष्ठ धर्मकेसमूह कौरवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरको प्रसन्न करो यहीमेरा मतहै ७ अपनी भक्तिसे राजाको प्रसन्नकरो फिर उस युधिष्ठिरके प्रसन्नहोनेपर शीघ्रही युद्धके निमित्त कर्णके रथकेसमीप चलेंगे ८ हे बड़ाई देनेवाले अब तुम युद्ध में अपने तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे कर्णको मारकर धर्मराजकी बड़ी प्रसन्नताको प्राप्त करो ९ हेमहाबाहोयहांपर यह बार्त्तासमयके अनुसारहै यहमेरामत है ऐसा करने पर तेराकियाहुआ कार्य सिद्धहोगा १० हेमहाराज इसकेपीछे लज्जा युक्त अर्जुन धर्मराजके दोनों चरणोंको पकड़कर शिरसे झुकगया ११ औरउस भरतर्षभसे बारंबार बिनयकरनेलगा किहेराजाजोमुझसबकामोंसे डरेहुयेने आपकेसन्मुख असभ्यबचन

कहे उनको आप क्षमाकरिये १२ हेभरतर्षभ धृतराष्ट्र तबतोधर्मरा-
ज युधिष्ठिरने उस शत्रुसंहारी रोतेहुये और गिरेहुये अर्जुनको देख-
कर १३ उस संसारकी लक्ष्मीके बिजयकरनेवाले भाईको उठाकर
बड़ी प्रीतिसे हृदय से लगाकर अतिरोदन किया १४ हे महाराज
वह महातेजस्वी शुद्धअंतःकरणवाले दोनोंभाई बहुत बिलंबतकरो-
दन करके प्रसन्न हुये १५ फिर पांडव धर्मराज बड़े प्रेमसे मिलकर
उसके मस्तकको सूंघके बड़ी प्रीतियुक्त मंदमुसकान करते हुये उस
बड़े धनुषधारीसे बोले १६ हेमहाबाहो बड़े धनुषधारी कर्णने युद्धमें
सबसेनाके देखतेहुये मुझ उपाय करनेवाले को कवच,ध्वजा,धनुष,
शक्ति घोड़े और बाणोंको १७ अपने बाणोंसे काटकर पराजयकिया
हेअर्जुन सोमैं युद्धमें उसको जानके और उसकेकर्मको देखकर १८
महादुःखी होताहूं और जोतू युद्ध में उसबीर शत्रुको नहीं मारेगातो
मुझको जीवन प्यारा न होगा १९ अर्थात् अपनेप्राणोंको त्यागक-
रूंगा फिर जीने से मेराकोई प्रयोजन नहींहै हेभरतर्षभ इसप्रकार
के युधिष्ठिरके बचनों को सुनकर अर्जुनने उत्तरदिया २० हेनरोत्तम
महाराज मैं आपकोसत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और स-
हदेवकी शपथकरताहूं २१ मैं जिसप्रकारसे अब कर्णको मारूंगा वा
आप मरकर पृथ्वीपर गिरूंगा मैं सत्यतासे उसशस्त्रको प्राप्तकरता
हूं २२ ऐसा राजासे कहकर फिर माधवजीसे बोला कि हेश्रीकृष्ण
जो अब मैं निस्संदेह युद्धमें कर्णकोमारूंगा २३ आपकाकल्याणहोय
यहसब आपहीके बिचारसेहै उस दुरात्माका मरण होगा हेराजा-
ओं में श्रेष्ठ यहबचन सुनकर केशवजी अर्जुनसेबोले २४ हेभरतर्षभ
तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो हे महारथी
मेरीभी सदैवसे यही इच्छा है २५ तुम युद्ध में कैसे कर्णको मारो
गे यहकहकर वहश्रेष्ठपुरुषोत्तम माधवजी फिर युधिष्ठिरसेबोले २६
हेयुधिष्ठिर तुमअब दुरात्माकर्णके मारनेकेनिमित्त अर्जुनकोबिश्वास
पूर्बक आज्ञादेनेको योग्यहो २७ हे पांडुनन्दन आपको कर्णकेबाणों
से पीड़ामान सुनकर मैं और अर्जुन वृत्तान्त निश्चय करनेको यहां

आयेथे सो२८ हेराजा आप प्रारब्धसे जीवतेहुये और उसकेपकड़ने से बचेहुयेहो हे निष्पाप अब तुम इस अर्जुन को विश्वास पूर्वक विजयका आशीर्वाददो २६ युधिष्ठिर बोले हे पांडव अर्जुन आओ आओ मुझ से मिलो कहनेके योग्य और चित्तके अभीष्टको प्राप्त करनेवाला बचन कहागयाहै जोतुमने मुझसेकहा वहमैंने सबक्षमाकिया३० हेअर्जुन अबमैं तुझको आज्ञादेताहूं कितुम कर्णकोमारो हे अर्जुन और जो २ मैंने कठोर बचन कहे हैं उनसे क्रोधयुक्त मतहो ३१ संजय बोले हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र तबतो कमरसे झुके हुये अर्जुनने हाथोंसे अपने अपने बड़े भाईके दोनों चरणोंको पकड़ लिया ३२ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उसको उठाके अच्छीरीतिसे मिलकर मस्तकको सूंघ फिर उस से कहनेलगे ३३ हे महाबाहो अर्जुन मेरी तैंने बड़ी प्रतिष्ठाकरीहै तुम फिर महत्वता और अविनाशी विजय को प्राप्त करोगे ३४ अर्जुन बोलेकि अब मैं उसपापी और बलसे अहंकारी कर्णको युद्धमें पाकर बाणोंसे उसके भाईबेटों समेत मारूंगा ३५ जिसके खिंचेहुये धनुषकेबाणोंसेतुम महापीड़ामान हुयेहो वहकर्ण अब बहुत शीघ्रही उसके फलको पावेगा ३६ हेराजा अबमैं कर्णको मारकरही आपको सेवन करनेके निमित्तदेखूंगा मैं उच्चश्वरसे यहतुमसेसत्य२ कहताहूं ३७ हे पृथ्वीके स्वामी अबमैं कर्णको मारेबिना युद्धभूमिसे नहींलौटूंगा सत्यतासे आपके दोनों चरणोंको छूताहूं ३८ संजय बोलेकि तबतो प्रसन्नचित्त युधिष्ठिरने इसप्रकारकी बातें करनेवाले अर्जुनसे बहुत बड़ा यह बचन कहा कि तेरी अबिनाशी कीर्त्ति वा मनोभीष्ट जीवन वा विजय वा सदैव पराक्रम वा शत्रुओंका नाश ३९ और वृद्धि को देवता लोग कृपा करकेदें और जैसा मैं चाहताहूं वैसाही तेरा अभीष्ट सिद्धहोय शीघ्रजाओ और युद्धमें कर्णको ऐसेमारो जैसे कि इन्द्रने अपनी वृद्धिकेनिमित्त वृत्रासुरको माराथा ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरवरप्रदानेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कर्णके मारने को उपस्थित अर्जुन अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर धर्मराजको प्रसन्न करके गोविन्दजीसे बोला १ किमेरारथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ोंको पूजो और उसीमेरेकल्याण रूपी रथपर सब अस्त्र शस्त्रोंकोधरो २ अश्वसवारों से शिक्षित और पृथ्वीके लोटनेसे गत परिश्रम और रथके सब सामानोंसे अलंकृत शीघ्रता युक्त चंचल घोड़े बहुत शीघ्र सन्मुखलाये जायं३ हेगोविन्द जी कर्णके मारनेकी इच्छा से अब शीघ्रचलो हे महाराज महात्मा अर्जुनके इस बचनको सुनकर४ श्रीकृष्ण जी दारुक सारथीसेबोले कि वह सबकरो जिस प्रकार इसभरतर्षभ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुनने कहाहै ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे श्रीकृष्ण जीकी आज्ञापातेही उस दारुकने शत्रुसंतापी व्याघ्र चर्म से मढ़े हुये उत्तम रथको जोड़ा ६ और रथको तैयार करके महात्मा पांडव अर्जुन के आगे निवेदन किया कि रथ तैयारहै तब महात्मादारुक के तैयार किये हुये रथको देखकर ७ धर्मराजसे आज्ञाले ब्राह्मणों से स्वस्ति बाचन कराके बड़े मंगल और स्वस्त्ययनके साथ रथपर सवार हुआ उस समय बड़ेज्ञानी धर्मराज राजायुधिष्ठिरने उसको आशीर्बाद दिया इसकेपीछे वह कर्णके रथके पीछेचला८।६ हेभरतबंशी सब जीवोंने उस बड़ेधनुषधारी अर्जुनको आतादेखकर महात्मा पांडवके हाथसे कर्णको मराहुआमाना १० हेराजा सबदिशा चारों ओरसे निर्मलहुईं उस समय चाष शतपत्र और क्रौंचनाम पक्षियोंने ११।१२पांडुनन्दन अर्जुनको दक्षिणकिया हेराजा मंगल वा कल्याणरूप और प्रसन्न रूप अर्जुन को युद्धमें प्रेरणा करते बहुत से नर पक्षीभी शब्द करनेलगे१३और हेराजा भयानकरूप कंक गिद्ध बक बाज और काक यहसब मांसखानेकेलिये उसकेआगे२ चले उन्होंने अर्जुन के मंगलकारी शकुनोंको इसरीतिसे बर्णन किया १४ किशत्रुओंकी सेनाका और कर्णको नाश होगा इसके पीछे यात्रा करने

वाले अर्जुनको बड़ा खेद उत्पन्न हुआ १५ और बड़ी चिन्ताउत्पन्नहुई कि यह कैसेहोगा इसके अनन्तर मधुसूदनजी गांडीव धनुषधारीसे बोले १६ हेगांडीव धनुषधारी युद्धमें जो२ तेरेधनुषसे विजय कियेगये उनका विजय करनेवाला दूसरा मनुष्य इस पृथ्वी पर नहींहै १७ इन्द्रके समानभी अनेक पराक्रमी देखे उनशूरोंने भी तुझको पाकर युद्धमें परमगतिको प्राप्त किया १८ इन द्रोणाचार्य्य भीष्म, भगदत्त, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, कांबोज, सुदक्षण१६ बड़े पराक्रमी श्रुतायुश और अश्रुतायुशके सन्मुख जाकर जोतेरे पास दिव्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धोंमें मोह न होता वा बिज्ञानरूपी नम्रता नहोती तोतेरे सिवाय किस दूसरेकी सामर्थ्यथी जो इनके आगे कुशलरहता२०।२१ और बेधचिह्न युक्त योगभी तुझ को प्राप्तहै आप गंधर्व और संसारके जड़ चैतन्यों समेत देवताओंकोभी मारसक्तेहो हे अर्जुन इसपृथ्वी पर तेरे समान कोई शूरबीर पुरुष नहींहै और जोकोई क्षत्रीयुद्धमें दुर्मद बड़े धनुषधारीहैं २२।२३ उनके मध्यमें तेरे समान देवताओं तकमें किसीको नहीं देखताहूं न सुनताहूं ब्रह्माजीने सृष्टिकीउत्पत्ति करके गांडीव धनुषको उत्पन्न कियाहै २४ हेअर्जुन जोकि तुम उस धनुषके द्वारा लड़तेहो इसीकारणसे तुम्हारे समान कोईनहीं है हे पांडव में उस बातको अवश्यकहूंगा जिसमेंतेरा कल्याणहोगा२५ हे महाबाहो युद्धके शोभा देनेवालेकर्णको तू मत अपमानकर यह महारथीकर्णपराक्रमी अहंकारीअस्त्रज्ञ२६ कर्मकर्त्तावाअपूर्व युद्धकर्त्ता होकरदेशकालका जाननेवालाहै यहां अबबहुत कहनेसे क्यालाभहै हेपांडव अब इसकासंक्षेप सुनो २७ मैं महारथीकर्णको तेरेसमान वा तुझसे अधिकमानताहूं वह तुझसे बड़े उपाय पूर्वक युद्धमेंस्थिर होकरमरने के योग्यहै २८ तेजमें अग्निकेसदृश बेगमें बायुकेसमान क्रोधमें यमराजकी सूरत सिंहके समान दृढ़शरीर महापराक्रमी २६ और शरीरकी लम्बाईमें आठहाथबड़ी भुजाओंसे युक्त वृहद्वक्षस्थल वाला बड़ी कठिनता से बिजय होनेवाला महाअभिमानी

शूर और बड़ा बीरहै अपूर्व्व दर्शन ३० सबशूरबीरोंके समूहोंसे युक्त मित्रोंकोनिर्भय करनेवाला सदैवपांडवोंका शत्रु दुर्योधनके मनोरथ सिद्ध करनेमें तत्पर ३१ तेरेसिवाय इन्द्रसमेत सबदेवताओंसे भी मारने के अयोग्य है यह मेरामत है कि तुम उस सूत पुत्रको मारो ३२ सावधान रुधिरमांस के धारण करने वाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओं सेभी वह महारथी कर्ण बिजय करने के योग्य नहींहै ३३ उस दुरात्मा पाप से अहंकारी निर्दयी सदैव पांडवों से दुष्टबुद्धि रखने वाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करने वाले कर्ण को मारकर अब तुम अपने अभीष्ट को सिद्ध करो ३४ अर्थात् अब तुम उस रथियों में श्रेष्ठ अजेय सूत पुत्र को कालकेबशमें करो और रथियोंमें श्रेष्ठ सूत पुत्रको मारकर धर्मराज में प्रीतिकरो ३५ हे अर्जुन देवता और असुरोंसे अजेय तेरेपराक्रम को मैंठीक २ जानताहूं यह दुरात्मासूतपुत्र अहंकारसे सदैवपांडवोंका अपमान करता चला आताहै ३६ और जिसकेद्वारा पापीदुर्योधन अपनेको बीरमानताहै हे अर्जुन अब उस पापोंके मूलरूपसूतपुत्रकोमारो ३७ हेअर्जुन खड्गके समान जिह्वा धनुषकेसमानमुख और बाणरूपडाढ़ रखनेवाले उसबेगवान् अहंकारी पुरुषोत्तम कर्णकोमारो ३८ मैंतुझको आज्ञादेताहूं कियुद्धमेंउस शूरबीर कर्णको ऐसेमारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथीको मारताहै ३९ दुर्योधन जिसके पराक्रमसे तेरे पराक्रमको अपमान करताहै हे अर्जुन उस कवच और कुंडलके उखाड़ देने वाले कर्णको अब युद्धमें मारो ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णबधार्थअर्जुनगमनेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

हेभरतबंशी इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्णके मारनेमें संकल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुन से फिर बोले १ हेभरतबंशी अब मनुष्य घोड़े हाथीआदिके घोर नाशके होनेकी सत्रह दिन व्यतीतहुये २ हेराजा शत्रुओंके समूहोंसे आपके शूरबीरोंकी

सेना बड़ीहोकर परस्पर युद्ध करतीहुई कुछबाकी रहगईहै ३ हेअर्जुन निश्चय करके कौरवलोग बहुत हाथी घोड़ेवाले होकर तुझशत्रु कोपाकर सेनाकेमुखपरनाशवान् होगये ४ वहराजालोग और संजय इकट्ठे हैं और सब पांडवलोगभी तुझअजेयको पाकर वर्त्तमानहैं ५ तुझ से रक्षित शत्रुओं के मारने वाले पांचला पांडव मत्स्य और कारुष्य देशियोंने चंदेरी देशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाश किया ६ हेतात युद्ध में तुझ से रक्षित महारथी पांडवों के सिवाय कौन मनुष्य युद्धमें कौरवोंके बिजय करने को समर्थ होसक्ता है ७ तुम युद्ध में देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्ध में तत्पर होकर तीनोंलोकोंके बिजय करनेको समर्थहो फिर कौरवी सेनाके बिजय करनेको क्यों न होगे ८ हेपुरुषोत्तम तेरे बिना दूसरा कौन मनुष्य इन्द्रकेसमान बल पराक्रमीभी राजाभगदत्तके बिजय करनेको समर्थ है ९ हेनिष्पाप अर्जुन इसी प्रकार सब राजालोग भी तुझसे रक्षित इस बड़ी सेनाके देखने को भी समर्थ नहीं हैं १० हे अर्जुन इसी प्रकार युद्धमें तुझ से सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के हाथों से द्रोणाचार्य्य और भीष्म मारे गये ११ हेअर्जुन कौन मनुष्य युद्ध में इन्द्रके समान पराक्रमी और भरतबंशियोंके महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्यको लड़ाई में विजय करनेको समर्थथा १२ हे पुरुषोत्तम इस लोकमें तेरे सिवाय कौनपुरुष युद्धमें मुख न मोड़ने वाले महाअस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओं के स्वामी अतिउग्र परस्पर मिले हुये युद्धमें दुर्मद इन भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सोमदत्त अश्वत्थामा कृतबर्मा जयद्रथ शल्य और राजा दुर्य्योधन के बिजय करने को समर्थ है १३ । १४ । १५ बहुतसे सेनाओंके समूह तो नाशहुये घोड़े रथ वा हाथी पराजित और मारे गये हे भरतबंशी क्रोधयुक्त नाना देशोंके क्षत्री और गोपालदास, मीयान, वशाती पूर्व्वीय राजालोग, बाढ़धान, अभिमानी भोजबंशी और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना घोड़े हाथी और नाना देशों के बासी यहसब महा उग्ररूप तुमको और भीमसेनकोपाकर नाशहोगये १६ । १७ । १८ महाउग्र भय-

कारी कर्म करने वाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद बड़े समर्थ मोठर तंगण, आंध्रक, पुलिन्द और उग्र पराक्रमी किरात म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और अनूप देशके रहने वाले १९।२० यह सब बेगवान् युद्धमें कुशल पराक्रमी हाथमें दंड रखने वाले कौरवों समेत दुर्य्योधन के साथ क्रोधयुक्त २१ युद्ध में तेरे सिवाय दूसरे से बिजय करने के योग्य नहीं हे शत्रुओं के तपाने वाले जिस के तुमरक्षक न हो वैसा कौनसा मनुष्य दुर्य्योधन की उसबड़ी अलंकृत सेना को देखकर सन्मुख होसक्ता है २२ हे समर्थ वह समुद्र के समान उठीहुई धूलसे युक्त सेना २३ तुझसे रक्षित क्रोधयुक्त पांडवों से चीरकर मारी गई अब सातदिन हुये कि मगधदेशियों काराजा बड़ापराक्रमी जयत्सेन २४ युद्ध में अभिमन्यु के हाथ से मारागया उसके पीछे भीमसेन ने भयभीत कर्म करने वाले दश हजार हाथियों को अपनी गदासेही मारडाला २५ और जो कुछ राजाके घोड़े आदिथे उनकोभी मारडाला इसकेपीछे अपने पराक्रम सेही अन्य सैकड़ों हाथी और रथियोंको मारा २६ हेपांडव अर्जुन इसरीतिसे उस बड़ेभयकारी युद्धके वर्त्तमान होने पर कौरव लोग भीमसेन और तुझको पाकर २७ घोड़े रथ और हाथियोंसमेत यहां से मर मरकर यमपुरको गये हे अर्जुन इसी प्रकार वहां पांडव के हाथसे सेना मुखके मरनेपर २८ परम अस्त्रज्ञने बाणों से ढककर सबका नाशकरदिया उसके धनुषसे निकलेहुये शत्रुओंके शरीरोंके चीरनेवाले२९।३०सुनहरी पुंखयुक्त सीधेजानेवाले बाणोंसे आकाश व्याप्तहोगया वह भीमसेन एक२ घूंसे सेहजारों रथियोंको मारता था ३१ उसने बड़ेपराक्रमी इकट्ठे हुये एकलाख मनुष्य और हाथियों को मारकर दशवींगतिसे उनहाथी घोड़े और रथोंको पाकरमारा३२ दोषों से पूर्ण नवगतियोंको त्यागकरते उसने युद्धमें बाणोंको छोड़ा और आपकी सेनाको मारतेहुये भीष्मजीने दशदिनतक३३।३४ रथके आसन खाली करके घोड़े वा हाथियोंको मारा इसने युद्धमें रुद्र और विष्णुके समान अपने रूपको दिखाकर और पांडवों की

सेनाको आधीन करके मारा फिर चंदेरी पांचाल और कैकय देशीय राजाओंको मारतेहुये ३५ बिना नौकाके नदीमें डूबनेवाले अभागे दुर्योधनके निकालनेके इच्छावान् भीष्मने रथ हाथी और घोड़ोंसे व्याकुल पांडवीसेनाको भस्मकिया ३६ युद्धमेंउत्तम शस्त्ररखनेवाले हजारों कोटि पदाती वा सृंजय वा अन्य राजालोग चलते हुये सूर्यके समान घूमनेवाले युद्धमें विजय से शोभायमान जिसभीष्म जीके देखनेकोभी समर्थ नहींहुये ३७।३८ऐसाप्रतापी भीष्मभी बड़े उपाय से पांडवोंके सन्मुखगया वहांअकेले भीष्मनेपांडव और सृं- जियोंको भगाकर३६ सब बीरोंमें प्रतिष्ठाकोपाया फिरतुझसे रक्षित शिखण्डीने उस महाव्रतनाम भीष्म को पाकर४० गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे मारा वह भीष्मपितामह तुझपुरुषोत्तमको पाकर गिराहुआ शर शैयापर ऐसे सोताहै जैसे कि इन्द्रको पाकर वृत्रासुर सोया था उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पांचदिन तक शत्रुओं की सेनाको छिन्नभिन्न करके ४१।४२ अभेद्यव्यूहको अलंकृतकरकेबड़े २ महा- रथियोंको गिरातेहुयेयुद्धमें जयद्रथको रक्षाकरकेउसउग्ररूपने यम- राजके समान रूप धारण करके रात्रिके युद्ध में प्रजाका नाशकर दिया फिर शूरबीरोंको बाणोंसेमारकर ४३।४४ धृष्टद्युम्नको पाकर परमगतिको पाया अबजो तुम कर्णआदि रथियोंको ४५ न हटाते तो द्रोणाचार्य्य युद्धमें नमारे जाते तुमने दुर्य्योधनकी सबसेनारोकी उसकारणसे द्रोणाचार्य्य युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसेमारेगये हेअर्जुन तेरे सिवाय दूसरा कौनसा क्षत्री ऐसे कर्मको करसक्ताहै ४६।४७ जैसा कि तुमने जयद्रथके मारनेमें कियाथा अर्थात् बड़ीभारी सेना कोरोककर बड़े २ शूरबीरोंकोमारके ४८ राजाजयद्रथको तैंने अपने तेज और बलसे मारा सब राजालोग जयद्रथके मारनेको आश्चर्य और अद्भुत मानते हैं ४६ हे अर्जुन तुम महारथीहो इससे उसका मरना आश्चर्य युक्त नहींहै हेभरतबंशी मैं तुझकोयुद्धमें पाकर एक- ही दिनमें क्षत्रियोंके समूहों का नाशहोना मानताहूं ५० यहमेरा पूर्ण बिश्वासहै सो हे अर्जुन यह दुर्योधनको घोरसेना युद्धमें ५१

सब शूरबीरों समेत मृतक रूपहै जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य्य सरीखे मारेगये वह भरतबंशियोंकी सेना जिस के अत्यन्त शूरबीर मारेगये और घोड़े रथ और हाथीभी मारेगये ५२ अब ऐसी दिखाई देतीहै जैसे कि सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रोंसे रहित आकाश होता है हेभयानक पराक्रमी अर्जुन यह सेना युद्धमें ऐसे नष्टहोगई ५३ जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्रके पराक्रमसे असुरोंकी सेना नाशहोगई थी इससेनामें मरनेसे बाकी बचेहुये पांचमहारथीहैं ५४ अश्वत्थामा कृतबर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य्य हेनरोत्तम अबतुम इनपांचों महा रथियोंकोमारकर ५५ शत्रुओंसे रहित जानकर द्वीप,नगर, आकाश तल,पाताल,पर्व्वत और महाबनों समेत पृथ्वीको अपनीकरकेराजा को सुपुर्दकरो ५६ अब असंख्यलक्ष्मी और पराक्रमका रखनेवाला युधिष्ठिर इसपृथ्वीको पावे जैसे कि पूर्व्व समयमें बिष्णुजीने दैत्य और दानवोंको मारकर पृथ्वीको इंद्रके अर्थदीथी उसीप्रकार तुमभी इनसब कौरवादि क्षत्रियोंको मारकर राजाकोदो ५७ अबतेरे हाथ से शत्रुओंको मारनेसे पांचालदेशी ऐसे प्रसन्न होयं जैसेकि बिष्णु जीके हाथसे दैत्योंके मरनेपर देवतालोग प्रसन्नहुयेथे ५८ अथवा जो गुरूकी महत्वतासे द्विपादोंमें श्रेष्ठ गुरू द्रोणाचार्य्यके तुझमारने वालेको दया और करुणा अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य परहै ५९ वह अत्यन्त पूजित भाई माताके बांधवोंको मानताहुआ कृतबर्माको पाकर यमलोकमें नहीं पहुंचावेगा ६० और हे कमलनयन अबजो तुम दयाकरके माताकेभाई मद्रदेशियोंके राजाशल्यको मारना नहीं चाहतेहो ६१ तो हेनरोत्तम अब पांडवोंकेऊपर पाप बुद्धि रखनेवाले अत्यंतनीच इस कर्णको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसेमारो ६२ यहतेरा श्रेष्ठ और शुभकर्महै इसमें किसीप्रकारका तुझको दोषनहीं होसक्ता है और हमभी ठीक २ जानते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं है ६३ हेनिष्पाप रात्रिके समय पुत्रोंसमेत तेरी माताके शोककरने में और द्यूतके निमित्त दुर्योधनने तुमलोगोंको जो २ कष्टदिये ६४ इनसब बातोंका मूलरूप यह दुष्टात्मा कर्णहीहै दुर्योधन सदैवसेही कर्ण

से अपनी रक्षा मानताहै ६५ और इसी कर्णके कारणसे उसनेमेरे भी पकड़नेका बिचारकिया हे बड़ाई देनेवाले इसराजा दुर्योधनको बुद्धिसे दृढ़ बिश्वासहै कि ६६ कर्णही युद्धमें निस्संदेह सब पांडवों को बिजय करेगा हेअर्जुन तेरे पराक्रमके जाननेवाले दुर्योधननेकर्ण का आश्रय लेकर तुमलोगोंसे शत्रुता अंगीकार करी वह कर्णसदैव यही कहताहैकि मैं सन्मुख आनेवाले पांडवोंको ६७।६८और महा-रथीयादव बासुदेवको बिजयकरूंगावह अत्यन्त दुष्टात्मा दुर्योधनको उत्साह दिला दिलाकर यहकहा करताहै ६९ वहकर्णजो युद्धमेंगर्ज रहाहै हे भरतबंशी अब उसको मारो निश्चयकरके दुर्योधनने जो २ तुम्हारे साथ पापकिये ७० उनसबमें यही दुष्टात्मा कर्णही कारणथा और जो उस दुर्योधनके रखतेहुये उसके निर्दयीइन छः महारथियों ने ७१ अधर्म युद्ध करके अभिमन्युको मारडाला द्रोणाचार्य्य,कृपा-चार्य्य,अश्वत्थामा इनतीनोंने नरोत्तम बीरोंकेपीड़ामान करनेवाले हा-थियोंको मनुष्योंसेरहित करनेवाले औरमहारथियोंको रथसे विरथ करनेवाले घोड़ों को उनके सवारों से रहित करनेवाले पतियों को शस्त्र और जीवनसे रहितकरनेवाले ७२ कौरव वृष्णियों के यशके बढ़ानेवाले सेनाओंके छिन्नभिन्न करनेवाले महारथियोंको पीड़ामान करनेवाले ७३।७४ मनुष्यघोड़े और हाथियोंको यमलोकमें पहुंचाने वालेबाणोंसेसेनाको भस्मकरनेवाले आतेहुये अभिमन्युको जोमारा ७५वहदुःख मेरेअंगोंको भस्मकियेडालताहै हे मित्र मैं तेरीसत्यता की शपथ खाताहूं हे प्रभु जोदुष्टात्मा कर्णनेवहांभी शत्रुताकरी ७६ वह कर्ण युद्धमें अभिमन्युके आगेसन्मुखता करनेको असमर्थ अभि मन्युके बाणोंसे छिदाहुआ अचेत रुधिर में डूबा शरीर ७७ क्रोधसे प्रकाशित श्वासलेता मुखफिरा शायकोंसे पीड़ामानभागनेको चाहता जीवनसे निराश ७८ अत्यन्त ब्याकुल युद्धमें प्रहारों से थकाहुआ नियतहुआ तदनन्तर समय के अनुसार युद्ध में द्रोणाचार्य्य के ७९ निर्दय बचनको सुनकर फिर कर्णने धनुषको काटा इसकेपीछे उसके हाथसे टूटेशस्त्रवाले अभिमन्युको छलीबुद्धिवाले पांच महारथियों

ने ८० युद्धमें बाणोंकी वर्षासे घायल किया उसवीरके मरनेपर सब लोगोंमें दुःख प्रवृत्तहुआ अर्थात् सबको तो बड़ाखेद हुआ परन्तु वह दुष्टात्मा कर्ण और दुर्य्योधन बहुतहंसे कर्णने निर्दयमनुष्यके समान पांडव और कौरवोंके सन्मुख सभाकेमध्यमें द्रौपदी सेजो यह कठोर शब्द कहे कि हे कृष्णा पांडव नाशमान होकर सनातन नरक को गये ८१।८२।८३ हे पृथुश्रोणि मृदुभाषिणी द्रौपदीतुम दूसरे पति को बरो अथवादासीरूप होकर दुर्य्योधनके महलमें ८४ प्रवेशकरो तेरे पतिनहींहैं हे भरतवंशी उस समय महादुर्बुद्धी पापात्मा कर्णने तेरेसुनतेहुये धर्मराजसे यहपाप बचनकहाहै अब पापीकेउस वचन को सुवर्णसे जटित दश८५।८६महातीक्ष्ण मृत्युकारी तेरे चलाये हुये बाण शान्तकरो उस दुष्टात्माने जो २ और पाप तुझपर किये अब उसके कियेहुये पाप और तेरेचलाये हुयेबाण उसके जीवनको नाशकरो अब वह दुष्टात्मा कर्ण गांडीवसे निकलेहुये घोरबाणों को अपनेअंगोंसे स्पर्श करेगा और द्रोणाचार्य्य और भीष्मजीके वचनों को स्मरणकरते सुनहरीपुंख शत्रुओंके मारनेवाले बिजलीसे प्रकाशित ८७।८८।८६ तेरेचलाये हुयेबाण उसकेकवचको काटकर रुधिरको पानकरेंगे अबतेरी भुजाओं से छोड़ेहुये महाउग्र वेगवान् बाण उसकेबड़ेकवचको काटकर ६० कर्णको यमलोकमें पहुंचावेंगे अबहाहाकार करनेवाले महादुःखी तेरेबाणोंसे पीड़ित होकर राजा लोग रथसे गिरतेहुये कर्णको देखें और दुःखीहुये बांधव रुधिर में भरे पृथ्वीपरपड़े सोतेहुये ६१।६२ टूटे शस्त्रवाले कर्णको देखोतेरे भल्लसे घायलहाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली इसकेरथकी बड़ी लंबी ध्वजा महाकंपित होकर पृथ्वी परगिरे ६३ और भयभीत शल्यतेरे असंख्यों बाणोंसे टूटासुवर्णसे जटित मृतकरथीवाले रथ को छोड़कर भागो ६४ इसके पीछे तेराशत्रु दुर्य्योधन तेरे हाथसे कर्णको मराहुआ देखकर अपने जीवन और पृथ्वीके राज्यसे निराश होजाय ६५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ कर्णके तीक्ष्णबाणोंसे घायल पांडवोंकी रक्षाचाहनेवाले यह पांचालदेशी जातेहैं ६६ सबपांचाल

और द्रौपदीके पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखंडी धृष्टद्युम्न के पुत्र, शतानीक नकुलके पुत्र ९७ नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकीको कर्णके स्वाधीनही वर्त्तमान जानो ९८ हे शत्रुओं के तपानेवाले युद्धमें कर्णके हाथसे घायल तेरे बांधव पांचालोंके यह घोर शब्द सुने जाते हैं ९९ बड़े धनुषधारी पांचाल देशी किसी दशामें भी भयभीत होकर पीठ नहींमोड़ते और बड़े युद्धमें मृत्युको भी नहीं गिनतेहैं १०० जिस अकेले ने बाणोंके समूहों से पांडवी सेनाको ढकदिया ऐसे भीष्मजीकोभी पाकर वह पांचालदेशी नहीं मुड़े १०१ हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले इसीप्रकार युद्धमें सदैव अग्निके समान प्रकाशित अस्त्ररूपी अग्नि रखने वाले सबधनुष-धारियों के गुरू युद्धमें अपने तेजसेही भस्म करनेवाले अजेयद्रोणा-चार्य्यको १०२ और सब शत्रुओं के बिजय करने में प्रवृत्त हुये पांचाल देशी कभी कर्णसे भयभीत और मुखमोड़ने वाले नहीं हुये हैं १०३ उन शूरबीर पांचालों के प्राणोंको कर्णने बाणोंके द्वारा ऐसे हरलिया जैसे कि पतंगोंके प्राणोंको अग्नि हरलेता है १०४ युद्धमें इस रीतिसे सन्मुख अपने मित्रके निमित्त जीवनका त्यागने वाला कर्ण उन हजारों शूरबीर पांचालोंको नाश कररहाहै १०५ सोतुम हे भरतबंशी नौकारूप होकर उस कर्ण रूपी नौका रहित अथाह समुद्रमें डूबतेहुये बड़े धनुषधारी पांचालों की रक्षा करनेके योग्यहो १०६ कर्णने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुराम-जीसे लियाहै उसका रूप वृद्धियुक्त है १०७ वह सब सेनाओं का तपाने वाला घोर रूप बड़ा भयानक बड़ी सेनाको ढककर अपने तेजसे प्रकाशमान है १०८ कर्णके धनुषसे निकले हुये यह बाण युद्धमें घूमते हैं और भ्रमरोंके समूहों के समान उन बाणोंने आपके पुत्रोंको तपायाहै १०९ हेभरतबंशी यह पांचाल युद्धमें अज्ञानी मनुष्यों से कष्टसे हटाने के योग्य कर्ण के अस्त्रको पाकर सबदिशा-ओंको भागते हैं ११० हे अर्जुन कठिन क्रोधमें भरा चारोंओरको राजा और सृंजियों से घिराहुआ यह भीमसेन कर्ण से युद्धकर्त्ता

हुआ उसके तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे पीड़ामान होताहै १११ हे भरतवंशी बिचार न किया हुआ कर्ण पांडवस्रंजी और पांचालोंको ऐसे माररहाहै जैसेकि उत्पन्नहुआरोग शरीरकोमारडालताहै११२ मैं युधिष्ठिर की सेना भरेमें तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरबीरको नहीं देखताहूं जोकर्णके सन्मुखहोकर जीताहुआअपने घरकोआवे११३ हेनरोत्तम अर्जुन अब तुम अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञाके समान कर्मको करके कीर्त्तिको पावो ११४ हेशूर-बीरोंमें श्रेष्ठ तुमहीं युद्धमें कर्णसमेत कौरवोंके बिजय करने को स-मर्थ हो दूसरा कोई नहींहै यह तुझसे मैं सत्य२ कहताहूं ११५ हेनरोत्तम अर्जुन उस बड़े कर्मको करके और उस महारथी कर्णको मारकर सफल अस्त्र युक्त होकर प्रसन्नहो ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्जुनउपदेशेत्रिसप्ततितमोऽध्याय: ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले हेभरतबंशी केशवजी के बचन सुनकर वह अर्जुन एक क्षणमात्रमें ही शोकसे रहित होकर प्रसन्न हुआ १ इसके पीछे प्रत्यंचाको चढ़ाकर गांडीवधनुष को टंकारा और कर्णके मारनेमें चित्तको लगाकर केशवजीसेबोला २ हेगोविन्दजी तुझ नाथकेद्वारा मेरी अवश्य बिजय होगी अब सब भूतभबिष्य बर्त्तमान केउत्पन्न होनेवाले सबजीव मुझपर प्रसन्न होजावों हेकृष्णजीआपके संगहो-कर मैं सन्मुखआनेवालेतीनों लोकोंको भी परलोक मेंपहुंचा सक्ता हूं फिर इस बड़े युद्धमें कर्णको क्योंनहीं यमपुर पहुंचाऊंगा ३।४ हेजनार्द्दनजी पांचालोंकी सेनाको भगाहुआ देखताहूं और कर्णको युद्धमें निर्भयके समान देखताहूं ५ हे बार्ष्णेय श्रीकृष्णजी कर्ण-के छोड़े हुये सब प्रकारसे प्रकाशमान भार्गवास्त्र को ऐसे देखताहूं जैसेकि इन्द्रका छोड़ाहुआ अशनि होताहै ६ निश्चय करकेयहवह युद्धहै जिसमें मेरेहाथसे मारेहुये कर्णको सबसंसारकेलोग तबतक कहैंगे जबतक कि यह पृथ्वी रहैगी ७ हेश्रीकृष्णजी अब गांडीव-

धनुषसे छोड़े हुये मेरे हाथसे प्रेरित नाशकारी विकर्णनाम बाण कर्णको मृत्युके समीप पहुंचावेंगे८अबराजा धृतराष्ट्र अपनीबुद्धिकी निन्दाकरेगा और दुर्योधनको राज्यके अयोग्य जानेगा हे महाबाहो अब राजा धृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, देश, पुर और पुत्रोंसे पृथक् होगा ६ । १० हे श्रीकृष्णजी अब कर्णके मरनेपर दुर्योधन राज्यऔर जीवनसे निराशहोगा यह आपसे सत्यसत्यकहताहूं ११ अबराजा धृतराष्ट्र मेरेबाणोंसे कर्णको खंड खंडहुआ देखकर संधि सम्बन्धी आपके बचनोंको स्मरण करेगा १२ हे श्रीकृष्णजी अब यह बाणों के और गांडीवधनुष के दांवघात से मेरे रथको मंडलाकार जानो १३ हे गोविंदजी अब मैं तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको मारकर राजा युधिष्ठिरके कठिन जागरण को दूरकरूंगा १४ अबमेरे हाथसे कर्णके मरनेपर राजा युधिष्ठिर प्रसन्नचित्त होकर बहुतकालतक आनन्दोंको पावेगा १५ हेकेशवजी अब मैं ऐसे अजेय और अनुपम बाणोंको छोड़ूं गा जोकि कर्णको जीवनसे नष्टकरके गिरावेंगे १६ निश्चय करके जिस दुरात्माका यह ब्रतमेरे मारनेमेंहै कि जबतक अर्जुनको न मारलूंगा तबतक अपने चरणों को भी न धोऊंगा१७ हे मधुसूदनजी उस पापीके ब्रतको मिथ्या करके गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे उसको रथसे गिराऊंगा १८ जो यह पृथ्वीपर अपने समान दूसरेको नहीं मानताहै इसीसे इस सूतपुत्रके रुधिरकोपृथ्वी पान करेगी १६ हेकृष्णा तू विना पतिकीहै इस प्रकारसे अपनी प्रशंसा करतेहुये कर्णने जो धृतराष्ट्र के मतसे कहाहै उसको विषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण धारवाले मेरे बाण मिथ्या करकेउसके रुधिर को पियेंगे२०।२१मुझ हस्तलाघवी से छोड़े गांडीवधनुष से निकले हुये बिजलीके समान प्रकाशमान नाराच कर्णको परमगति देंगे२२ अब वह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पांडवोंके निन्दक कौरवों की सभामें कुत्सित बचनोंको कहाहै २३ निश्चय करके जो वहां मिथ्यावादी और हास्य करने वालेथे वह सबलोगभी अब इससूत पुत्रके मरनेपर शोकयुक्त होंगे अपनी प्रशंसा करने वाले कर्णने

धृतराष्ट्र के पुत्रोंसेजो यह बचन कहाहै किमैं तुमको पांडवोंसे बचाऊं गा२४।२५ उसकेउसबचनकोभीमेरे तीक्ष्णधारवालेबाण मिथ्याकरेंगे औरजिसने यहभी कहाहै किमैं बेटों समेत सब पांडवोंको मारूंगा। २६ उस कर्णको अब मैं सब धनुषधारियोंके देखते हुयेहीमारूंगा बड़े साहसी दुरात्मा २७ दुर्बुद्धी दुर्योधनने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमानकिया हे श्रीकृष्णजी अब कर्ण केमरनेपर भयभीत धृतराष्ट्रके पुत्र राजाओं समेत दिशाओंको ऐसे भागो जैसेकि सिंहसे भयभीत होकर मृगभागतेहैं २८ अबयुद्ध में मेरे हाथसे पुत्र मित्र आदि समेत कर्णके मरनेपर राजा दुर्योधन अपनेको शोचो २९ हे श्रीकृष्णजी अबअत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन कर्णको मृतकदेखकर ३० मुझको सब धनुषधारियों में श्रेष्ठजानेगा मैं राजाधृतराष्ट्र को पुत्र पौत्र सुहृद मंत्रीऔर सेवकोंसेनिराशकरके राज्यपर नियतकरूंगा हे केशवजी अब अनेक प्रकारके मांसभक्षी चक्रांगनामजीवमेरे बाणोंसेटूटेहुये कर्णके ३१। ३२ अंगोंको भक्षण करेंगे हे मधुसूदनजीअबमैं युद्धमें राधाकेबेटेकर्णके ३३शिरको सब धनुषधारियोंके देखतेहुयेही काटूंगा औरअब तीक्ष्णबिपाटक्षुरप्रनाम बाणोंसे ३४ दुरात्मा राधेयकेगात्रोंको रणमेंछेदूंगा तबराजायुधि-ष्ठिर बड़ेदुःखको त्यागकरेगा ३५ अर्थात् बड़ावीर युधिष्ठिर बहुत कालसे धारणकियेहुये अपनेचित्तके शोकको दूरकरेगा हे केशव अबमैं बांधवों समेत राधाकेपुत्रको मारकर ३६ धर्मपुत्र राजायुधि-ष्ठिर को अत्यन्त प्रसन्न करूंगा और कर्ण के दुःखी सब सहायकों को अग्निके समान प्रकाशमान सर्पके समान बाणों से मारकर सुवर्ण जटित गृध्रपक्षयुक्त सीधेचलनेवाले बाणोंसे ३७।३८ पृथ्वी को राजाओं समेत तरूंगा और अभिमन्युके सबशत्रुओंके ३९ अंग और शिरोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे मथन करूंगा और धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे रहित इसपृथ्वीको अपने बड़े भाईकोदूंगा ४० अथवा हे केशवजी आप अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर घूमोगे हे यदुनाथ अबमैं धनुषधारियोंका ४१ वा कौरवोंकेक्रोध वा गांडीवधनुष के बाणोंसे

अऋणहूंगा अबमैं तेरहबर्षके इकट्ठे कियेहुये दुःखोंको त्यागूंगा ४२ युद्धमेंकर्णको मारकर जैसे कि इन्द्रने संबर दैत्यको माराथा उसी प्रकार हे केशवजी अबयुद्धमें कर्णके मरनेपर युद्धमें अभीष्ट चाहने वाले मित्रसोमकोंके महारथीकारको प्राप्त हुआमानो हे माधवजी अबमेरी और सात्यकीकी कैसीप्रीति ४३। ४४ होगी और कर्णके मरने वा मेरीबिजय होनेपर कैसीप्रसन्नता होगी मैं युद्ध में उसके महारथी पुत्रसमेत कर्णको मारकर ४५ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकीको प्रसन्नकरूंगा हे माधवजी अब मैंयुद्ध में कर्णको मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पांचालोंकी अऋणताको पाऊं-गा ४६।४७ अब युद्धमें क्रोधयुक्त कौरवोंसे युद्धकरनेवाले और युद्ध में कर्णके मारनेवाले अर्जुनको देखो इसकेपीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सन्मुख करूंगा ४८ इसपृथ्वीपर धनुर्वेद विद्यामें आजमेरे समानकोई नहींहै और पराक्रममेंभी मेरेसमान कौन होसक्ताहै न मेरेसमानकोई क्षमावान्है और इसीप्रकार क्रोधमेंभी मेरेसमान मैं हींहूं ४६ मैं धनुषधारी अपने भुजाओंकेबलसे इकट्ठे होनेवालेदेव-ता असुर और मनुष्यों आदिजीवोंको पराजयकरसक्ताहूंमेरेपराक्रम और पुरुषार्थको अद्वितीयजानो ५० मैं अकेलाही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गांडीबधनुष से सब कौरव और बाह्लीकोंको बिजयकर के बड़े हठसे समूहों समेत इसरीतिसे भस्म करसक्ताहूं जैसेकिहिम ऋतुकेअन्तहोनेपर सूखेबनको अग्निभस्मकरदेताहै ५१ मेरेहाथमें पृषत्कनाम बाणबर्त्त मानहैं और अबयह धनुषभी बाणोंसमेत मं-डलाकारहै और मेरेदोनों चरणरथ और ध्वजासेयुक्त हैं ऐसीदशा में मुझ युद्धमें बर्त्तमानसे युद्धकरके कौनबिजय पासक्ताहै ५२ वह शत्रुओंका मारनेवाला रक्तनेत्र अद्वितीयबीर अर्जुन ऐसा कहकर भीमसेनके छुटानेका अभिलाषी और कर्णके शरीरसे उसकेशिरके काटनेका उत्सुक शीघ्रही युद्धभूमिमें गया ५३

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअर्जुनयुद्धोत्सुकेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

———※———

पञ्चत्तरवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हेतात इसकेपीछे युद्धके निमित्त अर्जुनके जानेपर वहां पांडव सृंजी औरमेरेशूरबीरोंका महाभयकारी कर्णके सन्मुखहोनेवालावह युद्धकैसा हुआ १ संजय बोले कि बड़ेध्वजाधारी बहुमूल्य सामानोंसे अलंकृत भेरीकेशब्दसे ऊंचामुख रखनेवाली सन्मुख आईहुई उनकीसेना ऐसीगर्जी कि जैसेबर्षाऋतुमें बादलोंके समूह गर्जनाकरतेहैं बड़ेहाथी रूप बादलोंसे व्याप्त अस्त्ररूपी जलसे पूर्ण बाजे वा रथ की नेमी और क्षुद्रघंटिकाओंसे शब्दायमान सुवर्णजटित अस्त्ररूप बिजली रखने वालावाण खड्ग नाराच आदि अस्त्रों की धारोंसे युक्त २।३ भयानक वेगवान् रुधिर प्रवाहसे बहनेवाला खड्गोंसे व्याकुल क्षत्रियों का मारनेवाला निर्दय और ऋतुके बिनाही अप्रियवर्षा का करनेवाला प्रजानाशक बादल उत्पन्नहुआ ४ फिर बहुत से मिले हुयेरथ उस अकेले रथीको घेरकर मृत्युके पास पहुंचातेथे उसी प्रकार एक उत्तमरथी एक २ अकेले रथी को और कोई २ अकेला रथीभी बहुतसे रथियोंको मारताथा ५ और किसी रथीने कितनेही सारथी घोड़ों समेत रथों को मृत्युबशकिया और कितनोहीने एक२ हाथी के द्वारा बहुत से रथ और घोड़ोंको मृत्यु के मुख में डाला ६ अर्जुन ने बाणोंके समूहों से सब शत्रुओं को घोड़े रथ और सारथियों समेत यमपुरको भेजा औरसवारों समेत घोड़े और पदातियों के समूहोंको भी मारा ७ कृपाचार्य्य औरशिखण्डी युद्धमें सन्मुख हुये सात्यकी दुर्य्योधनके सन्मुख गया श्रुत अश्वत्थामाके साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथमें युद्ध करने लगा ८ फिररथी संजय और उत्तमौजा कर्णकेपुत्र सुषेणके सन्मुख हुआ और सहदेव राजागांधारके सन्मुख ऐसेदौड़ा जैसे कि क्षुधासे पीड़ित सिंहबड़े बैलकी ओर दौड़ताहै नकुलके पुत्रशतानीकने कर्ण के पुत्रको सात्यकीने वृषसेन को बाणोंके समूहों से घायल किया और बड़े शूरबीर कर्णके पुत्रने बाणोंकी अतिवर्षासे पांचाल देशी

को घायलकिया ६। १० रथियोंमें श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुलने कृतबर्माको मोहितकिया और पांचाल देशियोंका राजा सेनापति धृष्टद्युम्नने सब सेनासमेत कर्णको घायल किया हे भरतबंशी दुश्शासन और भरतबंशियोंकी सेना और संसप्तकोंकी बुद्धिमान् सेना ने युद्धमें शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ असह्य बेगवाले भयकारी रूपवाले भीमसेनको मोहितकिया ११।१२ वहां इस प्रकारसे घायलशूरबीर उत्तमौजाने बड़े हठ करके कर्णके पुत्रको मारा और उसका शिर पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता पृथ्वीपर गिरपड़ा १३ तब पीड़ामान रूपकर्णने सुषेणके शिरको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देख करक्रोधयुक्तहो पृथ्वीपर उसकेघोड़ेरथ और ध्वजाको अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे काटा १४ फिर उस उत्तमौजाने भी अपनेप्रकाशितखड्ग से कर्णको पीड़ामान किया तदनन्तर वह कृपाचार्य्य के पीछे चलनेवालोंको मारकर शिखण्डीकेरथपर सवार हुआ १५ फिररथारूढ़ शिखण्डीने रथसे रहित कृपाचार्य्यको देखकर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामाने कृपाचार्य्यको चारों ओरसे आड़में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीचमें फंसीहुई गौको निकालतेहैं १६ वायुके पुत्र सुवर्णमयी कवच वाले भीमसेनने आपकेपुत्रोंकी सबसेनाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे ऐसे संतप्तकिया जैसे कि उष्णऋतुमें आकाशमें वर्त्तमान सूर्य्य सबको संतप्त करदेताहै १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धे पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसकेपीछे कठिन युद्धमें बहुतसे शत्रुओंसे घिरा हुआ अकेला भीमसेन उस युद्धमें अपने सारथीसे यह बचनबोला कि अब तुम दुर्य्योधनकी सेनामेंचलो १ हे सारथी तुम घोड़ोंकेद्वारा बड़ी शीघ्रतासे चलो मैं इन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको यमपुर पहुंचाऊंगा उसकी आज्ञापातेही वह बड़ा बेगवान् सारथी आपकेपुत्रकी

सेनामें भीमसेनकोले पहुंचा २ जिधरसे कि भीमसेनने उससेनामें जानाचाहा वहां दूसरे कौरव रथ हाथी घोड़े और पतियों समेत उसके सन्मुख गये ३ और चारों ओरसे भीमसेनके बड़े दृढ़रथको अपने बाणोंके समूहोंसे घायल किया तब भीमसेनने अपने सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे उन सबके छोड़ेहुये आतेहुये बाणोंको काटा ४ भीमसेनके बाणोंसे टूटेहुये वह सुनहरी पुंखवालेबाण दोदो चार २ खंड होकर गिरपड़े हेराजा इसके पीछे उत्तम २ राजाओंके मध्यमें भीमसेनके हाथसे मारेहुये हाथी घोड़े रथ और शूरलोगोंके ५ घोर शब्द ऐसे प्रकटहुये जैसे कि बज्रसे टूटे हुये पर्व्वतों के शब्द होते हैं भीमसेनके उत्तम बाणजालों से घायलहुये उत्तम२ राजाओंने ६ युद्धमें भीमसेनके ऊपर चारों ओरसे ऐसे चढ़ाई करी जैसे कि फूलके निमित्त पक्षीलोग वृक्षपर चढ़ाईकरते हैं इसकेपीछे आपकी सेनाके सन्मुखजानेपरउस अत्यन्त बेगवान् भीमसेननेअपने वेगको ऐसा प्रकटकिया७जैसेकि प्रलयकालमें सबके मारनेका अभिलाषी दण्डधारी जीवोंका नाशककाल जीवोंको मारताहै तब आपके सब शूरबीरयुद्धमें उसवेगवान्के वेगके सहनेको ऐसेसमर्थनहींहुये८जैसे किसमयपर सबके भक्षण करनेवाले कालके वेगको सबसृष्टिकेजीव नहींसहसक्तेहैं हेभरतबंशीइसके पीछे भरत बंशियोंकी सेना युद्धमें उस महात्मा भीमसेनके हाथसे भस्मीभूत ६ भयभीत और महा घायलहोकर चारोंदिशाओंमें ऐसेबिह्वलहोकरभागी जैसेकिवायुसे बादलोंके समूह पलायमान होतेहैं इसके पीछे बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथीसेफिरबोले१०हेसारथी तुम अपने औरदूसरों के शूरबीरोंके भिड़े और गिरतेहुये रथ और ध्वजाओंकोजानो मैं युद्धकरताहुआ कुछभीनहीं जानताहूं क्योंकिमैं भ्रांतिसेकहीं अपनी सेनाकोही पृथक्‌ नाम बाणोंसेनहीं छांडूं ११ हेबिशोक सबओरसे शत्रुओंको देखकर मेरारथ ध्वजाकी नोकको अधिक कंपायमान करताहै बिदित होताहै कि राजारोगमें ग्रसित होगयाहै जो अबतक अर्जुन नहींआया हेसूत मैंनेबड़े२कष्टोंको पायाहै हेसारथी यहबड़ा

दुःखहै जोधर्मराजमुझको शत्रुओंकेमध्यमें छोड़कर चलागया अबमें उस को वा अर्जुनको जीवतानहींजानताहूं मुझको यहीबड़ाकष्टहै १२।१३ सो मैं प्रसन्नचित्त उस बड़ी साहसी शत्रुओंकीसेनाको नाशकरूंगा इससे अब मैं युद्धभूमि में सन्मुख आनेवाली सेनाको मारकर तुझ समेत प्रसन्नहोऊंगा १४ हेसूत रथमें शायकोंके सब तूणीरोंको देख कर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो २ शायकबचेहैं वह किस२प्रकारके और संख्यामें कितने२ हैं १५ विशोकबोला हे बीर मार्गणनाम बाणोंकी संख्या तो साठहजारहै और क्षुर वा भल्लोंकी संख्या दशहजारहै और हे बीर पांडव नाराचोंकी संख्या दोहजारहै औरप्रवरनाम बाणोंकी संख्या तीनहजारहै १६ इतने शस्त्र बर्त्तमानहैं जिनको छः बैलोंसे युक्त छकड़ाभीनलेचले हे बुद्धिमान् शस्त्रोंको छोड़ो और हजारोंगदा खड्ग वा भुजारूपी धन आपकेपास बर्त्तमानहै १७ प्रास,मुद्गर, शक्ति, और तोमर भीहैं तुमशस्त्रोंकी न्यूनता और खर्चहोने का भयमतकरो १८ फिर भीमसेनके चलायेहुये राजाओं के छेदनेवाले बड़े वेगवान् बाणोंसे गुप्त होनेवाले युद्धमें घोररूप छिपीहुई सूर्य्यवाली संसारकी मृत्यु के समान इस युद्धभूमि को देखो १९ हे सूत अब राजाओं के बालकोंतकको भी यह मालूम होगा कि अकेला भीमसेनयुद्धमें डूब गया या उसने कौरवों को बिजय किया २० अब सब कौरवलोग मेरे ऊपर चढ़ाईकरो और वृद्धोंसे बालक पर्य्यन्त सब लोग मेरा यशबखानकरो मैं अकेलाही उन सबको मारूंगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करो २१ जो देवता कि मेरे उत्तम कर्मके उपदेश करनेवाले हैं वह सबकेवल मेरीइतनीसाधना करैं कि वहशत्रुओंकामारनेवाला अर्जुन मेरे ध्यानसे शीघ्रऐसे आजाय जैसे कि यज्ञमें बुलायाहुआ इन्द्रआताहै २२ भरतबंशियोंकी इससेनाको छिन्नभिन्नदेखो यहराजालोग किसहेतुसेभागतेहैंमुझे विदितहोताहै कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्जुनशीघ्रतासे इससेना को ढकता चलाआताहै २३ हेविशोक युद्धमें ध्वजाओंको और भागते

हुये हाथी घोड़े औरपत्तियोंके समूहोंको देखो हेसूत बाण औरशक्ती से घायल उनरथियोंको औरफैलेहुये रथोंको देखो २४ यह कौरवी सेनाभी महा घायल और वज्रके समान वेगयुक्त सुनहरीपर वाले अर्जुनके बाणोंसे बराबर गुप्त २५ यहरथघोड़े औरहाथी पदातियों के समूहोंको मर्दन करते हुयेभागतेहैं और सबकौरवलोगभी महा मोहितहुये ऐसे भागेजाते हैं जैसेकि वनदाहसे भयभीत होकर हाथी भागतेहैं २६ हेविशोकयुद्ध में हाहाकार करनेवाले गजराज बड़े२ भयानक शब्दोंको करतेहैं २७ विशोक बोला कि हेभीमसेन क्रोधयुद्ध अर्जुनके हाथसे खैंचेहुये गांडीव धनुषके घोरशब्दों को क्या आपनहीं सुनतेहो क्या आपके दोनों कर्णोंमें बधिरताता नहीं आगई २८ हे पाण्डव अब आपके सब मनोरथ वृद्धिमुक्त हैं यह बानर हनुमान्‌जी हाथियोंकी सेनामें दिखाई देते हैं और धनुषकी प्रत्यंचाको ऐसे चेष्टाकरती देखो जैसे कि नीले बादल से निकल-तीहुई प्रकाशमान बिजली चमकतीहै २९ यह बानर अर्जुन की ध्वजाके नोक पर चढ़ाहुआ शत्रुओंके समूहों को भयभीत करता हुआ सब ओरसेदीखताहै मैं आप उसको युद्धमें देखकर भयभीत होताहूं ३० और यह अर्जुन का बिचित्र मुकुटभी अत्यन्त शोभादे रहाहै ३१ उसकेपार्श्वमें महाभयानकश्वेत बादलकेरूप महाशब्दा यमान देवदत्तनाम शंखको देखो और हे बीर बागडोर हाथमें लिये ३२उन श्रीकृष्णजीके पार्श्ववर्त्ती सूर्य्यके समानप्रकाशमान वज्रनाभ चारों ओर क्षुराओं से जटितबड़े यशके बढ़ानेवाले सदैव यादवोंसे पूजित केशवजीके चक्रकोदेखो ३३सीधेवृक्षोंके समान बड़े२ हाथियों की यहशूंड़ें क्षुरोंसेकटीहुईपृथ्वीपर गिरतीहैं और उसअर्जुनके हाथ के बाणोंसेसवारों समेत हाथी ऐसेमारेगये जैसे कि वज्रोंसेपर्व्वत चूर्णकियेजातेहैं ३४ इसीप्रकार श्रीकृष्णजीके उसमहाउत्तमचन्द्रमा के समानवर्णवाले बड़ोंकेयोग्य पांचजन्य शंखको देखो औरहृदयमें शोभायमान कौस्तुभमणि और बैजयन्तीमालाकोभी देखो३५ निश्चय-यकरकेरथियोंमेंश्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओंकी सेनाको भगाता श्वेतबादलों

के रंग श्रीकृष्णजीसे युक्त बड़ोंके योग्य घोड़ोंकेद्वारा सन्मुखआता है ३६ देवराज के समान तेजस्वी आप के छोटे भाई के शायकों से फटेहुये रथघोड़े और पत्तियोंके समूहोंको देखो कि यह ऐसेगिर रहे हैं जैसे कि गरुड़जीके परोंकी वायुसे महावन गिरतेहैं ३७ युद्धमें अर्जुनके हाथसे घोड़े और सारथियों समेत मारेहुये इनचार सौ रथोंको देखो और बड़े बाणोंसे मरेहुये इनसातसौ हाथी पदाती अश्वसवार और अनेक रथियोंको देखो ३८ यह महाबली अर्जुन कौरवोंको मारताहुआ तेरे समक्षमें ऐसे आताहै जैसेकि बड़ा चित्र-ग्रह आता है तुम अभीष्टसिद्धहो आपके सब शत्रु मारे गये आप का बल पराक्रम और आयुर्दा चिरकाल पर्य्यन्त वृद्धिको पावे ३६ भीमसेन बोले हे विशोक सारथी मैं अत्यन्त प्रसन्नहोकर तुझको चौदह गांव सौ दासी और बीसरथ देताहूं जो अर्जुनके विषयकी प्रसन्नता वाली बातें मुझसे कहताहै ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिभीमसेनविशोकसंवादेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि युद्धमें सिंहनाद और रथके शब्द को सुनकर अर्जुन गोविंद जीसे बोला कि हे गोविन्दजी शीघ्रही आप घोड़ों को हांकिये १ गोविन्दजी अर्जुनके बचनको सुनकर कहनेलगे कि अबमैं वहीं पर शीघ्र पहुंचाताहूं जहांपर कि भीमसेन नियतहै २ तुषार और शंखके रंगवाले सुवर्ण मोती और मणिजटित जालोंसे अलंकृत घोड़ोंके द्वारा जंभके मारनेके इच्छावान् वज्रधारी क्रोध युक्त इन्द्र जैसे जाता है उसीप्रकार जानेवाले उस अर्जुन को ३ रथ घोड़े हाथी पदातियोंके समूह और बाण नेमी वा घोड़ोंकेशब्दों से पृथ्वी और दिशाओंको शब्दायमान करतेहुये क्रोधरूप नरोत्तम ने सन्मुख पाया ४ हेश्रेष्ठ उन्होंका और अर्जुनका युद्ध शरीर और प्राणोंके पापोंका हरनेवाला ऐसाहुआ जैसे कि त्रिलोकीके निमित्त महाबिजयी विष्णुजी और असुरों का हुआ था ५ अकेले अर्जुनने

उन्होंके चलायेहुयेसब छोटेबड़े शस्त्रोंको काटकर क्षुरअर्द्धचंद्र और तीक्ष्ण भल्लों से उनके शिर और भुजाओं को अनेक प्रकार से काटा ६ चित्र विचित्रवाले व्यजन ध्वजा घोड़े रथ हाथी और पत्तियोंके समूहोंको भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकारके रूपांतर होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि बायुके वेगसे बन गिरपड़ते हैं ७ फिरसुनहरी जालयुक्त बैजयंती ध्वजाओं समेत शूरबीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुंखबाणोंसे चित्रित प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमान हुये ८ अर्जुन इन्द्रके बज्रकी समान उत्तम बाणोंसे हाथी घोड़े और रथोंको मारकर कर्णके मारनेकी इच्छासे इसरीतिसे शीघ्रचला जैसे कि पूर्वसमयमें राजाबलिके मारने में इन्द्र चलाथा ६ हे शत्रुसंहारी उसके पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आपहुंचा जैसेकि समुद्रमें मगर घुसआताहै १० हे राजा रथ और पत्तियोंसे संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े प्रसन्नचित्त आपके शूरबीर इसपांडवके सन्मुख गये अर्जुनकी ओर दौड़नेवाले उनलोगोंके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसेकि अपनी उन्मत्ततामें आनेवाले समुद्रके शब्द होतेहैं ११।१२ फिरव्याघ्रोंके समान वह सबमहारथी युद्धमें अपनेप्राणोंकी आशाको त्यागकर उसपुरुषोत्तम के सन्मुखगये वहां अर्जुनने उनबाणोंकी बर्षा करतेहुये आनेवाले शूरबीरोंकी सेनाका ऐसा छिन्नभिन्नकरदिया जैसेकि बड़ाबायुबादलोंको तिर्रबिर्र करदेताहै १३।१४उन प्रहार करनेवाले बड़े धनुषधारियोंनेरथसमूहोंसमेत उसके सन्मुखजाकर तीक्ष्णबाणोंसे अर्जुनको घायलकिया १५ इसके पीछे अर्जुनने बिशिखोंसे हजारोंरथ हाथी और घोड़ोंको यमलोकमेंभेजा१६ युद्धमेंअर्जुनके धनुषके निकलेहुये बाणोंसे घायल वह महारथी भयके उत्पन्नहोनेपर जहांतहां छिप गये१७अर्जुनने उनके मध्यमें उपाय करनेवाले चारसौ बड़े२महारथी शूरबीरोंको बाणोंकेद्वारा यमलोकमें पहुंचाया १८नानाप्रकार के रूपवालेयुद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे घायलहोकर वह शूरबीर अर्जुनके सन्मुखजाकर दशोंदिशाओंको भागे १९ युद्धमेंसे भागनेवाले उन

लोगोंके ऐसे महाशब्दहुये जैसे कि पर्व्वतको पाकर फटनेवाले बड़े नदीके प्रवाहकेशब्द होते हैं २० हे श्रेष्ठ फिर अर्जुन बाणोंसे उस सेनाको खूबछेदकर औरभगाकरकर्णके सन्मुखगया २१ वहां उस शत्रुजेता अर्जुनका ऐसामहाशब्दहुआ जैसेकि पूर्व्वसमयमें सर्पके खानेको आनेवाले गरुड़काशब्दहोताहै२२ अर्जुनके देखनेका अभिलाषी महाबली भीमसेन उसअर्जुनके शब्दको सुनकर बहुतप्रसन्न हुआ २३ हे महाराज उसप्रतापवान् भीमसेन ने आते हुये अर्जुन को सुनकर अपने प्राणोंकी आशा छोड़कर आपकी सेनाका मर्द्दन किया २४ पराक्रममें बायुकेसमान शीघ्रचलनेमें बायुकी तीव्रताके सदृश बायुकापुत्र प्रतापी भीमसेन बायुकेसमान घूमनेलगा २५ हे महाराज राजाधृतराष्ट्र उससेघायल और पीड़ितहोकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसे कि टूटीहुई नौका सागरमें गिरतीहैं २६ फिर अपनी हस्तलाघवताको दिखाते सबको यमलोकमेंपहुंचातेहुये उसभीमसेनने बारंबार उग्रबाणों की बर्षाकरकेउस सेनाको काटा २७ हे भरतबंशी उसयुद्धमें महाबली भीमसेनके अद्भुतआश्चर्य्यकारी पराक्रमको देखकर सबलोग ऐसे चक्कर मारनेलगे जैसे कि प्रलयकालमें कालके पराक्रमको देखकर सब भयभीतहोकर फिरतेहैं २८ हे भरतबंशी इसप्रकार भीमसेनके हाथसे पीड़ामान भयानक पराक्रमवाले बड़े २ शूरबीरोंको देखकर राजा दुर्य्योधन इसबचनको बोला २९ कि हे महाबली शूरबीरलोगो तुमभीमसेन को मारो ३० इसीभीमसेनके मरनेपर मैं सबपांडवोंकी सेनाकोभी मृतकरूपही मानताहूं तबतो सबराजाओं ने आपके बेटेकीआज्ञा को अंगीकार किया ३१ और भीमसेन को चारोंओर से बाणों की बर्षासे आच्छादित करदिया हेराजाबहुतसेहाथी घोड़े और बिजयाभिलाषी रथारूढ़ मनुष्योंने ३२ भीमसेनको घेरलिया तबउनशूरों से चारोंओरको घिराहुआ वह पराक्रमीभीमसेन ३३ महाशोभायमानहुआ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ जैसे कि नक्षत्रोंमें शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासीके दिन अपने मंडलसे युक्तहोकर शोभितहोताहै ३४

उसीप्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्धमें शोभायमान हुआ हेमहाराज जैसाअर्जुनहै वैसाही यहभीहै इसमें भेदनहींहै ३५ क्रोधसेरक्तनेत्र भीमसेनके मारनेके उत्सुक उनसब शूरवीर राजाओं ने बाणोंकी बर्षा उसकेऊपरकरी ३६ भीमसेनटेढ़े पर्ववालेबाणोंसे उस बड़ी सेनाको चीरकर युद्धभूमिसे ऐसेनिकलगया जैसे कि जल कीमछली जलकेजालमेंसेनिकलजातीहैं ३७।३८ हेभरतबंशीभीमसेननेमुखनमोड़ने वाले दशहजार हाथी दोलाख दोसौ मनुष्य पांच हजारघोड़े और सौ रथियों को मारकर रुधिर केप्रवाह वाली नदी कोजारी किया ३६ जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथी रूप ग्राहोंसे भयानक मनुष्य रूप मछली घोड़ेरूपनक्र और बाल रूप शैवल और साड़बल थे ४० और बहुत रत्नोंकी हरने वाली सूंड़कटे हाथियों से व्याप्त जंघारूप ग्राहों से भयानक मज्जा रूपी पंक और शिररूप पत्थरोंसे संयुक्त थी ४१ धनुष, चावक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसोंसे युक्त और उष्णीष अर्थात पगड़ी रूप झाग वाली ४२ हाररूपी कमलों के बन रखनेवाली और पृथ्वी की धूली रूप तरंगोंकी रखने वाली युद्धमें उत्तम पुरुषों के चलन रखने वाले पुरुषोंसे सुगमतासे पार होनेके योग्य भयभीतोंको दुर्गम ४३ शूरबीर रूप ग्राहोंसे पूर्ण युद्धमें पितृलोक की ओरको बहने वाली थी ऐसी उग्र अद्भुत नदीको इस पुरुषोत्तम भीमसेननेएकक्षण मात्रहीमें जारी करदिया ४४ जैसेकि अशुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुषोंसे महा दुस्तर रूप बैतरणी कहातीहै उसीप्रकार इसको भी महाघोर दुःख और भयकी करनेवाली कहा ४५ वह रथियोंमें श्रेष्ठ पांडव जिस २ ओर होकर निकलाउस २ ओरके लाखों ही शूरबीरों को मारा ४६ हेमहाराज इस रीतिसे युद्धमें भीमसेनके कियेहुये कर्मको देखकर दुर्य्योधन शकुनी से यह बचन बोला ४७ कि हे मामाजी इसबड़े पराक्रमी भीमसेनको युद्धमें तुम बिजयकरो इसके बिजय होजानेपरमैं सब पांडवी सेनाको बिजय किया हुआ ही मानताहूं ४८ हे महाराज इसके अनन्तर भाइयों समेत बड़े

भारी युद्ध करने को उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला ४९ उस बीरने युद्ध में भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उसको ऐसे रोकाजैसेकि समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोकलेतीहै ५० तीक्ष्णबाणों से रोका हुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनीने उसके हाथऔर छाती पर ५१ सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार नाराचों को चलाया फिर वह कंकपक्षसे जटित घोर बाण महात्मा पांडव भीमसेनकेकवच को काटकर ५२ शरीर में घुसगये फिर युद्धमें अत्यन्त घायल उस भीमसेनने क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण जटित बाणको ५३ शकुनीके ऊपर चलाया हेराजा शत्रुसंतापी हस्तलाघवी महाबली शकुनी ने उस आते हुये घोरबाण को सात खण्डकर दिया ५४ हे राजा उस बाणके पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हंसते हुये भीमसेनने भल्ल से शकुनीके धनुष को काटा फिर प्रतापवान् शकुनी ने उस धनुषको डालकर ५५।५६ बेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लोंमें से दो भल्लोंसे उसके सारथीको और सात भल्लोंसे भीमसेन को घायल किया फिर एक से ध्वजा को और दो भल्लोंसे छत्रको काटकर ५७।५८ सौबल के पुत्र शकुनी ने चार बाणोंसे चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने युद्धमेंसुनहरी दंडवाली शक्तिको फेंका ५९ भीमसेनकी भुजासे छोड़ी हुई वह सर्पकी जिह्वा के समान चंचल शक्ति युद्ध में शीघ्रही महात्मा शकुनी के ऊपरगिरी ६० इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर ६१ भीमसेन के ऊपरफेंकातब वहमहात्मा पांडवकी बाम भुजा को छेदकर पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ी ६२ जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है इसकेपीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारोंओर से बड़ाशब्द किया ६३ फिरउन बीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़ेभारी अलंकृत धनुष को लेकर६४ अपने जीवनकी आशाको त्यागकरके युद्धमें एकमुहूर्त्त में ही शकुनी की सेना को शायकों से ढकदिया ६५ हेराजा फिर शीघ्रता करने वाले पराक्रमी भीमसेनने उसको चारों घोड़ोंसमेत

सारथीको मारकर भल्लसे उसकी ध्वजाकोभी काटा ६६ फिर यह नरोत्तम भी शीघ्रता करके मृतक घोड़ोंके रथको त्यागकर धनुषको टंकार क्रोधसे लालनेत्र करके सन्मुख नियतहुआ ६७ और भीमसेनको चारों ओरसे बाणोंकेद्वारा मोहितकिया फिर अत्यन्तप्रतापवान् भीमसेनने बड़े बेगसे उनको निष्फल करके ६८ धनुषकोकाटकर तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे महा पीड़ित किया पराक्रमी शत्रुसे अत्यन्त घायल हुआ वह शत्रुबिजयी शकुनी ६९ कुछ प्राणशेष होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हेराजा इसके पीछेसे आपका पुत्र उस को अचेतजानकर७० भीमसेनके देखतेहुये युद्धभूमिसे रथकी सवारीमें बैठाकर हटा लेगया फिर उसनरोत्तम के रथपर सवार होने और भीमसेनको बड़ा भय उत्पन्न होनेपर और धनुषधारी भीमसेनके हाथसे शकुनीके विजय होनेपर धृतराष्ट्र के पुत्र मुखमोड़ मोड़ कर भयभीत होकर दशों दिशाओंको भागे ७१ । ७२ बड़ेभय से पूर्ण अपने मामाका चाहने वाला आपका पुत्र दुर्योधन शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा हटगया ७३ हे भरतबंशी सेनाके सबलोग राजाको मुखफेरकर हटाहुआ देखकरचारोंओरसे द्वैरथियोंको छोड़ कर भागे ७४ तब भीमसेनउन घायलभयभीत मुख मोड़करभागने वाले धृतराष्ट्र केपुत्रोंको देखकरसैकड़ों बाणों की बर्षाकरताहुआ बेगसे उन सबके सन्मुख दौड़ा७५ हेराजा भीमसेनके हाथसेघायल चारों ओरसे मुखमोड़ने वाले वह धृतराष्ट्रके पुत्र कर्णको पाकर युद्धमें नियत हुये ७६ वह बड़ा पराक्रमी बलवान् कर्ण उनकाऐसे रक्षकहुआ जैसेकि टूटी हुई नौकाटापूको पाकर नियत होजाती है ७७ हे पुरुषोत्तम समयके लौटपौट होनेपर जैसी दशावाली पतवार होतीहै वैसेही आपके शूरबीर लोगभी पुरुषोत्तम कर्ण को पाकर उसी दशावाले हुये ७८ हेराजा वह परस्परमें बिश्वास युक्त अत्यन्त प्रसन्ननियतहुये और मृत्युको हथेली पर रखकर युद्धके निमित्त गये ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभीमसेनयुद्धे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तबयुद्धमें भीमसेनके हाथसे सेनाके पराजयहोनेपर दुर्य्योधनने वा शकुनीने क्याकहा १ बिजय करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण वा मेरे शूरबीर कृपाचार्य्य कृतबर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इनसबने युद्धमें क्याक्या कहा २ मैं पांडव भीमसेन के पराक्रमको अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व्व मानताहूं कि उसअकेलेनेही युद्धमें मेरे सब शूरबीरोंसे युद्धकिया ३ और राधाकेपुत्र शत्रुहन्ता कर्णनेअपनीप्रतिज्ञाके अनुसारसबशूर बीरोंसमेत कौरवोंको कल्याण रक्षास्थिरता वा जीवन की आशा को नियत किया ४ हे संजय बड़तेजस्वी भीमसेनके हाथ से छिन्नभिन्न होजानेवाली उससेना को देखकर ५ अधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़े महारथी राजाओंनेयुद्धमें क्या २ कियायह सबमुझसे कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधानहो ६ संजयबोले हेमहाराज प्रतापवान् कर्णने तीसरेपाशमें भीमसेनके देखतेहुये सबसोमकोंकोमारा७ और भीमसेननेभी दुर्य्योधनकी बड़ीपराक्रमी सेनाको सबके देखते हुयेमारा इसकेपीछे कर्णनेशल्यसेकहाकिमुझकोपांचालोंकेसमीपपहुंचाओ ८ अर्थात् बुद्धिमान् पराक्रमी भीमसेन के हाथ से सेना को भागा हुआ देखकर कर्णने अपने सारथी शल्यसे कहाकि मुझको पांचालों के सन्मुखलेचलो ९ इसकेपीछे बड़े बलवान् मद्रदेशकेराजाशल्यने बड़े शीघ्रगामी श्वेतघोड़ोंको चंदेरी पांचाल और कारुष्य देशियों के सन्मुख पहुंचाया १० शत्रुकी सेनाके मर्द्दन करनेवाले शल्यने उस बड़ी सेनामें प्रवेश करके घोड़ों को वहां २ पर चलाया जहां २ उस सेनापति कर्णने चाहाथा ११ हेराजापांडव और पांचालउसबादल के रूप व्याघ्रचर्मसे मढ़ेहुये रथकोदेखकर भयभीतहुये १२ इसके अनन्तर उसबड़े युद्धमें उसरथका शब्दबादल के गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटतेहुये पर्व्वतका शब्दहोताहै १३ इस के पीछेकर्ण ने कानतक खैंचेहुये धनुषके छोड़ेहुये बाणसमूहों से

पांडवीसेनाके हजारों मनुष्योंकोमारा १४पांडवोंके महारथीबड़े २ धनुषधारियोंने युद्ध में ऐसेकर्म करनेवाले उस अजेय कर्णको घेर लिया १५ शिखंडी भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेवद्रौपदीके पुत्र और सात्विकी १६ बाणोंकी वर्षासे कर्णके मारने के अभिलाषीइन सब शूरबीरोंने जबकर्ण को घेरलिया तब नरोत्तम शूर सात्विकीने तीक्ष्णधार वाले बीसबाणों से कर्णको युद्धमें जत्रुस्थान पर घायल किया१७।१८शिखंडीने पच्चीसबाणोंसे धृष्टद्युम्नने सातबाणोंसेद्रौपदी के पुत्रोंने चौंसठ बाणोंसे सहदेवने सातबाणोंसे नकुलने सौबाणोंसे उसकर्णको पीड़ामानकिया१९ और बड़ेपराक्रमीक्रोधयुक्तभीमसेनने युद्धमें टेढ़ेपर्व्ववाले नब्बे बाणोंसे कर्णको जत्रुआदि अंगोंपर पीड़ित किया २० इसके पीछे बड़े बली कर्णने बहुत हंसकर अपने धनुष को टंकारकर बाणोंको छोड़ा २१ हे भरतर्षभ कर्णने उन सबको पांच २ बाणोंसे व्यथितकिया २२ और सात्विकीके धनुष ध्वजाको काटकर नौबाणों से उसको छातीपर घायल किया फिरउसक्रोध-युक्तने तीनसौ बाणोंसे भीमसेनको पीड़ामानकिया २३ और भल्लसे सहदेवकी ध्वजाकोकाटउस शत्रुसंतापीने तीनबाणोंसेउसकेसारथी को मारा २४ और एकपलमात्रमेंही द्रौपदीके पुत्रोंको बिरथ कर दिया यहबड़ा आश्चर्य्यसा हुआ २५ टेढ़ेपर्व्ववाले बाणोंसे उनसब कार्मुकमोड़कर पांचाल और चंदेरीदेशके बड़े २ महारथी शूरबीरों को मारा२६हेराजा युद्धमें घायल उनचंदेरी देशियोंने अकेलेकर्णके सन्मुख जाकर उसको बाणोंके समूहों से घायल किया २७हेमहा-राज जोअकेले प्रतापी कर्णने युद्धमेंबड़ी सामर्थ्यसे उपायकरनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्त्ता पांडवोंको बाणोंसे रोका वहां महात्माकर्ण की हस्तलाघवता से २८।२९ सिद्धचरणों समेत सबदेवता प्रसन्न हुये और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्रके पुत्रोंने उसमहारथियोंमेंश्रेष्ठनरो-त्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्णकी प्रशंसाकरी हेमहाराजइसके पीछेकर्णने शत्रुओंकी सेनाका ऐसा नाशकर दिया ३०।३१ जैसेकि ऊष्म ऋतुमें बड़ावृद्धिमान प्रचंडअग्नि बनको जलाताहै उसप्रचंड

अग्निके समान कर्णसे घायल हुये वह सब पांडव महारथी कर्ण को देखकर इधरउधर भयभीत होकरभागे ३२।३३ वहां उसबड़े युद्धमें कर्णके उत्तम धनुषसे निकले हुये तीक्ष्ण शायकों से घायल पांचाल लोगोंके बड़े भारी शब्दहुये उनशब्दोंसे पांडवोंकी बड़ीसेना अत्यन्त भयभीतहुई ३४।३५ वहांशत्रुओंके मनुष्योंने युद्धमें अकेले कर्णकोही शूरबीर युद्धकर्त्तामानातब शत्रुओंके पीड़ाकरनेवाले कर्णने फिरभी अद्भुत कर्मकिया कि ३६ कोईपांडव उसकी ओर देखने को भी समर्थ नहींहुआ जैसे कि जलका प्रवाह उत्तम पर्व्वतको पाकर रुकजाताहै ३७ उसी प्रकार वह पांडवी सेना कर्णको पाकर छिन्न भिन्न होगई हेराजा युद्धमें महाबाहु कर्णभी निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशमानथा ३८ पांडवोंकी बड़ीसेनाको भस्मकरताहुआ नियत हो-कर उसशूरबीरने युद्धकरनेवाले बीरोंके कुंडलधारण कियेहुये ३९ शिरोंको और भुजाओंको बड़ीतीव्रतासे अपनेबाणोंकेद्वारा काट डा-ला हे राजा युद्धव्रतधारी कर्णने हाथीदांतके कब्जा रखनेवाले ख-ड्गध्वजा और शक्तियोंको घोड़ेहाथी ४० वा अनेक प्रकारके रथ पताका व्यजन अक्षयुग योक्त और बहुतरूपके चक्रोंको ४१ बहुत प्रकारोंसे काटा हेभरतवंशी वहां कर्णके हाथसेमारेहुये हाथीघोड़ों के कारणसे ४२ वहपृथ्वीरुधिरमांसकी पंकवाली होकरमहाअगम्य होगई मृतक घोड़े पदातीरथ और हाथियोंके हेतुसे पृथ्वीकी समता और असमतानहीं जानीगई अपने और दूसरोंके शूरबीरभीपरस्पर में नहींजानेगये ४३।४४ हे महाराज कर्णकेअस्त्र और बाणों से घोरअंधकार होजानेपर उसके धनुषसे छूटेहुये सुवर्णजटित बाणों से ४५ पांडवोंके महारथी ढकगये और वहसब कर्णसे लड़नेवाले पांडवोंके महारथी बारंबार कर्णसे पराजितहुये और जैसे कि बनमें मृगोंके समूहोंको सिंहभगाताहै ४६।४७ उसी प्रकार पांचालोंके उत्तमरथी और शत्रुओंके मनुष्योंको भगाते और युद्धमें शूरबीरोंको डरातेहुए यशस्वी कर्णने ४८ उससेनाको ऐसे भगाया जैसे कि भे-ड़िया पशुओंके समूहोंको भगाताहै फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के

पुत्र पांडवी सेनाको मुख मुड़ाहुआ देखकर ४९ भयानक शब्दोंको करतेहुये वहां आये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्य्योधनने ५० अनेकप्रकारके सब बाजोंको बजवाया वहांपर पराजितहुये नरोत्तम पांचाल देशीभी ५१ शरीरकी आशा छोड़कर शूरों के समान लौटे हे महाराज फिर कर्णने उनलौटेहुये शूरबीरोंको ५२ बहुतप्रकारसे पराजयकिया उसयुद्ध में क्रोधयुक्त कर्णके बाणोंसे पांचालों के बीस रथी ५३ और सैकड़ों चंदेरीकेबासी मारेगये फिर वह शत्रुसंतापी कर्णरथोंको रथकीबैठक और उत्तमघोड़ोंसे रहितकरके ५४ हाथियों के कन्धोंको सवारों से रहितकर पदातियों को भगाताम‍ध्याह्न के सूर्य्यकेसमान कठिनतासे दर्शनकेयोग्य ५५ मृत्यु वा कालकेसमान शरीरकोधारणकिये शोभायमानहुआ हेमहाराज इसरीतिसे शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्णमनुष्य घोड़ेरथ और हाथियोंकोमारकर ऐसेनियतहुआ जैसे कि बड़ापराक्रमीकाल जीवों के समूहोंको मारकर नियतहोताहै ५६।५७ इसीप्रकार वह अकेला महारथी सोमकोंको मारकरनियतहुआ वहांपरहमने पांचालोंके अद्भुत पराक्रमको देखा ५८ कि सेनामुखपर घायलहोने वालोंनेभी कर्णसेमुख न मोड़कर सन्मुखताकरी राजादुर्य्योधन दुश्शासन वा शार्दूल कृपाचार्य्य ५६ अश्वत्थामा कृतबर्मा औरमहाबली शकुनीने पांडवोंकेहजारों मनुष्योंकोमारा ६० हे राजेन्द्र फिर सत्यपराक्रमी औरक्रोधयुक्तदोनोंभाई कर्णकेपुत्रोंने इधरउधरसे पांडवोंकी सेनाको मारा ६१ वहांबड़ाभारी नाशकारी घोरयुद्धहुआ इसीप्रकारशूरबीर पांडव, धृष्टद्युम्न ६२ और अत्यन्तरोषभरे द्रौपदीकेपुत्रोंने आपकी सेनाकोमारा इसप्रकारसे जहांतहांस्थानोंमेंपांडवीसेनाकाबहुतनाश हुआ ६३ औरयुद्धमेंबड़ेपराक्रमी भीमसेनकोपाकर आपकेभीशूरोंका नाशहुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

संजयबोलेकि हे महाराज फिर अर्जुनने चारोंप्रकारकी सेनाको मारकेयुद्ध में महाक्रोधरूप कर्णको देखकर १ पृथ्वीको मांसरुधिर मज्जाहाड़से व्याप्तकर नदीकेरूपबनाया जिसमेंरुधिरजल वा मांस मज्जा हाड़रूपकीच और मनुष्योंके शिररूपपत्थर और हाथी और घोड़ेरूप किनारे २ शूरबीरोंके अस्थिसमूहोंसे पूर्णकाक और गिद्धों सेशब्दायमान छत्ररूपधनुष और नौकासेयुक्तबीररूपवृक्षोंकी बहाने वाली ३ धाररूपकमलनी वा हस्तग्राणरूपउत्तम फनोंकोरखनेवाली धनुषबाण औरध्वजासे संयुक्त मनुष्योंके घुटेहुये कपालों सेव्याप्त ४ ढालवाकवच रूप भ्रमणोंसेयुक्त रथरूप नौकासे व्याकुल बिजया-भिलाषी शूरबीर लोगोंको सुखपूर्व्वक तरने के योग्य और भयभीतों को अत्यन्त अगम्य ५ ऐसीनदीकोजारीकरके फिरशत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले अर्जुनने बासुदेवजीसे यह बचनकहा ६ किहे श्रीकृ-ष्णजी युद्ध में यहकर्णकी ध्वजा दिखाई देती है और यह भीमसेन आदिमहारथी कर्णसे लड़रहेहैं ७ हेजनार्द्दनजी कर्णसेभयभीत हो होकर यहपांचाललोगभागतेहैं और श्वेतछत्रधारीयहराजा दुर्य्यो-धन ८ कर्णसेपराजितहुये पांचालोंको भगाताहुआ बड़ा शोभितहो रहाहै महारथी अश्वत्थामा,कृतबर्मा, कृपाचार्य्य ९ यहसबभीकर्ण से रक्षितहोकर राजाकी रक्षाकरतेहैं वह हमसबसे अबध्य सोमकों को मारेंगे १० और हेश्रीकृष्णजी रथवानोंमें कुशल यहशल्यरथके ऊपर बैठाहुआ कर्णकेरथको अत्यन्त शोभितकररहाहै ११ वहां मैं चाहताहूंकि आपमेरेरथको लेचलो मैं युद्धमेंकर्णकोमारेबिना किसी प्रकारसेनहीं लौटूंगा १२ हेजनार्द्दनजी दूसरीदशामें यहकर्णहमारे देखतेहुये महारथीपांडव और सृंजियोंकानाशकरेगा १३ इसकेपीछे केशवजी अर्जुन समेत रथकी सवारीके द्वारा शीघ्रही द्वैरथयुद्ध में बड़ेधनुषधारी कर्ण और आपकी सेनाके सन्मुख गये १४ महा बाहु श्रीकृष्णजी अर्जुनके कहनेसे सबपांडवी सेनाको रथपरसेही

विश्वासयुक्त करतेहुयेचले १५ उसशुभकारी युद्धमें अर्जुनके रथका शब्दऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र बज्रके समान बड़े जल के बेगका शब्दहोताहै १६ सत्यपराक्रमी महासाहसी पांडवअर्जुन रथके बड़े शब्दसमेत आपकी सेनाको विजय करता हुआ सन्मुख गया १७ मद्रका राजाशल्य श्वेत घोड़ों समेत श्रीकृष्णजी के साथ आते हुये अर्जुनको और उस महात्माकी ध्वजाको देखकर कर्णसे बोला १८ हेकर्ण श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण को सारथी रखने वाला यह वैरथ जिसको कि तुम पूछतेहो युद्धमें सबको मारता हुआ आताहै १९ यह अर्जुन गांडीव धनुषको लियेहुये वर्त्तमानहै जो तू इसको मारेगा तब हमाराकल्याण होगा २० हेराधाके पुत्रकर्ण यहअकेला भरतबंशी अर्जुन उत्तम रथियोंको मारता हुआ तुमको चाहता चला आता है अब तुम इसके सन्मुख जाओ २१ देखो यह दुर्य्योधन की सेना शीघ्रतासे शत्रुओंके मारनेवालेअर्जुनकेभयसेचारोंओरअलग२ हुई जातीहै २२ अर्जुन सबसेनाओंको छोड़ताहुआ तेरेही निमित्त शीघ्रता करताहै मैं यह मानता और जानताहूं और उसके शरीरसे भी विदित होताहै २३ वह अर्जुन तेरेसिवाय किसीकेसाथ युद्धकरनेका अभिलाषीहोकर स्थिरनहीं होताहै जोकि भीमसेनके पीड़ित होनेसे क्रोधमें भराहुआहै २४ अत्यन्त घायल और बिरथ धर्मराजको वा शिखण्डी सात्विकी धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पुत्र युधामन्यु, उत्तमौजा और नकुल सहदेव इनदोनों बीर भाइयोंकोघायल देखकरशत्रुओंका तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरेसन्मुखआता है वह क्रोधसे रक्तनेत्र रोषमेंभरा सब राजाओंकेमारनेका अभिलाषी शीघ्रतासे सेनाओंको त्यागताहुआ निस्सन्देह हमारेसन्मुखआताहै २६।२७ हेकर्ण तुम शीघ्रही उसके सन्मुखचलो तेरे सिवाय इसलोक मेंदूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखताहूं २८ जोकि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुनको मर्य्यादा के समान रोककर धारणकरे मैं पीछे और दोनों दाहें बायें उसकी रक्षाको नहीं देखताहूं वह अकेलाही तेरे सन्मुख आताहै तुम अपने स्थानको देखो २९।३० हेराधाके पुत्र तुम्हीं युद्धमें

श्रीकृष्ण और अर्जुनको अपने स्वाधीनकरनेको समर्थहो यहतेराही भार रूप कार्य्यहै तू अर्जुनके सन्मुख चल ३१ तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यकेसमानहो इसहेतुसे महायुद्धमें इस आतेहुये अर्जुनको रोको ३२ हेकर्णसर्पकी समान होठोंकेचाबनेवाले वृषभके समान गर्जनेवाले बनबासीव्याघ्रकेसमानअर्जुनको मारो ३३ यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजालोग युद्धमें अर्जुनकेभयसे बड़ी शीघ्रतासे भागतेहैं ३४ हेसूतनन्दन बीरकर्णतेरे सिवाय अबदूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहींहै जोकि उनभागेहुओं के भयको निवृत्त करे हे पुरुषोत्तम यहसब कौरव युद्धमेंतुझ रक्षक को पाकर ३५ तेरी रक्षा में आश्रित होनेकी इच्छा से नियत हैं वैदेह काम्बोज अम्बष्ट नग्नजित३६ और युद्धमेंबड़ीकठिनतासेविजयहोने वाले गान्धारदेशी जिसतेरेधैर्य्यसे विजयकियेगये हे राधाकेपुत्र उस धैर्य्यकोकरके फिरपाण्डवोंकेसन्मुखचल ३७ हेमहाबाहो बड़ीशूरता मेंनियतहोकर उन यादव बासुदेवजीके सन्मुखचलो जोकिअर्जुनके साथ अत्यन्त प्रीति रखने वालेहैं ३८ कर्णबोला हेशल्य तुम अपने स्वभावमें नियत होजाओ हे महाबाहो अबतुममुझकोअंगीकृत बिदितहोतेहो तुमअर्जुनसे भयभीत मतहो ३९ अबमेरेभुजाओंके बल को और पाईहुई शिक्षाकोदेखो मैं अकेलाही इसपांडवोंकी बड़ीसेना को मारूंगा ४० इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारूंगा यहतुमसे सत्यहीसत्य कहताहूं कि इनदोनों बीरोंकोबिना मारेहुये कभी न हटूंगा अथवा चाहै उन्हीं के हाथसे मरकर शयन करूंगा क्योंकि युद्धमें सदैवही बिजय नहीं हुआकरतीहै ४१ अबमैं उनको मारकर वा उनके हाथसे मरकर अपने मनोरथको सिद्ध करूंगा शल्यबोला हे कर्ण महारथी लोग युद्धमें इस रथियोंमें बड़े बीर अर्जुनको सबसे अजेय कहते हैं फिर हेकर्ण ऐसा कौनसामनुष्यहै जोइस श्रीकृष्णसे रक्षित अर्जुन को विजय करने का उत्साह करे ४२ कर्ण बोला कि लोकमें ऐसा उत्तमरथी जहांतक हमनेसुना कभी कोईनहीं हुआ ऐसे प्रतापी प्रसिद्ध कीर्त्ति वालेअर्जुनकेसन्मुख

होकर युद्ध को करूंगा उस महायुद्ध में मेरी बीरताको देखो ४३
यहरथियोंमें बड़ावीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमिमें श्वेत घोड़ोंके
द्वारा घूमताहै अब वहमुझको बड़ेदुःखसे मिलताहै औरकहताहै कि
कर्णकेही बिजयमें मेरी विजय और कर्णकेही नाशमें मेराभी नाश
है ४४ राजकुमारके प्रस्वेद और कंपसे रहित दोनों हाथ चिह्नोंसे
युक्त होकर वृद्धिमान हैं वह दृढ़शस्त्र अर्जुन बड़ा कर्मी और हस्त-
लाघवीहै इसपांडवके समान कोई युद्धकर्त्तानहीं है ४५ बहुतबाणों
कोभी लेताहै और उनसबको एकही बाणके समान धनुषपर चढ़ा
कर छोड़ताहै फिर सकलबाण एक कोशपर गिरतेहैं उसके समान
इस पृथ्वीपर कौन शूरबीरहै ४६ श्रीकृष्णको साथ रखनेवाले जिस
वेगवान् अधिरथी अर्जुनने खांडव बनमें अग्निको तृप्तकिया वहांही
महात्मा श्रीकृष्णजी ने चक्रको और पांडव अर्जुनने गांडीव धनुष
कोपाया ४७ अर्थात् बड़ेपराक्रमी महाबाहुने अग्निसेही महाशब्दा-
यमान श्वेतघोड़ोंसे युक्त रथको वा दो अक्षय तूणीरोंको और दिव्य
शस्त्रोंको पाया ४८ इसीप्रकार इन्द्रलोकमें युद्धकरकेअसंख्य काल-
केयनाम दैत्योंकोमारा और देवदत्तनाम शंखको पाया इसपृथ्वीपर
उससे अधिक कौन होसक्ताहै ४९ इस महानुभावने उत्तम युद्धसे
अस्त्रोंके द्वारा साक्षात् महादेवजी को प्रसन्न किया और उनसेतीनों
लोकोंका नाशकरनेवाला बड़ाघोर पाशुपत नाम महाअद्भुत अस्त्र
पाया ५० सब लोकपालोंने इकट्ठे होकर युद्धमें पृथक्२ बड़े२अस्त्रों
को दिया जिन अस्त्रोंके द्वारा इसनरोत्तम ने युद्ध में इकट्ठे होनेवाले
कालकेय नाम असुरोंको बड़ी शीघ्रतासे मारा ५१ इसीप्रकारइस
अकेले अर्जुनने राजाबिराटके पुरमें कौरवों समेत हमसब मिलेहुओं
को एकही रथके द्वारा बिजय कर युद्धभूमिमें उसगोधनको हरण
करके उनसब महारथियों के वस्त्रोंको भी छीन लिया ५२ हेशल्य
इस प्रकारके पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्णको साथमें रखनेवाले
सबलोक और राजाओंमें श्रेष्ठ इस अर्जुनको अपने साहससे बुला-
ताहूं५३वह महा पराक्रमी ब्रह्मा बिष्णु और महेशजीके भी कंपाने

वालेनारायणसे रक्षितहैं सब संसार इकट्ठाहोकर हजारों बर्षतक भी जिसके गुणोंका बर्णन न करसके ५४ ऐसे शंखचक्र गदा पद्मधारी बसुदेव जीके पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनके गुणोंके कहनेको कोई समर्थ नहींहै एक रथपर बैठेहुये श्रीकृष्ण और अर्जुनको देख कर मुझको महाभय उत्पन्नहोताहै ५५ अर्जुन युद्धमें सब धनुषधारि-योंसे श्रेष्ठतरहै और नारायणजी भी युद्धमें अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और बासुदेवजी हैं हेशल्य चाहै हिमाचल अपने स्थानसे चलाय-मानहोजाय परन्तु अर्जुनऔर श्रीकृष्ण चलायमाननहीं होसक्ते ५६ यह दोनों दृढ़ शस्त्रधारी शूरबीर महारथी बड़े कठोर शरीर वालेहैं हे शल्य ऐसे दोनों अर्जुन और बासुदेव जीके सन्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौन जासक्ताहै यह अत्यन्तअद्भुत वा अद्वितीय इनकाऔर मेरायुद्धशीघ्रही होगा ५७ । ५८ मैं युद्धमेंइनदोनोंको गिराऊंगा वा श्रीकृष्ण समेत अर्जुनही मुझको गिरावेंगे शत्रुओंका मारने वाला कर्ण युद्धमेंशल्यसेऐसे२बचनोंको कहता हुआ बादलके समानगर्जा ५९ फिरआपके पुत्रके पास जाकरबड़ेप्रेमसे मिला उसनेभी इसको अनेकप्रकारसेप्रसन्न किया फिर वहां प्रसन्न होकर कौरवोंमें बड़ेबीर दुर्य्योधन कृपाचार्य्य कृतबर्मा राजागान्धार समेत उसकेछोटेभाई इनसबसे ६० वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उनपदाती हाथी औरअश्वसवारोंसे बोलाकिश्रीकृष्ण औरअर्जुनको रोकोप्रथमउनके सन्मुखजाकर शीघ्रही उनको सब प्रकारसे थकाओ ६१ जिससे कि हेराजा लोगो आप लोगोंसे अत्यन्त घायलहुये इनदोनोंको मैंसुख पूर्वक मारूं वह बड़े बड़े सब महाबीर बहुत अच्छा ऐसा कहकर अर्जुनके मारनेके अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रतासे उनके सन्मुख गये ६२ कर्णके आज्ञाकारी महारथियों ने बाणोंसे उस अर्जुनको घायलकिया फिर अर्जुनने युद्धमें उनको ऐसा निगला जैसेकि बड़ा जलसमूह रखनेवाला समुद्र नदनदियोंको निगल जाताहै ६३ वह अर्जुनअपने उत्तम बाणोंको चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाईभी नहीं पड़ा फिर अर्जुनके चलायेहुये बाणोंसे घायल और

मृतकहुये सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े ६४ सब कौरव उसबाण रूप अग्नि और गांडीव रूप सुन्दर मण्डल रखने वाले प्रलय कालो ने सूर्य्य के समान महातेजस्वी अर्जुन की ओर देखनेको ऐसेसमर्थ नहीं हुये जैसेकि नेत्ररोगी मनुष्य सूर्य्यकेदर्शन करनेको असमर्थ होता है ६५ हंसते हुये गांडीव धनुष रूप पूर्ण मंडलवाले अर्जुनने उन महारथियोंके चलायेहुये बाण जालों को ऐसेकाटा जैसेकि ज्येष्ठ आषाढ़में उग्रकिरण रखनेवाला सूर्य्यजल समूहोंको सुखपूर्वक सोखलेताहै हे महाराज फिरअर्जुनने बाणोंके समूहोंकोछोड़कर आपकीसेनाकोभस्म करदिया६६।६७ फिरकृपाचार्य्यजी बाणोंको छोड़तेहुये उसके सन्मुखगये उसीप्रकार कृतबर्मा और आपकापुत्र दुर्य्योधन भी दौड़ा और महारथी अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़को ढकदेताहै ६८ उससमय कुशलबुद्धी शीघ्रता करनेवालेपांडव अर्जुनने उसबड़ेयुद्धमें बड़े उपायसे मारनेके इच्छावान् बीरोंके चलायेहुये उत्तमबाणों को अपने बाणोंसे काटकर तीन तीन बाणों करके उनको छातीपर घायलकिया ६९ गांडीव रूप बड़े पूर्ण मंडलवाला बाणरूपी उग्र किरणोंसे युक्त अर्जुनरूपी सूर्य शत्रुओंको संतप्त करताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़में पार्श्व मंडलसे युक्त सूर्य बर्त्तमानहोताहै ७० इसकेपीछेअश्वत्थामाने दशउत्तम बाणोंसेअर्जुन को तीनबाणोंसे श्रीकृष्णजीको चारबाणोंसे चारों घोड़ों को घायल करके नाराचनाम उत्तम बाणोंसे ध्वजास्थ हनुमान्जी को ढकदिया ७१ तौभी अर्जुनने उस धनुषधारी अश्वत्थामाको तीनही बाणों से कंपायमान करकेक्षुरसे सारथीके शिरको चारबाणोंसे घोड़ोंकोऔर तीन बाणोंसे अश्वत्थामाकी ध्वजाको रथसे गिराया ७२ फिरक्रोध युक्त अश्वत्थामाने हीरे मणि और सुवर्णसे जटित तक्षकके फणके समान प्रकाशित बड़े मूल्यके दूसरे धनुषको ऐसे उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़ेसर्पको पर्व्वतके किनारेसे कोईउठालेवे ७३ उस बड़ेगुणी अश्वत्थामाने अपनेशस्त्रको निकालकर घोड़े और सारथी

सेरहित पृथ्वीके समान रथपर अपने धनुषको प्रत्यंचा समेतकरके समीपसे आकर उनदोनों अजेय नरोत्तमोंको उत्तमबाणोंके द्वारा पीड़ामान किया ७४ युद्धके शिरपर नियत वह महारथी कृपाचार्य कृतबर्मा और आपका पुत्र दुर्य्योधन युद्धमें अनेक बाणोंसमेत अर्जुनके ऊपर ऐसे आनकरगिरे जैसे कि बादल सूर्यको घेरलेतेहैं ७५ फिर सहस्राबाहु के समान पराक्रमी अर्जुनने कृपाचार्यके धनुष बाण घोड़े ध्वजा और सारथीको बाणोंसे ऐसे घायल करदिया जैसेकि पूर्वसमयमें राजा बलिको बज्रधारी इन्द्रने घायलकियाथा ७६ वह कृपाचार्य अर्जुनकेबाणोंसे अस्त्रोंसे रहितहोगये और उस बड़े युद्धमें ध्वजाके टूटने पर हजारोंबाणोंसे ऐसे छेदेगये जैसेकि पूर्व में अर्जुन के हाथसे भीष्मजी छेदे गयेथे ७७ इस के पीछे प्रतापवान् अर्जुनने गर्जते हुये आपके पुत्रको ध्वजा और धनुषको बाणों से काटकर कृतबर्माके उत्तम घोड़ों को मार ध्वजा को भी काटडाला फिर शीघ्रता करनेवाले उसअर्जुननेघोड़े हाथी रथ ध्वजा और धनुष को विध्वंसन करदिया इस के पीछे आपकी बड़ी सेना पृथक् २ होकरऐसेछिन्नभिन्नहोगई जैसे कि जलकेबेग से टूटाहुआ पुलछिन्नभिन्न होकरबहजाताहै ७८।७६ तदनन्तरकेशवजीनेशीघ्रही रथकेद्वारा अर्जुनके महादुखी शत्रुओंको दक्षिणकिया औरजैसे इन्द्र केमारनेकी इच्छासे वृत्रासुर आदि दैत्यचलेथे उसीप्रकार दूसरे युद्धाभिलाषी ऊंचीध्वजाधारी सुन्दररत्न जटितरथोंके द्वारा शीघ्र जानेवाले अर्जुनकेऊपरदौड़े इसकेपीछे महारथी शिखण्डी सात्विकी नकुल और सहदेव समीपजाके उन अर्जुनके सन्मुख आनेवाले शत्रुओंको रोककर८०।८१तीक्ष्णबाणोंसे घायलकरके बड़े भयानक शब्दोंसे गर्जे और सृञ्जियों समेत क्रोधयुक्त कौरवो बीरोंने सीधे चलनेवाले सुन्दर बेतयुक्तबाणोंसे परस्परमें ऐसेमारा जैसे कि पूर्व समयमें असुरोंने देवताओंके गणोंसमेत युद्धमें परस्पर माराथा हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र वह बिजयाभिलाषी स्वर्गजाने के उत्सुक हाथी घोड़े और रथगिरतेथे८२।८३ और ऊंचे स्वरोंसे गर्जतेथे फिरअच्छी

रीतिसे छोड़ेहुये बाणोंसे पृथक् २ होकर परस्परमें अत्यन्त घायल किया हेराजाउसमहायुद्धमें शूरबीरोंमें श्रेष्ठमहात्माओंके कर्मसे परस्पर बाणोंका अन्धकार उत्पन्नकरनेपर ८४ चारोंदिशा बिदिशा औरसूर्य्यकी किरणोंभी अन्धकार होजानेसे गुप्तहोगईं ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनाशीतितमोऽध्याय: ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय॥

संजयबोले हेराजा कौरवोंकी अत्यन्त उत्तमसेनाओंसे घिरेहुये और डूबेहुये पांडव भीमसेनको निकालनेके अभिलाषी अर्जुनने १ शायकोंसे कर्णकीसेनाको मर्दनकरके शत्रुओंके बीरोंको मृत्युलोक में भेजा २ इसकेपीछे इसकेबाण जालक्रम २ से आकाश में जाकर दिखाईदिये इसरीतिसे औरोंनेभी आपकी सेनाकोमारा ३ वहमहाबाहुअर्जुन पक्षीगणोंसे सेवित आकाशको अपनेबाणोंसे पूर्णकरता कौरवोंका नाश करनेवाला हुआ ४ फिरअर्जुनने निर्मलभल्ल क्षुरप्र और नाराचोंसे अंगोंको छेदछेदकर शिरोंकोकाटा ५ कटे हुयेअंग और कवचोंसेरहित वहशिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरबीरोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई ६ अर्जुन के बाणोंसे मृतक अंग भंग चूर्ण २ नाश हुये अंगों सेरहित हाथी घोड़े रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई ७ हे राजा युद्धभूमि बड़ीदुर्गम विषय महाघोर दुःखसे देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई ८ शूरबीरों के घोरसारथी रखनेवाले मृतकघोड़े वा सारथी समेतरथोंसे और ईशा रथ चक्रअक्ष और भल्लोंसे पृथ्वी महाचित्रितसी होगई ९ कवचोंसे अलंकृतसेनाके सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरीभूषण रखनेवाले शूरबीरों समेत नियतहुये १० कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एंड़ी औरअंगुष्ठोंसे प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनकेबाणोंसे ऐसेगिर पड़े ११ जैसेकिवज्रसे बड़ेपर्व्वतोंके शिखरगिर पड़तेहैं रत्नोंसेपूर्ण पृथ्वीपर अर्जुनकेबाणोंसे नाशहोकर गिरेहुये उत्तमहाथियोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई १२ अर्जुनकेरथने बादलकेरूप मद डालनेवाले

हाथियोंको चारोंओर से ऐसेप्राप्तकिया जैसे कि सूर्य्य बादलों को प्राप्तकरता है १३ मृतकहाथी घोड़े मनुष्य अनेकप्रकारके टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचोंसे रहित युद्धमें मतवाले मृतकमनुष्योंसे१४ और बड़े भयानक शब्दवाले गांडीव धनुष को टंकारते अर्जुन के हाथसे टूटेहुये शस्त्रोंसे युद्ध भूमिका मार्ग आच्छादित होगया १५ जैसे कि आकाश में घोरबज्र से विनिष्पेष स्तनयित्नुहोता है उसी प्रकारवाला धनुषका शब्दथा उसके पीछे अर्जुनके बाणोंसे घायल होकरसेना ऐसे पृथक्होकर छिन्नभिन्न होगई १६ जैसे कि समुद्रमें बड़े बायुके वेगसे चलायमान नौकाहोती है नानाप्रकारके रूपवाले प्राणों के हरनेवाले गांडीव धनुष से छोड़े हुये १७ उल्का और विजलीके रूपवाले बाणोंने आपकी सेनाको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि सायंकाल के समय बड़े पर्व्वतपर प्रचण्डअग्नि बांसों के बनको भस्म करदेता है १८ इसीप्रकार बाणों से पीड़ित आपकी बड़ी सेनाभी महा व्याकुल होकर चलायमान हुई और अर्जुन के हाथसे मर्द्दित और भस्मीभूत करीहुई सेनानाशको प्राप्तहुई १६ बाणोंसे कटीहुई वा घायलहोकर वह सेना सबओर को ऐसेभागी जैसे कि दावानल अग्निसे भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागते हैं २० इसी प्रकार अर्जुनके हाथसे भस्महुये कौरव उस महाबाहु भीमसेन को छोड़कर चारों ओर को भागे २१ इस रीति से कौरवोंकी सबसेना व्याकुल होकर मुखमोड़२करभागी इसके पीछे कौरवोंके छिन्नभिन्न होनेपर वहअजेय अर्जुन भीमसेनको पाकर २२ एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त समीप वर्त्तमान रहा वहां भीमसेन से युधिष्ठिरका सबवृत्तान्त और आनन्दसे होनेका समाचार कहकर भीमसेन से आज्ञा लेकर अर्जुन फिर चलागया २३ । २४ हे भरतबंशी वह रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता हुआ गया इसके पीछे शूरवीरोंमें श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन २५ दुश्शासन से छोटे आपके दशपुत्रोंसे घेरागया उन्होंने भी उसको बाणों से ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओंसे हाथीको पीड़ित करतेहैं २६

हे भरतबंशी धनुषको मंडलाकार करनेवाले शूरवीर नर्तकों के समान दिखाई दिये उनको मधुसूदनजी ने अपने रथके द्वारा दक्षिण किया २७ और अर्जुनके हाथसे मरकर उनको यमराजकेपासजानेवाला अनुमान किया उसके पीछे अर्जुनके रथके मुड़नेपर उनशूरों ने चढ़ाईकरी २८ अर्जुनने उनसन्मुख आनेवालोंके घोड़े रथसारथी और ध्वजा समेत धनुष और शायकोंको शीघ्रही अपनेनाराच और अर्द्धचन्द्रनाम बाणोंसे गिराया २९ पीछेसेदूसरे दशभल्लोंसे उनके उन शिरोंकोपृथ्वीपर गिराया जोकि बहुत कालसे रक्त नेत्रकर कर ओठोंको काटतेथे ३० वह बहुतसे कमलरूपीमुखों समेत शिर बड़े शोभायमान हुये फिर वह शत्रुओंका मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाला सुनहरी पुंखवाले दश भल्लोंसे बड़ेबेगवान् दशोंकौरवों को मारकर चलदिया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे अशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि कौरवोंके बड़े बेगवान नब्बे रथी घोड़ों के द्वारा उस आनेवाले कपिध्वज अर्जुनके सन्मुखगये १ और नरोत्तम संसप्तकोंने परलोक संबंधी घोर शपथको खाकर युद्धमें पुरुषोत्तम अर्जुनको घेरलिया २ और श्रीकृष्णजीने बड़े वेगवान् सुवर्ण भूषणोंसे अलंकृत मोतियोंके जालोंसे ढकेहुये श्वेतघोड़ोंको कर्ण के रथपर हांका ३ इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणोंकी बर्षासेप्रहार करते कर्णकी ओरको जानेवाले उसअर्जुनके सन्मुखगये ४ अर्जुन ने अपने तीक्ष्णबाणों से शीघ्रता करनेवाले उन सब नब्बे बीरोंको सारथी धनुष और ध्वजासमेत मारा ५ अर्जुन के नानारूप के बाणोंसे घायलहोकर वह शूरबीर ऐसे गिरपड़े जैसे कि तपकेक्षीण होनेपर सिद्धलोग अपने विमान समेत स्वर्गसे गिरते हैं इसकेपीछे कौरवलोग बड़ी निर्भयता से रथहाथी और घोड़ों समेत उस बीर अर्जुनके सन्मुख आये ६।७ तीव्रतायुक्त मनुष्यघोड़े और उत्तमहाथी

वाली उस आपकी बड़ी सेनाने अर्जुनकोघेरलिया ८ वहां बड़ेधनुष धारी कौरवोंने शक्ति, दुधारा खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्गऔर शायकोंसे कौरवनन्दन अर्जुन को ढकदिया ६ फिर अर्जुनने चारों-ओरसे अंतरिक्षमें फैलीहुई उसबाणोंकी बर्षाको अपने बाणोंसे ऐसा छिन्न भिन्नकरदिया जैसे कि सूर्य अपनीकिरणोंसे अंधेरेको तिर्रबिर्र करदेताहै १० इसकेपीछे मतवाले तेरहसौ हाथियों समेत नियतहुये म्लेक्षोंने आपके पुत्रोंकी आज्ञा से अर्जुन को पार्श्वभाग की ओरसे घायलकिया ११ और कर्ण, नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, मुशल और भिन्दिपालोंसे रथमेंसवार अर्जुनको पीड़ामानकिया १२ अर्जुन ने उन हाथीके सवारोंसे छोड़े हुये बड़े बाण जालोंको अपनेतीक्ष्ण-धार भल्ल और अर्द्धचन्द्रबाणोंसे काटा १३ इसके पीछे नानारूपके उत्तमबाणोंसे उन सबहाथियोंको पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसेमारा जैसेकि बज्रोंसे पर्व्वतोंको मारतेहैं १४ वह स्वर्णमयमा-लाधारी बड़े २ हाथी सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे पीड़ित और मृतक होकरऐसे गिरपड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्व्वत गिरपड़तेहैं १५ हे राजाइसकेपीछे हाथीघोड़ेसमेत मनुष्योंको पुकारते और चिंघाड़ते हुये गांडीव धनुषका बड़ाशब्दहुआ १६ और वहघायल हाथीचा-रोंओर मृतक सवारोंसमेत भागे १७ हेमहाराजरथियों और घोड़ों सेरहित हजारोंरथ गन्धर्वनगरके रूपदिखाईपड़े १८ और इधरउ-धरसे दौड़नेवाले अश्वसवार जहांतहां अर्जुनके शायकोंसे मृतक दिखाईदिये १६ उसयुद्धमें पांडव अर्जुनकी भुजाओंका पराक्रम दे-खागया जोअकेलेनेही युद्धमें अश्वसवार हाथी और रथोंको बिजय किया २० हे भरतर्षभ राजाधृतराष्ट्र इसकेपीछे भीमसेन तीनअंग रखनेवाली बड़ीसेनासे घिराहुआ अर्जुन को देखकर २१ मरने से शेषबचेहुये आपके थोड़े रथियों को छोड़कर वेगसे अर्जुन केरथकी ओरकोदौड़ा २२ इसकेपीछे बहुतमृतक और दुखीसेना भागी तब भीमसेन अपनेभाई अर्जुनके पासगये बड़े युद्ध में थकावटसे रहित गदाकोलियेहुये भीमसेनने अर्जुनसे बचेहुये शेषपराक्रमी घोड़ोंको

मारा २३।२४ इसकेपीछे भीमसेनने कालरात्रिके समानबड़े उग्र हाथीघोड़े और मनुष्योंकी खानेवाली नगरकेकोटोंकी तोड़नेवाली-महाभयानकगदाको २५ मनुष्यहाथी और घोड़ोंपर छोड़ा हेराजा उसगदानेबहुतसेहाथी घोड़े और अश्वसवारोंको मारकर लोहेके कवचधारी मनुष्य और घोड़ोंकोमारा और वहमनुष्य मृतकहोकर शब्दकरतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े २६।२७ दांतोंसे पृथ्वीको काटतेरुधिरमेंभरे टूटेमस्तक हाड़ और चरणहोकर मांसभक्षी जीवोंकोभक्षणार्थ मृत्युबसहुये२८तबगदानेभी रुधिरमांस और मज्जासे तृप्तहोकर शीतलताको पाया कालरात्रिके समान दुःखसे देखनेके योग्य हाड़ोंकोभी खातीहुई नियतहुई २६ अत्यन्त क्रोधयुक्त गदाहाथमें लिये भीमसेन दशहजारघोड़े औरअनेक पत्तियोंको मारकर इधर उधरको दौड़ा ३० हे भरतबंशी इसकेपीछे आपके शूरबीरोंने गदाधारी भीमसेनको देखकर कालदंडके उठानेवाले यमराजकोही सन्मुख आयाहुआ माना ३१ मतवाले हाथीके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह पांडुनन्दन हाथियोंकी सेनामें ऐसेपहुंचा जैसे कि समुद्रमें मगरपहुंचताहै ३२ वहां अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेननेबड़ीगदाकोलेकर हाथियोंकी सेनाको मझाकर वा मथकर क्षणमात्रमेंही यमलोकमेंपहुंचाया ३३ घंटोंसमेत वाध्वजा पताकाधारी सवारोंसे युक्तमतवाले हाथियोंको ऐसेगिरता हुआदेखा जैसे कि पक्षधारी पर्व्वतगिरतेहैं ३४ बड़े पराक्रमी भीमसेन उसहाथियोंकी सेनाको मारकर अपने रथपर सवारहोकर अर्जुनकेपीछे चले ३५ हे महाराज शत्रुओंकी बहुतसी सेनामारीगई औरबहुधा सेनाकेलोग मुखफेरेहुये निरुत्साह और बहुतेरे शस्त्रोंसे ढकेहुये शरणमेंआये ३६ अर्जुन ने उसशरणमें आईहुई अचेतसेनाको देखकर प्राणोंके तपानेवालेबाणोंसे ढकदिया ३७ उसयुद्धमें गांडीवधनुषधारी के बाणोंसे छिदेहुये मनुष्य घोड़े रथ औरहाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि केशरोंकरके कदम्बका वृक्षशोभित होताहै ३८ हे राजाइसकेपीछे मनुष्यघोड़े और हाथियोंके प्राणोंके हरनेवाले अर्जुनके बाणोंसेघायल

हुये कौरवोंके बड़े पीड़ावान शब्दहुये ३९ तबहाय हाय करनेवाली आपकीसेना अत्यन्त भयभीतहोकर परस्परमें गुप्तहोनेवाले अलातचक्र अर्थात् बनेटीके समान भ्रमण करनेलगी ४० इसकेअनन्तर वह कौरवोंका युद्ध बड़े पराक्रमियोंके साथहुआ जहांरथअश्वसवार घोड़ेऔर हाथियोंमें कोईभी बिनाघायल हुयेनहींरहा ४१ वहसेना चारोंओरसे अग्निरूप बाणोंसे विदीर्ण रुधिर औरचर्मसे भरेशरीर फूलेहुये अशोक वृक्षकेबनके समानहोगयी ४२ वहां सब कौरव इसपराक्रमी अर्जुनको देखकर कर्णके जीवनमें निराशायुक्तहुये ४३ गांडीव धनुषधारी सेमारेहुये कौरव युद्धमें अर्जुनके बाणोंकी बर्षा को असह्य मानकर लौटे ४४ शायकोंसे घायल हुये वह कौरव कर्णको त्यागकर भयभीत होकर चारों ओर को भागे और कर्ण कोभीपुकारे ४५ उससमय अर्जुनहजारों बाणोंको छोड़ता हुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पांडवोंको प्रसन्न करता हुआ उनकेसन्मुख गया ४६ हे महाराज फिर आपके पुत्रकर्णके रथके पासगये तब उन अथाह समुद्रमें डूबे हुये आपके पुत्रादिकोंको आश्रयरूप टापू होगया ४७ हेराजा निर्विष सर्पके समानसब कौरव अर्जुनके भयसे कर्णकेपास गुप्तहोकर छिपगये ४८ जैसेकि कर्मकरता लोग मृत्युसे भयभीत होकर अपनेही धर्ममें आश्रितहोतेहैं उसीप्रकार आप के पुत्रभी महात्मापांडव अर्जुनके भयसे बड़े धनुषधारीकर्णकेपास शरणागतरूपहुये ४९। ५० उनरुधिरसेभरे बाणोंसेपीड़ामान बड़ीआपत्तिमें फंसेहुये लोगोंको देखकरकर्णनेकहा कि भयमतकरो और मेरेही पास नियत रहो ५१ फिरअर्जुनके पराक्रमसे अत्यन्त छिन्नभिन्न और ब्याकुल आपकीसेनाको देखकर वह कर्ण शत्रुओंके मारनेकी इच्छासेधनुष टंकारता हुआनियतहुआ ५२ उस शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्णने उन भागेहुये कौरवोंको देखकर चिन्ता पूर्वक अर्जुनके मारने में चित्त किया ५३ इसके पीछे अधिरथी कर्ण बहुतबड़े भारी धनुषकोटंकारकर अर्जुनके देखतेहुये फिर पांचालोंकी ओरको दौड़ा ५४ उस

समय रक्तनेत्र राजाओंने एक क्षणभरमेंही कर्णके ऊपर ऐसीबाण वर्षाकरी जैसेकि पर्वतपर बादल वर्षाकरते हैं ५५ हे जीवधारियों मेंश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछेकर्णके छोड़ेहुये हजारों बाणोंने पांचालों को प्राणोंसे रहित करदिया ५६ हेबड़े ज्ञानी वहां मित्रको चाहने वाले कर्णके हाथसे मित्रोंकेही निमित्त घायल होनेवाले पांचालोंके बड़ेशब्द हुये ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धे एकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेराजा इसकेअनन्तर कवच और श्वेतघोड़े वाले अर्जुन के हाथसे कौरवोंके भागजानेपर सूतकेपुत्रकर्णने बड़े बाणोंसे राजापांचाल के पुत्रोंको ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि बादलों केसमूहोंको वायुतिर्रबिर्र करदेताहै १ अंजलिक नामबाणोंके द्वारा रथसे सारथीको गिराकर घायल कियेहुयेघोड़ोंको मारा और सतानीक वा श्रुतसोमको भल्लोंसे ढक कर उनके धनुषोंको भी काटा २ इसके पीछे छःबाणोंसे धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेगसे उसके घोड़ों कोभी मारा फिर सूतपुत्रने सात्विकी के घोड़ोंको मारकर कैकेयके बिशोकनाम पुत्रकोमारा ३ कुमार के मरनेपर कैकेय का सेनापति जो कि महाभयानककर्म करनेवाला था वह अपने उग्रबाणों से सेनाको छिन्नभिन्न करता हुआ उसके सन्मुख दौड़ा और कर्णके पुत्र प्रसेनको घायल किया ४ कर्णने हंसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणोंसे उसकीभुजा और शिरको काटा तबवह मृतक होकर रथसेपृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसेसे काटा हुआ सालका वृक्ष होताहै ५ कर्णका पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्विकी को अपने कानतक खेंचेहुये पृषत्क नाम बाणोंसे ढककर नाचताहुआ सात्विकीके हाथसे घायल होकर गिरपड़ा ६ पुत्रके मरने से क्रोधयुक्त चित्तकरके सात्विकी के मारनेकी इच्छाकरतेहुये माराहै इसप्रकार बोलतेहुये कर्णने सात्विकी केऊपर शत्रुघाती बाणको छोड़ा ७ उसके उसबाण

को शिखण्डीने काटकर तीनबाणोंसे कर्णको पीड़ितकियाफिर शिख-
ण्डीके बाण कर्णकी ध्वजा और धनुषको काटकर पृथ्वीमें गिरपड़े ८
तबउग्ररूप महात्मा अधिरथीकर्णने शिखंडीको छः बाणोंसे घायल
करके धृष्टद्युम्नके लड़केके शिरकोकाटा और इसीप्रकारबड़े तीक्ष्ण
बाणोंसे श्रुतसोमको घायलकिया ९ हेराजाओंमें श्रेष्ठवहांमबलशूर
बीरके बर्तमानहोने और धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेपर श्रीकृष्णजीने
अर्जुनसेकहाकि यहकर्णइसलोकको पांचालोंसेरहितकिये देताहै हे
अर्जुनसेअबचलकर कर्णको मार १० उसकेपीछे नरोंमेंबड़ेबीरसुन्दर
भुजावाले भयकेस्थानमें महारथीसे घायलइन लोगोंकीरक्षा करने
के इच्छावान अर्जुनने हंसकरशीघ्रही रथकेद्वारा कर्णके रथको पा-
या ११ और महाकठोर उग्रगांडीव धनुषको चढ़ाकर हथेलीपर
प्रत्यंचाका शब्दकरके अकस्मात बाणोंका अन्धकार उत्पन्न करके
ध्वजारथघोड़े और हाथियोंकोमारा अन्तरिक्षमें बहुतसे शब्दघूमने
लगे और पक्षीलोग पर्ब्बतोंकी गुफाओंमेंगिरे जो कि जीवोंकेमंडल
से जंभाईलेता अर्जुनरुद्र मुहूर्त में सन्मुखगया १२।१३ और एक
बीरभीमसेन रथकेद्वारा अर्जुनको पीछेकीओरसे रक्षाकरता हुआ
चला शत्रुओंसेघिरेहुये वहदोनों राजकुमाररथोंकेद्वाराशीघ्रहीकर्णके
सन्मुखगये १४ वहांपर अन्तरिक्षमें कर्णकेसोमक लोगोंको घेरकर
उस महायुद्धकेनियत रथघोड़े और हाथियोंके समूहोंको मारा और
बाणोंसे सर्वदिशाओंको ढकदिया १५ उत्तमौजा, जन्मेजय, क्रोधयुक्त
युधामन्यु, शिखंडी और धृष्टद्युम्न इनसबने अपने२ पृषत्कोंसे कर्ण
को छेदावहपांचालदेशीरथियोंमेंबड़े बीर पांचोंकर्णके सन्मुखदौड़े
धैर्य्यसेबड़े सावधान कर्णको वहसबलोग रथसेगिरानेको ऐसेसमर्थ
नहींहुये जैसेकिशान्त और जितेन्द्री पुरुषको इन्द्रियोंके बिषयनहीं
गिरासक्ते १६।१७ कर्णनेबाणोंसे उन्होंके धनुष ध्वजाघोड़े सारथी
और पताकाओंको शीघ्रतासे काटकरपांच पृषत्कोंसे उनको घायल
करकेसिंहनादकिया १८ उनबाणोंकोछोड़ते और चारोंओरसे मारते
उसप्रत्यंचा और बाणरखनेवाले कर्णकेधनुषकेघोरशब्दसे पर्व्वतवा

वृक्षादिसमेत पृथ्वीकंपायमानहोगी ऐसाजानकर मनुष्योंके समूह पीड़ामानहुये १९ वहकर्ण इन्द्रधनुषके समान अपने बड़े धनुष से बाणोंको छोड़तायुद्धमें ऐसाशोभायमानहुआ जैसेकिप्रकाशितज्योतियोंकामंडल और किरणोंके समूहोंका रखनेवाला पार्षमंडलसेघिरा हुआसूर्य्य होताहै २० शिखंडीको तीक्ष्णबारहबाणोंसेउत्तमौजसको छः बाणोंसे युधामन्युको शीघ्रगामी तीनबाणों से और सोमकधृष्टद्युम्नके पुत्रोंकोतीन २ बाणोंसे छेदा २१ हेश्रेष्ठफिर युद्धमें कर्णके हाथसे पराजितशत्रुओंके प्रसन्न करनेवाले पांचोंमहारथीकर्मरहित होकरऐसेनियतहुये जैसेकिज्ञानीसे जीतेहुये इन्द्रियोंके बिषयहोते हैं २२जैसेकिनौकासे रहितव्यापारीलोग समुद्रमेंडूबतेहैं इसीप्रकार कर्णरूपी समुद्रमें डूबनेवाले उन अपने मामाओंको द्रौपदीके पुत्रोंने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओंके द्वारा उस समुद्रसेनिकाला २३ उसके पीछे सात्विकीने कर्णके चलाये हुये बहुत बाणोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटकर और तीक्ष्णलोहेके बाणोंसे कर्ण को घायल करके आठ बाणोंसे आपके बड़ेबेटे को छेदा २४ इसकेपीछे कृपाचार्य कृतवर्मा दुर्य्योधन और आपकर्णने तीक्ष्णबाणों से घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इन चारोंके साथ ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि दैत्यों का स्वामी दिग्पालोंके साथ लड़ताहै २५ बड़े उच्च शब्दवाले बहुतलंबे असंख्यबाण बरसानेवाले बड़ेधनुषसे वहसात्विकी उनपर ऐसा प्रबलहुआजैसे कि शरदऋतुमें आकाशमें वर्त्तमान सूर्यप्रबल होता है २६ शत्रुसंतापी बड़ेअलंकृत शस्त्रधारी पांचालदेशी महारथियोंने फिर रथोंपर सवार होके सात्विकी को ऐसे रक्षित किया जैसे कि शत्रुओंके मारनेमेंमरुद्गणलोग इन्द्रकोरक्षित करतेहैं २७ इसकेपीछे आपकी सेनाओंके साथ शत्रुओंका वह युद्ध महाभयकारी हुआ जोकि उन रथ घोड़े और हाथियों का बिनाशकारीथा जैसे कि पूर्वसमयमें देवताओंका युद्ध दैत्यों के साथ हुआ २८ उसीप्रकार रथ हाथी घोड़े और पदातियों समेत सब सेना शस्त्रोंसे ढकगई और परस्पर शब्दोंको करतेहुये मृतकहोकर गिर-

पड़े २९ उस दशामें राजा दुर्योधनसे छोटा आपका पुत्र दुश्शासन बाणोंसे भीमसेनको ढकता सन्मुख गया भीमसेन भी बड़ीशीघ्रतासे उसके सन्मुख गया और उसको ऐसे सन्मुख पाया जैसे कि सिंह बड़े रुरुको सन्मुख पाताहै ३० इसकेपीछे प्राणों का द्यूत खेलनेवालेपरस्पर क्रोधभरेहुये उन दोनोंका ऐसा महाभारी युद्ध हुआ जैसे कि बड़े साहसी संवरदैत्य और इंद्रकाहुआथा ३१ उन दोनों ने शरीरको पीड़ित करनेवाले सुंदर वेतवाले बाणों से परस्परमें ऐसाकठिन घायलकिया जैसे कि हथिनियोंके मध्यमें कामदेवसे प्रवृत्तचित्त बारंबार घायलहुये दो बड़े हाथी लड़ते हैं ३२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने आपके पुत्रके ध्वजा और धनुषको दो क्षुरप्रोंसे काटा और उसके ललाटको बाणसे छेदकर सारथी के शिरको शरीरसे पृथक् करदिया ३३ उस राजकुमारने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको बारहबाणसे छेदा और आपही घोड़ोंको चलाताहुआ भीमसेनपर बाणों की बर्षा करनेलगा ३४ इसकेपीछे सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशमान सुवर्ण हीरे आदि उत्तम रत्नोंसेअलंकृत महाइन्द्रके बज्ररूप बिजलीके गिरनेके समान कठिनतासे सहनेके योग्य भीमसेन के अंगों के चीरनेवाले बाणको छोड़ा ३५ उसबाणसे घायलशरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीव के समान गिरा और दोनोंभुजाओंको फैलाकर उत्तम रथपर आश्रित हुआ और थोड़ेही कालमें सचेत होकर गर्जा ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनभीमसेनयुद्धेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

तिरासीवां अध्याय॥

संजयबोले कि उस युद्ध में कठिन युद्धकरनेवाले राजकुमार दुश्शासनने ऐसा कठिन कर्मकिया किएकबाणसे तोभीमसेनके धनुषको काटा और सातबाणोंसे सारथीको छेदा १ उस वेगवान राजकुमारने उसकर्मको करके भीमसेनकोनव्वे पृषत्कोंसे पीड़ित किया इसकेपीछे बड़ीशीघ्रता करके उत्तमबाणोंसे फिर भीमसेनको छेदा २

फिर महाक्रोधरूप भीमसेनने आपके पुत्रपर उग्रशक्तिको चलाया तब आपके पुत्रने उसजलती हुई उग्र शक्तिको अकस्मात् आतेहुये देखकर ३ कानतक खैंचेहुये दश पृषत्क बाणोंसे काटा उससमय सब शूरबीरोंने प्रसन्नचित्त होकर उसकी प्रशंसाकरी ४इसकेअनन्तर शीघ्रही आप के पुत्रने भीमसेनको फिर कठिनपीड़ित किया तब भीमसेन उसपर अत्यन्त क्रोधितहुआ और उसको देखकर क्रोधसे अत्यन्त कोपयुक्त होकर ५ कहनलगाकि हेवीर मैंतेरेबाण से घायलहूं अबतुम मेरीगदाकोसहो तब क्रोधयुक्त भीमसेनने बड़े शब्दसे यहकहकर उसभयानकरूप गदाकोमारनेकेनिमित्तलियाद्द और कहाकि अरेदुरात्मा अबमैं इसयुद्धभूमिमेंही तेरेरुधिरकोपान करूंगा यहबचन सुनकर आपकेपुत्रने मृत्युरूप उग्रशक्तिकोअकस्मात्फेंका तबक्रोधमें पूर्णभीमसेननेभी बड़ीउग्ररूपगदाकोघुमाकर फेंका उसगदाने उसकी शक्तिको अकस्मात् तोड़कर आपके पुत्रको मस्तकपर घायलकिया ७।८ मदझाड़नेवाले हाथीके समान रुधिर को गिरातेहुये उस दुश्शासनपर फिरभीमसेनने उसकठिन गदाको चलाया उसगदाके द्वारा भीमसेनने बड़े हठ पूर्व्वक दुश्शासन को दशधनुष की दूरीपरडाला ६ अर्थात् उस वेगवान् गदासे घायल औरकंपितहोकर दुश्शासन गिरपड़ा हेमहाराज गिरतीहुई गदासे सारथी समेत घोड़े मारेगये और उसकारथभी चूर्ण २ होगया१० टूटेकवच भूषण और पोशाकवाला फड़कताहुआ दुश्शासन कठिन पीड़ासेदुःखी हुआ और सबपांडव और पांचालोंने दुश्शासन को देखकर बड़ीप्रसन्नता पूर्व्वक सिंहनादोंको किया इसकेपीछे भीमसेन इसको गिराकर बड़ीखुशीसे दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ गर्जा हे अजमीढ़वंशी सब पार्श्ववर्त्ती नियत मनुष्य भी उस शब्दसे मूर्च्छितहोकर गिरपड़े वेगवान्भीमसेनभी बड़े वेग पूर्व्वक रथसे उतरकरदुश्शासनकीओर दौड़ा और वहशत्रुताजो११।१२।१३ आपकेपुत्रोंकीओरसेकीगईथी उसको स्मरणकरकेहेराजा चारोंओर से उत्तम पुरुषों समेत इसघोर और कठिनयुद्धके बर्त्तमान होनेपर

वहांबुद्धिसे बाहरकर्मकरनेवाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासन को देखकर१४देवीद्रौपदीके केशका पकड़ना और उसीरजस्वलाकेवस्त्रों का पृथक् करना इन दोनोंबातों को स्मरण करताहुआ उस निरपराधिनीपतियोंसे जुदीहुईको दुःखोंके देनेको शोचकर १५ फिरभीमसेनक्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि घृत सींचाहुआ अग्नि प्रज्वलित होताहै ऐसा होकर उसने उसस्थानपर खड़ाहोकर कर्ण दुर्योधन, कृपाचार्य,अश्वत्थामा और कृतवर्मासेकहा १६ कि अबमैं इस पापी दुश्शासनको मारताहूं अब सब युद्ध करनेवाले शूरबीर इसकी रक्षा करनेको आवो ऐसाकहकर मारनेको उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान् भीमसेन सन्मुखदौड़ा १७ इसरीतिसे भीमसेन ने युद्धमें पराक्रम करके जैसे कि केशरीसिंह हाथीको पकड़ना चाहताहै उसीप्रकार वह अकेला भीमसेन बीर दुर्योधन और कर्णके समक्षमें दुश्शासनको पकड़नेकी इच्छाकरके १८ बड़े उपायसेउसमें दृष्टीको लगा रथसे कूद पृथ्वीपर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्गको उठाकर उस कंपतेहुये पृथ्वीपर पड़ेहुये कंठको दबाय छातीको और जंघाको काटकर थोड़ासा गरम गरम रुधिरपिया उसकेपीछे गिराकर उसके शिरकोभी काटनेकी इच्छासे अपनीप्रतिज्ञा पूरी करनेके लिये उसबुद्धिमान् भीमसेनने फिरथोड़ासा गरम लोहू पिया और उसरुधिरके स्वादुको लेकर महा क्रोधित होकर सबके सन्मुख यह बचनकहा १९ । २० । २१ कि माताके स्तन्य मधु घृत अच्छी बनीहुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि व दुग्ध दधिको मथकर जो तक्रहोताहै इनके सिवायजो इससंसार में सुधा और अमृतके स्वादुयुक्त पानकरनेवालेरसहैं उन सबपदार्थोंसे अब इस शत्रुके रुधिरमें मुझको अधिकस्वाद आताहै २२।२३ तदनन्तर उसको कुछेकसचेतदेखकर भीमसेनने कहाकि हेदुष्टसभाके मध्यमें जो हमने तेरे रुधिरके पीनेकी प्रतिज्ञाकरीथी उसको हमने सत्यकिया अब तुमको कौनसा शूरबीर बचासक्ताहै हेराजा भीमसेनके इसबचनको सुनकर आपकेपुत्र दुश्शासनने उत्तरदिया कि ॥

चौ० येममकर करि कुंभविदारन। देनहार गो बाजि हजारन॥
इनके बल तुम सर्बस हारे। बर्षत्रयोदश विपिन बिहारे॥
शर पंजर बिरचन बलभारे। पीन पयोधर मर्दन हारे॥
अति सुकुमार सुगन्धनि भीजे। राजसूयके जलसों भीजे॥
केश द्रौपदीकोत्यहि कर्षण। करणहारमम भुजअरिधर्षण॥
तुमसबलखत रहेत्यहिक्षनमें। तबनरह्यो कछुविक्रमतनमें॥
अबहम परे समर में ऐसे। मन में रुचै करो सोतैसे॥
शोणित पानकियो ममसोऊ। यामेंममनहिं अमरष कोऊ॥
क्षात्रधर्म पालनकरि रण में। हमइमि परेमरे भटगण में॥
काकशृगालपियेंममशोणित। कैतुमपियोकरनिकरश्रोणित॥
यहसुनिभीमक्रोधअतिगहिकै। फिरवहिभांतिभटनसोंकहिकै॥
गहितो सुतकी भुजा उपारी। सोई तासु गात में मारी॥
लागोपियन रुधिर पुनितातो। बीर बिभित्सरौद्र रसरातो॥
पियेबारिग्रीषमकोप्यासो। तिमिसोरुधिरपियततहंभासो॥

दो० भरिअंजलिपीवतरुधिर उमंगिगातपैजात।
गिराधार धर्शिलासम लसोभीमकोगात॥
कुंभकरणसमगरजिकै फिरसबभटनप्रचारि।
कंठकाटिपीवनलगो शोणितकर्मबिचारि॥
कहिकहिकहि ताकेकिये कर्मआदितेसर्व।
डकरिडकरिपीवतभयो शोणितभीमसगर्व॥

इसकेपीछे महाघोर कर्मी क्रोधमें भराहुआ भीमसेन बड़ेशब्दसे हंसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह बचन बोला किमें कयाकरूं तू मृत्युसे रक्षितहै २४ उस समय जिन जिन लोगोंनेइस प्रकारसे बोलने वाले वा दौड़नेवाले स्वादुलेनेवाले अत्यंतप्रसन्न होनेवाले उसभीमसेनकोदेखा वहसब महाभयभीत होकरभागे २५ और जो लोग कि दृढ़तासे नहींभागे उनके हाथोंसे शस्त्र गिरपड़े और बहुतेरे आंखोंको बन्द करके भयके कारण धीरेसे पुकारे और चारों ओरको देखकर २६। २७ कहनेलगे कि यह मनुष्य नहींहै

कोई उग्र राक्षसहै इस प्रकार कहकर भयभीत होकर भागे २८ और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागेहुये चित्रसेन केसन्मुखगया और बड़ी निर्भयतासे तीक्ष्ण धारवाले साठ पृषत्कों से उसको पीड़ामान किया २९ ऊंचाफण करनेवाले जिह्वाकेचाट नेवाले क्रोधरूप विषके छोड़ने को अभिलाषी बड़े सर्प के समान चित्रसेननेलौटकर उस युधामन्युको तीन बाणोंसे औरउसकेसारथी को छःबाणोंसे छेदा ३० इसकेपीछे शूरवीर युधामन्युने सुन्दर पुंख और नोकवाले अच्छेप्रकार धनुषपर चढ़ायेहुये कानतक खैंचे हुये बाणसे उसके शिरको काटा ३१ उसभाई चित्रसेन के मरनेपर बड़े तेजस्वी शूरता को दिखलाते क्रोधयुक्त कर्णने पांडवी सेना को भगाया और नकुलके सन्मुखगया ३२ वहांपरभीमसेन भी दुश्शा सनको मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिरकी अंजलीकोपूजकर ३३ सबलोकोंके बीरोंकोसुनाकर यह बचन बोला कि हेनीचपुरुष मैं इस तेरे रुधिरको कण्ठसे पीता हूं ३४ अब तुम अत्यन्त प्रसन्न होकर फिरकहौकि हेगौ हेगौ उससमयजो जोलोग हमको देखकर नाचतेथे वह हेगौ हेगौ इसशब्दको फिरकहें३५हम उनके सन्मुख नाचतेहैं वह फिरकहैंकि हेगौ हेगौ प्रमाणकोटीनाम स्थानमें सोना कालकूटनाम बिषकाभोजनकाले सर्पोंसेकाटनालाक्षा गृहमेंभस्महोना द्यूतबिद्यासे राज्यका हरनाबनमें निवास ३६।३७ द्रौपदीके केशोंका भयानक पकड़ना और युद्धमें बाणअस्त्रऔरस्थान पर अत्यन्तदुःख ३८ बिराटभवनमें नवीनप्रकारकेदुःख जो हमको हुये और जो दुःखकि शकुनि दुर्य्योधन और कर्णके मतसेहुये ३९ उनसब कारणोंका हेतुरूप तुही है हमने इनदुःखोंके सिवाय कभी सुखकी नहींपाया ४० पुत्रसमेत धृतराष्ट्रकी दुर्बुद्धी से हमलोग सदैवदुःखीहुये हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र यहकहकर बिजयकोपाकर ४१ फिरमंदमुसकानकरता वेगवान् रुधिरमेंभरालालमुख और क्रोध में भराहुआ भीमसेन अर्जुन और केशबजीसे बोलाकि हेवीरो युद्धमें दुश्शासनकेसाथ जो प्रतिज्ञाकरीथी वहयहां अबमैंसत्यस्करके पूरी

करी इसस्थानपरयज्ञपशुरूप दुर्य्योधनकोमारकर मैंअपनीदूसरीप्र तिज्ञाकोभी पूरीकरूंगा४२।४३जब कौरवोंके समक्षमेंइसकेशिरको काटूंगातभी मैं शान्तीको पाऊंगा फिरवह रुधिरमें डूबाहुआअत्यन्त प्रसन्नचित्त भीमसेन इसबचनको कहकर बड़े शब्दसे ऐसागर्जाजैसे कि सहस्त्राक्षइन्द्र वृत्रासुरको मारकर प्रसन्नतासेगर्जाथा४४।४५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनबधेत्र्यशीतितमोऽध्यायः८३॥

चौरासीवां अध्याय॥

संजय बोलेकि हेराजाफिर दुश्शासनके मरनेपर क्रोधरूपी बड़े बिषके रखनेवाले युद्धोंमें मुखनफेरनेवाले महापराक्रमी आपके शूर बीर दशपुत्रोंने बाणोंसेभीमसेनको ढकदियाउनके नामयहहैंनिषंगी कवची, पाशी, दण्डधार धनुर्द्धर १।२ अलोलुप, सहखण्ड, बातवेग सुबर्चस भाईके दुःखसे पीड़ामान इनदशोंने मिलकर ३ महाबाहु भीमसेनकोरोका फिरचारोंओरसे उन महारथियों के बाणोंसे रोका हुआ ४ क्रोधअग्निसे रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोधभराहुआ कालके समानशोभायमानहुआ उससमय पांडव भीमसेननेसुनहरी पुंखवाले दशभल्लोंसे उनसुनहरी बाजूबन्द रखनेवाले दशोंभाई भरतबंशियों को यमलोकमें पहुंचाया उनवीरोंके मरनेपर ५।६ भीमसेनके भय से पीड़ित आपकीसेना कर्णके देखतेहुये भागी हे महाराज इसके अनन्तरकर्ण ७ प्रजाओंपर पराक्रम करनेवाले कालमृत्युकेसमान भीमसेनके पराक्रमको देखकर बड़ा भयभीतहुआ उसके रूपान्तर सूरतसे वृत्तान्तके जाननेवाले युद्धमें शोभायमान राजाशल्यने ८ उस शत्रुबिजयी कर्णसे समयके अनुसार यहबचन कहाकि हेराधा केपुत्र पीड़ामतकर तुझको ऐसीपीड़ा करना उचितनहींहै९भीमसेन के भयसे पीड़ामानहोकर यहराजालोग भागतेहैं औरभाईके दुःखसे पीड़ामान दुर्य्योधन अचेत होरहाहै १० बड़ेसाहसीसे दुश्शासनका रुधिर पीनेपर अचेत और शोकसे घायलचित्त११कृपाचार्य्य आदि यह मरनेसे बाकीबचेहुये सगेभाई चारोंओरसे दुर्य्योधनके पासबैठे

नियतहैं १२ और लक्षभेदी शूरबीर पांडव जिनमें अग्रगामी अर्जुन है वह युद्धकेलिये तेरे सन्मुख बर्तमानहै १३ हे पुरुषोत्तम इससे अबतुम शूरबीरतासे नियत होकर क्षत्रीधर्म को आगेकरके अर्जुन के सन्मुख जावो १४ राजा दुर्य्योधन ने सब युद्धकाभार तुझीपर नियत किया है हे महाबाहो उस भार को तुम अपने बल और पराक्रम से उठावो १५ बिजय करने में तो अतुल्य कीर्त्ति होगी और पराजयमें निश्चयस्वर्गहै हेराधाकेपुत्र अत्यन्त क्रोधयुक्ततेरा पुत्र १६ तेरेमोहित होनेपर पांडवोंके सन्मुखदौड़ताहै बड़े तेजस्वी शल्यकेइस बचनको सुनकर १७ कर्णने युद्धकरनेका दृढ़बिचारअपने हृदयमें नियतकिया उसकेपीछे क्रोधयुक्त वृषसेन उससन्मुख बर्त्तमान भीमसेनके सन्मुखदौड़ा १८ जो कि दण्डधारी कालके समान गदाधारण करनेवाला आपके शूरोंसे युद्धकर रहाथा औरबड़ाभारी नकुलवृषरूकोंसे शत्रुओंको पीड़ामानकरतादौड़ा१६ युद्धमेंप्रसन्नचित्त उसकर्णकेपुत्र वृषसेनकेसन्मुख ऐसेगया जैसेकि पूर्व्वसमयमें जंभ केमारनेकी इच्छासे इन्द्रउसके सन्मुखगयाथा वहांपहुंचकर बीर नकुलनेक्षुरप्रसे उसकी उसध्वजाको काटाजोकि श्वेतरंगके अपूर्व्व कवचवालीथी २० और सुनहरी चित्रोंसेचित्रित अत्यन्त अद्भुतवृषसेनके धनुषकोकाटा तबतो कर्णके पुत्रने शीघ्रही दूसरे धनुषको लेकर नकुलको छेदा २१ दुश्शासनका बदला लेनेके अभिलाषी कर्णकेपुत्रवृषसेनने दिब्यमहाअस्त्रोंसे नकुलको घायलकिया उसके पीछेक्रोधयुक्त महात्मा नकुलने बड़ीउल्काके समान बाणोंसे उसको छेदा २२ फिर अस्त्रज्ञ कर्णकापुत्र दिव्यअस्त्रोंसे नकुलपर बर्षाकरनेलगा हेराजा वहकर्णकापुत्र बाणोंके प्रहारवा क्रोधवा अपनेतेज अथवा अस्त्रोंके चलानेसे ऐसाअत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसेकि घृत की आहुतियों से बढ़ीहुई अग्निहोतीहै हे राजा कर्णके पुत्रनेअपने उत्तमअस्त्रोंसे नकुलके उनसबघोड़ोंकोमारा २३।२४ जोकिश्वेतरूप बड़ेऊंचे सुनहरीजालोंसे अलंकृतबना युजनामप्रकारकेथे उसकेपीछे मृतक घोड़ेवाले रथ से उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्मल

ढालकोलेकर २५ आकाशरूप खड्गकोपकड़कर चलायमान पक्षी के समानघूमा उस समय अपूर्व्व युद्ध करनेवाले नकुलने शीघ्रतासे अन्तरिक्षमें रथघोड़े और हाथियोंको मारा २६ खड्गसे कटकरवह सब पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसे कि अश्वमेघ यज्ञ में मारनेवाले के हाथसे यज्ञपशु गिरपड़ता है नानादेशों में उत्पन्नहोनेवाले अच्छी जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दो हजार शूरवीर गिरपड़े २७ युद्धमें बिजयाभिलाषी चन्दनसे युक्तशरीरउत्तम शूरबीरलोग अकेले नकुलके हाथसे मारेगये फिरउसन सन्मुख जाकर उसआतेहुयेनकुलकोशायकोंकेद्वारा चारोंओरसे घायलकिया २८ पृषत्कोंसे पीड़ामान उस नकुलनेभी उसबीर को व्यथित किया फिरवहभी व्यथित होकर महा क्रोधयुक्त हुआ बड़े भारी घोरभयमें भी भाई भीमसेन से रक्षित नकुलने यहांभयको नहींकिया २९ फिरक्रोधयुक्त कर्णके पुत्रने बहुतसे मनुष्यघोड़े हाथी और रथों के मर्द्दन करनेवाले पीड़ामान अकेले बीरनकुलको अठारह पृषत्कोंसे पीड़ामान किया ३०हे राजा उस महायुद्धमें वृषसेनसे महाघायल वह बड़ा वेगवान् नर बीरनकुल कर्णकेपुत्रको मारनेकोयुद्धमें दौड़ा ३१ जैसे कि मांसका चाहने वाला पक्षोंको फैलाकर आनेवाले बाजपक्षी को घायलकरताहै उसीप्रकार उसक्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी आनेवाले नकुल को अपने तीक्ष्ण बाणोंसे वृषसेनने ढक दिया ३२ वह नकुल उस के बाणोंकोनिष्फल करताहुआ अपूर्व्वरूपकेमार्गोंमेंघूमा हे महाराज इसके पीछे कर्णके पुत्रने खड्ग समेत उसघूमनेवाले नकुलकीउस हजारों नक्षत्रोंसे चित्रित अपने बड़ेबाणोंसे टुकड़ेटुकड़े करके उस खड्गकोभीकाटा जोकि लोहेसे निर्मित तीक्ष्णधारवाला मियानसे जुदामहाभयानक बड़ेमारको सहनेवाला ३३।३४ शत्रुओंकेशरीरों कानाशकरनेवाला महाघोरसर्पकेसमान उग्ररूपथाउसको उसकर्ण केपुत्रने तीक्ष्णधारवाले उत्तम छः बाणोंसे शीघ्रही काटडाला और नकुलकोछातीपर बड़ेतीव्र पृषत्कोंसे छेदा हेराजायुद्धमें अन्यमनुष्य से कठिनतासे करनेकेयोग्य श्रेष्ठ मनुष्योंसे सेवितकर्मको करकेफिर

बाणोंसेदु:खितमहात्मा ३५।३६ शीघ्रताकरनेवाला नकुलभीमसेनके रथकेपासगया वहमृतकघोड़ेवाला कर्णपुत्रके बाणोंसे व्यथित माद्री नन्दन नकुल अर्जुनकेदेखते भीमसेनकेरथपर ऐसेगया जैसेकिसिंह पर्व्वतकी नोकपर चढ़जाता है उसके पीछे बड़ासाहसी क्रोधयुक्त वृषसेन अपनेबाणोंको दोनोंकेऊपर बरसानेलगा ३७।३८ तबएक रथपर मिले हुये दोनों महारथी पांडवोंने उसकोभी बाणोंसे छेदा फिर शीघ्रही विशिखोंसे रथ और खड्गके खंडित होनेपर ३९ बड़े बीर मिले हुये कौरवोंने सन्मुख आकर पूजीहुई अग्निके समान उन दोनों पांडवों को चारोंओर से बाणोंके द्वारा घायल कियाफिर क्रोधयुक्त भीमसेन और अर्जुनने बड़े घोर बाणोंकी बर्षा वृषसेन परकरी इसके अनन्तर भीमसेन अर्जुनसे बोले कि इस पीड़ामान नकुलको देखो ४०।४१ और यह कर्णका पुत्र हमको पीड़ा देताहै इससे अबतुम उस कर्णके पुत्रके सन्मुख जावो इस बचनको सुन कर वह अर्जुन भीमसेन के रथको पाकर नियत हुआ ४२ इसके पीछे नकुल उस बीरको देखकर बोला कि शीघ्रही इस सन्मुखआ-नेवालेको मारो इसप्रकार भाईके बचनको सुनकर अर्जुन ४३ क-पिध्वज वाले केशवजी को सारथी रखने वाले अपने रथको वृषसे नके घोड़ोंके समीप लाया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनयुद्धे नकुलपराजयोनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

पच्चासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे नकुलको टूटा धनुष खड्ग वाला रथसे रहितशत्रु-ओंके बाणोंसे घायल कर्णके पुत्रके अस्त्रसे पराजित जानकर वह बीर जिनकी पताका बायुसे कंपित और घोड़े शब्दोंको करतेअच्छे शीघ्रगामीथे अपने सेनापतिकी आज्ञासे रथोंकी सवारीसे शीघ्रचले आये १ अर्थात उनके नाम बरिष्ठद्रुपद के पांचोंपुत्रजिनमें छठा सा-त्यकी है और पांचों द्रौपदीके पुत्र यह सब शस्त्रधारी सर्पराजके समान बाणोंसे आपके हाथी रथ मनुष्य और घोड़ोंको मारते चढ़

आये २ इसके पीछे शीघ्रता करने वाले कृपाचार्य्य कृतवर्मा अश्व-त्थामा और दुर्य्योधन यह सब आपके उत्तम रथी उनके सन्मुख गये ३ हे राजा शकुनि, सुतरूप, क्राथ, देवावृद्ध यह आपके वीर रथी हाथी और बादलके समान शब्दायमान रथ और धनुषों समेत उन ग्यारह वीरोंके रोकनेवाले हुये अत्यन्त उत्तम बाणोंसे घायल कर-ते ४ कलिन्द देशी बादल और पर्व्वतके शिखरोंकेसमान भयान-कवेग वाले हाथियों समेत उनके सन्मुख गये और अच्छे प्रकारसे अलंकृत मदसे मतवाले युद्धाभिलाषी कर्मकर्त्ता पुरुषोंसे युक्त ५ सुनहरी जालोंसे अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि आ-काशमें बिजली रखने वाले बादल होतेहैं वहां कलिन्दके पुत्रने दशलोहेके बाणोंसे कृपाचार्य्यको सारथी और घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया ६ इसके पीछे कृपाचार्य्यके बाणोंसे वह मरा हुआ कलिन्दका पुत्र हाथी समेत पृथ्वी पर गिरपड़ा तब उसका छोटा भाई सूर्य्यकी किरण के समान प्रकाशित लोहेके तोमरों से ७ रथ को कंपायमान करके गर्जा इसके पीछे राजा गान्धारने इस गर्जने वालेके शिरको काटा तदनन्तर उन कलिंग देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्न रूप आपके उन महारथियों ने ८ शंखोंको बड़ी ध्वनियोंसे बजाया और धनुषको हाथमें रखनेवाले होके शत्रुओंके सन्मुख गये इसकेपीछे सृंजियों समेत पांडव और कौरवोंका महा घोर भयकारी वहयुद्ध फिर हुआ ९ जोकि बाण खड्ग शक्ति कुधा-रे खड्ग गदा औरफरसोंसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंके प्राणोंकाहर-नेवालाथा इसके अनन्तर हजारों रथ घोड़े और हाथी पदातियों से परस्पर में घायल होकर पृथ्वी परऐसे गिर पड़े १० जैसेकि बिज-ली और गर्जना रखने वाले धुवेंसे युक्त बादल दिशाओं से गिरे उस केपीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पत्तियोंके समूहों को ११ और घोड़ोंको भोजवंशी कृतवर्माने मारा वह सब उसके बाणोंसे मृतक होकर एकक्षणमेंहीगिरपड़े उसकेपीछे अश्वत्थामाके बाणसेसवशस्त्र और ध्वजाओंसमेत घायलशूरवीर १२ और निर्जीव

अन्यबड़े २ हाथीऐसे पृथ्वीपर गिरपड़े जैसेकिबज्र से ताड़ित बड़े२ पर्व्वतगिरतेहैं १३ राजाकलिन्दकेछोटे भाईनेउत्तम बाणोंसे आपके पुत्रको छातीपर घायलकियाफिर आपकेपुत्रोंनेभी अपनेतीक्ष्णबाणों से उसके शरीरसमेत हाथीकोमारा १४ तबवह गजराज उसराजकुमारसमेतसबओरको रुधिरको गेरता ऐसेगिरपड़ा जैसेकिबादलोंके आनेमेंइन्द्रकेबज्रसेटूटाधातुवान पर्व्वतजलकोगिरातागिरपड़े१५ फिर कलिन्दके पुत्रकेभेजे हुये दूसरेहाथीने किरातकोसारथी घोड़े और रथकेसमेतमारा तदनन्तर बाणोंसे घायलहाथी अपने स्वामी समेत ऐसेगिरपड़ा जैसेकिबज्रका माराहुआ पर्व्वत होताहै १६ वह रथमें सवार कठिनतासे बिजयहोनेवाला राजाकिरात हाथी सारथी धनुष और ध्वजासमेत उसहाथीपर सवार पर्व्वतीके बाणों से घायलऐसे गिरपड़ा जैसेकि बड़ीबायुसे ताड़ित और कंपितहोकर बड़ावृक्षहोता है १७ वृकने गिरिराजके रहनेवाले हाथीके सवारको बारह बाणों से अत्यन्त घायलकिया उसकेपीछे उसबड़े हाथीने बड़ी शीघ्रतासे चारोंपैरोंसेघोड़े और रथसमेत वृकको मारा १८ फिरउस बभ्रु के पुत्रकेबाणोंसे कठिनघायल वहगजभी अपनेहाथी सवारसमेत गिर पड़ा सहदेवके पुत्रकेहाथसे घायल और पीड़ामान वहदेव वृद्धका पुत्रभी गिरपड़ा १६ उत्तमयुद्धकर्त्ताओं के ऊपर गिरनेवाले हाथीकी सवारीसे राजाकलिन्दका बिषाणगात्रनामपुत्रभी बड़े वेगसेशकुनि को बहुत कठिनपीड़ित करताहुआ उसके मारनेकोगया उसके पीछे गांधारके राजाशकुनीने उसके शिरकोकाटा २० उससमयउन कलिन्द देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति आपकेअन्य महारथियोंनेशंखोंको अच्छीरीतिसे बजाया और धनुषहाथोंमें लियेशत्रुओंकेसन्मुखगये२१इसकेपीछे कौरवोंकायुद्धपांडव और सृञ्जयों के साथऐसाहुआ जो अत्यन्तभयकारी बाणखड्ग शक्तिदुधारे खड्ग गदा और फरसोंसे रथहाथी और घोड़ोंके प्राणोंका हरनेवाला घोर रूपथा २२ फिरपरस्परमें घायलरथ घोड़े हाथी और पदाती पृथ्वी परऐसे गिरपड़े जैसेकि प्रचंड बायु से ताड़ित बिजली और गर्जना

रखनेवाले बादल दिशाओंसे गिरतेहैं २३ इसके पीछे आपके बड़े हाथीघोड़े रथ और पत्तियोंके समूह सतानीक के हाथसे मारेगये और अचेततासे चूर्ण २ होकरपृथ्वी परऐसे गिरपड़े जैसे कि गरुड़-जीके पंखोंकी बायुसेघायल सर्प गिरतेहैं २४ उसकेपीछे मन्दमुसकान करतेहुये कलिन्दके पुत्रनेबड़े तीक्ष्णबाणोंसे नकुलके बेटोंको छेदाफिरनकुलके पुत्रनेभी क्षुरप्रसेकमलरूपी मुखरखनेवाले उसके शिरको शरीरसेकाटा २५ तबकर्णकेपुत्रनेतीन लोहेकेबाणोंसे सतानीकको और तीनबाणोंसे अर्जुनकोतीनसेभीमसेनको सातसे नकुलको और बारहसे श्रीकृष्णजीको घायलकिया २६ तदनन्तर प्रसन्नचित्त कौरवोंने बुद्धिसे बारह कर्मकरनेवालेकर्णके पुत्रकेउस कर्मको देखकर बड़ीप्रशंसाकरी परन्तुजो अर्जुनके पराक्रमकेजानने वालेथे उन्होंने यहमानाकि अबयह अग्निमेंहोमागया २७ इसकेपीछेनरोंमें बड़ा शूरवीर शत्रुओंके बीरों का मारनेवाला अर्जुन माद्री के पुत्र नकुलको मृतक घोड़े वाला देखकर और लोक में श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल बिचारकर २८ युद्धमेंवृषसेनके सन्मुखदौड़ा तबकर्णका पुत्रउस आनेवाले नरबीर गुरुरूपमहायुद्धमें हजारोंबाणधारण करनेवाले महारथी अर्जुनके सन्मुख ऐसे गया जैसेकि पूर्व्वसमयमें नमुचि महाइन्द्रके सन्मुख गयाथा उसकेपीछे कर्णका पुत्र शीघ्रता पूर्व्वक बड़े तीव्र और स्वच्छ बाणोंसे अर्जुन को छेदकर युद्धमेंऐसे महाशब्द से गर्जा जैसे कि वह महानुभाव बीरनमुचि इन्द्रको छेद कर गर्जाथा फिरउस वृषसेनने उग्रबाणोंसे अर्जुनकी बाम भुजा की जड़मेंछेदा २९।३०।३१ और इसीप्रकार नौबाणोंसे श्रीकृष्णजी कोपीड़ामानकिया इसकेपीछेफिरभी अर्जुन को दशबाणोंसे घायल किया जैसे कि वृषसेनके पहलेबाणोंसे अर्जुनघायलहुआ ३२ और कुछक्रोधयुक्तहुआ फिर दूसरीबारके बाणोंसेउसकेमारने का मनमें बिचारकियाफिरअर्जुनने युद्धमुखपर अपने क्रोधसे ललाटपरभृकुटी को तीनरेखावालीकरके ३३ शीघ्रही बिशिखों को छोड़ा तब युद्धमें कर्णकेपुत्रकेमारनेमेंचित्तको प्रवृत्तकरके बड़ासाहसीनेत्रोंके कोणों को

लाल करके अर्जुन बहुतहंसकरकर्ण दुर्य्योधन और अश्वत्थामाआदि शूरबीरोंसेबोला ३४ हेकर्णअबमें तेरेदेखतेहुये तीक्ष्णधारवाले पृष-त्कोंसे इस उग्ररूप वृषसेनकोपरलोकमें पहुंचाताहूं३५ निश्चयकरके तबतक मनुष्यकहेंगे जोमुझसेपृथक् अकेला यहमेरारथी वेगवान् पुत्रआपसबके हाथसे मारागया इसीसे मैं आपसब लोगोंके समक्षमें इसको मारूंगा ३६ रथोंमें सवार तुमसब मिलकर इसकी अच्छी रीतिसे रक्षाकरो यहउग्ररूप आपका वृषसेनपुत्रहै इसकोमैंमारूंगा इसकेपीछे इसीयुद्ध भूमिमें जो मेरानाम अर्जुन जो तुझ महाअज्ञानी को भी इसीप्रकारसे न मारूं ३७ अबमें युद्ध में तुझ उपद्रवके मूल दुर्य्योधनकी आश्रयतासेअहंकारी होनेवालेको बड़ी हठतासे मारूंगा और इसनीच दुर्य्योधनका मारनेवाला भीमसेनहै ३८ जिसके कि अन्यायसे यह बड़ाभारी बीरोंकानाशहुआ ऐसाकहकर उसने अपने धनुषको तैयारकरके और युद्धभूमि में वृषसेनको लक्षबनाकर ३९ उसबड़े साहसीने कर्णके पुत्रके मारनेकेलिये विशिखनाम बाणोंको छोड़ा हेराजा हंसतेहुये अर्जुनने दशपृषत्कोंसे वृषसेनको मर्मस्थलों में वेधा ४० और क्षुरप्रनाम तीक्ष्णधारबाणोंसे धनुष समेत उसकी दोनोंभुजाओंसमेत शिरकोकाटा अर्जुनके बाणोंसेघायल औरबेशिर होकर वह कर्णकापुत्र रथसे पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ा४१ जैसे किबहुत लम्बा और फूलाहुआ शालकावृक्ष बायुके वेगसे पर्व्वतके शिखरसे गिरपड़े फिर शीघ्रता करनेवाले कर्णने बाणोंसे मरेहुये रथसेगिरते हुये पुत्रको देखकर ४२ शीघ्रही पुत्रके मारनेसे अर्जुनपर क्रोधयुक्त होकर अपने रथको उसके सन्मुखकिया अर्थात् युद्धमें अपनेनेत्रोंके सन्मुख पुत्रको मराहुआ देखकर ४३ वह महासाहसी अत्यन्तक्रोध में मूर्च्छितहोकर अकस्मात् श्रीकृष्ण और अर्जुनकेसन्मुखदौड़ा४४

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनबधोनामपंचाशीतितमो ऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

संजयबोले कि मर्य्यादाके उल्लंघन करनेवाले समुद्रके समान

डौलडौल युक्त उस गर्जनेवाले आयेहुये कर्णको देखकर १ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हंसकर अर्जुनसे बोले कि यहश्वेत घोड़ेवाला शल्यको सारथी बनानेवाला अधिरथी आताहै २ इसकेसाथ तुझको लड़ना चाहिये हेअर्जुन अबदृढ़ होकर नियतहो हेपांडव इसरथको देखो जोकि अच्छे प्रकारसे बनाहुआ ३ श्वेतघोड़ोंसे युक्त राधाके बेटेकी सवारीसे शोभित नानाप्रकारकी ध्वजापताका और क्षुद्रघंटिकाओं के जालोंका रखनेवाला४ और श्वेतघोड़ेरूप आकाशमेंचलनेवाला चित्रबिचित्ररूप आकाशके बिमानके समानहै और महात्मा कर्णके नागकी कक्षाकाचिह्न रखनेवाली ध्वजाकोदेखो ५ और इन्द्रधनुष के समान धनुषसेमानो आकाशमें लिखनेवाले दुर्य्योधनका अभीष्ट चाहनेवाले बाणोंकी वर्षासेयुक्त आतेहुयेकर्णको ऐसेदेखो जैसे कि जलकीधाराओंके छोड़नेवाले बादलको देखतेहैं रथके आगे नियत यह मद्रदेशकाराजा ६।७ उसबड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ोंको हांकताहै दुंदुभियों और शंखोंकेभयानक शब्द८और नानाप्रकारके सिंहनादों का सब ओरसे सुनो हेपांडव बड़े तेजस्वी कर्णकेद्वारा बड़े २ शब्दों को गुप्तकरके६ कठोर कंपायमान धनुषके शब्दकोसुनो यह पांचालों के महारथी अपने सेनासमूहों समेत छिन्नभिन्नहोकर ऐसेपृथक्होते हैं जैसेकिमहाबनमें क्रोधयुक्त केशरीसिंहकोदेखकर छिन्नभिन्नहोकर मृगपृथक् होतेहैं हेअर्जुन तुमसब उपायोंसे कर्णके मारने के योग्य हो१०।११तुम्हारे सिवाय दूसरामनुष्य कर्णकेबाण सहनेकीसामर्थ्य नहीं रखताहै देवता असुरगंधर्ब और जड़चैतन्यजीवोंसमेततीनोंलो-कके१२बिजय करनेको तुम्हींसमर्थहो यहमैंनिश्चय जानताहूंकिउस भीम उग्ररूप महात्मात्रिनेत्रधारीकपर्द्दी प्रभुशिवजीके १३ देखनेको भीकोईसमर्थ नहींहोसक्ताहै फिरयुद्धकरनेकी किसको सामर्थ्य होस कीहैतुमनेसब जीवमात्रके कल्याण रूप साक्षात् महादेवजीकी युद्ध केहीद्वाराआराधनाकरी १४ और देवताभी तुझको बरदेनेवालेहैं हे महाबाहो अर्जुन उसदेवताओंकेभी देवता शूलधारी शिवजीकी कृ-पासे १५ तुम कर्ण को ऐसेमारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको माराथा

हेअर्जुन सदैव तेरा कल्याण होय तूयुद्ध में बिजयको पावेगा १६ अर्जुनने कहा हेकृष्णजी जो सबलोक के गुरू और स्वामी आप मेरेऊपर प्रसन्नहैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य बिजयहै इसमेंकिसी प्रकार का सन्देह नहींहै १७ हेमहारथी श्रीकृष्णजी मेरे रथ और घोड़ोंको चलायमान करो अब अर्जुन कर्णको बिनामारे हुये युद्धसे नहीं लौटेगा १८ हेगोबिन्दजी अबमेरे बाणोंसे कर्णको मृतक और खंड २ देखोगे अथवा कर्णके बाणोंसे मुझको मृतक और खंड खंड देखोगे १६ यह तीनों लोकोंका मोहने वालाघोर युद्ध अब वर्त्तमानहुआ जिसको पृथ्वी जबतक रहैगी तबतकमनुष्य बर्णनकरेंगे २० तब सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा कहता हुआ अर्जुन रथकी सवारी के द्वारा ऐसी शीघ्रतासे सन्मुख गयाजैसे कि हाथीहाथीकेसन्मुख जाताहै २१ तेजस्वी अर्जुन फिरभीशत्रु संहारी श्रीकृष्णजी से बोलाकि हे हृषीकेशजी आप शीघ्र घोड़ोंको तीव्रकरो यह समय व्यतीत हुआ जाताहै २२ उस महात्माअर्जुनके इसबचन के कहतेही श्रीकृष्णजी ने उसको बिजय का आशीर्बाद देकर चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को तीक्ष्ण किया २३ चित्त के समान शीघ्रगामी वह अर्जुनका रथ क्षणमात्रमेंही कर्ण के रथसे आगे होगया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णबधायअर्जुनप्रस्थानेषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वृषसेनको मृतक देखकरशोक संतापसेयुक्तकर्ण ने पुत्रकेशोकसे उत्पन्न होनेवाले जलको नेत्रोंसे छोड़ा १ फिरक्रोध से रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्धके निमित्त अर्जुनको बुलाता रथकीसवारीके द्वारा शत्रुके सन्मुख गया २ सूर्य्यके समान प्रकाशमान व्याघ्र चर्मसे मढ़ेहुये वहदोनों और दोनोंके रथमिले हुयेऐसे दिखाईदिये जैसे कि आकाशमें वर्त्तमान दो सूर्य्य होयँ ३ वहशत्रुओं के मर्दन करने वाले दिव्य पुरुष श्वेतघोड़े वाले दोनों महात्मा युद्धभूमि में

नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्गमें चन्द्रमा और सूर्य्य शोभादेते हैं ४ हेश्रेष्ठ तीनोंलोक के बिजय करनेमें उपाय करनेवाले इन्द्र और बैरोचन असुरके समान उनदोनोंको देखकर सबसेनाके मनुष्योंको बड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ५ रथ कवच प्रत्यंचा और बाणोंके शब्द और इसीप्रकार सिंहनादों समेत सन्मुख दौड़ने वाले उन रथियोंको देखकर ६ और मिली हुई ध्वजाओंकोभी देख कर राजाओं को आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ गजकी कक्षाकेचिह्न वाली कर्णकी ध्वजा और हनुमानजी के रूपकी धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजाथी ७ हे भरतबंशी फिर सब राजाओंने उन मिलेहुये रथि योंको देखकर सिंहनाद पूर्व्वक बड़ी प्रशंसाकरी ८ वहांपर हजारों शूरबीरोंने उनदोनों के साथमें द्वैरथ युद्धको देखकर भुजाके शब्द अर्थात् खंभोंको फटकार कर डुपट्टोंको घुमाया ६ और कर्णके प्र- सन्न करने को कौरव लोगोंने चारोंओर से बाजोंको बजाकार सब ने शंखोंको बजाया १० इसीप्रकार अर्जुनको प्रसन्नताके लियेसब पांडवोंने तुरी और शंखके शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ११ सिंहनाद तालोंका ठोकना शूरोंका पुकारना और शूरोंकी भुजाओं के महाकठोर शब्द अर्जुन और कर्णकी सन्मुखता में सब ओरको हुये १२ हेराजा उन रथपर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़ेधनुष धारी बाण शक्तिध्वजासे युक्त १३ कवच खड्गधारी श्वेत घोड़ों समेत मुखोंसे शोभायमान उत्तम तूणीर बांधे सुन्दर दर्शन १४ लालचन्दन से अलंकृत सुन्दर शरीर उत्तम मतवाले बैलों के समान धनुष और ध्वजारूपी बिजुलीसेयुक्त घनरूपी शस्त्रोंसेयुद्धक- रनेवाले १५ चमर और व्यजनोंसेयुक्त श्वेतछत्रोंसे शोभितश्रीकृष्ण औरशल्यको सारथी रखनेवाले एकसेरूप महारथी १६ सिंहकेस- मान स्कन्धलम्बी भुजा रक्तनेत्रसुवर्णकी मालाओंसे भूषित सिंहके समानशरीर बड़ेहृदय और पराक्रमवाले परस्पर एकदूसरेका मरण चाहनेवाला दोनों परस्पर बिजयाभिलाषी गोशाला में उत्तमबली बैलोंकेतुल्य परस्पर सन्मुख दौड़नेवाले मतवाले हाथियोंके और

पर्व्वतोंके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त १७।१८ बिषैले सर्पके बच्चोंके समान यमराजकाल और मृत्युके समान इन्द्रसज्के समान क्रोधी सूर्य्यचन्द्रमाकेसमान तेजस्वी १६ प्रलयकालकेलिये उठेहुये महा ग्रहोंकेसमान क्रोधमेंभरे देवकुमार देवताकेसमान पराक्रमी रूप में भी देवरूप दैवकोइच्छासे सूर्य्यचन्द्रमाके समान सन्मुख आनेवाले पराक्रमी युद्धमें अभिमानी लड़नेमें नानाप्रकारके शस्त्रोंकेरखनेवाले २०।२१ शार्दूलोंके समान नियतउनदोनों पुरुषोत्तमोंको देखकर आपके शूरवीरोंको बड़ाआनन्दहुआ २२ भिड़ेहुये पुरुषोत्तम कर्ण और अर्जुनको देखकर पूरोबिजयमें सबजीवोंको सन्देह बर्त्तमान हुआ २३ दोनोंउत्तम शस्त्रधारी और युद्ध में परिश्रम करनेवालों ने भुजाओंकेशब्दोंसे आकाश मंडलको शब्दायमान किया २४ दोनों बीरता और पराक्रमसे प्रसिद्धकर्मी और समरमें देवराज और संबरकेसमानथे २५ फिरदोनों सहस्रबाहुकेसमान वा श्रीरामचंद्रजी केतुल्य पराक्रमी और उसीप्रकार युद्धमें शिवजीकेसमान पराक्रमी थे २६ हेराजादोनों श्वेतघोड़ेवाले उत्तमरथोंकी सवारी रखनेवाले थे और उस बड़ेयुद्धमें दोनोंके श्रेष्ठतर सारथीथे २७ हेमहाराजइस केअनन्तर उनशोभायमान महारथियोंकोदेखकर सिद्धचारणलोगों केसमूहोंकोभी आश्चर्य्य उत्पन्नहुआ २८ हेभरतर्षभ इसकेपीछेसेना समेत आपके पुत्रोंने युद्धको शोभा देनेवाले महात्माकर्णको शीघ्र ही चारोंओरसे घेरकर रक्षितकिया २६ इसीप्रकार प्रसन्नरूपपांडवोंनेभी जिनके अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा उसयुद्धमें अनुपममहात्मा अर्जुनको चारोंओरसे रक्षितकिया ३० हेराजा तबयुद्धमें आपकेपुत्रोंका रक्षक कर्णहुआ और पांडवोंका रक्षक अर्जुनहुआ ३१ वहांपर वहीसब बर्त्तमान शूरसभासदहुये और वही देखनेवालेहुये वहां इनरक्षा करनेवालोंको बिजय और पराजय निश्चयहुई युद्धकेअग्र भागमें वर्त्तमान पांडव और हम लोगों का बिजय और पराजय वाला द्यूत उनदोनोंशूरबीरोंके द्वारा जारीहुआ ३२।३३ हेमहाराज वह युद्धभूमिमें युद्धमें प्रशंसनीय परस्पर क्रोधभरे परस्परकेमारने

की इच्छासे नियतहुये ३४ हे प्रभु वहदोनों क्रोधरूप इन्द्र औरवृ-
त्रासुरके समान प्रहारकरनेके उत्सुकहुये और बड़े धूम्रकेतुउपग्रहों
केसमान भयानकरूप धारीहुये ३५ हेभरतर्षभ इसकेपीछेकर्णऔर
अर्जुनकेबिषयमें अन्तरिक्षमें जीवोंके पररूपर में निन्दा स्तुतिकरने
के शास्त्रार्थरूप बादहुये ३६ पिशाच सर्प औरराक्षस दोनोंओरको
परस्परमें सुनेगये ३७ उनसबोंने कर्ण और अर्जुनके पक्षपातों में
चित्तकोप्रवृत्तकिया स्वर्ग उसकर्णकी ओरके पक्षमें नियतहुआ ३८
और पृथ्वी माताके समान अर्जुनकी बिजय चाहनेवालीहुई इसी
प्रकार पर्व्वतसमुद्र नदीभी जलोंसमेत अर्जुनके पक्षपातीहुये वृक्ष
और औषधियांभी अर्जुनकेही पक्षमेंहुयेयहसबपरस्परदोनोंओरोंको
सुनेगये हेशत्रुसंतापी धृतराष्ट्र असुर,यातुधान और गुह्यक ३९।४०
इन स्वरूपवानों ने चारोंओरसे कर्ण को प्राप्तकिया मुनि,चारण,
सिद्ध,गरुड़,पक्षी ४१ रत्न,सबखाने,चारों वेद जिनमें पांचवां इति॰
हासहै उपवेद,उपनिषद,रहस्य और संग्रहसमेतबासुकी, चित्रसेन,
तक्षक,पन्नग, सब कद्रू के पुत्रसर्प ४२।४३ और विषैलेसर्पयहसब
अर्जुनकी ओर हुये ऐरावतबंशी, सुरभीबंशी, वैशाली, भोगीनाम,
सर्प ४४ यहसब अर्जुन की ओर हुये और नीच सर्प कर्णकी ओर
हुयेईहामृग,व्यालमृग औरमंगली पशुपक्षी यहसब ४५ अर्जुनकी
बिजयमें प्रवृत्त चित्तहुये आठोंवसु,ग्यारहोंरुद्र,साध्यगण,मरुद्गण,
विश्वेदेवा, दोनोंअश्विनीकुमार ४६ अग्नि,इन्द्र,चन्द्रमा,दशोंदिशा,
बायुयहसब अर्जुनकी ओरहुये और बारहसूर्य कर्णकी ओरहुये ४७
हेमहाराज तब वैश्य शूद्र सूत औरजोजो किसंकर जातिवालेहैं इन
सबने कर्णको सेवनकिया ४८ पीछे चलनेवाले समूहों समेत पित
रोंसे युक्त देवता यमराज और कुबेरअर्जुनकीओर हुये ४९ब्राह्मण
क्षत्री यज्ञ दक्षिणा अर्जुनकी ओरहुये प्रेतपिशाच मांसभक्षी राक्षस
आदि पशु पक्षी ५० और जलके जीव,श्वान शृगाल कर्णकी ओर
हुये देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियोंकेसमूह पांडवोंकी ओरहुये ५१
हेराजा और तुम्बर आदि गन्धर्वभी अर्जुनकी ओर हुये मनुके पुत्र

गन्धर्व और अप्सराओंके समूह कर्णकी ओरहुये ५२ भेड़ियेआदि पशु और पक्षियोंके समूह हाथी घोड़े रथ और पति इसीप्रकार मेघ वायुपर आरूढ़ ऋषिलोग ५३ कर्ण और अर्जुनके युद्ध के देखने की इच्छासे आये देवता दानव गन्धर्व नाग यक्ष गरुड़ आदि ५४ और वेदज्ञ महर्षी लोग स्वधाके भोजनकरनेवाले पितर और अनेक प्रकारके रूप पराक्रमोंसे युक्त तप विद्या औषधी ५५ हेमहाराज यह सब शब्दों को करते हुये आकाशमें नियतहुये ब्रह्मर्षि और प्रजापतियों समेत ब्रह्माजी ५६ औरबिमानपर बिराजमान शिवजी उस दिव्य देशको आये तब उन भिड़ेहुये महात्मा कर्ण और अर्जुन को देखकर ५७ इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्णको मारकर बिजय करो और सूर्यदेवताने कहा कि कर्ण अर्जुनको बिजयकरो ५८ मेरा पुत्र कर्ण युद्धमें अर्जुनको मारकर बिजय करे और इन्द्रने कहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्णको मारकर बिजयकरे ५९ वहां देवताओंमें श्रेष्ठ पक्षपातमें युक्त इनदोनोंसूर्य और इन्द्रका परस्परबादहुआ ६० हे भरतवंशी देवता और असुरों के दोपक्ष हुये भिड़े हुये उनदोनों महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर देवता सिद्ध चारण आदिक समेत तीनोंलोक कंपायमान हुये ६१ सबदेवताओं के गण और जीवमात्र जितनेहैं उनमें देवता अर्जुनकी ओरहुये और असुर कर्ण कीओरहुये ६२ देवताओंने कौरव और पांडवोंके बीरमहारथियोंके दोनों पक्षोंको देखकर स्वयंभू ब्रह्माजीसेकहा कि हेब्रह्माजी महाराज इनकौरव और पांडवोंके दोनों युद्ध कर्त्ताओं में किसकी बिजय होगी हेदेव इनदोनों नरोत्तमोंकी बारंबार बिजयहोय ६३।६४हेप्रभू ब्रह्माजीकर्ण और अर्जुनके बिबाद युद्धसे सबजगत् संदेहयुक्तहैइन दोनोंकी बिजयको सत्यसत्य हमसेकहियेहेब्रह्माजीआप इसीबचन कोकहिये जिसमें इनदोनोंकी बिजय समानहो इनबचनोंकोसुनकर पितामहजीको प्रणामकरके ६५।६६ बड़ेज्ञानी इन्द्रने देवताओंके ईश्वर ब्रह्माजी को यहजतलाया किप्रथम आप भगवान्नेश्रीकृष्ण औरअर्जुनकी पूर्णबिजयवर्णनकरीवहजैसा आपने कहाहैवैसेहीहोय

में आपको नमस्कार करताहूं आप मुझपर प्रसन्न हूजिये इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्रसे यह बचन बोले ६७। ६८ कि इसमहात्मा अर्जुनकीही निश्चय विजय होगी जिस अर्जुनने कि खांडवबन में अग्निको प्रसन्नकिया और हे इंद्र उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायताकरी और कर्ण दानवोंके पक्षमें है इसहेतुसे वह पराजय होनेके योग्यहै ६९। ७० ऐसा करने से देवताओंका कार्य्य निश्चय होताहै हे देवराज सबका निजकार्य्य बड़ा है ७१ महात्मा अर्ज्जुनभी सदैव सच्चे धर्म्म में प्रीति रखनेवाला है इसी की अवश्य विजयहोगी इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहीं है ७२ और जिसने भगवान् महात्मा शिवजीको प्रसन्नकिया हे इन्द्र उस की विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी ७३ जगत् के प्रभु विष्णु भगवान् ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अस्त्रज्ञ तपोधन ७४ बड़ा तेजस्वी सबगुणोंसे युक्त अर्जुन संपूर्ण धनुर्वेदको धारणकरताहै इसीसे यह देवताओंका कामहोगा ७५ पांडव सदैवसे बनबास आदिसे दुःखपातेहैं तपसे युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन ७६ अपनी प्रतिष्ठा से बांछित मनोरथोंकी अमर्य्यादाओं को उल्लंघन करे उसके उल्लंघन करनेपर लोकों का अवश्य नाश होजाय ७७ क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनकी पराजय कहीं नहीं वर्त्तमानहैं यह दोनों पुरुषोत्तम सदैव से संसार के स्वामीहैं अर्थात् इन दोनों परमात्मा और आत्मा के तेज से सब जगत् प्रकट होताहै ७८ यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियोंमें श्रेष्ठ अजय सबके ऊपर मुख्यहैं इसीहेतु से यह दोनों शत्रुओंके संतप्त करनेवाले हैं ७९ स्वर्ग मर्त्य पाताल इन तीनों लोकोंमें इन दोनोंके समान कोई नहीं है ८० सब देवगण और जीवोंके गण जितनेहैं इन सब समेत सबसंसार इन दोनोंसे मिल कर उन्हींके प्रभावसे प्रकट होताहै ८१ यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकोंको पावे क्योंकि यह सूर्यका पुत्र और बड़ा शूरबीरहै परन्तु श्रीकृष्ण और अर्जुनकी विजय होय ८२ यह कर्ण बसुओं की सा-

लोक्यता को और मरुद्गणोंकेस्थानोंको पावे औरद्रोण वा भीष्म-
पितामह के साथ स्वर्गलोकको पावे ८३ देवताओंके देवता ब्रह्मा
जी और शिवजीके इस बचनको सुनकर इन्द्रने सब जीवमात्रों को
समझाकर ब्रह्माजी और शिवजीके आज्ञारूपइसबचनकोकहा ८४
कि हे सब जीवमात्रो आप सबलोगों ने सुना जो जगत्के हित-
कारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजीने कहा है वह वैसाही होगा
इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्संदेहरहो ८५ हे श्रेष्ठ राजा
धृतराष्ट्र सब जीव इन्द्रके इसवचनको सुनकर आश्चर्य युक्त हुये
और इन्द्रका पूजन किया और देवताओंने प्रसन्नचित्त होकर सुग-
न्धित पुष्पोंकी वर्षाकरी और नानारूपके देवताओं के बाजों को
बजाया ८६।८७ इन दोनो नरोत्तमोंको अनूपम द्वैरथ युद्धके देखने
कीइच्छासे देवता दानव औरगन्धर्व सब नियतहुये ८८ उनदोनों
महात्माओंके वह दोनों दिव्यरथ श्वेतघोड़ोंसे युक्तथे जिनपर यह
दोनों महात्मा सवारथे ८९ सन्मुखआयेहुये लोकोंकेवीरोंनेअपने २
शंखोंको पृथक् २ बजाया हे भरतबंशी फिर बासुदेवजीअर्जुन कर्ण
और शल्यने भी शंखोंको बजाया ९० तब परस्पर ईर्षा करनेवाले
दोनों वीरोंका युद्ध भयानकों का भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ
जैसे कि इन्द्र और संवर दैत्यका युद्ध हुआथा ९१ उन दोनों की
निर्मल भुजारथपर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि
संसारकी प्रलयहोनेके समयमें आकाशमें उदयहोनेवाले राहु और
केतु होतेहैं ९२ विषवाले सर्पकी समान रत्नसार से जटित बड़ी
दृढ़ इन्द्र धनुषके समान हाथीकी कक्षाकेचिह्नवाली कर्णकी ध्वजा
शोभा देरही थी ९३ और खुले मुखवाले यमराजके समान बिक
राल दंष्ट्रावाले हनुमान्जीसे शोभितअर्जुनकी ध्वजा ऐसी भयकारी
देखने में आती थी जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणोंसे दुःख से देखने
के योग्य होता है ९४ गांडीव धनुषधारीकी ध्वजामें से युद्धाभि-
लाषीहनुमान्जी अपने स्थानसे उछलकर कर्णकी ध्वजापर नियत
हुये ९५ बड़े बेगवान् हनुमान्जीने उछलकर कर्णके ध्वजाकी नागक-

क्षाको अपने दांत और नखोंसे ऐसे घायलकिया जैसे कि सर्पको
गरुड़ करताहै ९६ इसकेपीछे क्षुद्रघंटिका और भूषण रखनेवाली
कालपाशके समान अत्यन्त क्रोधरूप वह नागकीकक्षा हनुमान्जी
की ओर दौड़ी ९७ तब उनदोनोंका अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्धहो
नेपर उनदोनों ध्वजाओंने प्रथम वा उत्तम युद्धके ९८ परस्पर
ईर्षाकरनेवाले घोड़ोंसे घोड़ोंको हिंसन किया और कमललोचन
श्रीकृष्णजीने नेत्ररूप बाणोंसे शल्यको छेदा ९९ इसीप्रकार शल्य
नेभी श्रीकृष्णजी को देखा वहां वासुदेवजीने नेत्ररूपी बाणोंसे
शल्यको बिजयकिया १०० और कुंतीकेपुत्र अर्जुननेभी कर्णकोदेख
कर बिजयकिया इसके पीछे सूतपुत्र कर्णने शल्यसे समक्षहोकर
मंदमुसकान समेत यह बचनकहा १०१ कि अब युद्धमें किसीसमय
पर जो कदाचित् अर्जुन मुझको मारडाले तब हेशल्य तुम क्याकरो
गे यह सत्य सत्य हमसेकहो १०२ शल्यनेकहा कि जो श्वेतघोड़े
वाला अर्जुन तुझको युद्धमें मारडालेगा तोमें एकही रथकेद्वारा उन
दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा १०३ संजयबोले कि इसी
प्रकार अर्जुन ने गोबिन्दजी से कहा तब श्रीकृष्णजी ने भी हंसकर
उस अर्जुन से यह सत्य २ बचनकहा १०४ कि हेअर्जुन चाहैसू-
र्य्य अपने स्थानसे गिरपड़े और समुद्रभी सूखजाय और अग्निशी-
तलताको पावे परन्तु कर्ण तुझको नहीं मारसक्ताहै १०५ जो यह
किसीप्रकारसे होजाय और इनलोगोंका निवासहोय तोमैंकर्णऔर
शल्यको युद्धमें अपनी भुजाओंसेही मारडालूंगा १०६ श्रीकृष्णजी
के इसबचन को सुनकर हंसते हुये कपिध्वज अर्जुन ने उनसुगम
कर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तर दिया कि १०७ हेजनार्द्दन जी जब
आपकी मेरेऊपर ऐसी कृपाहै तोकर्ण और शल्य मुझकोयुद्धमें बि-
जय करने को असमर्थ हैं हेश्रीकृष्णजी अब युद्धमें मेरेहाथके बाणों
से पताका ध्वजा शल्य रथ घोड़े छत्र कवच शक्ति बाण और धनुष
सहित बहुतप्रकार से घायल हुये कर्णको देखोगे १०८ । १०९
अबहीं रथ घोड़े शक्ति कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छीरतिसे

चूर्ण होगा जैसे कि बनमें हाथीसे वृक्षोंका चूर्ण होताहै ११० अब कर्णकी स्त्रियोंको वैधव्यता अर्थात् विधवापना प्राप्तहुआ हेमाधव जी निश्चय करके उन स्त्रियोंने सोतेहुये अशुभ स्वप्नोंको देखाहोगा १११ अभी आप कर्णकी स्त्रियोंको बिधवा देखेंगे क्योंकि वह मेरा क्रोध शान्त नहीं होताहै जो इस प्रकार से हमको हँसकर और बारंबार हमारी निन्दा करके इस अज्ञानीअदीर्घदर्शी ने पूर्व्व समयमें सभामें वर्त्तमानद्रौपदीको देखकर कर्मकियाथा ११२।११३ हे गोबिन्दजी अब मेरे हाथसे मथनकिये हुये कर्णको ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथीसे मर्द्दन कियाहुआ पुष्पित वृक्ष होताहै हे मधुसूदनजी अब कर्णके पछाड़नेपर उनमधुर बचनोंकोआप सुनेंगे कि हे श्रीकृष्णजी आप प्रारब्धसे बिजय करतेहो ११४।११५ हे जनार्द्दनजी अब आपअत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्युकी माताको और अपनी फूफी कुन्तीको विश्वास युक्तकरोगे ११६ हेमाधवजी अब तुम अमृतके समान बचनोंसे अश्रुओंसे पूरित मुखवाली द्रौपदीकोऔरधर्मराजयुधिष्ठिरकोबिश्वासयुक्तकरकेशान्तकरोगे ११७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकृष्णार्जुनसंबादेद्वैरथयुद्धे सप्ताशीतितमोऽध्यायः८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

संजयबोलेकिआकाशदेवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व और अप्सराओंके समूहोंसे और राजऋषि ब्रह्मऋषि औरगरुड़सेसेवितहोकर अपूर्व्व शोभितहुआ१ और सबमनुष्य और पक्षियोंनेनाना प्रकारकेबाजेगान प्रशंसानृत्यहास्य और अनेकचित्तरोचक शब्दोंसे अन्तरिक्षको अपूर्व्वरूपका शब्दायमानदेखा २ तदनन्तर बाजेशंख और सिंहनादोंके शब्दोंसेपृथ्वी और दिशाओंको शब्दायमानकरते अत्यन्तप्रसन्नचित्तकौरवी और पांडवीसेनाकेशूरबीरोंनेसबशत्रुओंको मारा३तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़े हाथी और रथोंसेव्याप्त बाणखड्ग शक्ति और दुधारेखड्गोंकेप्रहारोंसे महाअसह्य और निर्भयशूरवीरों से सेवित वा मृतकयोद्धाओंसे पूरित होकर रक्तबर्णको धारणकिये

अत्यन्त शोभायमानहुई ४ इसरीतिसेकौरव और पांडवोंका ऐसायुद्ध हुआ जैसे कि असुरोंका और देवताओंका हुआथा इसप्रकारमहाभय कारी घोरयुद्ध के जारीहोनेपर अर्जुन और कर्णके महातीक्ष्ण सीधे चलनेवालेअच्छे अलंकृत उत्तम शायकोंसे दिशाओंसमेतसंपूर्णसेना ढकगई तदनन्तरअन्धकार होजानेपरआपके और पांडवोंके युद्धकर्त्ता ओंनेकुछभी नहींदेखा ५। ६ रथियोंमेंश्रेष्ठ वहदोनोंकर्ण और अर्जुन भयसे दुःखी होकर सन्मुखहुये फिर सबओरसे अपूर्व्व युद्ध हुआ अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय बायुके समानपरस्पर में अस्त्रोंसे अस्त्रोंको हटाकर७ ऐसेशोभायमानहुयेजैसे कि बादलोंसे अन्धकार होजाने पर उदयहोनेवालेसूर्य्य और चन्द्रमा हटनानहीं चाहते इसनियमसे प्रेरितआपके और पांडवोंके शूरबीर लोग सन्मुख नियत हुये८वह दोनोंमहारथी नरोत्तम सबओरसेघेरकरमृदंगभेरीपणवऔर आनक नामबाजोंके और सिंहनादोंके शब्दोंकेद्वाराऐसेशब्दवालेहुयेजैसे कि देवताअसुरसंबर और इन्द्रहुयेथे ६ तबवहदोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुष मंडलमें वर्त्तमान बड़ेतेजस्वी बाणरूप हजारोंकिरणोंके रखनेवाले होकरऐसे शोभायमान हुयेजैसेकि बादलोंके शब्दोंसे चन्द्रमा और सूर्य्यहोतेहैं १० वहदोनों प्रलयकालके सूर्य्यके समानयुद्धमें कठिन तापूर्व्वक सहने के योग्य जड़चैतन्यों समेत संसार के भस्मकरने के इच्छावान् महाअजेय शत्रुओंका नाशकरनेवाले परस्पर में मारने के अभिलाषी ११ कर्ण और अर्जुन निर्भयता पूर्व्वक उसबड़े युद्धमें ऐसेसन्मुखहुये जैसे कि महाइन्द्र और जंभसन्मुखहुयेथे उसके पीछे बड़े धनुषधारी भयके उत्पन्न करनेवाले बाणोंके द्वारा बड़े अस्त्रोंको छोड़तेहुये१२ दोनों महारथियोंने बहुतसे मनुष्यघोड़े और हाथियों समेत परस्परमें एकनेदूसरेको घायलकिया हेराजा इसकेपीछे उन दोनों नरोत्तमोंसे पीड़ामान कौरवीय और पांडवीय मनुष्यहाथीपति घोड़े और रथोंसेयुक्त ऐसेदशोंदिशाओंमेंभागे जैसे कि सिंहसेघायल हुये बनबासी जीवभागतेहैं इसके पीछे दुर्य्योधन,कृतबर्मा,शकुनि, कृपाचार्य्य और शारद्वतका पुत्र इन पांचों महारथियों ने शरीरके

छेदनेवाले बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया तब अर्जुननेउनके धनुष, तूणीर,ध्वजा,घोड़े ,रथ और सारथियों समेत १३।१४।१५चारोंओर से इन शत्रुओंको मथनकरके शीघ्रहीउत्तम बारह बाणोंसे कर्ण को घायलकिया इसके पीछे शीघ्रताकरनेवाले मारनेके अभिलाषी लोग सम्मुखदौड़े और अर्जुनके मारनेके उत्सुक सौ रथ सौ हाथी १६ और अश्व सवार शक,तुषार,यवन, कांबोज देशियों समेत इन सबोंनेहाथोंमें क्षुरप्र लेकर सबशस्त्रोंको काटकर शिरोंकोभी काटा उससमय वहां अनेकशिर पृथ्वीपर गिरपड़े १७ तब उसयुद्धकरनेवाले अर्जुननेघोड़े हाथी और रथोंसमेत उनशत्रु-ओं के समूहोंको काटा इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओंने इन दोनोंकी कीर्त्ति समेत बाजोंसे स्तुति करी १८ और आकाशसे सु-गन्धित पुष्पोंकी वर्षा होनेलगी तब उस आश्चर्य्य को देखकर देवता और मनुष्योंके समक्षमें सब जीवमात्र अचंभासा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्णने न पीड़ाकरी न आश्चर्य्य को पाया इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथ से हाथको मलकर आपके पुत्रसे बोले १९।२० हेदुर्योधन अब तू प्रसन्नहोकर पांडवोंसे सन्धिकर लड़नात्यागो और युद्धको धिक्कार है। बड़े अस्त्रज्ञ ब्रह्माजीके समान गुरूजी और वैसेही भीष्म सरीखे प्रतापी वीर मारेगये २१ मैं और मेरा मामा चिरंजीवी हैं पांडवों समेत तुम बहुतकाल तक राज्यकरो मुझसे निषेध किया हुआ अ-र्जुन सन्धिको करताहै और श्रीकृष्णजीभी शत्रुताको नहीं चाहते हैं२२ युधिष्ठिर सदैव जीवधारियोंके मनोरथोंमें प्रवृत्तहै और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेवभी मेरे स्वाधीनहैं तेरी इच्छा से पांडवोंसे और तुझसे सन्धि होनेपर प्रजालोगों का क-ल्याण होगा और सुखको पावेंगे बाकी बचेहुये बांधवलोग अपने२ पुरोंकोजांय और सेनाके मनुष्यभी युद्ध करना छोड़ें हे राजा जो मेरे वचन को नहीं सुनोगे तो निश्चय जानो कि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखोंको पावोगे २३।२४ तेरे साथ

सब जगत्ने देखा जो अकेले अर्जुनने किया ऐसा कर्म न यमराज न इंद्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षोंका राजा कुबेरभी नहीं करसक्ता है २५ अर्जुन अपनेगुणोंसे इनसबसेभी अधिकहै परंतु वह मेरेकिसी बचनकोभी उल्लंघन नहींकरेगा अर्थात् मेरेकहनेको अवश्यकरेगा और सदैव तेरेपीछे चलेगा हेराजेन्द्र तुम प्रसन्नहोकरशांततामेंयुक्त होजावोतुझमें मेरासदैवबड़ामनहै इसीहेतुसे मैं बड़ी शुभचिन्तकता से अर्थात् तेरेभलेकेलिये तुझसेकहताहूं जबआप मृदुहोगे तबमैं कर्ण कोभी निषेधकरूंगा२६।२७पंडितलोग साथउत्पन्न होनेवालेकोमित्र कहतेहैं इसीप्रकार प्रीति औरधनके द्वाराप्राप्त होनेवालाऔरअपने प्रतापसे नम्रीभूतहोनेवालेको मित्रकहतेहैं यहचारप्रकारकीमित्रता है वहतेरी चारोंप्रकारकी मित्रता पांडवोंमेंहै२८हेप्रभुतेरी उत्पत्तिसे तोतेरेबांधवहैंप्रीतिसमेत उनकोप्राप्तकरो औरतेरीप्रसन्नतासे अर्थात् आधाराज्य देनेसे जो मित्रहोजायं उस दशामेंतेरे कारणसे जगत् का बड़ाहित होगा उस शुभचिन्तक के ऐसे हितकारी बचनों को सुनकर वह दुःखीचित्त दुर्य्योधन बहुत शोचसेश्वासोंकोलेकरबोला हे मित्र जैसा आपनेकहा वहसब इसीप्रकारहै परंतुमुझजतानेवाले केभी बचनोंको सुनो कि २९। ३० इस दुर्बुद्धी भीमसेनने शार्दूलके समान अपना हठकरके दुश्शासनको मारकर जो बचनकहा है वह मेरे हृदयमें नियतहै यह सब आपके समक्षमेंही हुआहै कैसे शान्ती होसक्तीहै ३१ अर्जुनभी युद्धमें कर्णको ऐसेनहीं सहसकेगा जैसे कि कठोरपवन मेरुनाम पर्व्वतकोनहीं सहसक्ताहै कुन्तीकेपुत्र हठकरके और बहुधा शत्रुताको शोचकर मेराबिश्वास नहींकरेंगे हेगुरूजीके पुत्र तुम अजेयहोकर इसबातको कर्णसेकभीनकहिये कि तुम युद्धको त्यागदो अबअर्जुन बहुतथकावटसे युक्तहै इसीसेयहकर्ण बड़े हठसे उसको मारेगा३२।३३आपकेपुत्रने उससेऐसाकहकर और बारंबार समझाकर अपनेसेनाके लोगोंको आज्ञादी कि तुमहाथोंमें बाणोंको लेलेकर मेरे शत्रुओंकेसन्मुखजावो क्यामौन होकर नियतहो ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाहितबर्णनेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥

नवासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा आपके पुत्रके दुर्मन्त्रित होने वा शंख और भेरीके शब्दोंकी आधिक्यतासे श्वेतघोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्य्यकापुत्र कर्णदोनोंऐसे सन्मुखहुये जैसेकि मदझाड़नेवाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्व्वतके उत्पन्न बड़े दोहाथी हथिनी के निमित्त भिड़तेहैं १।२ अथवा जैसेकि दैवइच्छासे महा बलाहक नाम बादल बलाहक बादलसे औरपर्व्वत पर्व्वतसे भिड़जायं उसी प्रकार बाणरूपी वर्षाके करनेवाले धनुषरोदा और प्रत्यंचाके शब्दों समेत सन्मुखहुये ३ और परस्परमें ऐसेघायलहुये जैसे कि बड़ेवृक्ष औषधी और शिखरवाले नाना झिरनोंसेयुक्त बड़ेपराक्रमी दोपर्व्वत आपसमें घायल होतेहैं उसीप्रकार वहदोनों महाअस्त्रोंसे परस्पर में घायलहुये ४ फिर बाणोंसे घायल शरीर सारथी और घोड़े वाले उनदोनोंकी वहचढ़ाई बहुत बड़ीहुई जो अन्यसे दुःख पूर्व्वक सहनेकेयोग्य कठोररुधिर रूपजलको ऐसी रखने वालीथी जैसे कि पूर्व्वसमयमें देव इन्द्र और बिरोचनके पुत्रबलिकी चढ़ाई हुई थी जैसेकि बहुतसे पद्म वा उत्पलकमल मछलीकछुये रखनेवाले पक्षियोंके समूहोंसे वेष्टित अत्यन्त समीप बायुके वेगसे दोहूदपरस्परमें भिडजायं उसीप्रकार वह दोनों ध्वजाधारी रथ आपसमेंसन्मुख हुये ५।६ महेन्द्रके समान पराक्रमी और रूपवाले उनदोनों महारथियोंने उसी महेन्द्रके वज्रके समान शायकोंसे परस्परमें ऐसे घायलकिया जैसेकि महेन्द्र औरवृत्रासुरने परस्पर घायलकियाथा ७ हाथीपति घोड़े रथ और चित्रबिचित्र कवच भूषण बस्त्र और शस्त्रों की धारण करनेवाली वह अपूर्व रूपवाली दोनों बिस्मित सेना कंपायमानहुई उस अर्जुन और कर्णकेयुद्धमें बस्त्र और अंगुलियोंसे युक्त ऊंची २ भुजा आकाशमें बर्त्तमान हुई मतवाले हाथीके समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखने वालोंके सिंहनादों समेत मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला

हाथी मतवालेहाथी के सन्मुख जाता है ८।९ वहां आगेचलनेवाले सोमक लोग अर्जुनको पुकारेकि हेअर्जुन कर्णकोछेदकर इसकेमस्तकको काटो और धृतराष्ट्रके पुत्रको श्रद्धाको राज्यसे पृथक्करोइसमें बिलम्बमतकरो १० इसीप्रकार हमारेभी बहुतसे शूरवीरोंने कर्णको प्रेरणाकरी कि चलोचलो हेकर्ण अत्यंत तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुनको मारो और पांडव फिर बहुतकालके लिये बनको जायं ११ इसके पीछे प्रथमतो कर्णने उत्तम दशबाणों से अर्जुनको छेदा और अर्जुन नेहंसकर तीक्ष्ण दशबाणोंसे कर्णको कुक्षमें वेधा १२ फिर उनदोनों कर्ण और अर्जुनने सुन्दर पुंखवाले बाणोंसे परस्पर घायलकिया और बड़ी प्रसन्नतासे एकने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपों से सन्मुखगये १३ इसकेपीछे उग्र धनुषधारी अर्जुनने दोनों भुजाओंसे गांडीवधनुषको ठीक करके नाराच, नालीक, बाराहकर्ण, क्षुरप्र, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र इनबाणोंको छोड़ा १४ हेराजा वह अर्जुनके छोड़े हुयेबाणकेरथमें प्रवेशकरगये और सबओरसे ऐसेफैलगये जैसे कि सायंकालके समीप नीचा शिरकरने वाले पक्षियोंके समूहनिवासके लिये शीघ्र वृक्षपर प्रवेशकरतेहैं १५ शत्रुओंके बिजयकरने वाले अर्जुनने जिनबाणोंको भृकुटीके कटाक्षसे युक्तकर्णके निमित्त छोड़ाथा उन बाणोंको कर्णने अपने शायकों से दूरकिया १६ इसके पीछे इंद्रकेपुत्र अर्जुनने शत्रुके वशीभूत करनेवाले अग्न्यास्त्रको कर्ण के ऊपर छोड़ा तब पृथ्वी अंतरिक्ष और दिशाओंके मार्गोंकोढककर उसका शरीर प्रकाशमानहुआ १७और अग्निसेजलतीहुई पोशाक वाले वा पोशाकोंसे अत्यंतरहित होजाने वाले शूरबीरबड़े व्याकुल होकरभागेऔर ऐसाबड़ाघोर शब्दहुआ जैसेकि बांसोंके बनमेंजलते हुये बांसोंके शब्द होतेहैं १८ फिरउस प्रतापवान् कर्णने युद्धमें उठे हुये उस अग्न्यास्त्रको देखकर उसके शांतहोनेकेनिमित्त बारुणास्त्र को छोड़ा और उसीसे वह अग्नि शांतहुई १९ फिर उस वेगवानने बादलोंके समूहों से सब दिशाओंमें अंधकार करदिया तब पर्वतके समान किनारा रखनेवाले कर्णने चारोंओरको जलकी परिधि कर-

के २० उस अत्यंतभयानक अग्निको शांतकरदिया परन्तु दिशाओं के सबस्थान जोकि बादलोंसे युक्तथे २१ इससेकुछ दिखाई नहींदिया तदनन्तर अर्जुनने वायुअस्त्रसे कर्णके उनअस्त्रोंके समूहोंको दूरकिया २२फिर शत्रुओंसेअजेय अर्जुननेगांडीवधनुषप्रत्यंचा औरविशिखों पर मंत्रोंको पढ़करबड़े प्रभाववाले देवेन्द्रकेप्यारे बज्रास्त्रकोभी प्रकट किया२३इसकेपीछे क्षुरप्र, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र, नालीक, नाराच, वराहकर्णनाम अत्यन्ततीक्ष्ण बज्रके समान वेगवान् हजारोंबाणगांडीव धनुषसेप्रकटहुये २४ वहबड़ेप्रभाव युक्तसुन्दरबेत गृध्रपक्षोंसे जटित अच्छे वेगवान् बाणकर्णको पाकर उसके सबअंग घोड़े, धनुष, जुये चक्रसेहोकर पृथ्वीमें प्रवेशकरगये तबबाणोंसेयुक्त रुधिरसेलिप्तअंग क्रोधसे खुलेनेत्रवालेमहात्माकर्णने २५।२६ दृढ़प्रत्यंचावाले समुद्रके समान शब्दायमानधनुषको दबाकर भार्गवअस्त्रको प्रकट किया और महेन्द्रास्त्रके सन्मुख छोड़ेहुये अर्जुनके बाणोंके समूहोंको काट २७ अपनेअस्त्रसे उसकेअस्त्रकोहटाके युद्धमेंरथहाथी और पतियोंकोमारा महेन्द्रके समान कर्मकरनेवाले कर्णने भार्गवअस्त्र के प्रताप से ऐसा कर्मकिया २८ इसकोकरके फिर क्रोधयुक्त सूतके पुत्र कर्ण ने युद्धमें पांचालों के अत्यन्त उत्तम शूरबीरोंको रोककर अच्छी रीतिसे छोड़े हुये तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख वाले बाणोंसे पीड़ामान किया २६ हे राजा युद्ध भूमिमें कर्णके बाण समूहोंसे पीड़ित पांचाल और सोमकों ने भी हठ करके प्रसन्नतासे कर्णको बाणोंसे छेदकर पीड़ामान किया ३० फिर कर्णने बाणोंसे पांचालोंके उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहोंको मारा और मारे बाणोंके सबको पीड़ित करडाला ३१ वह कर्णके बाणोंसे निर्जीव होकर शब्दोंको करतेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि महाबन में क्रोधयुक्त भयानक सिंह से हाथियों के समूह गिरपड़तेहैं ३२ हेराजा इसके पीछे वहबड़ा साहसी और बड़े उत्साहका करने वाला कर्ण अत्यन्त उत्तम २ शूरबीरों को मारकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें तीक्ष्ण किरणोंका रखनेवाला सूर्य्य होता है ३३ हेकौरवेन्द्र फिर आपके शूरबीरोंने कर्णकीबिजय

को मानकर बड़ीप्रसन्नता मनाकर सिंहनादोंको किया और सबने कर्णके हाथसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको निहायत घायल माना ३४ फिर वह महारथी कर्ण अपने उस पराक्रम को दूसरोंसे असह्य वाला जानकर और इसरीति से अर्जुन के उस अस्त्रको अपनेसे निष्फल हुआ देखकर ३५ क्रोधसे रक्तनेत्रअसह्य क्रोधयुक्त बायु के पुत्र भीमसेन श्वासों को लेताहुआ हाथसे हाथको मलकर सत्यसंकल्प अर्जुनसे बोला ३६ अब युद्धमें तेरे और बिष्णुजी के सन्मुख किस प्रकारसे उस पापी अधर्मी सूतके पुत्र कर्णने प्रबल होकर पांचालों के उत्तम शूरबीरों को मारा ३७ हेअर्जुन साक्षात् शिवजीकी भुजाके स्पर्शको पाकर कालकेय नाम असुरों से अजेय रूप तुझको इस कर्णने प्रथम दश बाणोंसे कैसे छेदा ३८ औरतेरे चलाये हुये बाण समूहोंको सहगया इससे यह कर्ण मुझको अपू-र्वदिखाई देताहै तुम द्रौपदीके उन दुःखोंको स्मरण करोकिइसने कैसे २ बचन कहेथे ३९ हेअर्जुन इस पाप बुद्धी दुर्मति दुष्टहृदय सूतपुत्रने रूखे२ अत्यन्त तीव्रबचन कहे अब तुम उन सब बचनों को स्मरण करके उस पापी कर्णको युद्धमें शीघ्रमारो ४० हेअर्जुन उसको कैसे छोड़रक्खाहै अब यहां यह समय तेरे त्याग करने का नहींहै खांडवबन में जिस धैर्य्यतासे तैंने सबजीवोंको बिजय किया उसी धैर्य्यतासे इस दुर्मति सूतपुत्रको मारोमैं उसको गदासेमारूं-गा उसके पीछे बासुदेवजी भी बाणोंसे ब्यथित देखकर अर्जुन से बोले४१।४२कि अबइसकर्णने तेरे अस्त्रको अपनेअस्त्रोंसे सबप्रकार मर्दन कियाहै हे अर्जुन यह क्या बातहै हे बीर तुमक्यों मोहितहो रहेहो क्यों नहीं सचेत होतेहो देखो यहकौरवलोग अत्यन्त प्रसन्न होकरगर्जतेहैं४३सबनेकर्णको आगेकरके तेरे अस्त्रकोअस्त्रोंसेगिरा-याहुआ जानाहै जिस धैर्य्यतासे तैंने तामस अस्त्रको दूरकिया और युग२मेंभी४४दंभोद्भवनाम घोरराक्षसोंको युद्धोंमेंमारा उसी धैर्य्यसे अबतुमकर्णको मारो अब हठकरके मेरे दियेहुये नेमियोंपर छूरेवाले सुदर्शनचक्रसे इसशत्रुके शिरको ऐसेकाटो जैसे कि इन्द्रने अपनेशत्रु

नमुचिके शिरको काटाथा किरातरूपी भगवान् शिवजीभी तेरेधैर्य्य से प्रसन्नहुये ४५ । ४६ हेवीर तुमफिर उसीधैर्य्यको धारण करके कर्णको उसके सब साथियों समेतमारो इसकेपीछे तुम सागर रूप मेखला रखनेवाली नगरग्रामोंसेयुक्त और धनरत्नोंसेपूर्ण उसपृथ्वी को४७ जिसमें कि शत्रुओंके समूह मारेगयेहैं अपनेराजायुधिष्ठिरके सुपुर्दकरो यहबचन सुनकर उसबड़े बुद्धिमान् महापराक्रमी महात्मा अर्जुनने कर्णके मारने के निमित्त बुद्धिकरी ४८ भीमसेन और श्रीकृष्णजीसे प्रेरणाकियेहुये उस अर्जुनने आपको ध्यानकरकेऔर सबबातोंको बिचारकर इसलोकके इन्द्र अपने आनेमें प्रयोजन को जानकर केशवजीसे यहबचनकहा ४९ कि हे केशवजी मैं लोकके आनन्द और कर्णके मारनेके निमित्त इस उग्र महाअस्त्रको प्रकट करताहूं सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदोंके सब जानने वाले ऋषिलोग मुझको आज्ञादो ५० उसमहासाहसी अर्जुननेइस प्रकारसे कहके और ब्राह्मणोंको नमस्कारकरके उसउग्र महाअस्त्र को प्रकटकिया जोकिअसह्य और चित्तसेप्रकट करनेकेयोग्यथा५१ जैसेकि बादल शीघ्रजलधाराओंको छोड़ताहै उसीप्रकार कर्णबाणों से इसके उसअस्त्रको दूरकरके शोभायमान हुआ तबक्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने इसरीतिसे युद्धभूमिमें कर्णके हाथसे अर्जुनके उस अस्त्रको दूरकियाहुआ देखकरसत्यसंकल्प अर्जुनसेकहा किनिश्चय करके मनुष्योंने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्रका जाननेवाला कहाहै ५२ । ५३ हे अर्जुन इसहेतुसे अब तुम दूसरे अस्त्रको चलाओ ऐसेकहेहुये अर्जुनने अस्त्रका प्रयोगकिया तदनन्तर बड़ेतेजस्वी अर्जुनने गांडीवधनुष और भुजाओंसे छोड़हुयेभयकारी सूर्य्यकी किरणोंके समानप्रकाशितबाणोंसे सबदिशा और विदिशाओंकोढकदिया उसभरतर्षभ अर्जुनके छोड़ेहुये सुवर्णपुंखवालेहजारों बाणोंसे ५४ । ५५ क्षणभरहीमें कर्णके रथको ढकदिया वह बाण प्रलयकालके सूर्य्यकी किरणोंके समानथे इसके पीछे सैकड़ों शूल फरसे चक्र और नाराच ५६ भी महा भयकारी निकले उससे बहुत

सेशूरबीर चारोंओरसे मारेगये युद्धभूमिमें किसीकाशिर धड़सेकट करगिरा५७ और कितनेही उनगिरेहुओंको देखकर भयभीत होकर जल्दीसे पृथ्वीपर गिरपड़े और किसी शूरबीरकी हाथीकी सूंड़के समान भुजाटूटकर खड्ग समेत पृथ्वीपर गिरपड़ी ५८ किसीकी बाईभुजा क्षुरप्रसे कटकर ढालसमेतगिरी अर्जुनने इसरीतिके शरीरों के नाश करनेवाले भयकारी बाणोंसेउनसब उत्तम २ शूरबीरोंसमेत दुर्य्योधनकी संपूर्णसेनाकोमारा और घायलकिया इसीप्रकार कर्ण नेभी युद्धभूमिमें अपने धनुषसे हजारों बाणोंकोछोड़ा ५९।६० वह शब्दायमान बाण अर्जुनके सन्मुखऐसेगये जैसे कि परिजन्यमेघसे छोड़ीहुई जलकीधारा होतीहै इसकेपीछे वह अनुपम प्रभाव और भयानक रूपवालाकर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेनको६१ तीन२ बाणोंसे घायल करके बड़ेस्वरसे घोरशब्दकोगर्जा फिर अर्जुननेउस असह्य कर्णकेबाणोंसे व्यथित भीमसेन औरश्रीकृष्णको देखकर६२ अठारह बाणोंको उठाया एकबाणसे तो उसकीध्वजाको चारबाण से शल्यको और तीनबाणोंसे कर्णको घायलकिया ६३ फिर अच्छी रीतिसे छोड़े हुये दशबाणोंसे सुवर्ण कवचसे अलंकृत सभापतिको मारा वह राजकुमार शिर भुजा घोड़े सारथी धनुष और ध्वजासे रहित ६४ मृतकहोकर रथसे ऐसेगिरपड़ा जैसेकि फरसोंका काटा हुआ और उखड़ाहुआ शालकावृक्ष गिरताहै फिरकर्णको तीनआठ बारह चार और दशबाणोंसेछेद६५ चारसौघोड़ोंको मारकरआठसौ शस्त्रधारी रथियोंकोभीमारा तब सवारोंसमेत हजारों घोड़ोंको वा आठहजार बीरपतियोंको ६६ मारकर सारथी घोड़े रथ औरध्वजा समेत कर्णकोसीधेचलनेवाले बाणदृष्टिसे अलक्षकरदिया इसकेपीछे अर्जुनके हाथसेघायलहोकर कौरवचारों ओरसेकर्णको पुकारे६७ हेकर्ण तुम शीघ्रही अर्जुनको छेदकर हमको छुड़ावो वह समीपसे बाणोंकेही द्वारा सब कौरवोंको मारताहै उनके बचनोंको सुनकर कर्णनेभी बहुत उपायोंसे बहुतसे बाणोंको बारम्बारछोड़ा ६८ उन मर्मभेदी रुधिरधूलसे लिप्त बाणोंने पांडव और पांचालोंके समूहों

को व्यथितकिया सबधनुषधारियोंमें श्रेष्ठ बड़ेपराक्रमी सब शत्रुओं के पराजय करनेवाले महाअस्त्रज्ञ उनदोनोंने ६६ महाअस्त्रोंसेशत्रु की उग्रसेनाको और एकने दूसरेको घायलकिया इसकेपीछेशीघ्रता करनेवाला युद्धके देखनेका अभिलाषी वह युधिष्ठिर पासगया जो कि अत्रिकुलमेंउत्पन्न होनेवाले अष्टांगविद्याके आसनपर बैठनेवाले अश्विनीकुमारसुरबैद्योंकेमंत्र औषधियोंकेद्वारा पीड़ासेरहित भालों से पृथक् शुभचिन्तक चिकित्सा करनेवालेउत्तम पुरुषोंसे मर्हमपट्टी बांधाहुआ सुवर्णके कवचको पहिरेहुयेथा इसीसे वह सावधानऐसा न था जैसेकिदैत्योंकेहाथसे घायलशरीर देवराज इन्द्रथा इसप्रकार के रूपवाले धर्मराजको युद्धमें समीप आयाहुआ देखकर सबजीव-मात्र बड़ेप्रसन्नहुये ७०।७१।७२ जिसप्रकार राहुसे छूटेहुयेनिर्मल और पूर्णचन्द्रमाको देखतेहैं उसीप्रकार उदयहोनेवाले उनयुद्धकर्त्ता उत्तमश्रेष्ठ शत्रुओंके मारनेवाले दोनोंपुरुषोत्तमोंको देखकर देखनेके इच्छावान् ७३ आकाशके देवता और पृथ्वीके मनुष्य कर्ण और अर्जुनको देखतेहुये नियतहुये वहांबाणोंके जालोंसे परस्पर मारने वाले अर्जुन और कर्णके छोड़ेहुये बाणोंसेउसधनुषरोदा औरप्रत्यं-चाका गिरना कठिनहुआ इसकेपीछे अच्छी खिंचीहुई अर्जुनकेधनुष कीजीवाअकस्मात् शब्दकरकेटूटी ७४। ७५ उसीसमय सूतकेपुत्र ने सौ क्षुद्रक बाणोंसे अर्जुनको छेदा और सर्परूपतलसे साफ गृध्र पक्षसेजटित बराबर छोड़ेहुये ७६ साठबाणोंसे शीघ्रताकरके बासु-देवजीकोछेदा इसकेपीछे फिर आठबाणोंसे अर्जुनकोछेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्णने हजार बाणोंसे भीमसेनको मर्मस्थलोंपरछेदा ७७ और सोमकोंको गिरातेहुयेउनशूरबीरोंनेविशिख वा पृषत्कनामबाणों से श्रीकृष्ण अर्जुनकी ध्वजा और उनके छोटेभाइयोंको बाणोंसेऐसे ढकदिया जैसेकि बादलोंके समूह सूर्य्यको ढक देतेहैं ७८ फिर उस अस्त्रज्ञ कर्णने उनसबको विशिखनाम बाणोंसेरोककर अपनेअस्त्रोंसे सब अस्त्रोंको हटाकर उनके रथ घोड़े और हाथियोंको भी मारा७६ हेराजा इसीरीतिसे सूतपुत्रने बाणोंसे सेनाकेउत्तम २ शूरबीरों को

पीड़ितकियाफिरकर्णके बाणोंसेघायल और मृतकहोकरशब्दोंकोकर-
तेहुयेपृथ्वीपरऐसे गिरपड़े ८० जैसेकिबड़ेपराक्रमी कुत्तोंकेसमूह क्रोध
भरेबड़ेपराक्रमी सिंहसे गिरतेहैं फिरपांचालदेशियोंकेउत्तम.२ लोग
और अन्य२ शूरबीरइसस्थानपरकर्ण औरअर्जुनकेलिये ८१ चेष्टाकरने
वाले उसपराक्रमी कर्णके अच्छीरीति के छोड़ेहुये बाणोंसे मारेगये
और आपके शूरोंने बड़ीबिजयको मानकर तालियां बजाईं और बारं-
बारसिंहनादकोकिया उनसबोंने युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुनको कर्ण
कीस्वाधीनतामेंमाना फिरतोकर्णकेबाणोंसे अत्यन्तघायलशरीरवाले
क्रोधयुक्त अर्जुनने धनुषकी प्रत्यंचाको नवाकर शीघ्रतासे कर्णके उन
बाणोंको हटाकेकौरवोंको रोका ८२।८३ प्रत्यंचाकोठीककरकेतलको
तरमेंदबाया और अकस्मात् बाणोंकाअंधकार उत्पन्नकिया उससमय
बड़ेहठसे अर्जुननेबाणोंके द्वाराकर्णशल्य औरसबकौरवोंकोछेदा ८४
तब महाअस्त्रसे अंधकार उत्पन्न होजानेपर अंतरिक्षमें पक्षीभी नहीं
घूमे और आकाशवर्त्ती जीवोंके समूहोंसे प्रेरितवायुने दिव्य सुगन्धि-
योंको फैलाया ८५ फिरहंसतेहुये अर्जुननेदशपृषत्कोंसे शल्यकेकवच
को छेदा इसकेपीछे अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये बारहबाणोंसे कर्णको
छेदकरदुबारीभी सातबाणोंसेछेदा अर्जुनके धनुषसे छूटेहुये महावेग
वालेबाणोंसे अत्यन्त घायल ८६।८७ बिदीर्ण औररुधिरसेभराअंगवह
कर्णजिसकेकि बाणफैलरहेथे रुद्रजीकेसमान शोभायमानहुआ इसके
पीछे श्मशानभूमिमें रुद्रमुहूर्त्त मेंक्रीड़ा करनेवाले रुधिरसेलिप्तशरीर
अधिरथीकर्णने उसदेवराजकेसमान रूपवाले अर्जुनकोतीनबाणोंसे
छेदा ८८।८९ फिरमारनेकीइच्छासेसर्पोंकेसमान अग्निरूपपांचबाणों
को श्रीकृष्णजीकेशरीरमें प्रविष्टकिया ९० वहसुवर्णजटित अच्छीरीति
सेछोड़ेहुये बाणपुरुषोत्तमजीके कवचको छेदकरगिरपड़े ९१ और बड़े
वेगसेपृथ्वीमें प्रवेशकरगये और पातालगंगामें स्नानकरके फिरकर्ण
से मुखफेरकरचलेगये इसकेपीछे अर्जुनने उनबाणोंको अच्छीरीतिसे
छोड़ेहुये पन्द्रहभल्लोंसे तीन २ खंडकरदिया ९२ उनबाणोंसे घायल
तक्षककेपुत्रके साथीबड़े सर्प पृथ्वीपर आयेफिरतो अर्जुन ऐसा क्रोध

युक्तहुआ जैसे कि सूखेबनको जलाताहुआ अग्निहोताहै ९३ उस अर्जुनने कर्णकी भुजासे छोड़ेहुये बाणोंसे इसप्रकारघायल शरीर श्रीकृष्णजीको देखकर कानतक खैंचकर शरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप बाणोंसे कर्ण को ९४ मर्मस्थलोंमें छेदा वह दुःखसे तो कंपितहुआ परन्तु बड़ीबुद्धि से धैर्य्य युक्तहोकर दैवयोगसे नियत रहा हेराजा इसके पीछे अर्जुनके क्रोधरूप होनेपर ९५ ॥

दो० तजि कर्णहिं तेहि क्षण भगे तो सुत भट समुदाय ।
जिमिव्याधहिलखिसुतरुतजि भगतबिहग भयपाय ॥
पार्थ अधिरथीके बधन को प्रण पूरण धारि ।
पार्थ लसौं जिमित्रि पुरदल मध्य लसौ त्रिपुरारि ॥

सो० तिमि सूतज रणधीर प्रलयभर्यो परसेनमधि ।
दोऊ तुल बलबीर कीन्हें अद्भुत युद्ध तहं ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥

महाबीर दोऊ धनुर्वेदचारी । दुहूंओरकै बाणकीवृष्टिभारी ॥
किये घोरसंग्रामताठौरदोऊ । नहींसामुहेभे दुहूंओरकोऊ ॥
गयेदूरिजेते भयेमौन ऐसे । गयेसामनेसिंहपशुभीत जैसे ॥
दुहूंओरकेयोंकहेंजाचिबेको । नहींआजुतोयोगहैबाचिबेको ॥

दो० कर्णहि बधिदल कौरवी बधिहि पार्थ बल ऐन ।
कै पार्थहि बधिकैं करण बधत पांडवी सैन ॥

दोऊ गगन शरनभरिदीन्हे । अन्धकार आरोपित कीन्हे ॥
दोउनकेअति बिक्रम देखी । बिस्मित भेसुरगण अवरेखी ॥
दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे । इमि कहि कहिकै दुहुनप्रशंसे ॥
दोउनकेकर करिकर भारी । रहे जात लखि काननबारी ॥
कबहुंपार्थबढ़ि बिक्रमकीन्हों । कबहुं सूतसुतगुरुतालीन्हों ॥
रह्योनथिरिघटिबढ़िपदकोऊ । अतिशयप्रबलधनुर्द्धरदोऊ ॥
भूपहुई तहं तुमुललराई । पृथक पृथक सबकही न जाई ॥
९६ । ९७ । ९८ ९९ । १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वैरथकर्णार्जुनयुद्धे एकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेवां अध्याय॥

संजयबोले इसके पीछे पृथक् २ सेनावाले एकवीरके अन्तर पर जानेवाले कौरव नियतहुये और अर्जुनके प्रकट कियेहुये अस्त्र को चारोंओरसे बिजलीके समान प्रकाशमान देखा १ तब कर्णने उस अर्जुनके आकाशमें वर्त्तमान महाअस्त्रको बड़ेघोरबाणोंसे दूरकिया जोकि बड़े युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने कर्ण के मारने को छोड़ाथा २ उस कौरवोंके भस्म करनेवाले उदयरूप अस्त्रको सुनहरी पुंखवाले बिशिखोंसे मर्द्दनकिया फिर दृढ़ प्रत्यंचायुक्त सफल धनुष को उठाकर बाणोंके समूहोंको छोड़तेहुये कर्णने ३ परशुरामजी से पायेहुये शत्रुओं के नाशकरनेवाले अथर्ववेदसम्बन्धी मन्त्रसे अभिमंत्रित कियेहुये तीक्ष्ण धारवाले बाणसे उसभस्म करनेवाले अर्जुनके अस्त्रको दूर करदिया ४ हेराजा इसकेपीछे वहां पृषत्कों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुनका ऐसा घोरयुद्धहुआ जैसे कि दांतोंके कठिन प्रहारोंसे दो हाथी युद्ध करतेहोयँ ५ उस समय वहां सबओरसे अस्त्रोंके प्रहारोंसे बड़ाकठिनयुद्धहुआ और दोनों ने अपने अपने बाण समूहोंसे आकाशको पूर्णकरदिया ६ इसकेपीछे सब कौरव और सोमकोंने बड़े बाणजालों को देखा और बाणों से अन्धकार होनेपर अन्तरिक्षमें किसीजीवमात्रकोभी नहींदेखा हेराजा तब उन अनेकबाणोंके छोड़ने औरचढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियोंने अनेक प्रकारकी अपनी अस्त्रज्ञताओंके साथ युद्धमें बिचित्रमार्गोंको दिखलाया ७। ८ इसरीतिसे कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबलहोतेहुये देखके ९ अन्य सब शूरबीरोंने युद्धभूमि में परस्पर घात ढूंढ़नेवाले उनदोनोंके असह्य और घोरयुद्ध को देखकरबड़ाही आश्चर्य्य किया हेनरेन्द्र इसकेपीछे अन्तरिक्षबर्त्ती जीवोंने उनकर्ण और अर्जुन दोनों की प्रशंसाकरी कि हेकर्णधन्यहै हेअर्जुन धन्यहैधन्यहै यहशब्द सब ओरसे सुनेजातेथे १०।११ तब उस युद्धमें रथघोड़े और हाथियों के प्रहारोंसे पृथ्वीके धसकने पर पातालतल में बिश्राम करनेवाला

अर्जुनका शत्रु अश्वसेनसर्प१२जोकि खांडवबनकी अग्निसेनिकलकर क्रोधयुक्त होकरपृथ्वीमें घुसगयाथा वहफिर ऊर्ध्वगामी होकर कर्ण और अर्जुनका युद्धदेखकर ऊपरकोआया१३ हेराजा उसनेशोचा कि इस दुष्ट अर्जुनसे अपना बदला लेनेका यही समय है इसीहेतु से बाणरूप बनकर कर्णके तूणीरमें आया इसकेपीछे अस्त्रोंके प्रहारों से संयुक्त फैलेहुये बाणोंके समूह रूपी किरणोंसे पूर्णहुआ तबउन दोनों कर्ण और अर्जुनने बाणोंके समूहोंकी बर्षासे आकाशके अंतर को निरन्तर करदिया उससमय वह आकाश बड़ी दूरतक बाणस-मूहोंसे एकसेहीरूपकाथा उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीतहुये१४।१५।१६ उसबाणोंके बड़ेअन्धकारमें दूसराकोईजीव आताहुआ नहींदेखा तदनन्तर सबलोकके धनुषधारी महाबीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्धमेंप्राणोंके त्यागनेवाले युद्धके परिश्रममें प्रवृत्त १७ निन्दितबचनोंकोपरस्पर कहने वालेहुये फिरवह देखनेवालोंसे व्याप्त जल चंदनसेसींचेहुये दिव्यबालव्यजनोंकी रखनेवाली स्वर्ग बासिनी अप्सराओंके समूहों समेत इन्द्र और सूर्यके करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुये १८ जब अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ा मानकर्ण अर्जुनको नमारसका तब बाणोंसे अत्यंत घायल शरीर वाले उसबीरने उस अकेले तरकसमें रहने वाले सर्परूप बाणके चलानेको चित्तकिया १६ और बड़े क्रोधपूर्वक उस अच्छीरीति से प्राप्त होने वाले बहुतकालसे गुप्तरूप सर्प मुखबाणको अर्जुन केवास्ते धनुषपर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्णने उस सदैव से पूजित चन्दन चूरमें रहनेवाले सुवर्णके तूणीरमें नियत बड़े प्रका-शित बाणको कानतक खैंच अर्जुनके मुखकीओर धनुषपर चढ़ाया २०।२१अर्जुनकेशिरकाटनेको अभिलाषी उसऐरावतके वंशमें उत्प-न्न होने वाले अत्यंत प्रकाशमान बाणको चढ़ातेही सबदिशा और आकाशमें अग्निज्वलितहुईऔर आकाशसे सैकड़ों घोररूपउल्का पातहुये २२ धनुषमें उसरूप सर्पबाणके चढ़ानेपर इन्द्र समेतसब लोकपाल हाहाकार करने लगे और सूतपुत्र कर्णने योगबलसे

उसबाणमें प्रवेश करनेवाले सर्पको न जाना परंतु सहस्राक्षइन्द्र
उस कर्णके तूणीरमें प्रवेश करनेवाले सर्पको देखकर अपने पुत्रके
मारेजाने के सन्देह और शोचमें शिथिल अंग हुआ उसको शोच
ग्रस्त देखकर बड़ेमहात्मा कमल योनि ब्रह्माजी इंद्रसेबोलेकिशोच
मतकरो अर्जुनहीमें लक्ष्मी औरबिजयदोनोंहैं २३।२४ इसके पीछे
मद्रके राजा महात्मा शल्यने उस उग्रबाणके चलानेवाले कर्णसे
कहाकि हेकर्ण यहबाण अर्जुनको नहीं पावेगा इसशिर काटने
वाले बाणको तुम अच्छीरीतिसे देखकर चढ़ाओ २५ इसके पीछे
क्रोधसे रक्तनेत्र बड़ावेगवान कर्ण राजामद्रसे बोलाकि हेशल्य कर्ण
दूसरीबार बाणकोनहीं चढ़ाताहै मुझसे मनुष्यकुलसेयुद्धनहीं करते
हैं २६ हे राजा उस शीघ्रता करनेवाले उद्युक्त कर्णने यह कहकर
बिजयके निमित्त बड़े उपायसे उस बाणको छोड़ा और कहने लगा
कि हे अर्जुन अब तुझकोमाराहै २७ कर्णकी भुजासे धनुषके द्वारा
छूटा हुआ वह घोरबाण प्रत्यंचासे पृथक् हो उग्रसूर्यकेसमान आ-
काशमेंजाके अग्निके समान होगया २८ तबतोबड़ी शीघ्रता पूर्वक
माधवजीने उस अग्निरूप बाणको देखकर बड़ीशीघ्रतासे अपने
चरणोंसे रथको दबाकर थोड़ासा पृथ्वी में घुसाया तब वह सुवर्ण
भूषणोंसे अलंकृत वह घोड़ेभी घुटनोंसे पृथ्वीपर बैठगये २९ महा
पराक्रमी माधवजीने कर्णके हाथसे धनुषपर चढ़ायेहुये सर्पको देख
करपहियोंपर बलकरकेउसउत्तमरथको पृथ्वीमेंगड़ादिया ३० तभी
वह घोड़े पृथ्वीपर बैठगये इसके पीछे मधुसूदनके पूजनके निमित्त
अंतरिक्षमें बड़ाभारी शब्दहोकर अकस्मात् आकाशबाणीहुई और
दिव्य पुष्पोंकी वर्षाहोकर सिंहनादहुये ३१ उससमय मधुसूदनजी
के बड़े उपाय से पृथ्वीमें रथके घुसनेपर उस बाणने उस बुद्धिमान्
अर्जुनके बड़े दृढ़रूप इन्द्रके दियेहुये किरीटको घायल किया इसके
पीछे सूतपुत्रने सर्पअस्त्रके छोड़ने और क्रोधयुक्त उत्तमउपाय पूर्वक
बाणकेद्वारासे अर्जुनके शिरसे मुकुटकोहरणकिया वहमुकुट आकाश
स्वर्ग और जलोंमें प्रसिद्ध सूर्य चन्द्र और अग्निकेसमान प्रकाशित

सुवर्ण मोती हीरे मणियोंसेजटित था जिसको कि आपसमर्थ ब्रह्मा
जीने तपकेद्वारा बड़ेउपायसे इन्द्रकेलिये उत्पन्नकियाथा और बड़ा-
सुन्दररूप शत्रुओंकोभयकारी शिरपर धारण करनेवाले को महा
आनन्ददायक होकर श्रेष्ठगंधियोंसेयुक्तथा ३३ उसीको प्रसन्नचित्त
होकर आप इन्द्रने असुरोंके मारनेकेअभिलाषी अर्जुन को दियाथा
वहमुकुट ऐसे प्रभाववाला था कि इन्द्र वरुण कुवेर बज्रपाश और
उत्तमबाणों से अथवा शिवजीके पिनाक धनुष से भी ३४ मर्दन के
योग्य नथा ऐसे मुकुटको कर्णने अपनी हठसे सर्परूपबाण के द्वारा
हरणकरलिया अर्थात् दुरात्मा दुष्टभाव असत्य प्रतिज्ञावाले ३५
वेगवानसर्पने अर्जुनके उसकिरीटको शिरपरसेहरलिया वहकिरीट
अत्यन्तअद्भुत बड़ोंकेयोग्य सुवर्णकेजालोंसेमंडित प्रकाशित शब्दाय
मानहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३६ अर्थात् उत्तमबाण से मथितविष
की अग्निसे प्रकाशित वह अर्जुन का मुकुट पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा
जैसे कि रक्तमंडलवालासूर्य अस्ताचलसे गिरता है ३७ उससर्पने
बलके द्वारा रत्नोंसेजटित और अलंकृत मुकुटको अर्जुन के शिरसे
ऐसे जुदाकिया जैसे कि पर्वत के अंकुर और पुष्पित वृक्षोंसे जटित
श्रेष्ठशिखर को इन्द्रकाबज्र गिरादेता है ३८। ३९ अथवा जैसे कि
बायु से पृथ्वी आकाश स्वर्ग और जलोंके समुद्र उत्पातयुक्त होकर
कंपित होतेहैं उसीप्रकार वह उग्रमुकुट हटकरके अत्यन्त चूर्ण हुआ
उस समय तीनों लोकों के बड़े शब्दों को मनुष्यों ने सुना और सुन-
कर सब पीड़ित होके गिरपड़े ४० बिना किरीट के भी वह पार्थ
ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि श्याम रंगवाला नवीन उत्पन्नहुआ
पर्ब्बत का ऊंचा शिखर होता है इसके अनन्तर पीड़ा से रहित अ-
र्जुन अपने शिरकेबालों को श्वेतवस्त्र से बांधकर ऐसा प्रकाशमान
हुआ जैसे कि शिरपर वर्त्तमान सूर्य्य को किरणवाला उदयाचल
पर्ब्बत होता है सूर्य्य के पुत्र कर्णके भेजेहुये नेत्र रूप कान रखने
वाले दुःखसे रक्षाकरनेवाले सर्पके पुत्र अश्वसेन सर्पने प्रत्यक्ष में
बड़े तेजस्वी बाणडोरों के समीप शिर रखनेवाले अर्जुनको देखकर

भी बड़ीतीव्रता से नीचेको झुकनेसे असामर्थ होकर उस इन्द्रकेपुत्र
अर्जुनके मुकुटको जोकि अच्छी रीति से अलंकृत सूर्य्यके समान प्र-
काशमान था हरणकिया और बाणके छोड़नेसे सर्पको मर्द्दन करने-
वाला अर्जुनसर्पको नपाकर मृत्युकेआधीन नहींहुआ ४१।४२।४३
कर्ण की भुजासे छोड़ा हुआ अग्नि सूर्य्यरूप बड़ेशूरबीर के योग्य
वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट को
घायल करके चालागया तब अर्जुन के उस सुवर्ण जटितमुकुट को
खेंचकर भस्म करके उसने फिर तूणीर में जानचाहा और कर्ण
से बोला कि हेकर्ण मैं बिनाबिचार किये हुये तेरेहाथसे छोड़ गया
था इसीसे अर्जुनके शिरको न काटसका अबतू युद्धमें अर्जुन को अ-
च्छे प्रकार से लक्षकरके शीघ्रतासे मुझको छोड़ मैं अपने और तेरे
शत्रु अर्जुन को अभी मारूंगा यह बचन सुनतेही कर्ण उस्से बोला
हेश्रेष्ठ तुम कौनहो ४४।४५ सर्पने कहामाताकेमारनेसे मुझशत्रुता
करनेवाले को अर्जुनकाशत्रु जानो चाहै उसका रक्षक यमराजभी
होजाय तौभीमैं उसको यमलोकमें पहुंचाऊंगा ४६ कर्णबोलाहेसर्प
अबकर्ण युद्धमें दूसरेके बलसे अपनी बिजयको नहींचाहताहै और
एकबार बाणको चढ़ाकर उसको फिर दूसरीवार नहीं चढ़ाऊंगा मैं
अकेलाही एक अर्जुन नहींजो ऐसे२ सौ अर्जुनभी होंय उनकोभीमार
सक्ताहूं यहकहकर ४७ सूर्य्यके पुत्रोंमें श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमिमेंफिरभी
उससर्पसे बोलाकि हेसर्प मैंअस्त्रके बाक्रोधयुक्त किसीउत्तम उपाय
केद्वाराअर्जुनको मारूंगा तुम खुशीसे चलेजाओ कर्णके इसबचनको
उससर्पने क्रोधयुक्त होकरनहींसुना और अर्जुनके मारनेकीइच्छासे
वहसर्पराज अपने निजस्वरूपको धारणकरके आपहीअर्जुनकेमार-
नेकोचला ४८ तदनन्तर श्रीकृष्णजी उसयुद्धभूमिमें अर्जुनसेबोलेकि
तुमइसशत्रुता करनेवाले बड़ेसर्पकोमारो श्रीकृष्णजीके इसबचनको
सुनतेही शत्रुकेबलका नसहनेवाला वह गांडीवधनुषधारी अर्जुनय-
हबचनबोला कियहसर्प मेराकौनहै जोआपने आपगरुड़केमुखमेंआ-
याहै श्रीकृष्णजीने कहा कि खांडवबनमें अग्निकेतृप्तकरनेवालेतुझ

धनुषधारीने ५० । ५१ इसआकाशमें बर्त्तमान अपनीमातासे गुप्त शरीरवालेको एकरूप जानकर इसकी माता को मारा था उसीके कारणसेउसशत्रुताको स्मरणकरता निश्चयकरके अपनेमरनेकेलिये तुझकोचाहताहै ५२ हेशत्रुकेहंसनेवाले तुम आकाश से प्रज्वलित उल्कापातकेसमान उसआनेवाले सर्पकोदेखो संजयबोलेकि इसके पीछेउसअर्जुनने महाक्रोधयुक्तहोकर बड़ेतीक्ष्णउत्तम छःबाणोंसेउस सर्पको जो आकाशसे तिरछाहोकर आ रहाथा काटडाला ५३ फिर वहअंगोंसे कटाहुआ पृथ्वीपरगिरपड़ा अर्जुनके हाथसे उस सर्पके मरनेपर आप समर्थरूप पुरुषोत्तमजीने ५४ उसगिरे और घुसेहुये रथको शीघ्रही अपनीदोनोंभुजाओंसे ऊपरको उठाया उसीमुहूर्त्त में अर्जुनको तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़ेबीर कर्णने उग्रपक्ष-धारी दशपृषोंत्कोंसे फिरअर्जुनकोव्यथितकियातबअर्जुननेभी अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये बराह कर्णनाम बारह तीक्ष्णबाणों से कर्ण को घायलकरके ५५ बिषवालेसर्प की समान शीघ्रगामी कानतकखैंचे हुये नाराचनाम बाणकोछोड़ा वहअच्छीरीति से छोड़ाहुआ उत्तम बाणकर्णकेजड़ाऊकवचकोचीरकर मानोप्राणोंको घायलकरताहुआ ५६ कर्णके रुधिरकोपीकर रुधिरमें लिप्तहोके पृथ्वी में समागया इसकेपीछे बाणके आघातसेकर्ण ऐसाक्रोधयुक्तहुआ जैसे कि दण्ड से प्रेरित होकर महासर्प क्रोधरूपहोताहै ५७ तबतो शीघ्रताकरने वाले कर्णने उत्तमबाणोंको ऐसेछोड़ा जैसे कि बड़ाबिषधर सर्पअपने बिषको छोड़ताहै उससमय कर्णने बारहबाणसे तो श्रीकृष्णजीको और निन्नानबेबाणोंसे अर्जुनकोछेदा ५८ फिरकर्ण घोरबाणोंसे अ-र्जुनको घायलकरके गर्जनापूर्व्वकहंसा तबउसकेउसहास्यको नसह-कर उसमर्मज्ञ अर्जुनने उसकेमर्मों को छेदा ५९ इसइन्द्रके समान पराक्रमी अर्जुनने सैकड़ोंबाणों से ऐसेवेगसे छेदा जैसे कि इन्द्रने राजाबलिकोछेदाथा इसकेअनन्तर अर्जुनने यमराजकेदण्डकीसमा-न नब्बेबाणोंकोकर्णकेऊपर छोड़ा ६० इनअर्जुनके बाणोंसे बिदीर्ण शरीर वहकर्ण ऐसापीड़ामान हुआ जैसे कि बज्रसे कटाहुआ पर्व्वत

पीड़ित होताहै और अर्जुनके बाणोंसे टूटाहुआ इसका सुबर्ण हीरोंसेजटित प्रकाशमान मुकुट ६१ वा दोनोंकुण्डल औरबड़ेमूल्य-वालाबड़ेउपायोंसेअच्छेकारीगरोंका बनायाहुआ कवचयहतीनोंक-टकरपृथ्वीपरगिरे इसकेपीछेफिरक्रोधभरे अर्जुननेउसकवच रहित खालीशरीरवाले कर्णको चारतीक्ष्ण बाणोंसे छेदा ६२।६३ फिर शत्रुकेहाथसे अत्यन्त घायल वहकर्ण ऐसा अत्यन्त पीड़ामानहुआ जैसे कि बात पित्त कफसे ग्रसित रोगीपीड़ित होताहै उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुनने बड़ेधनुषमंडलसे निकलेहुये और बड़े उपायपूर्व्वक कर्मसे चलायेहुये ६४ बहुतसे उत्तमबाणोंसे घायल करके मर्मस्थलोंकोभीछेदा अर्जुनके बड़ेवेगवान तीक्ष्ण नोकवाले नानाप्रकारके बाणोंसे अत्यन्तघायल कर्ण ६५ ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि पहाड़ी धातुओंसे लालबर्णकापर्व्वत बज्रोंके प्रहारोंसे रक्तजलोंको छोड़ताहुआ शोभितहोताहै इसकेपीछे अर्जुननेसीधेच-लनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दररीतिसे छोड़ेहुये लोहेके यमराज और अग्निके दण्डकेसमान नौबाणोंसे कर्णको ऐसे छातीपर छेदा जैसे कि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने क्रौंच पर्व्वत को छेदाथा उससमय सूतपुत्र तूणीरको और इन्द्र धनुषके समान उस धनुषको त्यागकर ६६।६७रथकेऊपर अचेत होकर गिरताहुआ नियतहुआ हेप्रभु जिसकी मुट्ठी फैलगईथी और अत्यन्तघायल था तब उत्तम पुरुषोंके व्रतमें नियत अर्जुन ने उस आपत्तिमें पड़ेहुये कर्णके मार-नेकी इच्छा नहींकी ६८ इसके पीछे इन्द्रके छोटे भाई बिष्णुरूप श्रीकृष्णजी भ्रान्तीसे आश्चर्य्य पूर्व्वक उससेबोले कि हे अर्जुन क्या भूलकरता है पंडितलोग अपने से कमपराक्रमी शत्रुको भी कभी नहीं त्याग करते हैं मुख्यकर पंडितलोग भी आपत्तियों में शत्रुको मारकर धर्म और यशको पातेहैं सोतुम बिना बिचारकियेही इस अपने प्राचीन शत्रु बीरकर्ण के मारने का उपाय करो ६९। ७०यह समर्थ कर्णजो आगे आताहै इसको तुम ऐसेछेदो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको छेदाथा इसके पीछे सबकौरवों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले

अर्जुन ने शीघ्रही श्रीकृष्णजी को मिलकर और पूजन करके कर्ण को ७१ उत्तमबाणों से ऐसा छेदा जैसे कि पूर्व्व समय में संबरके मारनेवाले इन्द्रने राजाबलिको छेदाथा हेभरतवंशी फिर अर्जुन ने दंतवक्र नाम बाणोंसे कर्णको घोड़े और रथके समेत ढकदिया ७२ सब उपायों से सुनहरी पुंखवाले बाणोंके द्वारा दिशाओंको भी ढक दिया फिर वह बड़े दीर्घ और उन्नत बक्षस्थलवाला कर्ण बत्सदन्त नाम बाणोंसे छिदाहुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अच्छे२ पुष्पवाले अशोक पलाश शाल्मलि और रक्तचन्दन के बनसेयुक्त पर्व्वत शोभयमान होताहै हेराजा वहकर्ण शरीर में लगे हुयेबहुत बाणोंसे ऐसा शोयमान हुआ ७३ । ७४ जैसे कि वृक्षोंसे पूर्ण बन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकारके वृक्षोंसेयुक्त गिरिराज शोभितहोताहै वह बाणजालरूप किरणोंका रखनेवालाकर्ण बाणों केसमूहोंको छोड़ताहुआ ऐसा प्रकाशमान था ७५ जैसे कि अस्ता-चलके सन्मुख रक्तमंडलवाला सूर्य्य होताहै अर्जुनकी भुजाओं से छोड़ेहुये तीक्ष्णनोकवाले बाणोंनेदिशाओंको पाकर कर्णकी भुजाओं से छुटेहुये सर्परूप प्रकाशित बाणोंको पराजय किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त सर्पोंके समान बाणोंको छोड़तेहुये उसकर्णने धैर्य्यको पाकर ७६ । ७७ क्रोधयुक्त सर्पकी समान दशबाणोंसे अर्जुनको और छःबाणोंसे श्रीकृष्णजीको पीड़ितकिया इसके पीछे बड़ाबुद्धि-मान अर्जुन कठोर शब्द युक्त सर्प बिष और अग्निके समानलोहे के भयंकर बाणोंके फेंकने में प्रवृत्तहुआ हेराजा फिर तो अदृष्टगुप्त रूपकालब्राह्मणके क्रोधसेकर्णके मरनेकोकहनेवालाहुआ ७८।७९ कर्णके मरनेका समय आनेपर यहबचनबोला कि पृथ्वीरथकेपहि-येको निगलती है इसकेपीछे वह महात्मा परशुरामजीके उसदिये हुये अस्त्रकोभी चित्तसे भूलगया ८० हेबीर धृतराष्ट्र उसके मरणका समय आनेपर उसके रथके पहियेको पृथ्वीने पकड़ा तब उसउत्तम ब्राह्मणके शापसे उसका रथ घूमगया ८१ और रथका पहिया पृथ्वीपर गिरपड़ा तबतो वह कर्ण युद्धमें ऐसा व्याकुलचित्त हुआ

जैसेकि अच्छे पुष्पवाला वेदिका समेत चैत्यनाम वृक्षभूमिमें डूब जाताहै८२ब्राह्मणके शापसे रथके घूमने और परशुरामजीसे पाये हुये अस्त्रके विस्मरण होनेपर ८३ और अर्जुन के हाथसे सर्पमुख प्रकाशित घोरबाणके गिरनेपर उन दुःखोंको न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथोंको कंपायमान करके इसबातकीनिन्दा करनेलगा कि धर्मज्ञ लोग सदैव इसबातको कहाकरतेहैं कि धर्मकरनेवाले का धर्म उस धार्मिक पुरुषकी सदैव रक्षाकरताहै और हमपराक्रमी लोगउनके कहनेके अनुसार विश्वासपूर्वक धर्मकरनेमें उपायोंको करतेहैं८४।८५सो मेरीबुद्धिसे वह कियाहुआ धर्म रक्षा नहींकरता है किन्तु अवश्यमारताहै भक्तोंकी रक्षा कभी नहीं करताहै यह मैं मानताहूं कि धर्म सदैव रक्षानहींकरता है इसरीतिसे घोड़े और सारथीसे पृथक् और अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त चेष्टावान ८६ और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्मकरने में शिथिल होकर बारम्बार धर्मकी निन्दाकरी इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी तीनबाणों से युद्धमें श्रीकृष्णजीको हाथपर छेदा और अर्जुनकोभी सातबाणों से ८७ इसकेपीछे अर्जुनने कठिन वेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्र वज्रके समान घोर अग्निकेसमान सत्तरबाणोंको छोड़ा वह भयानक वेगवालेबाण उसको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़े ८८ तदनन्तर अपने शरीरको कम्पायमान करतेहुये कर्णने अपनीसामर्थ्यसे चेष्टा को दिखाया फिर बलसे अपनेको साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट किया फिर अर्जुननेभी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्रके मन्त्रको पढ़ा८९ फिर उस शत्रुके तपानेवालेने गांडीवधनुष प्रत्यंचा और बाणपरमंत्र को पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि इन्द्र जलकी वृष्टिको करताहै ९० इसकेपीछे अर्जुनके रथसे निकलेहुये तेजरूपपराक्रमी बाण कर्णके रथके समीपजाकर प्रकटहुये ९१ फिर महारथी कर्णने अपनेछोड़ेहुये बाणोंसे उनबाणोंको निष्फल करदिया इसपीछे उस अस्त्रके दूरहोने पर वह वृष्णी वीर श्रीकृष्णजी बोले ९२ हे अर्जुन तू परमअस्त्रको छोड़ क्योंकि कर्णबाणोंको निष्फलकरे देताहै इसके

पीछे ब्रह्मास्त्रके उग्रमंत्रको पढ़कर बाणको धनुषपरचाढ़ाया९३ और कर्णको बाणोंसे ढककर उसपर फिरबाणोंको फेंकातबकर्णने सुन्दर वेतवाले तीक्ष्णबाणों से उसकी प्रत्यंचाको काटकर पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं आठवीं नौमी दशवीं ग्यारहवीं प्रत्यंचाको काटापरन्तुवहकर्ण उसहजारोंप्रत्यंचाचढ़ानेवालेकोनहीं जानताथा९४।९५तदनन्तर अर्जुनने दूसरीप्रत्यंचाकोधनुषपरचढ़ाकर मंत्रोंसे अभिमंत्रितकर सर्पोंकोसमान प्रकाशित बाणोंसेकर्णको ढकदिया९६कर्णनेउसकीप्रत्यंचाके टूटनेऔरचढ़ानेकोहस्तलाघवता केकारणनहींजानायहभीआश्चर्य्यसाहुआ९७फिर कर्णनेअपनेअस्त्रों सेअर्जुनके अस्त्रोंकोरोककर घायलकिया और अपनेपराक्रमकोअच्छा दिखाकरउसने अर्जुनसेभीअधिककर्मकिया९८इसकेपीछेश्रीकृष्णजी कर्णकेअस्त्रसे अर्जुनको पीड़ामान देखकर बोलेकिचलोअन्यबाणोंको प्रेरित करके चलाओ ९९ इसके पीछे शत्रु संतापीअर्जुन अग्निकी समानघोर सर्पकेविषके समानलोहेके दिव्यबाणोंकोअभिमंत्रितकर के १०० रुद्रअस्त्रको चढ़ाकर छोड़नेको उपस्थितहुआ हेराजाउसी समयपृथ्वीने कर्णकेरथ चक्रको निगला १०१इसकेपीछे उससावधानकर्णने शीघ्र रथसेउतरकर दोनोंभुजाओंसे चक्रकोपड़करपृथ्वी से निकालनाचाहा१०२वहसप्तद्वीपा बसुन्धरा रथचक्रको निगलने वालीपृथ्वी पर्व्वतबननदी औरसमुद्रोंसमेतकर्णके हाथसेचारअंगुल ऊंचीउठआई परन्तुपहिया नछूटातबतो कर्णनेक्रोधकरके अश्रुपातों कोडाला औरअर्जुनको क्रोधयुक्त देखकर यहबचनबोला१०३।१०४ हे बड़ेधनुषधारी अर्जुनमैंजबतकइसपृथ्वीमें गड़ेहुयेचक्रकोननिकाल लूंतबतकक्षणभरकेलियेशस्त्रफेंकनेकोरोको १०५हेअर्जुन दैवयोगसे इसमेरे बामरथके चक्रको पृथ्वीमें गड़ाहुआ देखकर नपुंसकोंके युद्ध को त्यागकरो१०६हे कुन्तीनन्दन तुमनपुंसकोंके समानअथवा नपुंसकोंकेमतपरचलनेकेयोग्यनहींहोक्योंकियुद्धकर्ममें बड़ेनामीप्रसिद्ध हो१०७हेपांडव तुमगुणोंसे भरेहुये कर्मकरनेकेयोग्यहो जो शूरबीर लोगहैंकिसाधुओंकेब्रतमेंनियतहैं वहकेशोंके फैलानेवाले१०८शरणा-

गतहोनेवालेअस्त्रोंकेत्यागनेवाले अथवाप्रार्थनाकरनेवाले वा बाण न रखनेवाले कवचसेरहित और टूटेशस्त्र वालेपर१०६ अपनेशस्त्रों को नहींछोड़तेहैं हेपांडव तुमलोकमेंबड़े शूरबीर साधुब्रतवाले११०युद्ध केधर्म्मोंको उत्तमरीतिसेजाननेवाले यज्ञान्तमेंअमृतस्नानकरनेवाले दिव्यअस्त्रोंकेज्ञाता महासाहसी युद्धमें सहस्राबाहुकेसमानहो१११हे महाबाहो जबतकमैं इसगड़ेहुये पायेको न निकाललूं तबतकतुमरथ परसवार होकरपृथ्वीपर नियत मुझव्याकुलचित्तके मारनेको योग्य नहींहो११२हे अर्जुनमैंतुझसे और बासुदेवजीसे नहींडरताहूं और तुम क्षत्रीकेपुत्र और बड़ेबंशके बढ़ानेवालेहो ११३ इसहेतुसे तुमसेमैंकहताहूंहेपांडव एकमुहूर्त्त तक ठहरजाओ ११४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णरथचक्रग्रसनंनामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

चौ० समयदेखिहवै व्याकुलमनमें । रथ बिनुचले कर्णतेहि क्षनमें ॥
धनुरथ पै धरि बीर उतरिकै । चारुचक्रयुत करसों धरिकै ॥
लगो उठावन सुनु महिसाईं । अचरज कियो कर्णतेहिठाईं ॥
गिरि सागर कानन सह धरनी । रथ के संग उठाई अवनी ॥
अंगुलचारि प्रमाण उठायो । सुरगण के मनबिस्मय छायो ॥
छुटो न रथतब कर्णबिलखिकै । सजलनयनभो इतउतलखिकै ॥
करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षनमें । बहु शर हने कर्ण के तनमें ॥
तिनसों कर्ण महादुखपायो । पारथ को इमि टेरि सुनायो ॥
हे हे पार्थ कहा अघ धारो । बाण बृष्टि क्षण एक निवारो ॥
ग्रसित चक्र धरणीते जबलौं । मैं काढ़ौं तू थिर रहु तबलौं ॥
बिनाशस्त्रपहं तजिबोशायक । उचित न तुम्हैं बिदितभटनायक ॥
दो० नहिंकृष्णहिं नहिंतुमहिं हम भीति कहत येबैन ।
तुमसे क्षत्रिहि धर्मको तजिबो सोहत हैन ॥
जौलगि चक्र छुड़ाइ हम नहिं पकरैं धनुबान ।
पारथ तौलगि करिक्षमा बहुरि करौ मनमान ॥

॥ जयकरीछन्द ॥

तहां कर्णके सुनि यहबैन । कहत भये केशव मृदुऐन ॥

तुम दुर्य्योधन शकुनिकराल । कबकीन्हे सुधरम प्रतिपाल ॥
भीमसेन कहं जहर खवाय । सांपनसों दीन्हों कटवाय ॥
करिकै मंत्र नाश अभिलाखि । इनकहं लाक्षागृहमें राखि ॥
निशिमें दाह करायो पूर्व्व । तब कित रह्यो धर्मव्रत गूर्व्व ॥
किये सभामें कुकरम जौन । अबनाहिं कहतबनत सबतौन ॥
तेरहें वर्ष बांटि महि लेन । किये करार न चाहे देन ॥
तबकितगयो धरमको काम । अब लखिपरा धरमअभिराम ॥
बिरथ बिधनुष अकेलोबार । पार्थसुतहिं बधि षट्धनुधार ॥
अति अनन्द लहिभये अभर्म । अब चाहत करवावो धर्म ॥
अब तो बध करिबो यहियाम । है पारथको धर्म ललाम ॥
केशवके यह बचन अनूप । सुनि सूतज ह्वै लज्जित रूप ॥
फिरि रथपर चढ़ि गहि कोदण्ड । बर्षनलागो बाण उदण्ड ॥
भरो क्रोध लाघव दरशाय । दये पार्थ पहं शायक छाय ॥
सो लखिके केशव अनुमानि । कहे पार्थसों अवसरजानि ॥
दिब्य शरन सों बेधि सडौर । अबयहि शीघ्रबधो करिगौर ॥

दो० केशवके यह बचनसुनि पारथ धनुटंकारि ।
बर्षनलागो कर्णपहं दिब्यअस्त्रपण धारि ॥
करतभयो ब्रह्मास्त्रको तेहिक्षणकर्ण प्रयोग ।
पारथतजिब्रह्मास्त्रतेहि क्षमितकियोकरियोग ॥
ताहिक्षमित करितजतभो दइत अस्त्रसोबीर ।
बारुणास्त्रसों तेहिसमित कियो कर्ण रणधीर ॥
घनतमसों छादितदिशा देखि पार्थ करिकोप ।
कियोअस्त्र बायब्य सों बारुणास्त्रको लोप ॥

सो० सोलखिकर्णप्रमान परम दिब्य शरगहतभो ।
करि अद्भुत संधान तज्यो देखिडरपे सुमन ॥
वज्रसरिससोबाण तासुभुजा तर मधि लगो ।
भिदितासों बलवान मोहितभो अर्जुन सुभट ॥

चौ० महाराज सुनिये तेहिक्षनमें । रथतेउतरिकर्णगुणि मनमें ॥

हर्ष बिषाद क्रोधसों पागो। बलकरि सुरथ उठावनलागो ॥
कृष्णचन्द्र सो समय निरेखी । पारथ सों बोले अवरेखी ॥
रथचढ़ि गहै धनुषशर जौलों । कर्णहिं पार्थबधौ तुमतौलों ॥
कृष्णचन्द्रकी बाणी सुनिकै । पारथ मंत्र यथारथ गुनिकै ॥
तीक्षण शर क्षुरप्र करलीन्हो । तासों केतुकाटि दै कीन्हो ॥
फिरिअमोघआंजलिकसुशायक।गह्योपार्थभटधनुधरनायक॥
चक्र त्रिशूल बज्रसम घोरा । कालदंड सम कठिन कठोरा ॥
प्रलयकालके भानुसमाना। बायुअग्निसम दुसहअमाना ॥
भरिआंगिरसमंत्रकीपुरता। करिअतिअगणितगौरवगुरता ॥
सबदिशि हेरि क्रोधसों रातो । बोलो पार्थ बीररसमातो ॥
अबहनि यहशर गौरवभेखो । कर्णहिं बधिडारत शरदेखो ॥
इमिकहिपारथतेहिशर बरसों । काट्योशीश कर्णकेधरसों ॥
मार्त्तण्ड सम परम प्रभाको । महिपरगिरोशीशकटिताको॥
तदनुगिरो धरतजि बलगारो। सरससुखोचितसुखमाभारो॥
मणिमयभूरिभूषणनिभ्राजित। महिपरभयोकर्णभटराजित॥
दो० सबके देखत तहंभयो अद्भुत अति अमलीन ।
तेज कर्णकी देहसों कढ़िभो रबि में लीन ॥
इहिबिधि कर्णकोबध निरखिकेशव पांडवसर्व ।
लगे बजावन शंख अति आनंद भरे सगर्ब ॥
गरजिगरजिसोमक सकलअरुपांचालसमस्त ।
सानंद बजवावन लगे जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥
नृपतहं ममदल मधिबढ़ो हाहा धुनि गंभीर ।
भागिचले भटबिकलह्वै तजिबल गौरबधीर ॥

इक्यानबेका अध्याय॥

इने पद्योंके मध्य आशय में॥

संजयबोलेकि रथपर चढ़ेहुये बासुदेवजी उससेबोले हे कर्णअब
यहांतू धर्मको यादकरताहै आपत्तिमें डूबेहुये नीचलोग बहुधाईश्वर

की निन्दाकिया करतेहैं परंतु अपनेदुष्ट कर्मको नहींकहते १ हेकर्ण जब दुश्शासन शकुनि दुर्य्योधन और तुमने एकवस्त्र रखनेवाली द्रोपदीको सभामें बुलाया तबवहां तुमकोधर्म नहींदिखाईदिया २ जब शकुनीने विद्याकेद्वारा द्यूतकर्म न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर कोअधर्मसे सभामें बिजयकिया तबतेरा धर्मकहां गयाथा ३ हेकर्ण बनबासके व्यतीतहोनेपर तेरहवेंबर्षकोभी पाकर आधाराज्य नहीं दिया तबतेरा धर्मकहांगयाथा ४ जबराजा दुर्य्योधनने तेरेमतसे भीमसेनको सर्पोंसे और बिषमिले अन्नखवाने से मारना चाहातब तेराधर्म कहांगयाथा५ जबकि बारणावत नगरमें लाक्षागृहमें सोते हुये पांडवोंको अग्निसे जलाया तब तेराधर्म कहांगया था हेकर्ण जब सभामें बैठकर दुश्शासनके आधीनहुई द्रोपदीको हंसातब तेरा धर्मकहांगयाथा ६।७ हेकर्ण जबपूर्व्वकालमें नीचोंसे दुखित निरपराधिनी द्रोपदीको त्यागकरताथा तबतेरा धर्मकहांगयाथा ८ जब द्रोपदीसे तैंनेयहकुत्सित अभद्र बचनकहेथे कि हेकृष्णापांडवों कानाश होगया और सनातननर्कमेंगये तुम दूसरेपतिकोबरो उस हाथीके समान चलनेवाली कोऐसे दुर्बाक्य कह२ करत्यागताथा९ तब तेरा धर्म कहांगयाथा हेकर्ण फिर जब तैंने शकुनीसे मिलकर राज्यका लोभी होकर पांडवोंको बुलाते बालक अभिमन्युको मारा तब तेरा धर्म कहांगयाथा १० । ११ जोयहधर्म तैंनेधारणनहीं किया था तो अब गालबजानेसे क्यालाभहै हेसूत अबचाहै जितना तू धर्म बर्णनकर परन्तु जीतेनहींबचसक्ता जैसे कि द्यूतमें अपनेभाईपुष्कर से हारेहुये पराक्रमी नलने भाईको बिजय करके फिर राज्यको पाया१२।१३उसीप्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकरपांडवोंनेभी अपनी भुजाओंके बलसे राज्यको पाया इन पांडवोंने युद्धमें बड़ेबड़े बुद्धियुक्त शत्रुओंको सोमकों समेत अनेक पराक्रमोंसे मारकर राज्यको पाया और धर्मधारी नरोत्तमों समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्र केपुत्रोंने पराजयको पाया १४ संजय बोलेकि हे भरतबंशी बासुदेवजीके ऐसे ऐसे बचनोंको सुनकर कर्णने १५ लज्जासे नीचा शिर

करके कुछ उत्तरनहींदिया और क्रोधसे होठोंको चाट हाथमें धनुष लेकर १६ उस पराक्रमी वेगवानने फिर अर्जुन से युद्ध किया इसके पीछे बासुदेवजी पुरुषोत्तम अर्जुनसे बोले १७ कि हेमहाबली अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ श्रीकृष्णजी के इसबचन कोसुनतेही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ अर्थात् अर्जुन उन पूर्व्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ हे राजा तब तो उस क्रोधभरे अर्जुन के सब शरीरके छिद्रोंसे तेजकी अग्नियां प्रकट हुईं १८।१६ यह बड़ा आश्चर्य्य सा हुआ इसके पीछे कर्ण उसको देखकर २० ब्रह्मास्त्र से बाणोंकी वर्षाकरने लगा फिर रथको पृथ्वी से निकालनेका उपायकिया तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उसपर बाणोंकी वर्षाकरने लगा २१ फिर पांडवने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्रसे रोककर दूर किया तब कुन्तीनन्दनने अग्निके अतिप्रिय दूसरे अस्त्रको २२ कर्णको लक्षबनाकर छोड़ा वह अस्त्रतेजसे देदीप्यहुआ फिर कर्णने बारुणास्त्र से उसकी अग्नि को शान्त किया २३ और बादलोंसे सर्वदिशाओंको अंधकार युक्त करके दिनको अशुभ रूप करदिया फिर बड़ी सावधानीसे अर्जुनने वायव्यास्त्रसे २४ बादलोंको कर्णके देखतेहुये दूर करदिया इसके पीछे सूतके पुत्र नेपांडवके मारनेकी इच्छासे अग्निके समान महा प्रज्वलित उग्र बाणको अपनेहाथमें लिया तदनन्तर अपने पूजित धनुषमें उसबाण के योजितकरने पर २५ । २६ पर्वतबन समुद्रों समेत पृथ्वी कंपायमानहुई और कंकड़ पत्थरोंसे मिलेहुये पवन बड़े वेगसेचले सब दिशा बिदिशा धूलीसे मंडित होगईं २७ और हेभरतवंशी स्वर्गमें देवताओंका हाहाकार उत्पन्नहुआ हे श्रेष्ठ कर्णके हाथमें चढ़ायेहुये उसबाणको देखकर २८ अर्जुननेचित्तमें दुखपाकर बड़ीव्याकुलता कोपाया कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ वह इन्द्रबज्रकी समान तीक्ष्ण नोकवाला बाण अर्जुन की भुजामें आकर ऐसेप्रवेशित होगया जैसे किसर्पअपनी उत्तमबामीमें प्रवेशकरजाताहै २६ युद्धमें वहशत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त घायल होकर बड़ा सुस्त होकर ऐसे

कंपायमानहुआ जैसे कि बड़े भूकम्प होनेसे उत्तम पर्वत कंपायमान होताहै उसअवकाशकोपाकर पृथ्वीमेंगड़ेहुये अपने रथके पहियेको निकालनेकी इच्छासे महारथी कर्णने ३०।३१ रथसे कूदकर अपने दोनों हाथोंसे पहियेको पकड़कर खेंचा परन्तु वह महापराक्रमीभी उसके निकालनेको समर्थ नहींहुआ उसकेपीछे अर्जुनने सचेतहोकर यमराजके दंडकी समानबाणको हाथमेंलिया ३२ अर्थात् महात्मा अर्जुनने आञ्जुलिकनाम बाणको हाथमें लिया इसके पीछे बासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि जबतक यहकर्ण रथ पर सवारनहोने पावे तबतक तुम इस अपने बाणसे अपने शत्रुके शिरकोकाटो ३३ इस के पीछे अर्जुनने अपने प्रभुकी आज्ञापाकर महातीव्र प्रज्वलित उग्रक्षुरप्रको लेकर प्रथम तो सूर्यके समान निर्मल अत्यन्त उत्तम हाथी की कक्षा रखनेवाली सुबर्ण हीरे मोतियों से जटित अच्छे कारीगरोंकी बनाईहुई सुन्दररूप स्वर्णमयी ३४।३५ सदैव आपकी सेनाके बिजय का स्थान शत्रुओं को भयभीत करनेवाली स्तुति मान लोकमें सूर्य्यके समान प्रसिद्ध और क्रांतिमें सूर्य्यचन्द्रमा और अग्निकेसमान ३६ लक्ष्मीसे ज्वालामान महारथी कर्ण की ध्वजाको अर्जुनने अत्यन्ततीक्ष्ण सुनहरी पुंखवाले अग्निके समान प्रकाशमान क्षुरप्र सेकाटा ३७ और उस ध्वजा के कटने से कौरवोंके यश अभिमान और सब मनके मनोरथों सहित हृदयटूट गये और महा हाहाकार शब्द हुआ ३८ हेभरतबंशी उससमय जो २ आपके युद्धकर्त्ता शूरबीरथे उस सबोंने और कौरवोंके बड़े २ बीरोंने अर्जुन के हाथसे काटी और गिराई ध्वजाको देखकर कर्णके बिजयी होनेकी आशा छोड़दी ३९ फिर कर्ण के मारने में शीघ्रता करने वाले पांडव अर्जुनने महा इन्द्रके बज्र वा अग्निके दण्डकी समान हजार किरण रखनेवाले सूर्य्य की उत्तम किरण के समान आंजुलिक नाम बाणको अपने तूणीरसे निकला ४० वह मर्मभेदी रुधिर मांससे लिप्त अग्नि सूर्य्य के रूप बड़ोंकेयोग्य मनुष्य घोड़े और हाथियोंके प्राणों का हरनेवाला तीनअर्त्तिनीलम्बा (अर्त्ति नी

किसी नपानेकी संज्ञाहै) छःपक्ष रखनेवालासीधा चलनेवाला महा-वेगयुक्त ४१ इन्द्रबज्र के समान पराक्रमी कालकाभी काल अग्नि की समान बड़ा घोर पिनाक धनुष और नारायणजी के सुदर्शनचक्र की समान भयकारी और जीव मात्रका नाशकरने वालाथा ४२जो देवगणोंसे भी हटानेके अयोग्यमहात्माओंसे सदैव पूजित देवासुरों का भी बिजयकरनेवाला था उसको अर्जुनने अपनेहाथमेंलिया४३ युद्धमें उस अर्जुन से पकड़ेहुये उसबाणको देखकर सब जड़ चैतन्य स्थावर जंगम जीवों समेत सबजगत कंपायमान हुआ अर्जुन को उस बाण को उठाये हुये देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसार का कल्याण हो ४४ इसके पीछे उसगांडीव धनुषधारीने उसअचिन्त्य प्रभाववाले बाणको धनुषमेंलगाया और उत्तम महाअस्त्रसे संयुक्त कर गांडीव धनुष को खैंचकर शीघ्रता से बोला ४५ यह महाअस्त्र से संयुक्तबड़ा बाण शत्रुके शरीर और प्राणोंका हरनेवालाहो जो मैंने तपस्या करीहै वा गुरुओं को प्रसन्न करके यज्ञों को किया है और शुभचिन्तक मित्रों की आज्ञा को मानाहै ४६ इससत्यता से सेवित यह कठिन और उग्रबाण मेरे बड़े शत्रु कर्ण के शिरको काटो यहकहकरअर्जुनने उसघोर उग्रबाणको कर्णके मारनेको छोड़ा ४७ और अत्यन्त प्रसन्न मन अर्जुन यह कहता हुआ कियह अथर्व नगरसे कृत्याके समान उग्रप्रकाशित और युद्ध में मृत्युसेभी असह्य रूप बाणमेरी बिजय का करनेवाला हो ४८ कर्ण के मारने का अभिलाषी सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रभाववाला अर्जुन यह बोला कि मेराचलायाहुआ बाणकर्णको मारकर यमपुरको भेजे यहकह-करमारनेके इच्छावान शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुनने उस उत्तम बिजय करनेवाले ४९ सूर्य्यचन्द्रमाके समान प्रकाशित बाण से चक्रके उठानेमें प्रवृत्त शत्रुको मारनाचाहा तबउस छोड़ेहुये सूर्य्य की समान प्रकाशमान बाणने आकाश और दिशाओंको अग्नि रूप किया ५० फिरइन्द्रके पुत्र अर्जुनने दिनके समाप्त होनेपर उसबाण से उसके शिरको ऐसेकाटा जैसेकि महाइन्द्रने अपनेबज्रसे वृत्रासुर

के शिरको काटाथा ५१ इसकेपीछे आंजुलिकसे कटाहुआ उसका शिर गिरपड़ा तदनन्तर उसकाधड़ भी गिरपड़ा वह उदयमान सूर्य्यके समान तेजस्वी आकाशस्थ ऐसेसूर्य्यकेसमानथा५२उसका शिरकटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि रक्त मंडलवाला सूर्य्य अस्ताचल से गिरताहै तदनन्तर इसमहाकर्मीके सदैवसुखकेयोग्य सुन्दर शिरने अपने शरीर के रूपकोबड़े कष्टसेऐसे त्यागकियाजैसे कि बड़ाधनवान अपनेधनसे पूर्णघरको बड़े दुःखों से त्यागता है उस बड़े तेजस्वी कर्ण का उन्नतशरीर बाणों से भिदाहुआ निर्जीव होकरबाणोंके घावोंसेरुधिरगिराताहुआ ऐसेगिरपड़ा५३।५४ जैसे कि बज्रसे घायलहोकर पर्व्वतका बड़ाशिर रक्तधातुसे युक्तजल को छोड़ता गिरताहै उसगिरेहुये कर्णके शरीरसे निकलाहुआतेज आकाशको व्याप्तकरके सूर्य्यमें प्रवेशकरगया ५५ कर्णकेमरनेपर सब शूरबीर युद्धकर्त्ता मनुष्योंने इसआश्चर्य्यको देखा इसकेपीछे अर्जुन के हाथसे गिरायेहुये कर्णको देखकर पांडवोंने ऊंचेस्वरोंसे शंखोंको बजाया ५६ इसी प्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और सहदेवनेभी शंखोंको बजाया फिर सोमकोंने उसमरे हुयेकर्ण कोपृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर सेनाओं समेतशंखोंके नादकिये ५७ और अत्यन्तप्रसन्न होकरतूरीआदि अनेकबाजोंकोभीबजवाया और बस्त्रोंको हला २ कर अपनी भुजाओं को ठोंका और अत्यन्तप्रसन्न आशीर्बादोंको देतेहुये अर्जुनके पासगये५८और अन्य २शूरलोगभी अर्जुनके हाथसे मराहुआ रथसेपृथ्वीमेंपड़ा हुआकर्णको देखकर५९ नृत्यकरनेलगे और परस्पर में गर्जना पूर्व्वक ऐसी बार्त्तालापें करने लगे जैसे कि कठिन बायु के वेगसे घायल पर्व्वतहोते हैं उससमय वहकर्णका पृथ्वीपर पड़ाहुआ शिरऐसाशोभायमानहुआजैसेकि यज्ञ के अन्तमें शान्तहुईअग्नि अथवा जैसेकि अस्ताचलपर पहुंचाहुआ सूर्य्यका बिम्ब होताहै ६० वहसूर्य्यके समान तेजस्वीयुद्धमें पांडवों की सेनाको अपनी बाणरूपी किरणों से अच्छी रीति से तपाकर अन्तको अर्जुनरूपी कालके द्वारा अस्तहोगया ६१ सब अंगों में

बाणोंसे छिदारुधिर में भराहुआ कर्णका शरीर ऐसा प्रकाशितथा जैसेकि सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होताहै ६२ वहकर्णरूपी सूर्य्य किरणों से शत्रुओंकी सेनाको संतप्त करके महांपराक्रमी अर्जुन रूपीकाल के बशीभूत होगया ६३ जैसे कि सूर्य्य अस्तहोता हुआ प्रकाशको लेकर जाताहै इसीप्रकार वहबाण कर्णके जीवनको लेकरगया ६४ हेश्रेष्ठ दिवसके अन्तभागमें कर्णके मरनेके दिनकर्ण का शिर शरीर समेत अंजुलिक बाणसे जब युद्धभूमि में गिरातब उस बाणनेभी सेनाओंसे पृथक् अर्जुन के शत्रुका वहशिर शरीर समेत शीघ्रता पूर्व्वक अपने वेग से हरलिया ६५ फिरउस शूर वा बाणोंसे छिदेहुये रुधिर से लिप्तपृथ्वी परगिरकर शयन करनेवाले कर्णकोदेखकर राजा युधिष्ठिर ध्वजावाले रथकीसवारीसे चला६६ और कर्णके मरनेपर भयसे पीड़ित युद्धमें अत्यन्त घायलहुये कौरव बारम्बारअर्जुनकेक्रोधरूपीमुखको देखतेहुयेअचेतहोहोकरभागे६७ इन्द्रके समान कर्म करनेवाले कर्णका शिर जोकि इन्द्रकेही शुभ मुखके समानथा वहऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसेकि दिनके अन्तमें सहस्रांशु सूर्य्यअस्त होजाताहै ६८॥

सो० कर्णअग्निकी शांति युद्धयज्ञके अन्तलखि ।
आवतभयोअकान्ति सरथशल्यअध्वजबिकल॥
दुर्य्योधनक्षितिपाल कर्णसखाकोबधनिरखि ।
तजतनयनजलधार महाराजअतिबिकलभो ॥
पूरित मोदमहान करिकरि धनु टंकारअति ।
भीमसेनबलवान गरजिगरजिनिरततभयो ॥
शल्यनृपतिपहंआय सकलव्यवस्थाकहतभो ।
सुनितोसुतक्षितिराय रुदनकियोअतिदीनह्वै ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णबधेएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

संजयबोलेकि अर्जुनके हाथसे कर्णके मरनेपर राजाशल्यसेना-

को भयभीत और पीड़ामानरूप देखकर अपनेसाथी अधिरथीकर्ण के मरनेपरटूटेसामानवाले रथकीसवारीकेद्वारा चलदिया१ अर्थात् राजाशल्य कर्ण और अर्जुनके युद्धमें बाणोंसे घायल और म्लान-चित्त सेनाओंको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर टूटे सामानवाले रथकी सवारीसेचला २ जिसके रथघोड़े और हाथीगिराये गये वह सेनापति कर्णभी मारागया उससेनाको देखकर अश्रुपातों से पूर्ण महादुखित पीड़ामानरूप दुर्योधनने बराबर श्वासोंकोलिया३ फिर पृथ्वीपरगिरे बाणोंसे छिदेहुये रुधिरमें भरे दैवइच्छासे सूर्य्यके समान प्रतापी पृथ्वीपर नियत कर्णके देखनेके अभिलाषी मनुष्य कर्णको चारोंओरसे घेरेहुये ४ अत्यन्त भयभीत व्याकुल चित्त आश्चर्य्य युक्त होकर शोकसे पीड़ामान हुये इनके सिवाय आपके और सबशूरबीरभी परस्परमें वैसीही दशाको प्राप्तहुये जैसे प्रकार कािक उनका स्वभावथा५कौरवलोग बड़ेतेजस्वी कर्णको अर्जुन के हाथसे टूटे कवच भूषण बस्त्र और शस्त्रोंसे रहित देखकर और मृतक सुनकर ऐसेभागे जैसेकि निर्जनबनमें मृतक बैलवाली गौवें भागतीहैं ६ तबभीमसेन भयानक शब्दोंसे गर्जनाकरके पृथ्वी और आकाशको कंपायमान करता भुजाओंको ठोकताहुआ गर्ज २ कर उछला और कर्ण के मरनेपर धृतराष्ट्रके पुत्रोंको भयभीत करता नृत्य करनेलगा७हेराजा इसीप्रकार सब सोमक और सृञ्जियोंने शंखोंको बजाकर एक एकसे प्रीतिपूर्व्वक मेल न किया और अन्य क्षत्री लोगभी कर्णके मरनेपर परस्परमें प्रसन्नरूपहुये ८ सूत पुत्र कर्ण अर्जुनसे महाघोर युद्ध करके ऐसे मारागया जैसे कि केसरी सिंहके हाथसे हाथीमाराजाताहै पुरुषोत्तम अर्जुनने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्णकरके शत्रुताके अन्तकोपाया ९ हे राजा फिर व्याकुलचित्त मद्रदेशके राजाशल्यनेभी शीघ्रहीध्वजारहित रथकी सवारीके द्वारा दुर्य्योधनकेपास जाकर अश्रुपात डालकर यह बचन कहा १० कि आपकीसेना परस्परमें सन्मुख होकर गिरेहुये हाथी रथ घोड़े वा बड़े २ शूरबीरोंवाली यमराजके देशकी समान और बड़े २ मनुष्य

और घोड़े पर्व्वतके शिखरके समान हाथियोंसे मारेगये ११ हे भरतबंशी यह सबतोलड़े औरमरे परन्तु ऐसायुद्ध कोई नहींहुआ जैसाकि कर्ण और अर्जुनकाहुआहै कर्णने सन्मुखहोकर श्रीकृष्ण अर्जुनको और अन्य बड़े २तेरेशत्रुओंको अपने स्वाधीनकिया १२ निश्चयकरके पांडवोंकी रक्षाकरनेवाला दैवही अर्जुनके आधीन होकर कर्मकर्त्ताहै जो पांडवोंको बचा २करहमलोगोंको मारताहैतेरे मनोरथ सिद्धकरनेवाले सबशूरबीर युद्धकरके शत्रुओंकेहाथ सेमारे गये१३हेराजावहउत्तमबीरकुबेरयमराज और इन्द्रकेसमान प्रभाव-वाले और पराक्रम बल औरतेजमेंभी इन्हींदेवताओंके समाननाना प्रकारोंके गुणोंसेयुक्तहोकर अबध्योंके समान तेरे अभीष्टोंके चाहने-वाले राजालोग युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारेगये १४ हे भरतबंशी सोतुम अबशोचमतकरो यहहोनहारहै निश्चय समझोकि सदैव किसीकी बिजय नहींहोती राजाशल्यके इस बचनको सुनके और अपने अन्यायको बिचार १५ महादुखोचित अचेत और पीड़ित रूपदुर्य्योधनने बारंबार श्वासाओंकोलिया १६ ॥

इति ॥

चौ० नृपधृतराष्ट्रबचनयहसुनिकै । संजयसोंबूझेशिरधुनिकै ॥
संजय कहौ दशालहिऐसी । ममसुतभूपगहीगतिकैसी ॥
संजयकह्योसुनोनरनायक । तेहिपलतोभटभयेअचायक ॥
पार्थधनुर्द्धरकर्णहिबधिकै । अबहमसबकहंबधवबरधिकै ॥
भीमसेनाबिनुबधेनछांड़िहिको असुभटताहिजोआड़िहि ॥
यहबिचारअतिशयभयपागे । साहसछोड़िभूरिभटभागे ॥
नृपतेहिक्षण ममभटभे तैसे । बूड़े नावबणिकजनजैसे ॥
लखियहदशाभूपदुर्योधन।निजचखजलकोकरिअवरोधन॥
गुणिदुखगहेहारियहिक्षणमें । तोसुतभूपधीरधरिमनमें ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णबधेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

—※—

तिरानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले कि रुद्ररूपकर्ण और अर्जुनके युद्धमें दग्धरूप बाणों से मथित और भागेहुये कौरव और सृञ्जियोंकी सेना के लोगोंका रूप कैसाहोगया १ संजयबोलेकि हेराजा सावधान होकरसुनों जैसे-कि युद्धभूमिमेंमनुष्योंके शरीरोंका अत्यन्त घोरनाश वा राजाओं की हानिहोजाने और कर्णकेमरनेपर पांडवोंनेसिंहनादकिये तब आपके पुत्रोंमें बड़ाभारीभय उत्पन्नहुआ २।३ कर्णकेमरनेपर आपके किसी शूरबीरकीभी सेनाओंकीचढ़ाई और शीघ्रपराक्रम करनेके साहसकी बुद्धिनहींहुई ४ जैसे कि नौकारहित अथाहजल में नौकाके टूटनेपर ब्यापारीलोग अपारजलके पारहोनेकीइच्छारखनेवाले होतेहैं उसी-प्रकार अर्जुनके हाथसेसेनापति कर्णके मरनेपर आपकेलोग रक्षाके चाहनेवालेहुये ५ हेराजा सूतपुत्रकेमरनेपर भयभीत शस्त्रोंसेघायल आपके अनाथलोग नाथके ऐसे चाहनेवाले हुये जैसे कि सिंहोंसे पीड़ामान मृगटूटी शाखावाली बेल और टूटी डाढ़वाला सर्प रक्षा को चाहतेहैं ६ सायंकालके समय अर्जुनसे पराजित मृतकवीरवाले तीक्ष्णबाणोंसे घायलहोकर लोगहटआये ७ हेराजा कर्णकेमरतेही यंत्रवा कवचोंसेरहित अचेत भयभीत ८ और परस्परमें मर्द्दनकरने वाले और भयसे ब्याकुलहोकर देखनेवाले आपकेपुत्र महाभयातुर होकरभागे और यह निश्चय जानकर कि अर्जुन हमारेही सन्मुख आताहै वा भीमसेन हमारेही मारने को सूलाहै ९ यह मानतेहुये महा ब्याकुलतासे गिरकर मृतक प्रायहोगये किसी महारथी ने घोड़ोंपर किसीने हाथियोंपर किसीने रथोंपर १० चढ़कर बड़े वेग से भयभीत होकर अपने २ पदातियोंको त्यागकिया हाथियोंसेरथ महारथियों से अश्व सवार ११ और भयसे व्याकुल भागनेवाले घोड़ोंसे पदातियोंकेसमूह मारेगये जैसे कि सर्प और चोरोंसेभरेहुये बन में अपने संग के लोगों से पृथक् होकर मनुष्योंकी जो दशा होतीहै १२ हेराजा उसी प्रकार कर्णके मरनेपर आपके शूरबीरोंकी

भी वहीदशाहुई अथवा जैसेकि मृतक सवारवाले हाथी औरटूटे हाथवाले मनुष्य होतेहैं १३ इसी प्रकार आपके सबमनुष्य संसार भरेकोही अर्जुनरूप देखतेहुये भयसे पीड़ामानहुये भीमसेनके भयसे पीड़ित होकर भागता हुआ सबको देखकर १४ और उन हजारोंशूरोंको भी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा हाहाकारकरके फिर अपनेसारथीसे यहवचनकहा १५ किअर्जुन सबसेनाके मारनेको मुझधनुषधारीके होंतेहुये नहीं आसक्ताहैइससे तुमलोगअपने अपने घोड़ोंको रोको १६ मैंनिस्संदेह उस युद्धकरनेवाले अर्जुनको अवश्य मारूंगा वह मुझको ऐसे उल्लंघन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्याद नहीं उल्लंघन करसक्ताहै १७ अबमैं श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को वा बड़ेअहंकारी भीमसेन को और इसी प्रकार सबबाकी बचेहुये शत्रुओंको मारकर कर्ण केऋण से उद्धार हूंगा १८ सारथीने कौरवोंके राजा दुर्योधनके उस बचनको जो कि शूरऔर श्रेष्ठलोगोंके कहनेके समानथा सुनकर सुवर्णके सामानोंसे आच्छादित घोड़ोंको बड़ेधीरेपनेसे चलायमान किया १९ हेश्रेष्ठ फिर रथघोड़े और हाथियोंसे रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धके निमित्त नियतहुये २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्ननेचतुरंगिणी सेनासमेत उनपदातियोंकोघेर कर मारा २१ वहसब भीमसेन और धृष्टद्युम्नके सन्मुख होकर युद्ध करनेलगे और किसी २ नेपांडव और धृष्टद्युम्नके नामोंको लेकर पुकारा २२ तब उन सन्मुखआयेहुये पदातियोंसे युद्धमेंभीमसेनक्रोधरूपहुये और बड़ी शीघ्रतासे अपने रथसे उतरहाथमें गदा लेकर युद्धकरने लगा २३ अपने भुजबलमें दृढ़रूप धर्मकोचाहनेवाले रथमें सवार कुन्तीके पुत्रभीमसेनने रथपर चढ़कर उनपदातियोंसेयुद्ध नहींकिया २४ हाथमें दंडधारी यमराजकेसमान भीमसेनने सुवर्णसे मंडित अपनी गदाको हाथमें लेकर पदाती होकर आपकेसब पदातियोंको मारा फिर वह सब पदातीभी अपनेप्यारे जीवनको त्यागकरके २५ युद्धमेंभीमसेनके सन्मुख ऐसेगये जैसेकि

अग्नि में पतंग जातेहैं वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेनको पाकर २६ अकस्मात ऐसे नाशहोगये जैसेकि जीवों केसमूह मृत्युको देखकर नाशहोजातेहैं फिर बाजकी समान गदा हाथमें लिये घूमनेवाले भीमसेनने २७ आपके पच्चीस हजारपदातियोंको मारा फिर वह महापराक्रमी अतुलबल भीमसेन उस पदातियोंकी सेनाको मारकर २८ धृष्टद्युम्नको आगेकरके वहांपर नियतहुआ २६ और महारथीनकुल सहदेव और सात्विकी शकुनी केसन्मुखहुयेऔर बड़े प्रसन्नचित्त होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रतासे सन्मुख दौड़े ३० अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारोंको मारकर शीघ्रतासे उसके सन्मुखदौड़े और बड़ा युद्धहुआ ३१ हेप्रभुफिर अर्जुननेभी आपकी रथवाली सेनाके सन्मुख जाकर तीनोंलोकोंमें प्रसिद्ध अपने गांडीव धनुषको टंकारा आपके युद्धकर्त्ता शूरबीर उसरथको जिसमेंकि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेतघोड़ोंसे युक्तथादेखकर और युद्धकरनेवाले अर्जुन कोभी देखकर भागे ३३ रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पच्चीसहजार पदातियोंने कालको पाया ३४ पांचालों का महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान धृष्टद्युम्न उनको मारकर ३५ थोड़ेही कालमें भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया ३६ तबआपके शूरबीर उस कपोत बर्ण घोड़े और कोबिदार रूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्नको युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे ३७ और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्रअस्त्रोंके चलाने वाले गांधार पतिको स्मरण करके सात्विकी समेत थोड़ीही देरमें दृष्टिपड़े ३८ हेश्रेष्ठ इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदीके पुत्रोंने आपकी बड़ी सेनाको मारकरबड़े शंखोंको बजाया ३९ फिर वह आपके शूरबीरों को मुखमोड़ कर भागते हुये देखकर ऐसे सन्मुख आकर बर्त्तमान हुये जैसे कि बैलोंको बिजय करकेक्रोधयुक्तबैल बर्त्तमान होतेहैं ४० हेराजा इसके पीछे महा पराक्रमी पांडव अर्जुन आपकी बाकीबची हुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ ४१ और आपकी रथकी सेना

केसन्मुख बर्त्तमान हुआ और अपने विख्यात गांडीव धनुषको सन्नद्धकिया ४२ बाणोंकी बर्षाकरके उससेनाको ढकदिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछदिखाई नहींदिया ४३ हेमहाराज लोकेकेहत तेज होने और पृथ्वीको धूलयुक्त होनेपर आपकेसब शूरबीरभयभीत होकर भागे ४४ हेराजा सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन सन्मुख आनेवाले शत्रुओंकी ओरको दौड़ा ४५ इस केपीछे दुर्य्योधन ने सब पांडवोंको युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हेभरतर्षभ पूर्व्वसमय में राजा बलिने देवताओं को बुलाया था ४६ नानाप्रकार के शस्त्रों से युक्त क्रोधयुक्त बारंबार घुड़कीदेते और गर्जना करते हुये एकसाथही उसके सन्मुखगये ४७ इसके पीछे वहां भयसे अब्याकुलचित्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने युद्धमें अपने तीक्ष्ण बाणोंसे हजारों सेनाके लोगोंको मारा ४८ औरसबओरको पांडवों की सेनासे युद्धकरने लगा उस स्थानपर हमने आपके पुत्र की अपूर्व्व बीरताको देखा ४९ कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होने वालेपांडवोंसे युद्धकरने लगा इसकेपीछे उसमहात्मा ने अपनीसेना को अत्यन्त दुखीदेखा ५० हेराजा उससमय आपका बुद्धिमान पुत्र उन दुखी शूरबीरोंको खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यहबचन बोला ५१ कि मैं उसदेशको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयसे पीड़ित होकर जाओ और वहां पांडवोंके हाथसे बचने पाओतुमको भागनेसे क्यालाभ है ५२ उनकी सेना बहुतकम रहगईहै औरश्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायलहैं इससेमैं उनसबको निश्चय मारूंगा अब मेरी पूरी बिजयहै ५३ जोतुम भागोगे यापृथक् होगे तो पांडव लोग अपराधी जानकर तुमलोगोंको पीछाकरके मारेंगे इससेहमारा और तुम्हारा युद्धमेंही मरना श्रेष्ठहै ५४ क्षत्रीधर्मसे युद्धमें लड़ने वालोंकी मृत्युका होना सुखरूपहै क्योंकि मरने केदुःखोंको नहीं भोगता है शीघ्रही मरकर अबिनाशी गति को पाताहै ५५ तुमजितनेक्षत्री अब इकट्ठे हुयेहो सब चित्तलगाकर सुनो कि जबनाशकरने वाला महाबली यमराजही भयभीत लोगोंको मारताहै ५६ तोफिर

मेरे समान क्षत्री व्रतकारखनेवाला कौन अज्ञानीयुद्धको नहींकरेगा देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप हमारे शत्रुभीमसेनके आधीन होगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्ति पाकर स्वर्गबासी न होगे इस हेतु से तुमलोगोंको अपने पूर्वजोंके कियेहुये धर्मका त्यागना उचितनहीं है भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्री का धर्म नहीं है ५८ हे कौरव लोगो युद्धसे बढ़कर क्षत्रियों का कोई उत्तम धर्म नहीं है हे शूरबीरो जो मरभी जाओगे तो थोड़ेही दिनों में शीघ्रलोकों को भोगो गे ५६ आप के पुत्र के इस रीति के बचनों को सुनकर भी सेनाकेलोग उसबचनका बिचारन करसके सबदिशाओंकोभागे ६०

चौ० बिचले भटन टेरि अनखायो । क्षात्रि धर्म बहुभांति सुनायो ॥
सो सुनि ते सब फिरे न कैसे । रुकैन बहुत सरित जल जैसे ॥
सो लखितो सुत सुभटअतोलो । सुहित सारथी सों इमि बोलो ॥
संशय त्यागि चपल करिघोरे । सादर चलो पार्थ के धोरे ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकौरवसेनपलायिनेत्रिनवतितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसकेपीछे आपके पुत्रसे युद्धहुआ और सेनाको देखकर अज्ञानचित्त रूपान्तर चेष्टाकिये मद्रदेश के राजा शल्यने दुर्य्योधन से यहबचन कहा १ कि मनुष्य हाथी घोड़े और हजारों पर्ब्बताकार शूरबीर बारंबार बाणोंसे घायलहोकर पराजितटूटेअंग पृथ्वीपर गिरेहुओं से और मरेहुये हाथियों से व्याप्त इसघोर उग्र रूपयुद्धभूमिकोदेखो २ इनव्याकुल निर्जीव टूटेकवचशस्त्रढालखड्ग वाले शूरबीरोंसे व्याप्त पृथ्वीऐसो दिखाई देती है जैसे कि अत्यन्त टूटेपत्थर बड़े २ वृक्ष और औषधीवाले बज्रसे ताड़ित पहाड़ोंसेव्याप्त होकर दीखतीहै ३ टूटेघटे अंकुश तोमर ध्वजा और सुवर्णके जालों सेअलंकृत रुधिर से लिप्तबाणोंसे टूटेअंग श्वासालेनेवाले रुधिरको बमनकरनेवाले पीड़ामान पड़ेहुये घोड़ोंसे भोभरी हुईपृथ्वीकोदेखो कष्टितशब्दोंको करते भग्ननेत्र पृथ्वीको काटनेवाले महादुखीगर्जते

हुयेहाथीघोड़े शूरबीर मनुष्य औरसेनाहोंसे घायल बीरोंके समूहोंसे युक्त इसयुद्ध भूमिको देखो ५ निश्चय करके इसघोरयुद्धमें यह पृथ्वी मन्द प्राणवाले युद्धकर्त्ताओं से बैतरनीनदी के समान शोभामान होरहीहै ६ कटेहुये हाथी कंपायमान और टूटेहुयेदांत रुधिरकी बमन करनेवालेफड़कतेपीड़ित शब्दोंसे दुखभोगते पृथ्वीपर पड़ेहुये मनुष्य वा हाथियोंके शरीरोंसे पृथ्वी पूर्णहोरहीहै ७ टूटेपहिये, बान, जुये, योक्तर, वा छिदेहुये तूणीर पताका ध्वजा अथवा सुवर्णके जालोंसे युक्त अत्यन्तटूटे हुये बड़े २ रथोंके समूहोंसे ऐसीभरी हुईहै जैसेकि बादलोंसे भरीहुई होतीहै ८ जिनके कवच स्वर्ण भूषण और शस्त्र टूटकर गिरपड़े उनसन्मुख होकर शत्रुओंको हाथसेमरे उत्तमनामी हाथीघोड़े और शूरबीर लड़ने वालोंसे पृथ्वीऐसी व्याप्तहै जैसेकि शान्तरूप अग्नियोंसे व्याप्तहोतीहै ९ बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरेहुये हजारों पराक्रमियोंसे ऐसी संयुक्त है जैसेकि रात्रिके समय स्वर्गसे गिरेहुये अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहोंसे संयुक्तपृथ्वी और आकाश होते हैं १० कर्ण और अर्जुनके बाणोंसे टूटेअंग अचेतरूप बारंबार श्वासें लेने वाले मृतकहुये कौरव और सृञ्जयी बीरोंसे पृथ्वी उस प्रकारकी होगई जैसेकिसमीपवर्त्ती प्रज्वलित अग्नियोंके समूहोंसे व्याप्तहोतीहै ११ कर्ण और अर्जुनकी भुजाओंसे छोड़ेहुयेबाण हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंको चीर प्राणोंको निकालकर शीघ्रतासे ऐसे पृथ्वीपर गये जैसेकि झुकेहुये बड़े २ सर्प बिबरोंमें घुसते हैं १२ हे नरेन्द्र अर्जुन और कर्णके बाणोंसे युद्धमें घायल और मरेहुये मनुष्य और हाथियोंसे पृथ्वी अगम्य होगई १३ शूरबीर वा उत्तम धनुष आदि शस्त्रोंसे भुजबल करके अच्छे मथेहुये सुन्दर अलंकृतरथ और पड़े हुये योक्तर टूटेबंधन चूर्णांत रथचक्र अंकुश त्रिवेणु और जिनसेशस्त्र निशंग बंधन जुदेहोगये वा अनुकर्ष टूटे उनमणि सुवर्णसे अलंकृत खंडित नीड़वाले रथोंसे ऐसी आच्छादित होगई जैसेकि शरदऋतु के बादलोंसे आकाश व्याप्त होता है १५ जिनके स्वामी मारे गये

और शीघ्रगामी घोड़े जिनको खैंचतेथे उन सुन्दर अलंकृत राज-रथ हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूहों से शीघ्र चलनेवाले लोग अनेक प्रकारसे चूर्ण होगये १६ स्वर्णनिर्मित बस्त्रधारी परिघफरसे तीक्ष्णशूल मुदगर मियान से निकलेहुये सुन्दर खड्ग और स्वर्णमयी बस्त्रोंसे मढ़ीहुई गदा गिरपड़ीं १७ सुवर्ण के बाजूबंदों से अलंकृत धनुष स्वर्णपुखी बाण पीतरंगके निर्मल मियानसे जुदे दुधारा खड्ग उत्तम दण्डवाले प्रास १८ क्षत्र बाल व्यजनशंख टूटी और बिखरी हुईमाला कुथा पताका बस्त्र आभूषण किरीट माला और उत्तम मुकुट १६ हेराजा बहुतसे गिरे और बिनागिरे हुये मूंगे मोतीवाले हार आपीड़ केयूर उत्तमबाजूबन्द और स्वर्ण सूत्रोंसे पुहेहुये गुलूबन्द और निष्कनाम आभूषणथे २० उत्तम मणिहीरा सुबर्णमोती छोटेबड़े रत्न औरमंगलीकबस्तु बड़ेसुख भोगनेकेयोग्य शरीरचन्द्रमाके समान मुखरखने वाले शिर २१ शरीरके भोगनेवाले सामान और यथेत्सित्त सुखोंको त्यागकरके अपनेधर्मकी बड़ी निष्ठाकोपाकर लोकोंको कीर्तिसे ब्याप्त करके वहसब युद्धकर्त्ता शूरबीरचलेगये २२ हेबड़ाई देनेवाले राजादुर्य्योधन लौटजाओ सेनाके मनुष्य भी अपने२ डेरोंमें जायँ हेप्रभु अब सूर्य्यभी अस्त होताहै अब चलनाही योग्यहै हेनरेन्द्र दुर्य्योधन इस स्थान में तुम्हीं कारणरूपहो २३ शोकसे दुखीमन राजाशल्य हायकर्ण हायकर्ण इसरीति से कहनेवाले पीड़ामान अत्यन्त अचेत अश्रुपात युक्त दुर्य्योधन से यह वचन कहकर मौन होगया २४ फिर अश्वत्थामा आदिक वह सबराजा लोग अर्जुनकी यशकीर्तिवाली प्रज्वलित ध्वजा को बारबार देखते और दुर्य्योधन को आश्वसन करते हुये चले २५ हेराजा इसीप्रकार मनुष्य घोड़े हाथी और मनुष्योंके शरीरोंसे उत्पन्न हुये रुधिर से सींचीहुई लाल पोशाक माला आदिस्वर्ण भूषण धारी निर्लज्जवेश्याओंके समान रुधिरसे आच्छादित भूमिको देखकर देवलोकके निमित्त सन्यास धारण करनेवाले सब कौरव उसअत्यन्त शोभायमान रुद्र मुहूर्त्त में स्थित नहीं हुये २६ २७ हे राजावह मारनेसेदुःखीहाथ

कर्ण हायकर्णयही उच्चारण करते हुये शीघ्रही अपनेडेरों मेंगये२८ और युद्धमें गांडीव धनुष से छोड़ सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधारवाले रुधिर भरे पैनेबाणोंसे युक्त शरीरवाला मृतक कर्णभी किरण मंडल रखनेवाले सूर्य्य के समान प्रकाशमान था २९ भक्तों पर दया करनेवाले रक्तवर्ण भगवान सूर्य्य कर्ण के रुधिर भरे शरीर कोअपनी किरणोंसे स्पर्श करके स्नान करनेके निमित्त पश्चिमीय समुद्रको जातेहैं३० और देवता ऋषियोंकेसमूहभी इसका शोचकरते हुये यात्रायुक्त होकर अपने २ स्थानोंको जाते हैं जीवोंके समूह भी बिचार करते सुख पूर्व्वक आकाश और पृथ्वी को गये ३१ तब कौरवीयवीरोंमें श्रेष्ठ अर्जुन और कर्णके सबजीवों के महा भयकारी घोरयुद्ध को देखकर बड़े आश्चर्य्य युक्त होकर उनकी प्रशंसाओंको करते हुये मनुष्य भी चले ३२ बाणोंसे टूटे कवच रुधिरसे सींचेहुये बस्त्रोंसे युक्त निर्जीव कर्णको भी शोभानहीं छोड़ती है संतप्त सुबर्ण अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशमान ३३ उस शूरबीर को सब जीवोंने जीवतेहुयेके समानही माना हेमहाराज युद्धमें उस मरेहुये कर्णसे भी ३४ युद्धकर्त्ता लोग सब ओरसे ऐसे भयभीत हुये जैसे कि दूसरे मृग सिंहसे भयभीत होतेहैं क्योंकि वह मृतक हुआ भी पुरुषोत्तम जीवतेके समान दिखाई देताथा ३५ इस निमित्त कि मरनेपर भी उसमहात्मा के रूपमें अन्तर नहीं हुआ इसी से उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले बीर पुरुष को जीवतेकेही समानमाना ३६ कर्णका वहमुख पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाशमान नाना भूषण तप्तकांचनमयी बाजूबंद धारणकिये महाप्रकाशित होकर शोभासे युक्त ३७। ३८ वह सूर्य्यका पुत्र ऐसेमृतक होकर सोता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तमसूर्य्य के समान प्रकाशमानहो ३९ वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्जुन के शायकरूपी जलसे ऐसे शान्त होगया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्य अग्नि जलको पाकर शान्त होजाता है ४० इसीप्रकार कर्णरूप अग्नि युद्धमें अर्जुन रूप बादलसे शान्त कीहुई पृथ्वीपर उत्तम युद्धमेंअपने

प्रकाशित यशकोप्राप्त करके ४१बाणोंकी बर्षाको छोड़दशोंदिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेजसे शान्तहुई ४२ वह सूर्य्य का पुत्र कर्णअस्त्रोंके तेजसे सबपांडव और पांचालोंको तपाकरबाणोंकीबर्षा से शत्रुओंकी सेनाको व्यथितकर ४३ श्रीमान सूर्य्य के समानसब संसारको तपाताहुआ पुत्र और सवारी समेत मारागया ४४ यह कर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियोंका कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषोंको सदैव यथेत्सित दानदियाकरताथा कभी किसी प्रकारकेभी याचना करनेवाले से यह बस्तुनहीं है इस बचनको नहीं कहा ४५ ऐसा सत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्ध में मारागया जिस महात्माका सबधन ब्राह्मणोंकेही देनेकेयोग्यहुआ जिसका सबजीवन ब्राह्मणोंको किसी बस्तुका अदेयरूपनहींहुआ ४६ सदैव स्त्रियोंके प्यारेदानी अर्जुन के अस्त्रसे मरे हुये उसमहारथी ने परमगति को पाया जिसके आश्रय में होकर आप के पुत्रने शत्रुताकरीथी ४७ वह आपके पुत्रोंकी बिजयकीआशा प्रसन्नता और रक्षाको साथ लेकर स्वर्गकोगया कर्णके मरनेपरनदियों ने चलना बन्दकिया औरसब संसारका प्रकाशक सूर्य्यभी अस्तहो गया ४८ तिर्य्यग् ग्रह और अग्नि सूर्य्यकेवर्ण समानहुये औरचन्द्रमाका पुत्र बुध उदयहोनेके निमित्त तिरछाहोगया आकाश चलाय मानहुआ पृथ्वी शब्दायमानहुई सूक्ष्मनमहाभयकारी बायुचलीदिशा ज्वलित रूप हुईं और महा समुद्र धूम और शब्द से युक्त होकर चलायमानहुआ ४९ काननों समेत सबपर्व्वतोंके समूह कंपायमान हुये और सब जीवोंके समूह पीड़ामानहुये और हे राजा वृहस्पति जी रोहिणीको घेरकरचन्द्रमा और सूर्य्यके समान हुये ५० कर्णके मरने पर बिदिशा भी प्रज्वलित होगईं आकाश अन्धकारसे युक्त हुआ अग्निके समान प्रकाशमान उल्कापातहुये राक्षस भी अत्यन्त प्रसन्न हुये ५१ जब अर्जुनने चन्द्रमुखवाले प्रकाशमान कर्णके शिर को अपने क्षुरसे काटा तब आकाशमें देवता लोग अकस्मात हाय हाय ऐसा शब्द करनेलगे ५२ वह अर्जुन देव गन्धर्व औरमनुष्यों

से पूजित अपने शत्रु कर्ण को युद्ध में मारकर बड़े तेजसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि पूर्वसमय में वृत्रासुरको मारकर इन्द्र शोभायमान हुआथा ५३ इसके पीछे महाइन्द्र के समान पराक्रम करनेवाले वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन बादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्यके समान प्रकाशितपताका और भयानक शब्दवाली ध्वजा रखनेवाले हिमचन्द्रमा और शंखकेसमानश्वेत उज्ज्वल महाइन्द्र रथके तुल्य अनुपमसवारी में बैठेहुये युद्धमें बिष्णु और इन्द्रके समान शोभायमानहुये अर्थात् सुवर्ण मणि हीरे मोती और मूगोंसे अलंकृत अग्नि और सूर्यकेसमान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पांडवअर्जुनथे इसकेपीछे उन गरुड़ध्वज और बानरध्वज श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यंचा और बाणोंके शब्दों से शत्रुओंको प्रभा रहित करके ५४।५५।५६।५७ कौरवोंको उत्तमबाणोंसे ढककर उन प्रसन्नचित्त अतुल प्रभाववाले शत्रुओंके मनको संदेह करनेवाले नरोत्तमोंने ५८ सुवर्ण जालसे युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शंखोंको हाथमेंलेकर मुख से चुम्बनकर ५९ अकस्मात् अपने मुखोंसे बजाया उन पांचजन्य और देवदत्तनाम दोनोंशंखोंके शब्दोंने ६० पृथ्वी दिशा बिदिशाओं समेत आकाशको शब्दायमानकिया हे राजाओंमें श्रेष्ठ अर्जुन और माधवजीके उन शंखों के शब्दोंसे सब कौरव लोग भयभीत हुये ६१ शंखोंके शब्दोंसे बनपर्व्वतनदी और पर्व्वतोंकी कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उनदोनों पुरुषोत्तमोंने आपकेबेटेकी सेनाको भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्नकिया ६२ हे भरतवंशी इसके अनन्तर उनके शंखोंके शब्दोंको सुनकर सबकौरवलोग भरतबंशियोंके राजा दुर्य्योधनको और राजामद्र को छोड़कर बड़ेवेग से भागे ६३ तब जीवोंके भागनेवाले बड़ेसमूहोंने उसबड़े युद्धमेंबड़े तेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्जुनको ऐसेप्रसन्न किया जैसे कि उदयहोने वाले दोसूर्य्यको सब प्रसन्न करतेहैं ६४ उसयुद्धमें कर्णके बाणोंसे चितेहुये शत्रुओंके संतप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ऐसे

प्रकाशमानहुये जैसे कि किरण समूहोंके रखनेवाले निर्मलचन्द्रमा और सूर्य्य उदयहोकर अंधकारको दूरकरकेप्रकाशमान होतेहैं वह अनुपम पराक्रमी दोनों ईश्वर उनबाण समूहोंको छोड़कर मित्रों को साथमें लियेहुये सुखपूर्व्वक अपनेडेरोंमें ऐसेपहुंचे जैसेकि सदस्यों के बुलाये हुये बिष्णु और इन्द्रजातेहैं ६५।६६. तबकर्णके मरनेपर उसबड़े युद्धमें वहदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन देवता गन्धर्व मनुष्य चारण महर्षि यक्ष राक्षस और महासर्पोंकेभी अपूर्व्व उत्तम बिजय के आशीर्वादोंसे पूजित हुये ६७ फिर वह योग्य आशीर्बादोंसे युक्त दोनोंअपने गुणोंसे स्तुतिमान होकर अपने मित्रोंसमेत ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि राजा बलिको बिजय करके देवगणों समेत इन्द्र और बिष्णुप्रसन्नहुयेथे ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णबधानन्तरसर्वैस्तूयमानश्रीकृष्णार्जुनचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबे का अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजाकर्णके मरनेपर भयसेपीड़ितहो सबदिशा ओंको देखतेहुये कौरवलोगभागे १ अर्थात् घोरयुद्धमेंअर्जुनके हाथ सेकर्णको मराहुआ देखकरआपके सबशूरबीर घायल और भयभीत होकर दिशाओंमें छिन्नभिन्नहुये २ इसकेपीछे चारोंओरसे रोके हुये ब्याकुल और महादुःखी होकर आपके उनसब शूरोंने बिश्रामकिया हेराजाइसकेपीछे आपकेपुत्र दुर्य्योधननेउनसबके उसमतको जानकर शल्यके मतसे बिश्रामकिया ३।४ हेभरतबंशीआपके शीघ्रगामी रथ और शेषबचीहुई नारायणी सेनासेयुक्त कृतवर्मा डेरेकी ओरको चला ५ और हजारों गंधारदेशियोंसेव्याप्तशकुनिभी कर्णकोमृतक देखकर डेरेकी ओरचला ६ हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्रशारद्वत कृपाचार्य्यजीभी बड़े २ बादलोंके समान हाथियोंकीसेनाको साथलिये डेरेकी ओरको चले ७ फिर बड़े शूरबीर अश्वत्थामा बारंबार श्वास लेले पांडवोंकी बिजयको देखकर डेरेकीओरकोचले ८ हेराजाशेष

बचीहुई संसप्तकोंकी सेनाको साथलियेहुये सुशर्माभी भयसे पीड़ित चारों ओरको देखताहुआ चलदिया ९ फिर जिसके सब बांधव मारे गये वह शोकमें डूबाहुआ अप्रसन्न चित्त राजा दुर्योधनभी बड़ी २ चिन्ताओंको करताहुआ चलदिया १० रथियोंमें श्रेष्ठशल्यभी दशों दिशाओंको देखताटूटी ध्वजावाले रथकी सवारी से डेरेकी ओरको चला ११ इसकेपीछे भरतवंशियोंके बहुतसे अन्य महारथीभी भय से पीड़ित लज्जा से युक्त उदासचित्त होकर भागे १२ इसी प्रकार रुधिर पटकते व्याकुल कंपित महादुःखी सबकौरव कर्णकोगिरा हुआ देखकरभागे१३ हेकौरव्य कोई कौरवतो महारथीअर्जुनकी ओर कोई कर्णकी प्रशंसा करतेहुये दिशाओंको भागे १४ फिरवहांबड़े युद्धमें आपके हजारों शूरबीरोंके मध्यमें कोई ऐसा मनुष्य नहींरहा जिसनेकि फिर युद्धकेनिमित्त चित्त कियाहो १५ हे महाराज कर्णके मरनेसे कौरव लोग जीवन राज्य और स्त्रीकी आशासेभी निराश होगये १६ दुःख शोकसे युक्त आपके समर्थ पुत्रने बड़े २ उपायोंसे उनको इकट्ठाकरके निवासके लिये चित्तकिया फिर वह रूपांतर दशावाले महारथी शूरबीर उसकी आज्ञाको शिरसे अंगीकारकरके ठहरे १७।१८

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकौरवपलायिनेपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छानबेका अध्याय ॥

संजयबोले कि इसप्रकारसे कर्णके गिराने और शत्रुओंकीसेना के भागनेपर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे प्रीति पूर्वक मिलकर बड़ेआनन्द से इसबचनको बोले १ हे अर्जुन जैसे इन्द्रके हाथसे वृत्रासुरमारा गया वैसेही तेरे हाथसे कर्ण मारागया सबमनुष्य कर्णऔर वृत्रासुरके घोर मरणको सदैवकहैंगे २ युद्धमें बड़ा तेजस्वी वृत्रासुर जैसे बज्रसे मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुषसे छूटेहुये तीक्ष्ण बाणोंसे कर्ण मारागया ३ हेकुन्तीके पुत्र लोकमेंबिख्यात यशकरनेवाले अर्जुन तेरे इसपराक्रमको उस बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरसे

बर्णनकरें ४ युद्धमें कर्णके मारनेको बहुतदिनसे कहनेवाले धर्मराज
राजा युधिष्ठिरसे यह बचनकहकर तुम उसकेऋणसेअऋणहोगे ५
तेरे और कर्ण के बड़ेघोर और अपूर्व युद्धहोनेपर धर्मनन्दन राजा
युधिष्ठिर पूर्वही युद्धभूमि देखनेको आये ६ फिर अत्यन्त घायल
होनेसे युद्धमेंनियत होनेको समर्थ न होकरवह पुरुषोत्तम अपनेडेरेमें
पहुंचकर नियतहुये ७ अर्जुनसे बहुतअच्छा कहेहुये बड़े सावधान
यादवेन्द्र केशवजीने उसउत्तमरथीके श्रेष्ठ रथको लौटाया ८ श्रीकृ-
ष्णजी अर्जुनसे इसप्रकारकी बात कहकर सेनाके मनुष्योंसे बोले
कि हेउत्तम शूरबीरलोगो तुम सावधानहोकर शत्रुओंके सन्मुखहो-
करलड़ो तुम्हारा कल्याणहोगा ६ गोबिन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु
नकुल, सहदेव, भीमसेन और युयुधानसे यहबचनबोले किहमजब
तक अर्जुनके हाथसेकर्णका बध राजायुधिष्ठिरसे बर्णनकरें १०।११
तब तक आप सबलोगों को राजाओं समेत निवास करनायोग्य
है तब उनशूरोंकी आज्ञा पाकर गोबिन्दजी अर्जुनको साथ लेकर
डेरेको गये १२ और राजेन्द्रराजा युधिष्ठिरको सुवर्ण रचित अच्छे
शयन स्थानमें सोताहुआदेखा १३तब उन दोनोंश्रीकृष्ण और अर्जुन
ने राजाके दोनों चरणोंको स्पर्शकिया उससमय युधिष्ठिरने उन
दोनोंको प्रसन्नदेखकर बड़ी प्रसन्नताके अश्रुपातोंको डाला१४और
कर्णको मृतक मानकर महाबाहु शत्रुंजय राजा युधिष्ठिर उठकर
बारंबार १५ दोनों अर्जुन और बासुदेवजी को अत्यन्त प्रेमसे
मिले फिरयादवोंमें श्रेष्ठ बासुदेवजीने जैसे कि अर्जुनने युद्धकरके
उसकर्णकाबधकिया वह सब बृत्तांत उससे वर्णनकिया फिर मन्द
मुसकानकरते अबिनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजात शत्रु
राजायुधिष्ठिरसे यह बचन बोले हे राजा प्रारब्ध से गांडीवधनुष-
धारी अर्जुन भीमसेन १६।१७ नकुल सहदेव और तुम कुशल
पूर्वक हो अब तुम इन बीरों के नाश करनेवाले और रोमांच खड़े
करनेवाले महाघोर युद्धसे निवृत्तहुये १८।१६ हे पांडव अबतू
बड़ी शीघ्रता से आगे करने वाले कर्मों को करो हे राजा सूतका

पुत्र महारथी कर्ण मारागया २० हे राजेन्द्र तुम अपने प्रारब्धसे बिजय करतेहो और भाग्यसेही वृद्धि पातेहो और जो नीचपापात्मा पुरुष द्यूत में हारी हुई द्रौपदी को हंसाथा २१ उस सूतके पुत्र के रुधिर को अब पृथ्वीपान कररही है हे कौरवोंमें श्रेष्ठ यह तेराशत्रु बाणों से भरे हुये शरीर से पृथ्वीपर पड़ा हुआ सोता है २२ हे पुरुषोत्तम उस बहुत बाणोंसे टूटे अंगवाले कर्णको देखो हे मृतक शत्रुवाले महाबाहो तुमइसपृथ्वीपर राज्यकरो और हमसमेत साव धान होकर उत्तम भोगोंको भोगो २३ संजय बोले कि तब अत्यन्त प्रसन्न चित्त धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन बचनों को सुनकर उन महात्मा केशवजीसे कहा २४ हे महाबाहु आपने जो प्रारब्ध- से हुआ यह बचन कहासो हे महाबाहो दवकीनन्दन यह बात आपमें कुछ अपूर्ब्ब नहींहै आपकी यहयोग्यता सदैव से चली आई है २५ उपाय करनेवाले अर्जुनने तुमसारथीके साथहोकर उसको मारा हे महाबाहो तुम्हारी स्वच्छ बुद्धि से उत्पन्न हुई वह बात आश्चर्य्यकी नहींहै यहकहकर वहधर्मधारी कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द रखनेवाली दक्षिणभुजाको पकड़कर २६ । २७ उनदोनों अर्जुन और केशवजी से बोले कि नारदजीने तुमदोनों को धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ नरनारायण रूप देवता मुझ से बर्णन कियाहै और बुद्धिमान् सिद्धान्तोंके ज्ञाता व्यासदेव जीने भी इस महाभाग कथाको बारंबार मुझसे कहा है हे कृष्णजी इस पांडव अर्जुनने आपकी कृपासे २८ । २९ सन्मुख होकर शत्रुओं कोबिजय किया और किसी स्थानपर मुखनहींफेरा निश्चय हमारी हीबिजयहै हमारी पराजय नहींहोगी ३० जबआपनेअर्जुनकी रथ- वानी अंगीकार करी हे गोबिन्दजी आपकी बुद्धि से कर्णके मरनेपर भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, महात्मा गौतम, कृपाचार्य्य, ३१ और अन्य २ बड़े २ शूरबीर जोउनके साथमें आगे पीछे थे वहसब हरप्रकार से मारेगये ३२ तब पुरुषोत्तम महाराज धर्मराज यह कहकर श्वेत वर्णकालेबाल चित्तके अनुसार शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त सुवर्ण सूत्रसे

निर्मितरथपर ३३ सवारहो अपनी सेनाको साथ लेकर युद्धभूमिके देखनेको प्रवृत्तहुये ३४ बीर श्रीकृष्ण और अर्जुनसेपूछकर औरदोनों से प्यारे २ मिष्ट बचनोंको कहतेहुये चलदिये ३५ वहांजाकर उस राजा युधिष्ठिर ने युद्धभूमिमें शयन करते हुये कर्णको ऐसा देखा जैसेकि सबओरसे केसरोंसे युक्त कदम्बका फूलहोता है ३६ उस धर्मराजने हजारों बाणोंसे चितेहुये कर्ण-वा सुगंधित तेलोंसेसिंचे हुये और हजारों सुनहरी मशालोंसे ३७ प्रकाशमान जिसकाकवच टूटटूकरचूर्णहोगया वा बाणोंसे छिदाहुआ था उसकर्णको देखा ३८ पुत्रसमेत मरेहुये कर्णको बारंबार देखकर निश्चयकरनेवाले राजा युधिष्ठिर ने ३९ उनदोनों नरोत्तम पांडव अर्जुन और माधवजी की प्रशंसा करी कि हे गोबिन्दजो अबतुझनाथ शूरबीर औरमहाज्ञानी से पोषण किया हुआमैं बड़ेअहंकारी कर्णको मृतक देखकर भाइयों समेत पृथ्वी पर राजाहूं ४० । ४१ राजा धृतराष्ट्र राधाके पुत्र कर्णके मरनेपर अपने जीवन और राज्यसे निराशहोंगे ४२ हे पुरुषोत्तम हम आपकी कृपाओंसे अभीष्ट मनोरथों के सिद्ध करने वाले हैं हे गोबिन्दजी आपने प्रारब्धसे शत्रुओंको बिजय किया और भागही से यह महाशत्रु भी मारागया ४३ और पांडुनन्दन अर्जुन प्रारब्ध से विजय करनेवाला है हमलोगोंने बड़े दुःखदायी तेरह बर्ष जाग २ कर बनोंमें ब्यतीत किये ४४ हे महाबाहो अब आपकी कृपासे रात्रिमें नींद भरके बेखटके होकर सोवेंगे इस रीति से उसधर्मराज राजायुधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी और कौरब्य अर्जुनकी प्रशंसाकरीसंजयबोलेकिअर्जुनके शायकोंसे पुत्रसमेतकर्णको मृतक देखकर ४५ । ४६ उसराजा युधिष्ठिरने अपना पुनर्जन्ममाना हे महाराज फिरबड़ीप्रसन्नता भरेहुयेमहारथियोंने कुन्तीके पुत्रराजा युधिष्ठिरको मिलकर बड़ा प्रसन्नकिया और पांडव नकुलसहदेव भीमसेन और वृष्णियोंमेंबड़ेश्रेष्ठ रथी सात्यकी,धृष्टद्युम्न, शिखण्डी पांचाल और सृञ्जियोंने ४७।४८।४९ कर्णकेमरनेपर युधिष्ठिरकी स्तुतिकी फिर वह सबधर्मात्मा राजायुधिष्ठिर की स्तुतिकरके ५०

महाविजयसे शोभायमान लक्षभेदी युद्धमें कुशल सावधानीसे युद्ध करनेवाले प्रशंसायुक्त उनश्रीकृष्ण औरअर्जुनकीकीर्त्तिगानेवाले ५१ प्रसन्नतामेंडूबेहुये सब महारथीअपने २ डेरोंकोगये हे राजा आपके दुर्बिचारोंसे यहबड़ाभारी घोररोमहर्षण करनेवाला बिनाशकाल जारीहुआ ५२ अबतुमकिसनिमित्त शोचकरतेहो वैशम्पायन बोले कि अम्बिकाकेपुत्र राजा धृतराष्ट्र इसशोक और दुःखदायी वृत्तान्तको सुनकर ५३ अचेत और निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ा जैसे कि जड़समेत टूटाहुआ वृक्ष गिरपड़ताहै उसीप्रकार वहदूरदर्शिनी देवी गांधारी भी गिरपड़ी ५४ और युद्धमें कर्णके मरने को बहुत बिलाप करकरके शोचा तब बिदुरजी और संजयने उस राजाको पकड़लिया ५५ और दोनोंने राजाको बिश्वासयुक्तकिया और इसी प्रकार कौरवीय स्त्रियेंाने गांधारीकोभीउठाया फिर वहबड़ातपस्वी राजा धृतराष्ट्र ईश्वर और होतव्यताको मुख्य मानकर ५६ महा पीड़ित होकर अचेतहोगया चिन्ता शोकसे पूर्णचित्त मोहसे पीड़ित राजाने कुछनहींजाना और बिश्वास देनेपरभी अचेतहोकर मौन होगया ५७ हेभरतबंशी जो पुरुष महात्मा कर्ण और अर्जुनकेइस महाघोर युद्धरूपी यज्ञको पढ़ेगा वह उस फलको पावेगाजो अच्छे प्रकारसे कियेहुये यज्ञकाफल होताहै और सुननेवालोंको भी यही फलहोगा ५८ अग्नि बायु और चन्द्रमाके उत्पन्न करनेवालेसना-तन भगवान् बिष्णुहैं उन्हींको यज्ञ कहते हैं इसकारण जो पुरुष दूसरेके गुणोंमें दोषनलगाकर पढ़ेगा वासुनेगा वहसुखीहोगा ५९ भक्तलोग सदैव धर्मकी वृद्धिके हेतुसे इस उत्तम संहिताकोपढ़तेहैं वहमनुष्य उसके पढ़नेसे धनधान्य और कीर्त्तिमान् होकर आनन्द करतेहैं ६० इसहेतुसे जो दूसरेकेगुणोंमें दोषनलगानेवालामनुष्य सदैवही सुनेगा वह सबसुखोंको पावेगा और भगवान् ब्रह्माजी बिष्णुजी और शिवजी भी उसनरोत्तमके ऊपर प्रसन्न होतेहैं ६१ इससंहितामें ब्राह्मणको वेदोंकीप्राप्ति और युद्धमें क्षत्रियोंकोपराक्रम वा बिजयकीप्राप्ति वैश्योंको धनकीप्राप्ति और शूद्रोंको नीरोगताकी

प्राप्तिहोतीहै ६२ जोकिइसमें भगवान् सनातन देवताविष्णुजीका बर्णनहै इसहेतुसे वह मनुष्य सुखीहोकर मनोभीष्टोंको पातेहैं यह उस महामुनिने बचन कहाहै कि जो इस कर्णपर्ब्बको सुनताहै वह एकबर्षतक सवत्सा कपिला गौके प्रतिदिन दान करनेके समान फलको पाताहै ॥ महिखरीछंद ॥

सुनिप्रबलअरिभटकरणकोबध धरमअतिआनंदभरे । बहुभांतिहरिहिप्रशंसिप्रभुता कृपाकी बर्णनकरे ॥ फिरकृष्णपारथभटनसह चढ़ि सुरथपैमोदितमहा । गेधर्मभूपति कर्णभटमणि परोहो जेहिथल तहा ॥ तहंसहित सुतमरिपरो कर्णहिं देखिआनंदकोगहे । तुवकृपा सोंममसुजयसबथर इबिधिकेशवसोंकहे ॥ बहुजरत चारुमशाल संग उमंगसों सब देखिकै । नृपधर्मडेरनगयेफिरि निज सुजयध्रुव अवरेखिकै ॥

दो० करतप्रशंसाकृष्णअरुपारथकीसबबीर । गेनिजनिजडेरनलहतआनंदसिंधुगंभीर ॥
भूपतिकियोकुमंत्रतुमकरताइतोअनर्थ । प्रलयकालआरोपिअबशोचकरतहौव्यर्थ ॥

बैशंपायन उवाच ॥

दो० इविधिकर्णकोमरणसुनिदम्पतिबृद्धनरेश । मोहितह्वैगिरिपरतभेत्यागिचेतकोलेश ॥
भूपतिगहिसंजयबिदुरगंधारिहिकुरुनारि । चेतितकीन्हेयतनकरिधीरजधरोपुकारि ॥
कर्णपर्वमेंहोतभोयाहिबिधियुद्धबिनोद । रामकृष्णकहंजयतसोलहतसदाजयमोद ॥
सो० रामभक्तकपिबीरबिलसोजासुध्वजरथहै । कृष्णबसेजातीरकिमिनलहैजयपार्थसो ॥

श्लो० बर्षेब्धिवेदांकशशांक १९४४ संख्येविद्वान्सकालीचरणाभिधानः । अच्योतद्रसमंजुलकर्णपर्वभाषानुवादंमधुरंव्यधत्त १ ॥

इतिश्रीभाषामहाभारतेशतसाहस्यांसंहितायांबैयासिक्यांकर्णपर्वणि षण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

इतिकर्णपर्वसमाप्तः

मुन्शी नवलकिशोर प्रेस लखनऊ में छपी ॥ नवम्बर सन् १८८८ ई०
इस पुस्तक का हक़तसनीफ़ महफ़ूज़है बहक़ इस छापेख़ानेके ॥

महाभारत काशीनरेश के पर्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व १
२ सभापर्व २
३ वनपर्व ३
४ विराटपर्व ४
५ उद्योगपर्व ५
६ भीष्मपर्व ६
७ द्रोणपर्व ७
८ कर्णपर्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० योषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व १२
१० शांतिपर्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुसलपर्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिबंशपर्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा, ये पर्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व मिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्ते हैं कृपा करके भेजदेवैं तौ छापेजावें ॥

महाभारत वार्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगयाहै जिसकी आदि, सभा, बन, बिराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, और हरिबंशपर्व

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृतिसांख्यादि सार
्रत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या-
दिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहना-
ार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकराया है वही उक्त
भगवद्गीतावज्रवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छेरशास्त्रवेतारअपनीबुद्धि
े पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करने की
ामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्ते हैं-और यहप्रत्यक्षहीहै कि जबतक
िसी पुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब
ाक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक
नों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्या
ालासीभगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसाधनव्यय
र फर्रुखाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीसे इसमनोरंजन वेदवेदान्तशा-
्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में
लकरवा नवलभाष्यआख्य से प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि
जसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यहबिचार
आ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी
क इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाके साथ और इस ग्रन्थ के टीकाकारों की टीका
ो जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे
सकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरि
त तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकोंसहित इसपुस्तकमेंउपस्थित है॥